13
॥ अन्तर्दशाध्यायः ॥

अन्तर्दशाओं के भेद

दशा चान्तर्दशाश्चैव तत्तदन्तर्दशास्तथा।
सूक्ष्म मुक्तिः प्राणदशाप्येवं पंचभिधाः स्मृताः॥1॥

दशा, अन्तर्दशा, प्रत्यन्तर्दशा, सूक्ष्म दशा, प्राणदशा ये प्रत्येक दशा के 5 भेद होते हैं। दशा के विषय में यहाँ तक बता दिया गया है, अतः अन्तर्दशा के फल को निश्चित करने के विषय में स्फुटीकरण प्रस्तुत किया जाएगा।

अथ प्रवक्ष्ये खलु खेचराणामन्तर्दशाः सूक्ष्मफल प्रसिद्धयै।
विचारपूर्वं सदसत्प्रकल्प्यं फलं सुधीभिर्विधिनोदितेन॥2॥

सूक्ष्म फल का निश्चय करने के लिए अन्तर्दशाओं का विचार आवश्यक है। उससे पहले बुद्धिमान व्यक्ति को सब ग्रहों की शुभ फलदायकता व अशुभ फलदायकता तथा परस्पर सम्बन्ध का निश्चय पाराशरी विधि से कर लेना चाहिए।

इस विषय में पाठकों को लघुपाराशरी का पारायण कई बार सावधानी से करना चाहिए। दशा का फल तो लम्बे समय के लिए होता है। अन्तर्दशादि का फल ही वास्तव में व्यवहार में काम आता है। अन्तर्दशा का फल निर्धारण करने में लघुपाराशरी के नियम अकाट्य हैं। उन्हें क्रमबद्ध विधि से मस्तिष्क में स्थिर कर लेना चाहिए। ग्रन्थकार भी लघुपाराशरी के नियमों को सीधे वहीं से लेकर यहाँ यथावत् दे रहे हैं। पाठकों को हमारी लघुपाराशरी की विद्याधरी की व्याख्या अवश्य पढ़नी चाहिए। वहाँ विस्तार से इन नियमों का सोदाहरण खुलासा किया गया है।

अन्तर्दशा फल के मूल नियम

न दिशेयुः ग्रहाः सर्वे स्वदशासु स्वभुक्तिषु।
शुभाशुभफलं नृणामात्मभावानुरूपतः॥3॥

महादशा में जब उसी ग्रह की अन्तर्दशा होती है तो महादशेश का शुभ या

अशुभ जैसा भी फल पहले निश्चय किया गया हो, वह पूरी तरह से सामने नहीं आएगा।

अन्तर्दशा के फलनिर्धारण में यह मौलिक नियम है। सर्वप्रथम विचारणीय कुण्डली में पाराशरी मत से योगकारक, भावेशत्वादि के कारण शुभ, भावेशत्वादि के आधार पर अशुभ तथा स्वतन्त्रमारक ये 4 वर्ग ग्रहों के बना लें। इस विषय को समग्र रूप से समझने के लिए लघुपाराशरी की पहली 28 कारिकाओं का आशय मस्तिष्क में साफतौर पर बिठा लेना चाहिए। श्लोक का भावार्थ संक्षेप में इस तरह है–

किसी भी वर्ग का ग्रह हो, उसका शुभ या अशुभ या योगकारक का फल या मारक फल उसकी अपनी ही अन्तर्दशा के दौरान पूर्ण विकसित रूप में प्रत्यक्ष नहीं होगा। माना नवमेश सूर्य नवम में ही स्थित है। नवमेश होने से शुभ, स्वक्षेत्री होने से शुभ, भाग्यवर्धक है, यदि शुभ दृष्ट युक्त या योगकारक से युक्त भी है तो बहुत उत्तम फल सूर्य की दशा में होंगे। सूर्यदशा 6 वर्षों की है, तब क्या 6 वर्ष सारे ही उत्तम फल देंगे? समाधान है कि ऐसे सूर्य में जब सूर्य की ही अन्तर्दशा होगी तो उसका श्रेष्ठ फल उस दौरान नहीं हो सकेगा। कब होगा? इसका उत्तर अगले श्लोक में दिया जा रहा है।

आत्मसम्बन्धिनो ये च ये वा निजसधर्मिणः।
तेषामन्तर्दशास्वेव दिशन्ति स्वदशाफलम्॥4॥

प्रत्येक ग्रह अपनी दशा के दौरान, शुभ या अशुभ या मारक फल, उस ग्रह की अन्तर्दशा में देगा जो ग्रह महादशेश का सम्बन्धी हो जो गृह महादशेश के समान वर्ग में आता हो।

1. एक योगकारक की महादशा में जब दूसरे योगकारक की अन्तर्दशा होगी तो उनके बलाबलानुसार सर्वोत्तम योगफल होगा।
2. योगकारक की महादशा में जब दूसरे शुभ फलदायक ग्रह की अन्तर्दशा होगी तो भी मध्यम योगफल या शुभ फल होंगे।
3. योगकारक ग्रह की महादशा में उसके सम्बन्धी ग्रहों की अन्तर्दशा होगी तो महादशेश का योगफल उत्तम होगा। इसमें भी सम्बन्ध की श्रेणी के आधार पर फल की श्रेणी निश्चित की जाएगी।
4. कोई दो ग्रह जब एक दूसरे की राशि में हों तो सर्वश्रेष्ठ सम्बन्ध है। इसे स्थान परिवर्तन सम्बन्ध कहते हैं। जैसे मिथुन में वृहस्पति और धनु में बुध स्थित हो।

जब दो ग्रह आपस में एक दूसरे पर पूर्ण दृष्टि रखें तो यह दृष्टि सम्बन्ध भी उत्तम सम्बन्ध है, यह गुण की दृष्टि से दूसरे नम्बर पर आता है। जैसे सिंह में गुरु व कुम्भ में कोई दूसरा ग्रह स्थित हो। जब किसी ग्रह को उसका अधिष्ठित

राशीश पूर्णदृष्टि से देखे यह तीसरी श्रेणी का सम्बन्ध है। जैसे मकर में स्थित सूर्य को या बुध को शनि पूर्ण दृष्टि से देखे। जब कोई दो ग्रह एक साथ एक ही राशि में स्थित हों यह सहावस्थान या सहस्थिति सम्बन्ध चौथी श्रेणी का है।

इन सम्बन्धों में भी कोई दो सम्बन्ध एक साथ हो जाएँ तो दो तरह से रिश्तेदारी होने से विशेष प्रभाव उत्पन्न होता है। जैसे मिथुन में गुरु या धनु में बुध हो तो दोनों में परस्पर स्थान परिवर्तन तथा परस्पर पूर्ण दृष्टि सम्बन्ध भी बनेगा। अतः यह सम्बन्ध विशेष बलवान् हो जाएगा। इस तरह ये नियम निष्पन्न हुए–

1. योग कारक महादशा + उसी की अन्तर्दशा = सामान्य फल।
2. योग कारक महादशा + प्रबल योगकारक अन्तर्दशा = श्रेष्ठ योगफल।
3. योग कारक महादशा + साधारण योगकारक अन्तर्दशा = मध्यम योगफल।
4. योग कारक महादशा + श्रेष्ठ सम्बन्धी अन्तर्दशा = श्रेष्ठ योगफल।
5. योग कारक महादशा + साधारण सम्बन्धी अन्तर्दशा = मध्यम योगफल।
6. योग कारक महादशा + असम्बन्धी या अलगवर्गीय ग्रह की अन्तर्दशा = साधारण फल।
7. योग कारक महादशा + शुभ अन्तर्दशा = उत्तम फल।
8. योग कारक महादशा + अशुभ अन्तर्दशा = साधारण फल।

इसी तरह मारक या अशुभ ग्रह की महादशा में जब जब दूसरे मारक या अशुभ गह की अन्तर्दशा होगी तब विशेष अशुभ फल होगा। जब शुभ या योगकारक की अन्तर्दशा होगी तो साधारण फल, न शुभ न अशुभ फल होगा। जब मारक या अशुभ ग्रह की महादशा में प्रबल सम्बन्धी की अन्तर्दशा हो तो प्रबल अशुभ और साधारण सम्बन्धी की अन्तर्दशा हो तो साधारण अशुभ फल होगा।

सम्बन्ध व साधर्म्य ये दो शब्द अन्तर्दशा व दशा फल के विशेष नियामक हैं। सम्बन्ध अर्थात् आपस में पूर्वोक्त कोई सम्बन्ध होना। साधर्म्य अर्थात् महादशेश व अन्तर्दशेश का शील स्वभाव गुण पाराशरीय नियमों से एक जैसा होना। गुणशील से तात्पर्य मारक, योगकारक, शुभ या अशुभ ग्रह से है, जिसका निर्णय पाराशरीय नियमों से किया जाएगा।

महादशेश का शुभाशुभत्व या योगकारकत्व, दशा के मौलिक फल का निश्चय करता है, जबकि अन्तर्दशेश, महादशा के फल को व्यक्ति तक पहुँचाता है। सारी महादशा में फल की मूल धारा का आदेश देता है, लेकिन उस आदेश का क्रियान्वयन महादशेश के अधिक विश्वासपात्र अधिकारी अर्थात् सम्बन्धी ग्रह या अपने जैसे स्तर के ग्रह ही करते हैं।

समग्रह की अन्तर्दशा का नियम

इतरेषां दशानाथविरुद्धफलदायिनाम्।
तत्तत्फलानुगुण्येन फलान्यूह्यानि सूरिभिः॥5॥

जो ग्रह महादशेश का सम्बन्धी भी नहीं हैं और महादशेश के समान भी नहीं है, वह 'इतर' अर्थात् दूसरा, अन्य, पराया ग्रह हुआ। ऐसे इतर ग्रह की अन्तर्दशा में या विरोधी फल देने वाले ग्रह की अन्तर्दशा में सदा मिश्रित फल होता है।

आइए, बात को साफ तौर पर समझने का प्रयत्न करते हैं। महादशेश को आधार मान कर, दशाफल के सन्दर्भ में सभी अन्तर्दशेश तीन प्रकार के होते हैं–

1. समानधर्मी या सधर्मीग्रह। जैसे दो कारक ग्रह या दो मारक ग्रह या दो शुभ ग्रह या दो अशुभ ग्रह।
2. विरुद्धधर्मी अर्थात् एक कारक व दूसरा मारक या एक शुभ व दूसरा अशुभ।
3. अनुभय धर्मी या सम ग्रह। जैसे सधर्मी भी नहीं है, सम्बन्धी भी नहीं है, वैसा ग्रह अनुभयधर्मी होना ही फलानुगुणता है। अर्थात् ऐसी अन्तर्दशा में महादशेश का वास्तविक फल गुप्त रूप से रहता है। तथा अन्तर्दशेश स्वयं सम्बन्धी व सधर्मी नहीं है अर्थात् विरुद्ध धर्मी है अतः वह महादशेश के शुभ या अशुभ फल को कम आज्ञाकारी नौकर की तरह लागू करेगा। फलस्वरूप महादशा के फल का शुभ या अशुभ स्वरूप पूरे प्रभाव के साथ सामने नहीं आ सकेगा, क्योंकि अन्तर्दशेश स्वभाव से ही उदासीन है, वह ढीले ढंग से महादशेश के फल को प्रकट करेगा। परिणामतः, सारा फल मिश्रित स्वरूप वाला हो जाएगा, धूप छाँव का खेल चलेगा। कभी साधारण शुभ, कभी साधारण अशुभ, कभी न शुभ न अशुभ फल मिलता रहेगा। इसे फलानुगुणता का नियम कहते हैं। अर्थात् दोनों ही ग्रह अपनी-अपनी चलाएँगे। फलस्वरूप परिणाम सामान्य श्रेणी का रहेगा।

केन्द्रेश व त्रिकोणेश की अन्तर्दशा

स्वदशायां त्रिकोणेशभुक्तौ केन्द्रपतिः शुभम्।
दिशेत् सोऽपि तथा नोचेदसम्बन्धेन पापकृत्॥6॥

1. केन्द्रेश की महादशा में त्रिकोणेश की अन्तर्दशा हो तो शुभ फल होगा।
2. त्रिकोणेश की महादशा व केन्द्रेश की अन्तर्दशा भी शुभ देगी। ये दो सामान्य नियम हुए।
3. यदि केन्द्रेश व त्रिकोणेश का परस्पर सम्बन्ध हो तो विशेष शुभ फल होगा।

4. यदि सम्बन्ध न हो तो भी मध्यम शुभ फल होगा।
5. यदि केन्द्रेश या त्रिकोणेश में कोई दोष हो, अर्थात् उनमें से कोई साथ ही अशुभ भावेश भी हो या शुभ ग्रह केन्द्रेश हो तो, उनका परस्पर सम्बन्ध बनने पर साधारण शुभ फल होगा।
6. यदि दोषयुक्त केन्द्रेश व त्रिकोणेश का परस्पर सम्बन्ध न हो तो अशुभ फल होगा। **'असम्बन्धेन पापकृत्'** का यही आशय है कि केन्द्रेश त्रिकोणेश दोषयुक्त हों और सम्बन्ध न करें तो पापफल होगा। विस्तार हेतु हमारी **लघुपाराशरी विद्याधरी** देखें।

योगकारक व मारक अन्तर्दशा का समन्वय

आरम्भो राजयोगस्य भवेन्मारकभुक्तिषु।
प्रथयन्ति तमारभ्य क्रमशः पापभुक्तयः॥7॥
तत्सम्बन्धिशुभानां च तथापुनरसंयुजाम्।
शुभानां तु समत्वेन संयोगो योगकारिणाम्॥8॥

1. योग कारक की महादशा में मारक ग्रह की अन्तर्दशा में राजयोग के योगफल की प्राप्ति हो सकती है, बशर्त महादशेश व अन्तर्दशेश में परस्पर सम्बन्ध हो।
2. योगकारक महादशा तथा सम्बन्धी अशुभ ग्रह की अन्तर्दशा में भी अच्छा राजयोग फल सम्भव होने पर मिलेगा।
3. योगकारक महादशा में सम्बन्धी शुभ ग्रह की अन्तर्दशा में भी अच्छा फल प्राप्त होगा।
4. योगकारक महादशा में असम्बन्धी शुभ अन्तर्दशा हो तो सम या मिश्रित फल होगा।
5. योगकारक महादशा में शुभ या योगकारक की अन्तर्दशा सम्बन्ध होने पर उत्तम फल देगी ही।

आशय यह है कि सम्बन्धी मारक, पापग्रह (त्रिषडायेश, अष्टमेश, द्वादशेश, शुभ केन्द्रेश आदि) की अन्तर्दशा में राजयोग प्राप्ति का आरम्भ, सूत्रपात हो सकता है। लेकिन सम्बन्धी मारक की अन्तर्दशा व योगकारक की महादशा हो तो फलित राजयोग भी विशेष प्रभावशाली नहीं होता है, यह बात श्लोक के बाहर होते हुए, पाठकों को मस्तिष्क में रखनी चाहिए।

शुभदशा : योगकारक अन्तर्दशा

शुभस्यास्य प्रसक्तस्य दशायां योगकारकाः।
स्वभुक्तिषु प्रयच्छन्ति कुत्रचिद्योगजं फलम्॥9॥

शुभ ग्रह की महादशा में योगकारक की अन्तर्दशा हो तो महादशेश व अन्तर्दशेश का सम्बन्ध होने पर कभी-कभी योगफल होता है। नियमतः सारी अन्तर्दशा में योगफल नहीं होता। अपितु शुभ फल आवश्य होता है।

यदि सम्बन्ध न हो तो शुभ फल होगा, लेकिन कुछ कम मात्रा में रहेगा। योगफल कभी नहीं हो सकेगा।

राहु केतु की दशान्तर्दशा

तमोग्रहौ शुभारूढौ असम्बन्धेन केनचित्।
अन्तर्दशानुसारेण भवेतां योगकारकौ॥10॥

राहु केतु यदि शुभ स्थान, निर्विवाद रूप से त्रिकोण 5.9 में या केन्द्र में विशेष परिस्थितियों में अर्थात् जब शुभ राशि में हों तो वे किसी ग्रह से अर्थात् शुभस्थानेश से सम्बन्ध करें या न करें, दोनों ही परिस्थितियों में अपनी अन्तर्दशा व दशा में योग फल देते हैं।

राहु केतु जिस भाव में बैठे हों या जिस भावेश के साथ हों, उनका प्रभाव ले लेते हैं। अतः विचारपूर्वक फल कहना चाहिए।

1. 5.9 भावों में किसी के केन्द्रेश त्रिकोणेश के साथ हों तो योगकारक हैं।
2. 5.9 में अकेले हों तो भी योग कारक हैं।
3. 5.9 केन्द्रेश त्रिकोणेश के अलावा अशुभ भावेश के साथ हों तो मिश्रित फल देंगे।
4. केन्द्र (1.4.7.10) में यदि केन्द्रेश त्रिकोणेश के साथ हों तो योगकारक हैं।
5. केन्द्र में ही शुभ राशि में अकेले हों तो भी योगकारक हैं।
6. केन्द्र में अशुभ भावेश से युत हों तो अशुभ फल देंगे। शुभाशुभ भावेशों से युक्त हों तो मिश्रित फल देंगे।

पापग्रहों का फल निर्णय

पाप यदि दशानाथाः शुभानां तदसंयुजाम्।
भुक्तयः पापफलदास्तत्संयुक्तः शुभभुक्तयः॥11॥
भवन्ति मिश्रफलदा भुक्तयो योगकारिणाम्।
अत्यन्तपापफलदा भवन्ति तदसंयुजाम्॥12॥

1. पापग्रह (अशुभ फलदायी) की महादशा में असम्बन्धी शुभ ग्रह की अन्तर्दशा हो तो पाप फल होता है।
2. पापी दशेश से सम्बन्ध रखने वाले शुभ ग्रह की दशा मिश्रित फल देती है।

3. पापी दशेश से सम्बन्ध रखने वाले योगकारक की अन्तर्दशा बहुत खराब फल देती है।
4. पापी दशेश से सम्बन्ध रखने वाले योगकारक ग्रह की दशा भी मिश्रित फल देती है।

मारक दशा का विशेष नियम

सत्यपि स्वेन सम्बन्धे न हन्ति शुभभुक्तिषु।
हन्ति सत्यप्यसम्बन्धे मारकः पापभुक्तिषु॥13॥

मारक ग्रह की महादशा में सम्बन्धी शुभ अन्तर्दशा हो तो मृत्यु नहीं होती है। मारक महादशा में असम्बन्धी पाप अन्तर्दशा हो तो मृत्यु हो जाती है।

शनि शुक्र का विशेष नियम

परस्परदशायां स्वभुक्तौ सूर्यजभार्गवौ।
व्यत्ययेन विशेषेण प्रदिशेतां शुभाशुभम्॥14॥

शनि व शुक्र के विषय में अपवाद स्वरूप यह बात कही गई है कि दोनों में एक महादशेश हो व दूसरे की अन्तर्दशा हो तो परस्पर सम्बन्धी, सधर्मी, तत्तत्फलानुगुणता बने या न बने तब भी ये अपना फल आपस में बदल लेते हैं।

अर्थात् शनि का फल शुक्र दशान्तर्दशा में, शुक्र का फल शनि की दशान्तर्दशा में मिलता हुआ देखा जाता है।

शनि का विशेष शुभाशुभ फल, शुक्र की अन्तर्दशा जब शनि दशा में होगी, तब मिलेगा।

शुक्रदशा में शन्यन्तर में शुक्र का शुभाशुभ जैसा भी फल होगा, वह विशेषतया मिलेगा।

लग्नेश की दशान्तर्दशा

स्वनवांशगते लग्ननाथे स्वस्य दृकाणगे।
तस्य भुक्तिं शुभामाहुर्यवनाद्या विशेषतः॥15॥

यवनों ने कहा है कि लग्नेश यदि अपने नवांश या अपने दृक्काण में हो, अभिव्यंजना से स्वोच्च द्रेष्काण नवांश में भी हो तो उसकी अन्तर्दशा महादशेश से सम्बन्ध न होने पर भी शुभ फल देती है।

स्वद्वादशांशके लग्ननाथे वा स्वदृकाणगे।
तस्य भुक्तिं शुभामाहुर्मुनयः कालचिन्तकाः॥16॥

लग्नेश यदि द्वादशांश या द्रेष्काण में अपनी राशि में हो तो प्रायः अपनी अन्तर्दशा में शुभ फल देता है, ऐसा कालवेत्ता ऋषियों ने कहा है।

स्वत्रिंशांशेऽथवा मित्रत्रिंशांशे वा स्थितो यदि।
तस्य भुक्तिः शुभाः प्रोक्ता कालविद्भिर्मनीषिभिः॥17॥
मित्रक्षेत्रे नवांशर्क्षे मित्रस्य द्विरसांशके।
सुखराशिनवांशस्थे वाहनद्विरसांशके॥18॥
सुखद्रेष्काणगे वापि तस्य भुक्तिः शुभावहा।
बुद्धिराशिनवांशे वा पुत्रस्य द्विरसांशके॥19॥
तपोराशिनवांशस्थे धर्मस्य द्विरसांशके।
गुरुद्रेष्काणगे वापि तस्य भुक्तिः शुभावहा॥20॥

1. लग्नेश यदि त्रिशांश में अपनी राशि या मित्रराशि में हो तो उसकी अन्तर्दशा सर्वदा सब दशाओं में शुभ ही रहती है।
2. लग्नेश यदि नवांश या द्वादशांश में मित्र राशि में हो या लग्न से चतुर्थ राशि के नवांश या द्वादशांश में हो तो भी उसकी अन्तर्दशा शुभ है।
3. चतुर्थ भाव में जो राशि हो, द्रेष्काण में लग्नेश उसी राशि में हो तो भी शुभ अन्तर्दशा होगी।
4. 5.9 भावगत राशि या 9.12 (गुरु राशि) राशियों में लग्नेश नवांश द्रेष्काण व द्वादशांश में पड़े तो भी उसकी अन्तर्दशा शुभ है।

विलग्ननाथस्थितभांशनाथे मित्रांशगे मित्रग्रहेण दृष्टे।
सुहृद्दृकाणस्थ नवांशके वा तदास्य भुक्तिं शुभदां वदन्ति॥21॥

लग्नेश जिस नवांश में हो, व नवांशेश यदि स्वयं भी मित्रनवांश में हो या मित्रग्रह से दृष्ट हो या मित्रद्रेष्काण में हो तो उसकी भुक्ति भी सामान्यतः शुभ होती है।

अशुभ अन्तर्दशा के नियम

षष्ठाष्टमव्ययेशानां दशाकष्टप्रदायिनी।
एतद्भुक्तिषु कष्टं स्यान्मारकस्य दशा यदा॥22॥

6.8.12 भावेशों की दशा सामान्यतः कष्टप्रद होती है। 6.8.12 भावेशों की अन्तर्दशा यदि मारक दशा में आए तो भी विशेष कष्ट होता है।

मारकेशोऽथ षष्ठेशयुक्तो लग्नाधिपो यदि।
तस्य भुक्तौ ज्वरप्राप्तिरित्याहुः कालवित्तमाः॥23॥

यदि लग्नेश का मारकेश या षष्ठेश से योग हो तो 1.6 भावेशों या इन सब की परस्पर दशा-अन्तर्दशा में ज्वर आदि से पीड़ा होती है।

सलग्नेशोऽथ चन्द्रो वा, रोगेशवर्गगो यदि।
जलदोषस्तस्य भुक्तौ स्यादजीर्णो न संशयः॥24॥

लग्नेश या चन्द्रमा, यदि षष्ठेश के अधिक वर्गों में (षड्वर्ग) में हों तो इनकी

अर्थात् षष्ठेश व लग्नेश या षष्ठेश या चन्द्रमा की दशान्तर्दशा में अपच, पाचन तन्त्र सम्बन्धी विकार या पानी से उत्पन्न होने वाले रोग होते हैं।

षष्ठेशयुतलग्नेशो बुधषड्वर्गगो यदि।
कफस्तस्य भवेद्भुक्तौ वातो वा देहजाड्यकृत्॥25॥
सारिनाथो विलग्नेशो गुरुषड्वर्गसंस्थितः।
तस्य भुक्तौ भवेद्रोगः पीडा वा ब्राह्मणेन तु॥26॥

षष्ठेश व लग्नेश दोनों ही यदि बुध के षड्वर्गों में गए हों तो इनकी दशान्तर्दशा में कफ या वात रोग या शरीर में अकड़न जकड़न होती है।

षष्ठेश व लग्नेश यदि दोनों ही गुरु के षड्वर्गों में हों तो लग्नेश व षष्ठेश की परस्पर दशान्तर्दशा में रोगपीड़ा या ब्राह्मण के द्वारा कष्ट होता है।

नक्षत्रेशो विलग्नेशो भृगुषड्वर्गगो यदि।
तस्य भुक्तौ भवेत्पीडा रोगस्त्रीसंगमेन च॥27॥
सरोगेशो विलग्नेशः शनिषड्वर्गगो यदि।
तस्य भुक्तौ भवेद्वातः सन्निपातोऽथवा नृणाम्॥28॥

लग्नेश या चन्द्रमा यदि शुक्र के षड्वर्गों में हों तो इनकी भुक्ति में स्त्रीसंग से उत्पन्न रोग होते हैं।

षष्ठेश व लग्नेश यदि शनि के षड्वर्गों में हों तो उनकी दशान्तर्दशा में वात रोग या भीषण ज्वर होता है।

लग्नेश रोगेश ससंयुताः स्युश्चेत्समंदात्मजराहुकेतवः।
तदासु हिक्का सविषूचिकादिरोगो नराणामथ तस्य भुक्तौ॥29॥

लग्नेश या षष्ठेश यदि राहु केतु, मान्दि से युक्त हों तो इनकी दशान्तर्दशा में हिचकी, हैजा आदि रोग होते हैं।

एवं भ्रात्रादि भावानां नायको यत्र संस्थितः।
तस्य षड्वर्गयोगेन तत्तद्भावफलं वदेत्॥30॥

इसी प्रकार पूर्वोक्त विधि से तृतीयेश, पंचमेश, सप्तमेश, नवमेश, दशमेश आदि जिस ग्रह के षड्वर्गों में गए हों, उन सम्बन्धियों को तत्तद्दशाओं में पूर्वोक्त रोगों से पीड़ा होती है।

आशय यह है कि लग्नेश या षष्ठेश या अन्य कोई भी श्लोकोक्त ग्रह जैसे ग्रह के षड्वर्गों में हो, वैसा ही फल इन सब की दशान्तर्दशा में मिलता है। यह अनुभूत है।

जैसे श्लोक 28 में 6.1 भवेशों में कोई एक या दोनों शनि के वर्गों में हों तो जो भी ग्रह शनि के षड्वर्गों में होगा उसी की व शनि की परस्पर दशान्दशा में वात रोग होगा।

महादशेश अन्तर्दशेश की परस्पर भावस्थिति

दशाधिपेनापियुतस्य भुक्तौ स्त्रीपुत्रभृत्यार्थकृषे विनाशः।
उद्योगभंगः स्वजनैश्च कष्टमाकस्मिकं भूषणमेति काले॥31॥

यदि महादशेश व अन्तर्दशेश एक ही स्थान में साथ-साथ स्थित हों तो अपवादों को छोड़कर इनकी दशान्तर्दशा में प्रायः स्त्री, पुत्र, धन, व्यवसाय की हानि, परिश्रम की असफलता, स्वजनों से कष्ट और सहसा कुछ अच्छे फल भी हो जाते हैं।

दशाधिपाद्वित्तगतस्य भुक्तौ मृद्वन्नपानाम्बरगन्धमाल्यम्।
परोपकारं स्वजनस्य सख्यं स्त्रीपुत्रबन्ध्वात्ममनोविलासम्॥32॥
दशाधिपात् सोदरराशिगस्य भुक्तौ नृपाद्वित्तमुपैति सख्यम्।
सुगन्धमाल्याम्बरभूषणं च सुहृद् भवेद् भोजनसौख्यपुष्टिः॥33॥

महादशेश से द्वितीयस्थ अन्तर्दशेश होने पर दशा में उत्तम भोजन, उत्तम वस्त्र, आभूषण अपने जनों से अच्छे सम्बन्ध, स्त्री, पुत्र, बन्धु व अपने मन से प्रसन्नता होती है।

तृतीयस्थ अन्तर्दशेश हो तो राजा से धन, मित्रता, उत्तम वस्त्राभूषण, मन में उत्साह उत्तम खान-पान का वैभव होता है।

दायेश्वरादम्बुगतस्य भुक्तौ दारात्मजार्थगृहधर्मयानम्।
मिष्टान्नपानाम्बरभूषणं च शुभ ग्रहश्चेत्फलमन्यथान्यत्॥34॥
पापग्रहोऽपिशुभदः खलु दायनाथाद् बन्धुस्थितः स्वभवनोच्चबलादियुक्तः।
सौम्यग्रहोऽप्यशुभदः सुखराशियुक्तो दायेश्वरात्स्वभवनोच्चबलादिहीनः॥35॥

महादशेश से चतुर्थ में, कोई शुभ ग्रह, राशि आदि से उत्तम बली होकर स्थित हो तो उसकी अन्तर्दशा में स्त्री, पुत्र, मकान का सुख, वाहनसुख, उत्तम भोजन प्राप्त होता है।

यदि पापी अन्तर्दशेश भी, महादशेश से चतुर्थ में उच्चगत, स्वक्षेत्री, मित्र क्षेत्री, वर्गोत्तमी आदि हो तो भी बहुत शुभ फल होते हैं।

चतुर्थगत अन्तर्दशेश यदि राशिस्थिति से हीन हो तो विशेष अशुभ होता है।

दशानाथात्सुतस्थस्य भुक्तौ पुत्राप्तिमादिशेत्।
शुभग्रहस्य सौख्यं च पापभुक्तौ सुतक्षयम्॥36॥

महादशेश में पंचम में स्थित बलवान् ग्रह की अन्तर्दशा में पुत्र लाभ तथा निर्बल या पापी ग्रह की अन्तर्दशा में पुत्र कष्ट होता है।

दशेशात्षष्ठभावस्थः स्वोच्चकोणादिगो यदि।
पुत्रं मित्रं सुखं दद्यादन्यथा पदविभ्रमम्॥
चौरारिऋणदेहार्तिमशुभं कुरुते तदा॥37॥

महादशेश से षष्ठस्थ अन्तर्दशेश हो और वह उच्च या स्वक्षेत्री आदि हो तो अपनी अन्तर्दशा में स्त्री, पुत्र, मित्रादि का सुख देता है।

यदि वह नीचादिगत हो तो पद पदवी में बाधा, चोर, शत्रु भय, ऋण वृद्धि, शरीर कष्ट आदि अशुभ फल करता है।

दायेशात्सप्तमस्थस्य पापस्यापहृतौ तथा।
दारार्थपुत्रबन्धूनां नाशं भूपतितो भयम्॥38॥
सप्तमस्थशुभस्यापि हृतौ सौख्यं दशाधिपात्।
नीचशत्रुविहीनस्य सद्रत्नाम्बरभूषणम्॥39॥

दशेश से सप्तमस्थ पापग्रह की अन्तर्दशा में स्त्री,पुत्र, धन, बन्धु आदि का नाश तथा राजभय होता है। शुभ ग्रह हो और नीचादिगत न हो तो सुख व रत्नादि का लाभ होता है।

पाकेशादष्टमस्थस्य पापस्यापहृतौ भयम्।
निधनं कुत्सितं च चौराग्निनृपपीडनम्॥40॥
तथा सौम्यस्य भुक्तौ तु भुक्त्यादौ शोभनं भवेत्।
उत्तरार्धे मनुष्याणां कष्टमन्ते विशेषतः॥41॥

अच्छी राशि में स्थित अष्टमस्थ पापग्रह की अन्तर्दशा में साधारण श्रेणी के कष्ट तथा दुःस्थित ग्रह की अन्तर्दशा में भय, मृत्यु, खराब भोजन, चोर, अग्नि या राजपक्ष से पीड़ा होती है।

इसी तरह सुस्थ शुभ ग्रह की अन्तर्दशा में दशा के पूर्वार्ध में शुभ फल तथा बाद में कष्ट, उसमें भी अन्तिम मासों में विशेष कष्ट होता है। यदि वह दुःस्थ हो तो प्रायः सदा कष्ट होता है और अन्तर्दशा काल में उत्तरोत्तर बढ़ता है।

दायेशान्नवमस्थस्य पापस्यापहृतौ यदा।
अशुभं लभते कर्मस्थानभ्रंशं मनोरुजम्॥42॥
प्रधानतः शुभस्थस्य सौम्यस्यापहृतौ पुनः।
विवाहं यज्ञदीक्षां च दानर्द्धिं लभते नरः॥43॥

नवमस्थ पापग्रह की अन्तर्दशा में अशुभ फल, स्थान भ्रंश, पद भ्रंश, स्थान परिवर्तन, मन में उदासी होती है।

शुभ ग्रह की अन्तर्दशा में विवाह, यज्ञ कर्म, दान के सुयोग आदि शुभ फल होते हैं।

कर्मस्थ पापखेटस्य हृतौ पाकेश्वराद्यदा।
धर्मनाशमवाप्नोति दुष्कीर्तिं विविधापदम्॥44॥
तस्मात्कर्मस्थ सौम्यस्य हृतौ सौख्यं विनिर्दिशेत्।
तटाकं गोपुरादीनां पुण्यकर्मादि संग्रहम्॥45॥

महादशेश से दशमस्थ पापग्रह की अन्तर्दशा में कार्यहानि, बनते कामों में

रुकावट, बदनामी व विविध प्रकार की आपत्तियाँ होती हैं।

यदि वह शुभ ग्रह हो तो सुख, पुण्यों का उदय, जनसुविधार्थ निर्माण कार्य करने के योग होते हैं।

लाभस्थस्य दशानाथात् स्थानप्राप्तिं च शाश्वतीम्।
लभते पुत्रमित्रार्थान् सुखं भाग्योत्तरं भवेत्॥46॥

महादशेश से एकादश स्थान में अन्तर्दशेश की दशा में पदलाभ, स्थायी सफलता, पुत्रों, मित्रों व धन का सुख, भाग्य वृद्धि आदि उत्तम फल होते हैं।

व्ययस्थस्य हृतौ दुःखं पापस्य तु दशाधिपात्।
अर्थनाशं नृपाक्रोधं स्थाननाशं स्मृतिभ्रमम्॥47॥
पाकेश्वरादन्त्यगतस्य भुक्तौ स्थानच्युतिं बन्धुजनैर्विरोधम्।
विदेशयानं धनहीनतां च पादाक्षिहृद्रोगमुपैति काले॥48॥
पाकेश्वराद्व्ययस्थस्य सौम्यस्यापहृतौ यदा।
वाहनं भोगभाग्यं च वस्त्राभरणभूषणम्॥49॥

महादशेश से द्वादशस्थ पापग्रह की अन्तर्दशा में दुःख, धनहानि, राजकीय क्रोध, स्थान हानि, मतिभ्रम होता है।

अपि च, स्थानहानि, बन्धुओं से विरोध, विदेश यात्रा, पैर, आँख, हृदय में रोग व धनहीनता होती है।

यदि वह शुभ ग्रह हो तो वाहन, भोग विलास, भाग्यवृद्धि, उत्तम रहन-सहन होता है।

दशेश अन्तर्दशेश स्थिति का सर्वसामान्य फल

त्रिकोणमेषूरणवेश्मगानामन्तर्दशा सौख्यमतीव नित्यम्।
करोति लाभं विविधं नाराणामारोग्यतां मानसमुन्नतिं च॥50॥

महादशेश व अन्तर्दशेश दोनों ही सुराशि में स्थित होकर परस्पर त्रिकोण या दशम में स्थित हों तो उस अन्तर्दशा में बहुत सुख, लाभ, स्वास्थ्य सुख, मान-सम्मान व उन्नति प्राप्त होती है।

सुखस्थितानां च नभश्चराणामन्तर्दशा सौख्यमतीव नित्यम्।
स्त्रीपुत्रमित्रद्रविणादिकानां नीरोगतां मानसमुन्नतिं च॥51॥

महादशेश से चतुर्थ स्थित ग्रह की अन्तर्दशा में बहुत सुख, स्त्री पुत्र, धन, मित्रादि की प्राप्ति, शरीर सुख, मान व उन्नति होती है।

अन्तर्दशायां मदनस्थितस्य खेचारिणः स्यान्मरणं गृहिण्यः।
रोगः कुभोगः कलहादिभंगः संगश्च निन्द्यैर्हरणं धनस्य॥52॥
खेचारिणामष्टमभावगानामन्तर्दशा संजनयेदरिष्टम्।
धनस्य नाशं व्यसनानि पुंसां षष्ठोपगस्यापि गदप्रवृद्धिम्॥53॥

महादशेश से सप्तमस्थ ग्रह की अन्तर्दशा में पत्नी या पति को कष्ट, रोग, साधारण सुख, कलह, पराजय, निन्दनीय लोगों की संगति व धनहानि होती है।

अष्टमस्थ की अन्तर्दशा में अरिष्ट, धनहानि, विपत्ति तथा षष्ठस्थ की अन्तर्दशा में रोग वृद्धि होती है।

भावेशवश अन्तर्दशा

केन्द्राधीश्वरकोणनायकदशाश्चान्तर्दशाः शोभनाः,
सामान्याश्च धनत्रिलाभभवनाधीशग्रहाणां दशा।
षष्ठाष्टव्ययभावनायकदशा कष्टाः भवेयुः सदा
नेतुर्लग्नमवेक्ष्य तत्तदधिपात् तत्तद्दशाभुक्तिषु॥54॥

–केन्द्रेश व त्रिकोणेश की परस्पर दशा अन्तर्दशा शुभ होती है।

–2.3.11 भावेशों की दशा व अन्तर्दशा साधारण फलदायक होती हैं।

–6.8.12 भावेशों की दशा अन्तर्दशा कष्टप्रद होती हैं। यह विचार लग्न से है।

–इसी विधि से महादशेश जहाँ स्थित हो उस भाव को लग्न समझकर, अन्तर्दशेश की स्थितिवशात् शुभाशुभ या सामान्य फल भी होता है।

राहु दशा में विशेष

सिंहिपुत्रेणान्वितं चेद् विलग्नं प्रोक्तस्थानेष्वन्यखेटा न चैवं।
हर्ताराहुः सौरितुल्यं फलं तद्वाच्यं नूनं तत्र चान्तर्दशायाम्॥55॥

लग्न में राहु हो तथा उसके साथ या उससे केन्द्र त्रिकोण में कोई ग्रह न हो तो वह राहु अपनी दशान्तर्दशा में वही फल करेगा जो लग्न में स्थित होने पर शनि करता है।

अन्तर्दशाविभागेतु रवीन्द्वोरहिना सह।
यमतुल्यं फलं ज्ञेयं नैवान्येषां क्वचिज्जगुः॥56॥

सूर्य व चन्द्र की दशा में राहु की अन्तर्दशा हो, राहु का फल शनिवत् होता है, ऐसा कुछ लोगों ने कहा है।

अर्केन्दुभूमितनयार्कजेभ्यः सिंहिसुतस्यैवदशापहारे।
मृतिं रुजं मृत्युसमं शुभं चेद्दशाफलं तत्र वदेद्विमिश्रम्॥57॥

सूर्य, चन्द्र, मंगल, शनि की दशा में राहु की अन्तर्दशा हो तथा राहु पाप राशि भाव में हो, किसी कारक ग्रह से युक्त न हो तो, मृत्यु, रोग या मृत्युतुल्य कष्ट अपनी अन्तर्दशा में करता है। यदि राहु में थोड़ी शुभता हो तो मिश्रित फल होता है।

यस्मिन्भावे सैंहिकेयस्तु यस्य पुंसः सूतौ स्यात्तदीशस्य पाके।
मृत्युर्वाच्यस्तद्विषोऽन्तर्दशायां होराविद्भिः निश्चितं तस्य यद्वा॥58॥

जन्म कुण्डली में राहु जहाँ स्थित हो, उस भावेश की दशान्तर्दशा में जब

भावेश के शत्रु ग्रह की अन्तर्दशा आएगी तो मृत्यु या मृत्युतुल्य कष्ट होगा, ऐसा होराविदों ने कहा है।

यद्यद्भावगतो राहुः केतुश्च जनने नृणाम्।
यद्यद् भावेशसंयुक्तस्तत्फलं प्रदिशेदलम्॥59॥

राहु व केतु, जन्मसमय में जिस भाव में हों या जिस भावेश से युक्त हों, वैसा ही फल अपनी दशान्तर्दशा में करते हैं।

भावेशानुसार पुनर्विचार

पापो विलग्नग्रहपो यदि तद्दशायां
पापापहारसमये बहुशोकरोगम्।
वित्तक्षयं नृपसपत्नभयं नराणां
सौम्यस्य मिश्रमखिलं प्रवदन्ति सन्तः॥60॥

निसर्ग पापी लग्नेश की दशा में, पापग्रह की अन्तर्दशा हो तो बहुत शोक व रोग, धनहानि, शत्रु या राजा से भय होता है। यदि निसर्ग शुभ ग्रह की अन्तर्दशा हो तो मिश्रित फल होते हैं।

लग्नाधिपदशाकाले मन्दभुक्तौ धनक्षयम्।
इष्टबन्धुविरोधश्च भविष्यति न संशयः॥61॥

लग्नेश की दशा में शनि की अन्तर्दशा या शनि दशा में लग्नेश की अन्तर्दशा हो तो धनहानि, स्वजनों से विरोध होता है।

धनाधिपः पापखगो यदि स्याच्छन्यारभोगीशदिनेश्वराणाम्।
अन्तर्दशायां धननाशमाहुः पापान्विते तद्भवने तथैव॥62॥

धनेश यदि पापग्रह हो तो उसकी महादशा में शनि, मंगल, राहु व सूर्य की अन्तर्दशा में धन हानि होती है।

अपि च धन स्थान में पापग्रह हो तो उस पापग्रह की अन्तर्दशा में भी धनहानि होती है। धन से तात्पर्य कोष, बचत, जमा पूंजी, जायदाद से है। अतः कोष में कमी होती है। ऐसा अर्थ समझना चाहिए।

वित्ते शुभे शोभनखेचरेशे तत्पाककाले धनलाभमेति।
शुभग्रहाणामपहारकाले तथा भवेदात्मजवाग्विलासः॥63॥

धनस्थान में शुभ ग्रह हो, धनेश स्वयं शुभ हो तो उसकी महादशा में सभी शुभ ग्रहों की अन्तर्दशा के दौरान धन लाभ, वाणी का वैभव तथा पुत्रादि का सुख होता है।

पापग्रहे विक्रमभावनाथे पापान्विते पापवियच्चराणाम्।
अन्तर्दशायामनलास्त्रचौरैर्दुःखं समायाति शुभप्रदेऽपि॥64॥

तृतीयेश पापग्रह हो या तृतीय में पापग्रह हो तो उसकी अन्तर्दशा में निसर्ग पापी व पाराशरीय नियमों से पापग्रह की अन्तर्दशा आए तो अग्नि, शस्त्र, चोरों

आदि से दुःख होता है। अपि च या तृतीयेश की महादशा में, तृतीय पापयुक्त होने पर, शुभ ग्रह की अन्तर्दशा में भी साधारण कष्ट होता है।

कलिप्रकोपानलचोरभूपैर्दुःखं मनोजाड्यमतीव कष्टम्।
सोत्थेशपापग्रहदायकाले शुभेक्षिते तादृशमत्रनास्ति॥65॥

पापी तृतीयेश की महादशा में पापग्रह की अन्तर्दशा हो तो कलह, अग्नि चोर, राजभय, दुःख, मन में जड़ता, बहुत कष्ट होता है। यदि वह ग्रह, दशेश या अन्तर्दशेश, शुभ दृष्ट हो तो उतना भीषण फल नहीं होता है।

दुश्चिक्त्यभावाधिपदायकाले सौम्येतराणामपहारकाले।
नाशं वदेत्तत्र सहोदराणां भवेद् विरोधः सहजै विशेषात्॥66॥

तृतीयेश की महादशा में पापी ग्रह की अन्तर्दशा हो तो भाइयों की हानि तथा भाइयों के साथ वैर विरोध होता है। शुभ तृतीयेश की महादशा में शुभ ग्रह की अन्तर्दशा हो तो भ्रातृवृद्धि, पराक्रम वृद्धि व सुख होता है, यह अन्यथा सिद्ध है।

क्षेत्राधिपस्येव शुभेतरस्य पापग्रहाणामपहारकाले।
स्थानच्युतिं बन्धुविनाशमेति नीचस्तगानामपहारकेऽपि॥67॥

पापी चतुर्थेश की महादशा में पापग्रह की अन्तर्दशा हो तो स्थान परिवर्तन, बन्धु-बान्धवों की कमी होती है। यही फल नीच व अस्तंगत ग्रह की अन्तर्दशा में भी होता है। अपि च व्यवसाय में हानि, सुख में कमी, जायदाद सम्बन्धी या वाहन सम्बन्धी कष्ट होता है।

पापापहारसमये सतुराशिपस्य पाके नृपालभयमिष्टसुतार्तिमाहुः।
सौम्यापहारसमये सुतवित्तलाममूर्वीशबन्धुजनलालनमिष्टसिद्धिम्॥68॥

पंचमेश की दशा में पापग्रह की अन्तर्दशा हो तो राजभय, इष्ट हानि, पुत्र कष्ट होते हैं। शुभान्तर्दशा में पुत्र, धन की प्राप्ति, राजा व बन्धुजनों का सहयोग तथा इष्टसिद्धि होती है।

बुद्धिभ्रमं कुत्सितभोजनं च पापग्रहाणां हि सुतेशकाले।
अन्तर्दशायां प्रवदेन्नराणां शुभग्रहश्चेन्न तथा भवेत् तु॥69॥
पंचमेशदशायां हि धर्मपस्य दशा भवेत्।
अतीव शुभदा प्रोक्ता कालविद्भिर्मुनीश्वरैः॥70॥

पापी पंचमेश की दशा में पापीग्रह की अन्तर्दशा हो तो बुद्धिभ्रम, खराब भोजन, पेट की खराबी, पुत्र कष्ट आदि फल होते हैं।

यदि अन्तर्दशेश शुभ ग्रह हो तो विशेष हानि नहीं होती है। पंचमेश व नवमेश की परस्पर दशान्तर्दशा कालवेत्ता मुनियों ने बहुत श्रेष्ठ कही है।

राजाग्निचौरैर्व्यसनं व्रणेशदशाविपाके तु शुभेतराणाम्।
अन्तर्दशायामपिकष्टमेति प्रमेहगुल्मक्षयपित्तरोगैः॥71॥

पापी षष्ठेश में पापग्रह की अन्तर्दशा हो तो राजभय, चोरभय, अग्निभय,

बहुत कष्ट, मधुमेह, क्षय, गुल्म पित्तादि बड़े रोगों से कष्ट होता है।

दारेशपापग्रहदायकाले स्त्रिया विरोधं मरणं च तस्याः।
विदेशयानं च पुरीषमूत्रकृच्छ्रं भवेद् भूपतिकोपमत्र॥72॥

पापी सप्तमेश की दशा में किसी पापग्रह की अन्तर्दशा हो तो स्त्री से विरोध स्त्री की हानि, विदेश पलायन, मूत्र व गुदाद्वार के कष्ट व राजकोप होता है।

रन्ध्रेशकाले फणिनाथभौमशनैश्चराणामपहारकाले।
आयुर्यशोवित्तविनाशनं च दारात्मबन्ध्वीष्टसहोदराणाम्॥73॥

अष्टमेश की महादशा में मंगल, शनि राहु की अन्तर्दशा हो, और ये सब किसी दृष्टि से कारक या योग कारक न हों तो आयु, यश, धन की हानि, स्त्री, बन्धु-बान्धवों से कष्ट, भाइयों से विवाद और कार्य में बाधाएँ पैदा होती हैं।

कारागृहप्राप्तिरनेकदुःखं दुःस्वप्नशोकानलदग्धदेहम्।
कर्मेश्वरस्यान्तर्भुक्तिकाले पापग्रहाणामपकीर्तिमेति॥74॥
कर्मेशस्य खलस्य पाकसमये भुक्तौ यदा पापिना-
मिष्टार्तिपदविच्युतिं सुखयशोहानिं च वित्तक्षयम्॥74½॥

दशमेश की महादशा में यदि पाप फलदायी ग्रह की अन्तर्दशा हो तो दुःख, बन्धन, दुःस्वप्न दर्शन, शोक, अपकीर्ति आदि फल होते हैं।

दशमेश भी स्वयं यदि पापग्रह हो तो उसकी दशा में पापान्तर्दशा में इष्ट कार्य में बाधा, पदहानि, सुखहानि, यशोहानि, धनहानि होती है।

मन्दारार्कफणीशभुक्तिसमये लाभेशदाये सुखं
कृष्यादिप्रविनाशनं नृपभयं वित्तस्य नाशं विदुः॥75॥
व्ययेशदाये रविसूनुभुक्तौ दिनेशभूम्यात्मजयोर्विरोधः।
कलिक्षयौ मानधनक्षयं च राहोस्तु भुक्तावरिसर्पपीडा॥76॥

व्ययेश की महादशा में शनि सूर्य मंगल की भुक्ति हो तो वैर विरोध, कलह, मान व धन की हानि होती है। यदि राहु की अन्तर्दशा हो तो शत्रुभय, सर्पभय या विषभय होता है।

विशेष अनिष्टकारक दशा

तत्कालशत्रोरशुभं फलं तन्मित्रे यदि स्यात्फलमर्धमाहुः।
अन्योन्यषष्ठाष्टदायकाले स्थानच्युतिर्वा मरणं विशेषात्॥
एकस्थयोरन्तरदायकाले मृत्युं वदेद्दुर्बलशालिनस्तु॥77॥

महादशेश व अन्तर्दशेश का पूर्वोक्त नियमों से जैसा भी शुभाशुभ फल प्रतीत होता हो, वह अशुभ फल पूर्ण होगा तथा शुभ फल कम होगा, यदि वे दोनों परस्पर तत्काल शत्रु या पचंधा में अति शत्रु हों।

महादशेश व अन्तर्दशेश यदि परस्पर तत्काल मित्र हों तो जैसा भी फल हो,

वह अधी मात्रा में होता है।

नियमतः शुभ फल दशा में भी महादशेश व अन्तर्दशेश यदि परस्पर षडष्टक (6.8) में हों तो स्थानहानि, मृत्यु आदि फल हो सकते हैं।

महादशेश व अन्तर्दशेश यदि एक साथ स्थित हों तो उनमें से जो निर्बल हो, उसकी दशान्तर्दशा में भय, अपमान, हानि या मृत्यु सम्भव होती है।

क्रूरग्रहदशाकाले क्रूरस्यैव दशागमे।
मरणं तस्य जातस्य भविष्यति न संशयः॥78॥
क्रूरराशिगताः पापाः शत्रुखेटनिरीक्षिताः।
शत्रुखेचरसंयुक्तास्तद्दशायां मृतिर्भवेत्॥79॥

अशुभ फलदायक (पाराशरी नियमों से क्रूर) ग्रहों की परस्पर दशान्तर्दशा हो तो मृत्यु सम्भव होती है।

क्रूर राशि, अशुभ भाव में स्थित ग्रहों, शत्रु ग्रह से दृष्टयुक्त ग्रहों की परस्पर दशान्तर्दशा में मृत्यु सम्भव होती है।

दशाधिपस्य यः शत्रुस्तस्यभुक्त्यन्तरान्तरे।
मृत्युकालो भवेन्नूनं पापखेटस्य निश्चयः॥79½॥

महादशेश व अन्तर्दशेश परस्पर शत्रु हों तथा पापी भी हों तो उनकी दशान्तर्दशा में मृत्यु सम्भव होती है।

लग्नार्थसोत्थगस्यापि पापस्यापहृतौ तदा।
पाकेशाद्दुःखमाप्नोति सौम्यभुक्तौ शुभं भवेत्॥80॥

दशेश से 1.2.3 स्थानों में स्थित पापग्रह की अन्तर्दशा में भी दुःख होते हैं। यदि वे शुभ ग्रह हों तो शुभ फल होता है।

सौम्यभुक्तौ पापदाये त्वादौ सौख्यं परं भयम्।
सौम्यदाये पापभुक्तौ त्वादौ कष्टं ततो भयम्॥81॥

पापग्रह की महादशा में शुभ ग्रह की अन्तर्दशा हो तो पूर्वार्ध में सुख व उत्तरार्ध में कष्ट होता है।

शुभ दशा में पाप अन्तर्दशा हो तो शुरू में कष्ट तथा बाद में भय होता है।

यत्र संवादबाहुल्यं योजायित्वा फलं वदेत्।
शीर्षोदयर्क्षगाः खेटा आदौ चान्त्येऽन्यऋक्षगाः॥82॥

शीर्षोदय राशियों (3.5.7.8.6.11) में स्थित ग्रहों की दशा का विशेष फल दशा के प्रारम्भ में होता है। पृष्ठोदय (1.2.4.9.10) राशियों में स्थित ग्रह का फल दशा के अन्त में होता है। इस प्रकार बहुत से नियमों से देखकर जो फल कई प्रकार से पुष्ट होता हो, उस फल की प्राप्ति कहें।

लग्नस्याधिपतेः शत्रुर्लग्नस्यान्तर्दशां गतः।
करोत्यकस्मान्मरणं सत्याचार्येण भाषितम्॥83॥

लग्नेश की महादशा में (राशि दशा में लग्न दशा) लग्नेश के शत्रु ग्रह की अन्तर्दशा आए तो अकस्मात् मृत्यु या बड़ी हानि हो सकती है, ऐसा सत्याचार्य ने कहा है। लेकिन लग्न में शुभ ग्रह हों, लग्न बलवान् हो तो मृत्यु नहीं होती, केवल परेशानियाँ होती है।

अन्तर्दशा चेदशुभग्रहाणामेकर्क्षगानां कुरुते सदैव।
गदं विवादं रिपुभूपभीतिं दैन्यं धनस्यापचयं विशेषात्॥84॥

साथ में स्थित दो पापग्रहों की दशान्तर्दशा में रोग विवाद, शत्रुभय, राजभय, धनहानि, दीनता होती है।

अन्तर्दशा चैकगृहस्थितानां सतां निजोच्चर्क्षविवर्जितानाम्।
प्रेष्यं मनुष्यं द्रविणेन हीनं करोति दीनं च विरोधयुक्तम्॥85॥

स्वक्षेत्री या स्वोच्च, मित्रक्षेत्री ग्रहों के अतिरिक्त, एक स्थान में बैठे ग्रहों की दशान्तर्दशा में मनुष्य को धनहीनता, आधीनता, दीनता व विरोध सहना पड़ता है।

जन्मर्क्षनाथो निजलग्ननाथशत्रोर्दशायां मतिविभ्रमं स्यात्।
रिपोर्भयं राज्यपरिच्युतिश्च कलिः खलैः स्याद्बलहीनता च॥86॥

जन्म राशीश व लग्नेश के शत्रु ग्रहों की दशान्तर्दशा में बुद्धि विभ्रम, शत्रुभय, राज्य हानि, दुष्ट लोगों के साथ कलह तथा सामर्थ्यहीनता होती है।

क्रूरराशिस्थितः पापः षष्ठे वा निधनेऽपि वा।
सितेन रविणा दृष्टः स्वपाके मृत्युदो ग्रहः॥87॥

क्रूरग्रह की राशि में स्थित स्वयं पापग्रह 6.8 भावों में सूर्य या शुक्र से दृष्ट हो तो इनकी दशान्तर्दशा में प्रायः मृत्यु होती है।

अन्योन्यमिष्टग्रहयोर्दशायां भुक्तौ शुभं षड्बलशालिनोस्तु।
शत्रुग्रहौ दुर्बलशालिनौ चेत् पाकापहारे तु तयोरनर्थः॥88॥

महादशेश व अन्तर्दशेश दोनों परस्पर मित्र हों व षड्बली हों तो उनकी दशान्तर्दशा में शुभ फल होते हैं। दोनों निर्बल हों व शत्रु भी हों तो विशेष अनर्थ होता है।

प्रवेशे बलवान् खेटः शुभैर्वासन्निरीक्षितः।
सौम्याधिमित्रवर्गस्थोऽरिष्टभंगस्तदा भवेत्॥89॥

दशाप्रवेश के समय महादशेश तथा अन्तर्दशा प्रवेश के समय अन्तर्दशेश यदि बलवान्, शुभयुक्त शुभ दृष्ट, शुभ या अधिमित्र के वर्गों में हो तो दशा का अशुभ व अनिष्ट फल काफी हद तक कम हो जाता है और शुभ फल बढ़ता है।

इति श्री दशाफलदर्पणे पं. सुरेशमिश्रकृते हिन्दीव्याख्याने-
ऽन्तर्दशाध्यायस्त्रयोदशः॥13॥
॥आदितः श्लोकाः 984॥

14
॥ सूर्यान्तर्दशाध्यायः ॥

द्वादशभावस्थ सूर्य में अन्तर्दशाएँ

लग्नगस्थ रवेः पाके भौमार्किशिखिभोगिनाम्।
अन्तर्दशायां दुःखं स्याद् राज्यार्थगृहनाशनम्॥1॥
तेषामगोचरस्थानां दिनेशे तादृशं फलम्।
गोचरस्थे फलं सौख्यं सर्वस्मिन्पाकपाद्ग्रहे॥2॥

लग्नस्थ सूर्य यदि स्वयं शुभभावेश न हो तो उसकी महादशा में मंगल, शनि, राहु, केतु की अन्तर्दशा में दुःख, राज्यहानि, अर्थहानि, जायदाद की हानि होती है।

यदि अन्तर्दशेश 'ओगचरस्थ' हो अर्थात् स्वक्षेत्र, मूलत्रिकोण, स्वोच्च, मित्रक्षेत्र में न हो, तभी उक्त अशुभ फल होता है।

यदि गोचरस्थ हो तो सभी ग्रह अपनी दशान्तर्दशा में शुभ फल करते हैं।

'अगोचर' का स्पष्टीकरण

अस्तगो नीचगो वापि स्वर्क्षमूलविवर्जितः।
षष्ठाष्टमव्ययस्थो वा यः खेटोऽयमगोचरः॥3॥

जो ग्रह अस्तंगत, नीचगत हो, स्वक्षेत्री, मूल त्रिकोणी, स्वोच्च में न हो, महादशेश से या लग्न से 6.8.12 भाव में हो, वह 'अगोचर' कहलाता है। आगेचरस्थ ग्रह सर्वदा अशुभ है, गोचरस्थ ग्रह शुभ है, यह बात सर्वत्र ध्यान रखें।

लग्नस्थ वासरेशस्य दशायामीज्यशुक्रयोः।
शशांकसौम्ययोर्भुक्तौ कृषिगोसुतदारभूः॥4॥

लग्नस्थ सूर्य दशा में गुरु, शुक्र, चन्द्र, बुध की अन्तर्दशा में, यदि वे गोचरस्थ हों तो कृषि, गोधन, स्त्री पुत्रादि का सुख तथा भूमि सुख होता है।

धनस्थवासरेशस्य पापभुक्तौ धनक्षयम्।
वाक्पारुष्यं मनोदुःखं नेत्ररोगो महद्भयम्॥5॥

सौम्यभुक्तौ रवेः पाके धनस्थस्य महत्सुखम्।
विद्यालाभो नृपात्प्रीति वस्त्रवाहनभूषणम्॥6॥

द्वितीयस्थ सूर्य दशा में पापग्रह की अन्तर्दशा हो तो धनहानि, वाणी की कठोरता, मन में उदासी, नेत्ररोग व भय होता है।

शुभ ग्रह की अन्तर्दशा में सुख, विद्या लाभ, राज सम्बन्ध, वस्त्र, वाहन, आभूषण का सुख होता है।

तृतीयस्थ रवेः पाके पापस्यान्तर्दशा यदा।
गोचरस्थे महत्सौख्यं नोचेत्पापफलं वदेत्॥7॥

तृतीयस्थ सूर्य दशा में गोचरस्थ पापग्रह की अन्तर्दशा में बहुत शुभ फल होते हैं। यदि अन्तर्दशेश गोचरस्थ न हो तो अशुभ फल होता है।

तत्रस्थभानुपाके च शुभभुक्तौ महत्सुखम्।
धैर्यं वित्तं सुताप्तिं च समरे जयमाप्नुयात्॥8॥

तृतीय भावस्थ सूर्य की दशा में शुभ ग्रह की भुक्ति हो तो बहुत सुख, धीरता, धन, सुतप्राप्ति व विवाद आदि में विजय होती है।

दिनेशस्य सुखस्थस्य दशायां पापिनां हतौ
मातृनाशो मनोदुःखं चौराग्निनृपपीडनम्॥9॥

चतुर्थस्थ सूर्य की दशा में पापग्रह की अन्तर्दशा होने पर मातृ कष्ट, मानसिक कष्ट, चोर, नृप व अग्नि से पीड़ा होती है।

तत्रस्थस्य शुभे पाके सुखं राज्यार्थसम्पदः।
पुत्रदारादिसौख्यं च वस्त्रमाल्यानुलेपनम्॥10॥

चतुर्थस्थ सूर्य की दशा में शुभ ग्रह की अन्तर्दशा में सुख, राज्य, धन सम्पत्ति, स्त्री पुत्र का सुख वस्त्राभूषण का सुख होता है।

पंचमस्थ रवेः पाके शन्यारशिखिभोगिनाम्।
अन्तर्दशायां पुत्रार्तिश्चौरभूपाग्निपीडनम्॥11॥
शुभ ग्रहाणां भुक्तौ च रवेः पंचमगस्य तु।
परिपाके सुताप्तिश्च राज्यवाहनभूषणम्॥12॥

पंचमस्थ सूर्यदशा में शनि, मंगल, केतु, राहु की अन्तर्दशा हो तो पुत्र कष्ट, विभिन्न कोणों से पीड़ा होती है।

शुभ भुक्ति हो तो सुतप्राप्ति, राज्य लाभ, वाहनादि सुख होता है।

षष्ठस्थ सूर्यदायस्तु पापदः पापिनां हतौ।
ऋणचौराग्निभूपैस्तु भीतिरावश्यकी तथा॥13॥
सौम्यानामपहारे तु भास्करस्यारिगस्य च।
परिपाके सुखं पूर्वं पश्चाद्दुष्टं विनिर्दिशेत्॥14॥

षष्ठस्थ सूर्य दशा में पापग्रह की अन्तर्दशा हो तो पापफल, ऋणवृद्धि, चोरों

व प्राकृतिक विपत्तियों से पीड़ा, आकस्मिक पीड़ा होती है।

शुभ ग्रहों की अन्तर्दशा में पहले सुख तथा बाद में कष्ट होता है।

सप्तमस्थ रवेः पाके शुक्रेज्याब्जविदां हतौ।
दारलाभो मनोत्साहं यानाम्बरविभूषणम्॥15॥
तथाविध रवेः पाके दुःखं स्यात्पापिनां हतौ।
ज्वरातिसारपित्तं च मेहकृच्छ्रारिपीडनम्॥16॥

सप्तमस्थ सूर्य की दशा में चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र की अन्तर्दशा हो तो स्त्री प्राप्ति, मन में उत्साह, वाहन सुख, वस्त्राभूषणों का सुख होता है।

इसी सूर्य में पापग्रह की अन्तर्दशा हो तो ज्वर, दस्त, पित्तरोग, मधुमेह, शत्रुपीड़ा आदि होती है।

अष्टमस्थ रवेः सौम्ये किंचिद्दुःखं शुभाधिकम्।
पापभुक्तौ व्याधिपीडा परप्रेष्यत्वमेव वा॥17॥

अष्टमस्थ सूर्य की दशा में शुभ ग्रह की अन्तर्दशा हो तो थोड़ा कष्ट, शुभ फल अधिक होता है। पाप ग्रह की अन्तर्दशा में व्याधि, दूसरे के दबाव व अधीनता में काम करने के अवसर होते हैं।

शुभे सौम्यहतौ सूर्ये दानयज्ञमहोत्सवम्।
पापे दुःखबाहुल्यं गुरुपित्रादिनाशनम्॥18॥

नवमस्थ सूर्य की दशा में शुभ अन्तर्दशा के दौरान दान, यज्ञ व महान् उत्सव होते हैं तथा पापान्तर्दशा में गुरु या माता-पिता को कष्ट होता है।

कर्मस्थे पापभुक्तौ तु कर्मशोकार्तिपीडनम्।
शुभायां विपुलं राज्यं कीर्तिराचन्द्रतारकम्॥19॥

दशमस्थ सूर्य की दशा में पापन्तर्दशा के अन्तर्गत कार्य में बाधाएँ, शोक व विविध पीड़ा होती है। शुभभुक्ति में राज्यलाभ, अक्षुण्ण कीर्ति मिलती है।

लाभे पापास्य पाके तु वेशे दुःखं ततः सुखम्।
शुभे धनाप्तिः सम्मानोः दारपुत्रनृपात् प्रियम्॥20॥
रवौ रिःफगते पापे भीतिः कोपः विमानता।
शुभे गोभूमिवस्त्रादिमणिविद्रुमभूषणम्॥21॥

एकादशस्थ सूर्य दशा में पापान्तर्दशा में प्रवेश के समय कष्ट, बाद में सुख होता है। शुभ भुक्ति में धन लाभ, सम्मान, स्त्री पुत्र व राजपक्ष का स्नेह प्राप्त होता है।

द्वादशस्थ सूर्य दशा में पापान्तर्दशा हो तो भय, राजकोप से अपमान होता है। शुभ भुक्ति में पशुधन, भूमि, वस्त्राभूषणादि की प्राप्ति होती है।

सूर्य में सूर्यान्तर्दशा

उच्चक्षेत्रगते सूर्ये केन्द्रलाभत्रिकोणगे।
रविदाये स्वभुक्तौ च धनधान्यादि लाभकृत्॥22॥
देहसौख्यं वित्तलाभो राजप्राप्तिकरं शुभम्।
सर्वकार्यार्थसिद्धिः स्याद् विवाहं राजदर्शनम्॥23॥
द्वितीयद्यूननाथे तु ह्यपमृत्युर्भविष्यति।
तद्दोषपरिहारार्थं मृत्युञ्जयजपं चरेत्॥24॥

सूर्य यदि शुभ राशि, शुभ भाव, केन्द्र, लाभ स्थान, त्रिकोण में हो तो उसकी अन्तर्दशा में धन-धान्य का लाभ, शरीर सुख, राज्यलाभ, सर्व कार्य में सफलता, विवाह योग, राजा से भेंट होती है।

सूर्य 2.7 भावेश हो तो कष्ट व दुर्घटना का भय होता है। तब मृत्युंजय जप कराना चाहिए।

पंके रुहेशस्य दशान्तराले यस्तीव्ररश्मिः कुरुते नराणाम्।
सन्मित्रपुत्रद्रविणादिसौख्यं कान्ताविलासं शुभदा दशा चेत्॥25॥

यदि सूर्य शुभ स्थिति में हो तो सूर्य दशा में सूर्यान्तर्दशा के समय उत्तम मित्रों से संयोग, धन सुख, स्त्री सुख होता है।

यदि सूर्य अशुभ भावेश हो तो अशुभ फल होते हैं, यह बात स्वतः सिद्ध है।

सूर्यदशा चन्द्रभुक्ति

सूर्यस्यान्तर्गते चन्द्रे लग्नात्केन्द्रत्रिकोणगे।
विवाहः शुभकार्यं च धनधान्यसमृद्धिकृत्॥26॥
गृहक्षेत्राभिवृद्धिश्च पशुवाहनसम्पदः।
तुंगे वा स्वर्क्षगेवापि दारसौख्यं धनागमम्॥27॥
पुत्रलाभसुखं चैव सौख्यं राज्यसमागमम्।
महाराजप्रसादेन इष्टसिद्धिः सुखावहम्॥28॥

शुभ फलद सूर्य दशा में चन्द्रान्तर्दशा के बीच विवाह, शुभ कार्य, धन-धान्य वृद्धि आदि होती है, यदि चन्द्रमा भी लग्न से केन्द्र त्रिकोण में हो।

जमीन जायदाद की वृद्धि, वाहनों की वृद्धि, पशुधन होता है।

चन्द्रमा यदि स्वोच्च या स्वक्षेत्र में हो तो स्त्री सुख व धन लाभ होता है। पुत्र लाभ, सुख, राज्यप्राप्ति, बड़े समर्थ व्यक्ति की सहायता से इष्टसिद्धि होती है।

क्षीणे वा पापसंयुक्ते दारपुत्रादिपीडनम्।
वैषम्यं जनसंवादे भृत्यवर्गविनाशनम्॥29॥

विरोधं राजकलहं धनधान्यपशुक्षतिः।
षष्ठाष्टमव्यये चन्द्रे जलभीतिः मनोरुजम्॥30॥
बन्धनं रोगपीडा च स्थानविच्युतिकारकः।
धनक्षयं कुत्सितान्नं देहपीडाक्षयं रुजः॥31॥
मूत्रकृच्छ्रादिरोगं च लभते पीडां नृपादितः॥31½॥

यदि चन्द्रमा क्षीण या पापयुक्त हो तो स्त्री पुत्र को पीड़ा, जनसम्पर्क में विरोध या अप्रसन्नता, कर्मचारियों की हानि।

विरोध, राजकीय विवाद, धन-धान्य वाहनादि की हानि होती है। 6.8 में स्थित चन्द्र से जलभय व मनोरोग भी होते हैं।

बन्धन, रोगपीड़ा, स्थानपरिवर्तन, धन हानि, खराब भोजन, शरीरकष्ट रोग, मूत्रदोष, राजकीय कष्ट भी होता है।

दायेशाल्लाभभाग्ये च केन्द्रे वा शुभसंयुते॥32॥
भोगभाग्यादि सन्तोषो दारपुत्रादिवर्धनम्।
राज्यप्राप्तिर्महत्सौख्यं स्थानप्राप्तिं च शाश्वतीम्॥33॥
विवाहं यज्ञदीक्षां च लभते सुखवर्धनम्।
वाहनं पुत्रपौत्रादि महर्घाम्बरभूषणम्॥34॥

महादशेश से केन्द्र, 9.11 भाव में स्थित चन्द्रान्तर्दशा में या शुभयुक्त चन्द्र होने पर, भोग वृद्धि भाग्य वृद्धि, मन में शान्ति, स्त्री पुत्रों की वृद्धि।

राज्य लाभ, बहुत सुख, पद या स्थानप्राप्ति। विवाह, यज्ञादि शुभकार्य, सुखवृद्धि, वाहन, पुत्र पौत्रों का सुख, कीमती वस्त्राभूषणों का उपभोग होता है।

दायेशाद्रिपुरन्ध्रस्थे व्यये व बलवर्जिते।
अकाले भोजनं चैव देशाद् देशं गमिष्यति॥35॥
द्वितीयद्यूननाथे तु ह्यपमृत्युर्भविष्यति।
श्वेतां गां महिषीं दद्याच्छान्तिं कुर्यात्तथैन्दवीम्॥36॥

महादशेश से 6.8.12 में स्थित क्षीण या निर्बल चन्द्र हो तो असमय में भोजन के योग, स्थान-स्थान पर परिभ्रमण होता है।

चन्द्रमा यदि 2.7 भावेश हो तो अपमृत्युभय होता है। तब सफेद गाय या दुधारु भैंस का दान व चन्द्रशान्ति करानी चाहिए।

रिपुजयं च धनस्य समागमं स्वजनसंगतिमंगनीरोगताम्।
वितनुते शुभमंगभृतामसौ रविदशान्तरगा शशिनो दशा॥37॥

होरारत्न में कहा गया है कि सूर्य दशा में शुभ चन्द्र की अन्तर्दशा में रिपुविजय, धनलाभ, स्वजनों से अच्छे सम्बन्ध, स्वस्थ शरीर होता है। यदि चन्द्रमा अशुभ हो तो धनहानि, पराजय, रोगादि होते हैं, यह स्वतः सिद्ध है।

सूर्यदशा मंगलभुक्ति

सूर्यस्यान्तर्गते भौमे स्वोच्चे स्वक्षेत्रलाभगे।
लग्नात्केन्द्रे त्रिकोणे वा शुभकार्यं शुभं फलम्॥38॥
भूलाभं कृषिलाभं च धनधान्यादि वृद्धिकृत्।
गृहक्षेत्रादिलाभं च रक्तवस्त्रादि लाभकृत्॥39॥

मंगल यदि उच्च या स्वक्षेत्र में या लाभ स्थान, केन्द्र त्रिकोण में हो तो शुभकार्य होते हैं। शुभ फल मिलते हैं।

भूमिलाभ, कृषिलाभ, धन-धान्य की वृद्धि, जायदाद प्राप्ति, लाल वस्त्रों की प्राप्ति या लाल वस्त्रों या मंगल के पदार्थों के व्यवसाय में लाभ होता है।

लग्नाधिपेन संयुक्ते सौख्यं राजप्रियं सुखम्।
भाग्यलाभाधिपैर्युक्ते लाभं चैव भविष्यति॥40॥
बहुसेनाधिपत्यं च शत्रुनाशं मनोदृढम्।
आत्मबन्धुसुखं चैव भ्रातृवर्धनकं तथा॥41॥

यदि मंगल लग्नेश से युक्त हो तो सुख, राजा की प्रीति होती है। 9.11 भावेश से युक्त हो तो लाभ होता है तथा शत्रुनाश, सेनापतित्व, अपने बन्धु-बान्धवों का सुख व उनकी वृद्धि होती है।

दायेशाद्रिपुरन्ध्रस्थे पापयुक्ते च वीक्षिते।
आधिपत्यबलैर्हीने क्रूरबुद्धिर्मनोरुजम्॥42॥
सुवस्त्रजपदानं च अनड्वाहं तथैव च।
शान्तिं कुर्वीत विधिवदायुरारोग्यसिद्धिदाम्॥43॥

महादशेश से 6.8 भावों में मंगल हो, पापयुक्त दृष्ट हो या शुभ भावेशत्वादि बल से हीन हो तो क्रूर बुद्धि का उदय, मन में विकृति होती है।

तब अच्छे वस्त्र का दान, जप, सांड छोड़ना, शास्त्रोक्त शान्ति विधिवत् करानी चाहिए। तब आरोग्य व सफलता होती है।

सूर्यदशा राहुभुक्ति

सूर्यस्यान्तर्गते राहौ लग्नात्केन्द्रत्रिकोणगे।
आदौ द्विमासपर्यन्तं धननाशं महद्भयम्॥44॥
चौराहिव्रणभीतिश्च दारपुत्रादिपीडनम्।
तत्फलं शुभमाप्नोति शुभयुक्ते शुभांशके॥45॥
देहारोग्यं मनस्तुष्टिं राजप्रीतिकरं सुखम्।

राहु यदि लग्न से केन्द्र त्रिकोण में हो तथा शुभयुक्त, शुभ नवांश में न हो तो पहले 2 मास तक धन हानि, भय, चोरभय, चोटभय, सर्पभय, स्त्रीपुत्र को पीड़ा होती है।

यदि राहु शुभयुक्त या शुभनवांश में हो तो शरीर सुख, राजप्रीति व सुख होते हैं।

लग्नाद्युपचये राहौ योगकारकसंयुते॥46॥
दायेशाच्छुभराशिस्थे राजसम्मानकीर्तिदः।
भाग्यवृद्धिं यशोलाभं दारपुत्रादिपीडनम्॥47॥
पुत्रोत्सवादिसन्तोषं गृहे कल्याणशोभनम्।

लग्न से 3.6.10.11 भाव में राहु स्थित हो या योगकारक ग्रह से युक्त हो या महादशेश से शुभ स्थानों में हो तो राज-सम्मान, कीर्ति, भाग्यवृद्धि, स्त्री पुत्र को साधारण पीड़ा होती है। घर में पुत्र सम्बन्धी उत्सव, घर में कल्याणकारी बातें होती हैं।

दायेशात्षष्ठरिःफस्थे रन्ध्रे वा बलवर्जिते॥48॥
बन्धनं स्थाननाशं च कारागृहनिवेशनम्।
चौराहिऋणभीतिश्च दारपुत्रादिवर्धनम्॥49॥
चतुष्पाज्जीवनाशं च गृहक्षेत्रादिनाशनम्।
गुल्मक्षयादिरोगश्च ह्यतिसारादिपीडनम्॥50॥

महादशेश से 6.8.12 में राहु हो या स्थितिवशात् निर्बल हो तो बन्धन, स्थानहानि, जेल, चोर सर्पादि से पीड़ा, कर्ज, स्त्री-पुत्रों की वृद्धि होती है।

चौपाये जन्तुओं से जीवन संकट, गृह या जायदाद में हानि, गुल्म, क्षयादि रोग या दस्तों से पीड़ा होती है।

द्विसप्तस्थे तथा राहौ तत्स्थानाधिपसंयुते।
अपमृत्युभयं चैव सर्वभीतिश्च सम्भवेत्॥51॥
दुर्गाजपं च कुर्वीत छागदानं समाचरेत्।
कृष्णां गां महिषीं दद्याच्छान्तिमाप्नोत्यसंशयम्॥52॥

राहु यदि 2.7 भावों में हो या 2.7 भावेश से युक्त हो तो अपमृत्यु का भय या अन्य भय होते हैं।

शान्ति हेतु दुर्गापाठ, बकरी का दान, काली गाय का दान या भैंस का दान करें।

सूर्यदशा : गुरुभुक्ति

सूर्यस्यान्तर्गते जीवे लग्नात्केन्द्रत्रिकोणगे।
स्वोच्चे मित्रर्क्षवर्गस्थे विवाहं राजदर्शनम्॥53॥
धनधान्यादिलाभश्च पुत्रलाभो महत्सुखम्।
महाराजप्रसादेन इष्टकार्यार्थलाभकृत्॥54॥
ब्राह्मणप्रियसम्मानं प्रियवस्त्रादि लाभकृत्।

भाग्यकर्माधिपवशाद् राज्यलाभो महोत्सवम्॥55॥
नरवाहनयोगश्च स्थानाधिक्यं महत्सुखम्।

वृहस्पति यदि लग्न से केन्द्र त्रिकोण में हो या उच्च स्वक्षेत्र में हो या मित्र क्षेत्री हो या इन्हीं के वर्गों में हो तो सम्भव होने पर विवाह, राजा से भेंट।

धन-धान्य का लाभ, पुत्र प्राप्ति, बहुत सुख, महाराज या समर्थ व्यक्ति के सहयोग से अभीष्ट कार्यों की सिद्धि व लाभ।

ब्राह्मणों के प्रिय व्यक्तियों द्वारा सम्मान, उत्तम वस्त्राभूषणों की प्राप्ति होती है।

यदि गुरु 9.10 भावेशों के साथ सम्बन्ध करे या स्वयं 9.10 भावेश हो तो राज्यप्राप्ति, महोत्सव का वातावरण होता है।

अपि च पालकी या ड्राइवर सहित वाहन का सुख, बड़ा पद, बड़ा सुख होता है।

दायेशाच्छुभराशिस्थे भाग्यवृद्धिः शुभावहम्॥56॥
दानधर्मक्रियायुक्तो देवताराधनात्प्रियः।
गुरुभक्तिः मनःसिद्धिः पुण्यकर्मादिसंग्रहम्॥57॥

दशेश से उत्तम भावों में स्थित गुरु हो तो उसकी अन्तर्दशा में भाग्योदय, शुभ फल, दान धर्मादि कार्य, देव पूजन से सम्मान, गुरुभक्ति, मानसिक संकल्पों की सफलता तथा पुण्योदय होता है।

दायेशाद्रिपुरन्ध्रस्थे नीचे वा पापसंयुते।
दारपुत्रादिपीडा च देहपीडामहद्भयम्॥58॥
राजकोपं प्रकुरुते इष्टवस्तुविनाशनम्।
पापमूलाद्धननाशं देहकष्टं मनोरुजः॥59॥
स्वर्णदानं प्रकुर्वीत इष्टजाप्यं च कारयेत्।
गवां कपिलवर्णानां दानेनारोग्यमादिशेत्॥60॥

सूर्य से 6.8 में स्थित हो तो नीचगत पापयुक्त हो तो गुरु अन्तर्दशा में स्त्री-पुत्रादि को पीड़ा, बड़ा भय, राजकोप, अभीष्ट वस्तु की हानि, पापोदय, धन हानि देह कष्ट, मानसिक व्यथा होती है।

तब सोने का दान, इष्ट मन्त्र का (गुरु का) जप, भूरी पीली गायों का दान करें तो शुभ होता है।

सूर्यदशा : शनिभुक्ति

सूर्यास्यान्तर्गते मन्दे लग्नात्केन्द्रत्रिकोणे।
शत्रुनाशोमहत्सौख्यं स्वल्पधान्यार्थलाभकृत्॥61॥
विवाहोत्सवकार्याणि शुभकार्यं शुभावहम्
स्वोच्चे स्वक्षेत्रगे मन्दे सुहृद्ग्रहसमन्विते॥62॥

गृहे कल्याणसम्पत्तिविवाहादिषु सत् क्रियाम्।
राजसम्मानकीर्तीश्च नानावस्त्रधनागमः॥63॥

लग्न से केन्द्र त्रिकोण में शनि हो तो सूर्य दशा में शान्यन्तर में शत्रुनाश, सुख, धान्य में कमी, सामान्य धन लाभ। घर में विवाहादि उत्सव, शुभ कार्य, मंगल वृद्धि होती है।

शनि यदि उच्च या स्वक्षेत्र में हो या मित्र ग्रहों से युक्त हो तो घर में कल्याणकारी बातें होती हैं। उत्सव में सम्मान मिलता है, राज-सम्मान, यश व अनेक तरह से धन व उपहार प्राप्त होते हैं।

दायेशाद्रिपुरन्ध्रस्थे व्यये वा पापसंयुते।
वातशूलमहाव्याधिः ज्वरातीसारपीडनम्॥64॥
बन्धनं कार्यहानिश्च वित्तनाशोमहद्भयम्।
अकस्मात्कलहं चैव दायाद्यजनविग्रहम्॥65॥
भुक्त्यादौ मित्रहानिः स्यान्मध्ये किंचित्सुखावहम्।
अन्ते क्लेशकरं चैव गमनागमनं तथा॥66॥
पितृमातृवियोगश्च नीचैः कलहं तथा।

महादशेश सूर्य से 6.8.12 में शनि हो या पापसंयुक्त हो तो वायुशूल, वातरोग, सन्धियों में पीड़ा, ज्वर, पतले दस्तों से पीड़ा होती है।

बन्धन, कार्य में रुकावट, धनहानि, भय, अचानक कलह, उत्तराधिकार के झगड़े, प्रारम्भ में मित्रहानि, मध्य में थोड़ा सुख, अन्त में क्लेश, व्यर्थ परिभ्रमण, माता-पिता से वियोग तथा दुष्टों से कलह होती है।

द्वितीयद्यूननाथे तु अपमृत्युभयं भवेत्॥67॥
कृष्णां गां महिषीं दद्यात् मृत्युंजयजपं चरेत्।
छागदानं प्रकुर्वीत् सर्वसम्पत्प्रदायकम्॥68॥

यदि शनि 2.7 भावेश भी हो तो अपमृत्यु का भय होता है। तब काली गाय, या भैंस या बकरी का दान करना चाहिए। मृत्युंजय जप भी कराएं। ऐसा करने से सब सुख होते हैं।

सूर्यदशा : बुधभुक्ति

सूर्यस्यान्तर्गते सौम्ये स्वोच्चे वा स्वर्क्षगे ऽपि वा।
केन्द्रत्रिकोणलाभस्थे बुधे वर्गबलैर्युते॥69॥
राज्यलाभोमहोत्साहं दारपुत्रादिसौख्यकृत्।
महाराजप्रसादेन वाहनाम्बरभूषणम्॥70॥
पुण्यतीर्थफलावाप्तिर्गृहेगोधनसंकुलम्।
भाग्यलाभाधिपैर्युक्ते लाभवृद्धिकरो भवेत्॥71॥

स्वक्षेत्र, स्वोच्च, केन्द्र, त्रिकोण, लाभ स्थान में स्थित बुध हो या वर्गों में शुभ हो तो सूर्य दशा बुधान्तर रहने पर राज्यप्राप्ति, मन में उत्साह, स्त्री-पुत्रादिकों का सुख, राजकीय सहयोग से वाहन वस्त्राभूषणों की प्राप्ति, पुण्य लाभ, तीर्थयात्रा का पुण्य, घर में गोधन वृद्धि होती है।

नवमेश व लाभेश से युक्त बुध हो तो लाभ में अच्छी वृद्धि होती है।

भाग्यपंचमकर्मस्थे सम्मानो भवति ध्रुवम्।
स्वकर्मधर्मबुद्धिश्च गुरुदेवद्विजार्चनम्॥72॥
धनधान्यादिसंयुक्तं विवाहः पुत्रसम्भवम्।
दायेशाच्छुभराशिस्थे सौम्यभुक्तौ महात्सुखम्॥73॥
वैवाहिकं यज्ञकर्म दानधर्मजयादिकम्।
स्वनामांकितपद्यानि नामद्वयमथापि वा॥74॥
भोजनाम्बरभूषाप्तिर्नरेशत्वं भवेन्नरे।

5.9.10 भावगत बलवान् बुध हो तो निश्चय से मान-सम्मान मिलता है। धर्म कर्म से बुद्धि, देवों द्विजों का सत्कार, धन-धान्य वृद्धि, विवाहोत्सव, पुत्र जन्म होता है।

सामान्यतः महादशेश से शुभ भावगत बुध की अन्तर्दशा में अच्छे सुखों की प्राप्ति होती है। विवाह, यज्ञ, प्रसिद्धि, प्रशंसा, वस्त्राभूषण की प्राप्ति व राजयोग होता है।

दायेशाद्रिपुरन्ध्रस्थे रिःफगे नीचगेऽपि वा॥75॥
देहपीडामनस्तापो दारपुत्रादिपीडनम्।
भुक्त्यादौ दुःखमाप्नोति मध्ये किंचित्सुखावहम्॥76॥
अन्ते तु राजभीतिश्च गमनागमनं तथा।
द्वितीयद्यूननाथे तु देहजाड्यं ज्वरादिकम्॥77॥
विष्णोर्नामसहस्रं च भोज्यदानं च कारयेत्।
राजतप्रतिमादानं कुर्यादारोग्यमादिशेत्॥78॥

महादशेश से 6.8 भावगत बुध हो, नीचगत हो तो सूर्यदशा बुधान्तर में शरीर कष्ट, मानसिक कष्ट, स्त्री-पुत्रादि को कष्ट होता है।

अन्तर्दशा के आरम्भ में दुःख, मध्य में थोड़ा सुख, अन्त में राजभय व व्यर्थ भ्रमण होता है। यदि बुध 2.7 भावेश हो तो देह में रोग, ज्वरादि प्रकोप होता है।

इसकी शान्ति के लिए विष्णु सहस्र नाम का पाठ, भोज्य वस्तुओं या अन्न का दान, चाँदी की बुधप्रतिमा का दान करने से सुख होता है।

सूर्यदशा : केतुभुक्ति

सूर्यास्यान्तर्गते केतौ देहपीडा मनोव्यथा।
अर्थव्ययं राजकोपः स्वजनादेरुपद्रवः॥79॥

सूर्य दशा में केतु का अन्तर हो तो शरीर कष्ट, मानसिक व्यथा, धन का व्यय, राजकोप, अपने परिजनों में उपद्रव होता है।

लग्नाधिपेन संयुक्ते आदौ सौख्यं धनागमः।
मध्ये तत्क्लेशमाप्नोति मृतवार्तागमो भवेत्॥80॥
षष्ठाष्टमव्यये चैव दायेशात्पापसंयुते।
कपोलदन्तरोगश्च मूत्रकृच्छ्रस्य सम्भवः॥81॥
स्थानविच्युतिरर्थक्षयमित्रहानिः पितुर्मृतिः।
विदेशगमनं चैव शत्रुपीडामहद्भयम्॥82॥

यदि केतु लग्नेश से युक्त हो तो प्रारम्भ में सुख व धनलाभ, मध्य में क्लेश और किसी की मृत्यु का सामाचार मिलता है।

दशेश से 6.8.12 में केतु हो या पापयुक्त हो तो गाल, मुँह, दाँत में रोग, मूत्र रोग, स्थानच्युति, मित्रहानि, पितृशोक, विदेशयात्रा, शत्रुपीड़ा का भय होता है।

लग्नादुपचये केतौ योगकारकसंयुते।
शुभांशे शुभवर्गे च शुभकर्मफलप्रदः॥83॥
पुत्रदारादिसौख्यं च सन्तोषः प्रियवर्धनम्।
विचित्रवस्त्रलाभश्च यशोवृद्धिः सुखावहम्॥84॥
द्वितीयद्यूनभावेतु ह्यपमृत्युफलं भवेत्।
दुर्गाजपं प्रकुर्वीत छागदानं तथैव च॥85॥
महामृत्युञ्जयोजाप्यः कृत्वा शान्तिमवाप्नुयात्।

लग्न से 3.6.10.11 में केतु हो या किसी योगकारक ग्रह से युक्त हो, शुभ नवांश या शुभ वर्गों में हो तो सब शुभ फल होते हैं।

स्त्री-पुत्रादि का सुख, सन्तोष, प्रिय पात्रों की उन्नति, उत्तम वस्त्रलाभ, यशोवृद्धि, सुख होता है।

यदि केतु 2.7 भावों में हो तो अपमृत्यु का भय होता है। तब दुर्गापाठ, बकरीदान महामृत्युंजय जप करने से शान्ति होती है।

रविदशा : शुक्रभुक्ति

सूर्यस्यान्तर्गते शुक्रे त्रिकोणे केन्द्रगेऽपि वा॥86॥
स्वोच्चे मित्रस्ववर्गस्थे हीष्टस्त्रीभोग्यसम्पदाम्॥
ग्रामान्तरप्रयाणं च ब्राह्मणप्रभुदर्शनम्॥87॥
राज्याप्तिश्च महोत्साहः छत्रचामरवैभवम्।
गृहे कल्याणसम्पत्तिर्नित्यं मिष्टान्नभोजनम्॥88॥
विद्रुमादिरत्नलाभो मुक्तावस्त्रादिलाभकृत्।

चतुष्पाज्जीवलाभः स्याद्बहुधान्यधनादिकम्॥89॥
उत्साहः कीर्तिसम्पत्ती नरवाहन सम्पदः।

यदि शुक्र केन्द्र त्रिकोण में हो, स्वोच्च, स्वक्षेत्र में या अच्छे वर्गों में हो तो रवि दशा में शुक्रान्तर में प्रिय स्त्री का सुख, सम्पदा, अन्य बस्ती या कॉलोनी में निवास, ब्राह्मणों व राजा का दर्शन, राज्यलाभ, उत्साह, छत्र चंवर से युक्त वैभव, घर में उन्नति, नित्य उत्तम भोजन, रत्नप्राप्ति उत्तम रत्नजड़ित वस्त्रों का उपहार, चौपाये धन से लाभ, धन-धान्य समृद्धि होती है।

अपि च, मन में उत्साह, कीर्ति, सम्पत्ति उत्तम वाहन का सुख होता है।

षष्ठाष्टमव्यये शुक्रे दायेशाद् बलवर्जिते॥90॥
राजकोपो मनः क्लेशः पुत्रस्त्रीधननाशनम्।
भुक्त्यादौ वाहनं मध्ये लाभः शुभकरो भवेत्॥91॥
अन्ते च यशोहानिः स्थानभ्रंशमथापि वा।
बन्धुद्वेषं मनोजाड्यं स्वकुलाद्भोगनाशनम्॥92॥

दशेश से 6.8.12 में शुक्र हो और बलहीन हो तो राजकोप, व्यथा, पुत्र-स्त्री व धन की हानि, प्रारम्भ में वाहन, मध्य में शुभ लाभ, अन्त में यशोहानि, बदनामी या स्थानच्युति होती है।

अपि च बन्धुओं में द्वेषभाष, अपने परिवार की प्रतिष्ठा व स्थिति में उतार होता है।

भार्गवे द्यूननाथे तु देहपीडा भविष्यति।
रन्ध्ररिःफसमायुक्ते ह्यपमृत्युर्भविष्यति॥93॥
तद्दोषपरिहारार्थं मृत्युञ्जयजपं चरेत्।
श्वेतां गां महिषीं दद्याद्रुद्रजाप्यं च कारयेत्॥94॥

शुक्र सप्तमेश हो तो शरीर कष्ट होता है। 8.12 भाव में हो तो अपमृत्यु का भय होता है। दोष शान्ति के लिए मृत्युंजय व रुद्र का पाठ करें तथा सफेद गाय का दान करें।

इति श्री दशाफलदर्पणे पं. सुरेशमिश्रकृते हिन्दीव्याख्याने
सूर्यान्तर्दशाफलाध्यायश्चतुर्दशः॥14॥
॥आदितः श्लोकाः 1078॥

15
॥ चन्द्रदशान्तर्दशाध्यायः ॥

सामान्य फल

मूर्तिस्थचन्द्रदाये तु शुक्रेज्याब्जविदां हतौ।
देहारोग्यं नृपात्प्रीतिं वाहनाम्बरभूषणम्॥1॥
तथाविधस्य चाब्जस्य परिपाके शुभेतरा।
हृतिः करोति दुःखं च कृषिगोभूमिनाशनम्॥2॥

लग्नस्थ चन्द्र दशा में चन्द्रमा, गुरु, बुध, शुक्र की अन्तर्दशा शरीर सुख, राज्यप्रीति, वाहन, वस्त्राभूषण आदि प्रदान करती है।

उसी चन्द्रमा में पाप ग्रह की अन्तर्दशा हो तो दुःख व्यवसाय हानि, सम्पत्ति बाधा पैदा करती है।

द्वितीयस्थ निशानाथपरिपाके शुभेतरा।
कलत्रपुत्रबन्धूनां नृपाद्भीतिं करोति च॥3॥
सौम्यहृति द्वितीयस्थचन्द्रदाये महत्सुखम्।
भोजनाम्बरपानं च सोत्साहं कुरुते मनः॥4॥

द्वितीयस्थ चन्द्रदशा में पापान्तर्दशा में स्त्रीपुत्र बन्धुओं व राजपक्ष से भय होते हैं।

शुभान्तर्दशा में सुख, वस्त्राभूषण, उत्तम रहन-सहन, मन में उत्साह होता है।

तृतीयस्थ निशानाथपरिपाके महत्सुखम्।
शुभ ग्रहाणां भुक्तौ तु करोति नृपमान्यताम्॥5॥
तथाविधनिशानाथपरिपाके शुभतेरा।
हृतिः करोति वैकल्यं भ्रातृधैर्यविनाशनम्॥6॥

तृतीयस्थ चन्द्रमा की दशा में शुभ ग्रह की अन्तर्दशा के मध्य राजमान्यता होती है तथा पापग्रह की अन्तर्दशा में विकलता, भाई की हानि व मन में बेचैनी होती है।

चतुर्थस्थ निशानाथपरिपाके महासुखम्।
शुभभुक्तौनृपात्प्रीतिर्जायते विविधं सुखम्॥7॥
पापभुक्तौ महत्कष्टं गृहदारार्थनाशनम्।
चौराग्निनृपभीतिश्च तादृगब्जदशान्तरे॥8॥

चतुर्थस्थ चन्द्रमा की दशा में शुभ ग्रह की अन्तर्दशा हो तो राजप्रीति व विविध सुख प्राप्त होते हैं। पापान्तर्दशा में स्त्री पुत्र, जायदाद की हानि, विविध भय पैदा होते हैं।

पंचमस्थनिशानाथपरिपाके महत्सुखम्।
सौम्यभुक्तौ कलत्रार्थपुत्रमित्राम्बराणि च॥9॥
तथाविधनिशानाथदाये पापहृतौ भवेत्।
बुद्धिक्षोभो मनस्तापः पुत्रदारनृपाद्भयम्॥10॥

पंचमस्थ चन्द्रदशा में शुभ भुक्ति में स्त्री, पुत्र, मित्र, धन, वैभव प्राप्त होते हैं। जबकि पापभुक्ति में बुद्धि में क्षोभ, मनस्ताप, परिजनों व राजा से भय होता है।

कृषिनाशऋणाधिक्यं षष्ठस्थितनिशाकरात्।
स्यात्पापिनां हृतौ दुःखं प्रमेहक्षयपाण्डुभिः॥11॥
रिपुस्थयामिनीनाथे सौम्यानां तु यदा हृतिः।
करोति सर्वतो मैत्रीं चौराग्निभयनाशनम्॥12॥

षष्ठस्थ चन्द्रमा की दशा में पापग्रह की अन्तर्दशा रहने पर मधुमेह, क्षयादि रोग, ऋण की अधिकता, व्यवसाय हानि होती है।

शुभ ग्रह की अन्तर्दशा में सब से मैत्री भाव, विविध भयों की निवृत्ति होती है।

कलत्रस्थनिशानाथे यदासौम्याहृतिर्भवेत्।
कलत्रपुत्रसम्पत्तिर्वाहनाम्बरभूषणम् ॥13॥
तथाविधदशानाथात्पापिनां तु यदा हृतिः।
विदेशयानं पुत्रार्थदारबन्धुविनाशनम्॥14॥

सप्तमस्थ चन्द्रमा की दशा में शुभ ग्रह की अन्तर्दशा हो तो स्त्री, पुत्र, सम्पत्ति वैभव होता है। पापान्तर्दशा में विदेशयात्रा, पुत्र, स्त्री, धन, बन्धुओं की हानि होती है।

अष्टमस्थ निशानाथात् पापभुक्तौ महद्भयम्।
मरणं दारपुत्राणां कुत्सितान्नं पराजयः॥15॥
सौम्यभुक्तौ महाकीर्तिं धैर्यवाहनभूषणम्।

अष्टमस्थ चन्द्रमा में पापभुक्ति हो तो भय, स्त्री पुत्रादि की मृत्यु, खराब भोजन, पराजय होती है। शुभ भुक्ति में कीर्ति, धैर्य, वाहन व आभूषणों का सुख होता है।

धर्मस्थनिशानाथाच्छुभभुक्तौ पितुःसुखम्॥16॥
धर्मो यज्ञं विवाहश्च राज्यस्त्रीधनसम्पदः।
पापिनां धर्महानिर्दुःखं राज्यार्थनाशनम्॥17॥

नवमस्थ चन्द्रमा में शुभान्तर्दशा हो तो पिता का सुख, धर्म वृद्धि, यज्ञ, विवाह, राज्य, स्त्री व सम्पत्ति की प्राप्ति होती है।

पापान्तर्दशा में धर्महानि, दुःख, राज्य व धन की हानि होती है।

कर्मस्थचन्द्रदाये तु शुभे दानपरायणाम्।
कुरुते कर्मनिरतं कर्महानिस्तु पापिनाम्॥18॥
अपकीर्तिर्भयं नित्यं भुक्तौ नृणां प्रजायते॥

दशमस्थ चन्द्रमा में शुभ ग्रह की भुक्ति हो तो मनुष्य दानपरायण, कार्य में व्यस्त, यशोभागी होता है। पापान्तर्दशा में अपकीर्ति, भय, कर्महानि होती है।

लाभस्थे चन्द्रगे सौम्ये धनधान्याम्बराणि च॥19॥
वाहनं राज्यलाभश्च करोति विविधं सुखम्।
पापे धान्याक्षिदेहार्तिं धननाशमुपैति च॥20॥

लाभस्थ चन्द्रमा में शुभ अन्तर्दशा रहने पर धन-धान्य का सुख, वाहन, राज्य लाभ, विविध सुख होते हैं। पापान्तर्दशा में धान्यहानि, शरीरकष्ट, नेत्रपीड़ा, धनहानि होती है।

रिःफगे चन्द्रगे सौम्ये वस्त्रमाल्यविभूषणम्।
दारार्थपुत्रमित्राणां वर्धनं वाहनं सुखम्॥21॥
पापभुक्तौ महत्कष्टं शत्रुत्वं चार्थनाशनम्।

द्वादशस्थ चन्द्रमा में शुभ ग्रह की अन्तर्दशा हो तो वस्त्राभूषणों का सुख, स्त्री पुत्रादि का सुख, धन लाभ, वाहनादि होते हैं। पापभुक्ति में बहुत कष्ट, शत्रुता व धनहानि होती है।

चन्द्रदशा : चन्द्रभुक्ति

स्वोच्चे स्वक्षेत्रगे चन्द्रे त्रिकोणे लाभगेऽपि वा॥22॥
भाग्यकर्माधिपैर्युक्ते गजाश्वाम्बरसंकुलम्।
देवतागुरुभक्तिश्च पुण्यश्लोकादिकीर्तनम्॥23॥
राज्यलाभो महत्सौख्यं यशोवृद्धिसुखावहम्।
पूर्णचन्द्रे पूर्णफलं सेनाधीशात्महत्सुखम्॥24॥

चन्द्रमा यदि स्वोच्च, स्वक्षेत्र, त्रिकोण या लाभस्थान में हो, अथवा 9.10 भावेशों से युक्त हो तो हाथी घोड़े आदि उत्तम वाहनों का सुख, देवताओं व गुरुओं में भक्ति, यश प्राप्ति, राज्य लाभ, बहुत सुख, विविध सुख होता है। यदि चन्द्रमा पूर्णबिम्ब वाला हो तो पूरा फल, अन्यथा अनुपात से समझें। अपि च चन्द्र दशा में चन्द्र भुक्ति में सेनापतियों से भी सम्पर्क होने से सुख मिलता है।

पापयुक्तेऽथवाचन्द्रे नीचारिरिःफषष्ठगे।
तत्काले धननाशःस्यात् स्थानच्युतिमथापि वा॥25॥
देहालस्यं मनस्तापः राजमन्त्रिविरोधकृत्।
मातृक्लेशं मनोदुःखं निगडं बन्धुनाशनम्॥26॥
द्वितीयद्यूननाथे तु रन्ध्ररिःफसमन्विते।
देहजाड्यं महाभंगमपमृत्युभयं भवेत्॥27॥
श्वेतां गां महिषीं दद्याद्दानेनारोग्यमाप्नुयात्॥27॥

चन्द्रमा पापयुक्त, नीचगत, तत्कालशत्रुक्षेत्री, 6.8.12 भावगत हो तो तुरन्त धन हानि, स्थानभ्रंश, शरीर में आलस्य, मन्त्रियों से विरोध, माता को कष्ट, मन-स्ताप, कैद, बन्धन, बन्धुहानि होती है।

यदि चन्द्रमा 2.7 भावेश हो तो शरीर में शिथिलता, पराजय, अपमृत्यु का भय होता है। दोष निवारण के लिए सफेद गाय, भैंस का दान करें तो सुख होता है।

चन्द्रदशा : मंगलभुक्ति

चन्द्रस्यान्तर्गते भौमे लग्नात्केन्द्रत्रिकोणगे।
सौभाग्यं राज-सम्मानं वस्त्राभरणभूषणम्॥28॥
यत्नेन कार्य सिद्धिः स्याद् भविष्यति न संशयः।
गृहक्षेत्राभिवृद्धिश्च व्यवहारे जयो भवेत्॥29॥
कार्यावाप्तिर्महत्सौख्यं स्वोच्चे स्वक्षेत्रगे फलम्।

चन्द्रदशा में मंगलान्तर्दशा में, मंगल यदि स्वोच्च या स्वक्षेत्रादि में हो या लग्न से केन्द्र त्रिकोण में हो तो सौभाग्यवृद्धि, राज-सम्मान, वस्त्राभूषणों की प्राप्ति, यत्नपूर्वक कार्यसिद्धि, जायदाद वृद्धि, मुकद्दमे या विवाद में विजय, काम की बहुतायत, सुख होता है।

षष्ठाष्टमव्यये भौमे पापयुक्तेऽथवा यदि॥30॥
दायेशादशुभस्थाने देहार्तिपदवीक्षतिः॥
गृहक्षेत्रादिहानिश्च व्यवहारे तथैव च॥31॥
भृत्यवर्गेषु कलहं भूपालस्य विरोधनम्।
आत्मबन्धुवियोगश्च नित्यं निष्ठुरभाषणम्॥32॥
द्वितीयद्यूननाथे तु रन्ध्रे रन्ध्राधिपो यदि।
तद्दोषपरिहारार्थं ब्राह्मणस्यार्चनं चरेत्॥33॥

मंगल यदि 6.8.12 भाव में हो, पापयुक्त हो, दशेश से अशुभ स्थानों में हो तो शरीर कष्ट, पदहानि, जायदाद की हानि, मकान सम्बन्धी परेशानी, व्यवसाय में परेशानी, नौकरों, कर्मचारियों में कलह, राजा से विरोध, अपने सहायकों-बन्धुओं से वियोग, कठोर भाषण, चिड़चिड़ा स्वभाव होता है।

यदि मंगल 2.7 भावेश हो या अष्टमेश होकर अष्टम में ही बैठा हो तो भी उक्त फल होता है। दोष निवारण के लिए ब्राह्मण का सत्कार करना चाहिए।

चन्द्रदशा : राहुभुक्ति

चन्द्रस्यान्तर्गते राहौ लग्नात्केन्द्रत्रिकोणगे।
आदौ स्वल्पफलं ज्ञेयं शत्रुपीडामहद्भयम्॥34॥
चौराहिराजभीतिश्च चतुष्पाज्जीवपीडनम्।
बन्धुनाशो मित्रहानिर्मानहानिर्मनोव्यथाम्॥35॥

राहु यदि लग्न से केन्द्र त्रिकोण में हो तो चन्द्र दशा राहु भुक्ति के दौरान, शुरू शुरू में थोड़ा शुभ फल तथा बाद में शत्रु पीड़ा, भय, चोरभय, सर्पभय, राजभय, चौपाये जानवरों से भय, बन्धुहानि, मित्रहानि, मानहानि, मानसिक व्यथा होती है।

शुभयुक्ते शुभैर्दृष्टे लग्नादुपचयेऽपि वा।
योगकारकसम्बन्धे यत्र कार्यार्थसिद्धिकृत्॥36॥
दायेशाद् रिपुरन्ध्रस्थे व्यये वा बलवर्जिते।
स्थानभ्रंशं मनोदुःखं पुत्रक्लेशं महद्भयम्॥37॥
राजकार्यकलापं च दारपीडा महद्भयम्।
वृश्चिकादि विषाद्भीतिश्चौराहिनृपपीडनम्॥38॥

यदि राहु शुभयुक्त, शुभ दृष्ट हो या 3.6.10.11 भावों में हो या योगकारक ग्रह से सम्बन्ध करे तो कामों में सफलता मिलती है।

महादशेश से 6.8.12 में निर्बल हो तो स्थानहानि मनोव्यथा, पुत्रकष्ट, भय, सरकारी कामों का दबाव, स्त्रीकष्ट, बिच्छू आदि से भय, सर्पभय, राजभय होता है।

दायेशात्केन्द्रकोणे वा दुश्चिक्ये लाभगेऽपि वा।
पुण्यतीर्थफलावाप्तिर्देवतादर्शनं महत्॥39॥
परोपकारधर्मादि संग्रहं राजदर्शनम्।
द्वितीयद्यूनराशिस्थे देहवाधा भविष्यति॥40॥
छागदानं प्रकुर्वीत देहारोग्यं भविष्यति॥40॥

महादशेश चन्द्रमा से केन्द्र, त्रिकोण, 3.11 भावों में राहु स्थित हो तो उसकी अन्तर्दशा में पुण्यप्राप्ति, तीर्थयात्रा, देवदर्शन, परोपकार भावना, धर्म-कर्म का संग्रह, राजा से भेंट होती है।

यदि राहु 2.7 भावों में स्थित हो तो शरीर कष्ट होता है। तब बकरे का दान करना चाहिए।

चन्द्रदशा : गुरुभुक्ति

चन्द्रस्यान्तर्गते जीवे लग्नात्केन्द्रत्रिकोणगे।
स्वगेहे लाभगे स्वोच्चे राज्यलाभं महोत्सवम्॥41॥
वस्त्रालंकारभूषाप्तिं राजप्रीतिं धनागमम्।
इष्टदेवप्रसादेन गर्भाधानादिकं फलम्॥42॥
पुण्यशोभनकार्याणि गृहे लक्ष्मी कटाक्षकृत्।
राजाश्रयं धनं भूमिगजवाजिसमन्वितम्॥43॥
महाराजप्रसादेन स्वेष्टसिद्धिः सुखावहा।

चन्द्र दशा में गुरु का अन्तर हो और गुरु लग्न से केन्द्र, त्रिकोण में, 11वें भाव में, स्वक्षेत्री या स्वोच्च हो तो राज्यप्राप्ति, घर में उत्सव का माहौल, वस्त्रालंकार व भूषण प्राप्ति, राजाओं से प्रीति, धन लाभ, इष्ट देव की कृपा सन्तानोत्पत्ति के अवसर, घर में पुण्य शुभ कार्य, लक्ष्मी की कृपा, राजा का आश्रय, धन, भूमि, हाथी घोड़े आदि वाहन, समर्थ पुरुष के सहयोग से इष्ट सिद्धि व सुख होता है।

षष्ठाष्टमव्यये जीवे नीचे वास्तंगते यदि॥44॥
पापयुक्ते स्थानभ्रंशः गुरुपुत्रादिनाशनम्।
गृहक्षेत्रादिनाशश्च वाहनाम्बरनाशनम्॥45॥

गुरु यदि 6.8.12 भावों में हो, नीचगत या अस्तंगत, पापयुक्त हो तो स्थान-भ्रंश, गुरुजनों या सन्तान की हानि, जमीन जायदाद की हानि, वाहनादि की हानि होती है।

दायेशात्केन्द्रकोणे वा दुश्चिक्ये लाभगेऽपि वा।
भोजनाम्बरपश्वादिं महोत्साहं करोति च॥46॥
भ्रात्रादि सुखसम्पत्तिं धैर्यं वीर्यपराक्रमम्।
यज्ञकर्मविवादश्च राज्यस्त्रीधनसम्पदः॥47॥

महादशेश चन्द्रमा से केन्द्र, त्रिकोण में, 3.11 भाव में हो तो उत्तम भोजन, पशु धन वृद्धि, मन में उत्साह, भाइयों का सुख, सम्पत्ति, धैर्य, पराक्रम, यज्ञादि कार्य, विवाह, राज्य, स्त्री व धनादि प्राप्त होता है।

दायेशाद् रिपुरन्ध्रस्थे व्यये वा बलवर्जिते।
करोति कुत्सितान्नं च विदेशगमनं तथा॥
भुक्त्यादौ शोभनं प्रोक्तं सर्वसम्पत्प्रदायकम्॥48॥

महादशेश से 6.8.12 भावों में हो या निर्बल हो तो खराब भोजन, विदेश पलायन होता है। अन्तर्दशा के आरम्भ में थोड़ा शुभ फल व सम्पत्ति आदि हो जाया करती है।

चन्द्रदशा : शनिभुक्ति

चन्द्रस्यान्तर्गते मन्दे लग्नात्केन्द्रत्रिकोणगे।
स्वक्षेत्रस्वांशगे चैव मन्दे तुंगांशसंयुते॥49॥
शुभदृष्टियुते वापि लाभे वा बलसंयुते।
पुत्रमित्रार्थसम्पत्तिः शूद्रप्रभुसमागमः॥50॥
व्यवसायात्फलाधिक्यं गृहक्षेत्रादिवृद्धिदः।
पुत्रलाभश्च कल्याणं राजानुग्रहवैभवम्॥51॥

चन्द्रमहादशा में केन्द्रगत, त्रिकोणगत, स्वक्षेत्री, स्वनवांशगत, उच्चनवांशगत, शुभयुक्तदृष्ट, लाभगत, बलवान् शनि की अन्तर्दशा हो तो पुत्र सुख, मित्र सुख, सम्पत्ति, किसी हीनजाति के समर्थ व्यक्ति का सहयोग, व्यवसाय में लाभ, जमीन जायदाद की वृद्धि, पुत्रोत्सव, कल्याण वैभव व राजा की कृपा होती है।

षष्ठाष्टमव्यये मन्दे नीचे वा सूर्यगेऽपिवा।
तद्भुक्तौ पुण्यतीर्थे च पूर्वं भवति जन्मिनाम्॥52॥
ततोऽनेकविधस्त्रासः शस्त्रपीडा भविष्यति।
दायेशात्केन्द्रकोणे षड्बलैः संयुते तथा॥53॥
क्वचित्सौख्यधनाप्तिः स्याद्दारपुत्रविरोधकृत्।
द्वितीयद्यूनरन्ध्रस्थे देहबाधाभविष्यति॥54॥
तद्दोषपरिहारार्थं मृत्युंजयजपं चरेत्।
कृष्णां गां महिषीं दद्याद्दानेनारोग्यमाप्नुयात्॥55॥

शनि यदि 6.8.12 भावों में या अस्तंगत हो या नीचगत हो तो शुरू में पुण्य तीर्थ यात्रा होती है। बाद में अनेक प्रकार के भय, शस्त्रपीड़ा होती है।

महादशेश से केन्द्र त्रिकोण में शनि हो या षड्बल युक्त हो तो फुटकर रूप में धन व सुख होता है। साथ ही परिवार में कलह का वातावरण रहता है।

2.7.8 भावगत शनि हो तो शरीर कष्ट होता है। तब मृत्युंजयजप, काली गाय या भैंस का दान करने से सुख होता है।

चन्द्रदशा : बुधभुक्ति

चन्द्रस्यान्तर्गते सौम्ये केन्द्रलाभत्रिकोणगे।
स्वर्क्षेनवांशके सौम्ये तुंगे वा बलसंयुते॥56॥
धनागमो राजमानः प्रियवस्त्रादिलाभकृत्।
विद्याविनोदसद्गोष्ठिज्ञानवृद्धिसुखावहः ॥57॥
सन्तानप्राप्तिसन्तोषो वाणिज्याद्धनलाभकृत्।
वाहनछत्रसंयुक्तं नानालंकारभूषितम्॥58॥

चन्द्रदशा में बुधान्तर रहने पर, बुध यदि केन्द्र त्रिकोण में हो, लाभभाव में हो, स्वराशि, स्वनवांश, उच्चराशि या नवांश में हो, बली हो तो धनागम, राज-सम्मान, वस्त्राभूषणों की प्राप्ति, विद्यागोष्ठियों में ज्ञानवृद्धि, सुखप्राप्ति, सन्तानप्राप्ति, सन्तोष, व्यापार से धनलाभ, वाहन व प्रतिष्ठा का सुख, अनेक अलंकारों की प्राप्ति होती है।

दायेशात्केन्द्रकोणे वा लाभे वा धनगेऽपिवा।
विवाहयज्ञदीक्षां च दानधर्मशुभादिकम्॥59॥
राजप्रीतिकरं चैव विद्वज्जनसमागमम्।
मुक्तामणिप्रवालानि वाहनाम्बरभूषणम्॥60॥
अरोग्यं प्रीतिसौख्यं च सोमपानादिकं सुखम्।

महादशेश चन्द्रमा से केन्द्र, त्रिकोण में 2.11 में बुध हो तो विवाह, यज्ञ-दीक्षा, दान-धर्म, शुभ-कर्म, राजाओं व बड़े लोगों से सम्पर्क, विद्वानों का समागम, मुक्ता आदि मणियों की प्राप्ति, वाहन वस्त्राभूषण का सुख, उत्तम स्वास्थ्य, अच्छी पानगोष्ठियों का सुख होता है।

दायेशाद्रिपुरन्ध्रस्थे व्यये वा नीचगेऽपि वा॥61॥
तद्भुक्तौ देहबाधा च कृषिगोभूमिनाशनम्॥
कारागृहप्रवेशश्च दारपुत्रादिपीडनम्॥62॥
द्वितीयधूनाथे तु ज्वरपीडामहद्भयम्।
छागदानं प्रकुर्वीत विष्णुसाहस्रकं जपेत्॥63॥

महादशेश चन्द्र से 6.8.12 में स्थित, नीचगत, बुध की अन्तर्दशा में शरीर कष्ट, व्यवसाय, खेती-बाड़ी, जायदाद की हानि, जेलयात्रा, स्त्री पुत्रादि को पीड़ा होती है।

यदि बुध 2.7 भावेश हो तो ज्वरपीड़ादि होती है। शान्ति के लिए विष्णुसहस्रनाम का जप व दुधारू पशु (बकरी) का दान करें।

चन्द्रदशा केतुभुक्ति

चन्द्रस्यान्तर्गते केतौ केन्द्रलाभत्रिकोणगे।
दुश्चिक्ये बलसंयुक्ते धनलाभो महत्सुखम्॥64॥
पुत्रदारादिसौख्यं च कर्मविघ्नं करोति च।
भुक्त्यादौ धनहानिः स्यान्मध्यगे सुखमाप्नुयात्॥65॥
दायेशात्केन्द्रलाभे वा त्रिकोणे बलसंयुते।
क्वचित्फलं दशादौ तु ह्यल्पसौख्यं धनागमम्॥66॥
गोमहिष्यादिलाभं च भुक्त्यन्ते चार्थनाशनम्।

चन्द्रदशा में केतु की भुक्ति हो और केतु लग्न से केन्द्र, त्रिकोण, लाभ,

तृतीय में बली हो तो धनलाभ, सुख, स्त्री पुत्रादि का सुख, कामों में रुकावट, भुक्ति के प्रारम्भ में धनहानि तथा मध्य में सुख होता है।

महादशेश से केतु, त्रिकोण व लाभ में केतु हो तो दशारम्भ में कभी कभी अच्छे फल, थोड़ा सुख, धनागम, पशुधन की प्राप्ति, भुक्ति के अन्त में हानि होती है।

पापयुक्तेऽथवादृष्टे दायेशाद्रन्ध्ररिःफगे॥67॥
हीनशत्रुत्वकर्माणि ह्यकस्मात्कलहं ध्रुवम्।
द्वितीयद्यूनराशिस्थे ह्यनारोग्यं महत्भयम्॥68॥
मृत्युञ्जयं प्रकुर्वीत सर्वसम्पत्प्रदायकम्॥68॥

यदि केतु पापयुक्त दृष्ट हो या महादशेश से 8.12 भावों में हो तो छोटे-छोटे मनमुटाव या घटिया लोगों के साथ शत्रुता, कलह होती है।

2.7 भावों में केतु हो तो शरीर में रोग, भय होता है। शान्ति हेतु मृत्युंजय जप करें तो सब तरह से सुख होता है।

चन्द्रदशा : शुक्रभुक्ति

चन्द्रस्यान्तर्गते शुक्रे केन्द्रलाभत्रिकोणगे।
स्वोच्चे स्वक्षेत्रगे वापि राज्यलाभं करोति च॥69॥
महाराजप्रसादेन वाहनाम्बरभूषणम्।
चतुष्पाज्जीवलाभः स्याद् दारपुत्रादिवर्धनम्॥70॥
नूतनगृहनिर्माणं नित्यं मिष्टान्नभोजनम्।
सुगन्धपुष्पदायादि रम्यस्त्र्यारोग्यसम्पदः॥71॥

चन्द्रदशा में शुक्र भुक्ति होने पर, शुक्र लग्न से 1.4.5.7.9.10 भावों में या स्वक्षेत्री स्वोच्च में हो तो राजप्राप्ति, समर्थ व्यक्ति के सहयोग से वाहन व भौतिक सुख, चौपाये धन की वृद्धि, स्त्री पुत्रादि की वृद्धि, नये घर का निर्माण, उत्तम भोजन, गन्धपुष्पादि का, रमणीय स्त्री का सुख तथा अच्छा स्वास्थ्य सम्पत्ति होती है।

दशाधिपेन संयुक्ते देहसौख्यं महासुखम्।
सत्कीर्तिः सुखसम्पत्तिगृहक्षेत्रादिवृद्धिकृत्॥72॥

चन्द्रमा व शुक्र साथ स्थित हों तो चन्द्रदशा शुक्र भुक्ति में शरीर सुख, भौतिक सुख, सत्कीर्ति, सुख-सम्पत्ति जायदाद की वृद्धि होती है।

नीचे वास्तंगते शुक्रे पापग्रहयुतेक्षिते।
भूनाशोपुत्रमित्रादिनाशनं पत्निनाशनम्॥73॥
चतुष्पाज्जीवहानिः स्याद् राजद्वारे विरोधकृत्।

शुक्र यदि नीच, अस्त, पापयुक्त-दृष्ट हो तो भूमि की हानि, पुत्रों मित्रों व

पत्नी की हानि, चौपाये धन में कमी, सरकारी वाद-विवाद होते हैं।

धनस्थानगते शुक्रे स्वोच्चे स्वक्षेत्रसंयुते॥74॥
निधिलाभो महत्सौख्यं भूलाभः पुत्रसम्भवः।
भाग्यलाभाधिपैर्युक्ते भाग्यवृद्धिकरो भवेत्॥75॥
महाराजप्रसादेन इष्टसिद्धिः सुखावहम्।
देवब्राह्मणभक्तिश्च मुक्ताविद्रुमलाभकृत्॥76॥

यदि शुक्र उच्च या स्वक्षेत्र में धन स्थान में हो तो बहुत धन, सुख, जायदाद वृद्धि, पुत्रप्राप्ति होती है। 9.11 भावेश से युक्त हो तो भाग्यवृद्धि होती है। समर्थ व्यक्ति के सहयोग से मनोरथ सिद्धि, सुख, देवों व ब्राह्मणों का सत्कार, मोतियों आदि मणियों की प्राप्ति होती है।

दायेशाल्लाभगे शुक्रे त्रिकोणे केन्द्रगेऽपि वा।
गृहक्षेत्राभिवृद्धिश्च वित्तलाभो महत्सुखम्॥77॥
दायेशाद् रिपुरन्ध्रस्थे व्यये वा पापसंयुते।
विदेशवासो दुःखार्तिर्मृत्युश्चौराहिपीडनम्॥78॥
द्वितीयद्यूननाथे तु ह्यमृत्युभयं भवेत्।
तद्दोषनिवृत्त्यर्थं रुद्रजाप्यं च कारयेत्॥
श्वेतां गां रजतं दद्याच्छान्तिमाप्नोत्यसंशयम्॥79॥

चन्द्रदशा में लाभगत, केन्द्र त्रिकोणगत, शुक्र की अन्तर्दशा हो तो जमीन जायदाद की वृद्धि, धनलाभ बहुत सुख होता है।

महादशेश से 6.8.12 में स्थित या पापयुक्त दृष्ट शुक्र की अन्तर्दशा में विदेशवास, दुःख, पीड़ा, मृत्युभय, चोरों व सर्प से भय होता है।

दोषशान्ति हेतु रुद्रपाठ, अभिषेक, सफेद गाय, चाँदी का दान करें।

चन्द्रदशा : सूर्यभुक्ति

चन्द्रस्यान्तर्गते सूर्ये स्वोच्चे स्वक्षेत्रसंयुते।
केन्द्रत्रिकोणे लाभे वा धने वा सोदरे बली॥80॥
नष्टराज्यधनप्राप्तिगृहे कल्याणवर्धनम्।
मित्रराज्यप्रसादेन ग्रामभूम्यादिलाभकृत्॥81॥
गर्भाधानफलप्राप्तिर्गृहे लक्ष्मीकटाक्षकृत्।
भुक्त्यन्ते देहालस्यं ज्वरपीडा भविष्यति॥82॥

सूर्य यदि स्वोच्च, स्वक्षेत्र में हो, केन्द्र, त्रिकोण, 2.3.11 में बलवान् हो तो नष्ट राज्य व धन की प्राप्ति, घर में समृद्धि मित्रों व राजा के सहयोग से मुख्यता, ग्रामाधिपत्य व भूमि आदि का लाभ होता है। सन्तान जन्म, लक्ष्मीवृद्धि भी होती है। अन्त में शरीर में आलस्य, ज्वरादि पीड़ा होती है।

दायेशाद्रिपुरन्ध्रस्थे व्यये वा पापसंयुते।
नृपचौरादिभीतिश्च ज्वररोगादिसम्भवम्॥83॥
विदेशगमनं चार्तिं लभते नात्र संशयः।
द्वितीयद्यूननाथे तु ज्वरपीडा भविष्यति॥
तद्दोषपरिहारार्थं शिवपूजां च कारयेत्॥84॥
आदौ भावफलं मध्ये राशिस्थानफलं विदुः।
पाकावसानसमये चांगजं दृष्टिजं फलम्॥85॥

महादशेश से 6.8.12 में सूर्य हो, पापयुक्त हो तो राजादि से भय, ज्वर रोग, विदेश पलायन, कष्ट होते हैं।

2.7 भावेश सूर्य हो तो शरीर कष्ट होता है। दोषशान्ति के लिए शिव-पूजा करनी चाहिए। दशान्तर्दशा का स्वामी शुरू में भाव फल, मध्य में राशि स्थिति का फल तथा अन्त में दृष्टि तथा अस्तंगत या छोटे बड़े बिम्ब का फल देता है।

॥इति श्री दशाफलदर्पणे पं. सुरेशमिश्रकृते हिन्दीव्याख्याने
चन्द्रदशान्तर्दशाफलाध्यायः पंचदशः॥15॥
॥आदितः श्लोकाः॥1163॥

16

॥ भौमान्तर्दशाध्यायः ॥

सामान्य फल

लग्नस्थितधरासूनोः परिपाके व्रणक्षतम्।
पापभुक्तौ महत्कष्टमजीर्णादेर्महद्भयम्॥1॥
शुभभुक्तौ नृपात्प्रीतिं भ्रातृवर्गभवं सुखम्।
तथाविधधरासूनोर्दशायां क्षेत्रवाहनम्॥2॥

लग्नस्थ मंगल दशा में पापग्रह की भुक्ति हो तो चोट, घाव, कष्ट, अपच व भय आदि होते हैं। शुभभुक्ति में राजपक्ष से सहयोग, स्नेह, भाइयों का सुख, वाहन व जायदाद होती है।

द्वितीयस्थधरासूनोः परिपाकेऽशुभाहृतिः।
पूर्ववित्तविनाशं च राजकोपं ज्वराग्निभीः॥3॥
तृतीयस्थे पापभुक्तौ भ्रातृवर्गविनाशनम्।
मनोवैकल्यमाप्नोति शुभे भूषणवाहनम्॥4॥
भोजनाम्बरसौख्यं च नृणां सर्वं प्रजायते।

द्वितीयस्थ मंगल दशा में पापभुक्ति हो तो संचित धन की हानि, राजकोप, अग्निभय, रोगभय होता है।

तृतीयस्थ मंगल में पापभुक्ति हो तो भाइयों को कष्ट, मन में अधीरता तथा शुभ भुक्ति हो तो भूषण, वाहन, अच्छा रहन-सहन होता है।

हिबुकस्थधरासूनोः पाके सौम्यहृतिर्यदा॥5॥
भोजनाम्बरसौख्यं च कृषिभूषणवाहनम्।
क्षेत्राम्बरसुखावाप्तिः क्रूरभुक्तौ महद्भयम्॥6॥
गृहक्षेत्रविनाशश्च नृपचौराग्निपीडनम्।

चतुर्थस्थ मंगल की दशा में शुभ ग्रह की अन्तर्दशा हो तो भोजन वस्त्रादि का अच्छा सुख, व्यवसाय वृद्धि, वाहन सुख, जायदाद का सुख होता है।

पापभुक्ति में भय, मकान जायदाद की हानि, विभिन्न प्रकार से पीड़ा होती है।

पंचमस्थ धरासूनोर्पाके पापहतिर्यदा॥7॥
कृषिगोधनधान्यार्थसुतदारविनाशनम् ।
शुभभुक्तौ सुताप्तिं च मानं मन्त्रं च शोभनम्॥8॥
षष्ठात्पापे स्फोटकादि प्रमेहक्षयमादिशेत् ।
रिपुस्थात्सौम्यभुक्तौ च राजमैत्रीं मनोव्यथा॥9॥
बन्धुनाशं ततो नृणां पश्चात्सौख्यमादिशेत् ।

पंचमस्थ मंगल की दशा में पापान्तर्दशा में कृषि, पशु धन, व्यवसाय, धन, स्त्री, पुत्रादि की हानि होती है।

शुभभुक्ति में पुत्र प्राप्ति, मन्त्र प्राप्ति तथा शुभ फल होते हैं।

षष्ठस्थ मंगल दशा में पापान्तर्दशा होने पर फोड़े, फुंसी, प्रमेह, क्षयरोग तथा शुभ भुक्ति में राजा से मैत्री बन्धु हानि, पश्चात् सुख होता है।

कलत्रस्थ कुजात्पापभुक्तौ स्त्रीसुतराजभीः॥10॥
शुभभुक्तौ महासौख्यं नृपवाहनभूषणम् ।
अष्टमस्थ कुजाद्भुक्तौ पापिनां मरणं तथा॥11॥
सौम्यभुक्तौ महत्सौख्यं कृषिगोनृपपूजनम् ।

सप्तमस्थ मंगल दशा में पापभुक्ति रहने पर स्त्रीकष्ट, पुत्रपीड़ा, राजभय तथा शुभ भुक्ति में खूब सुख, राजकीय वाहन व उपाधि आदि मिलती है।

अष्टमगत मंगल में पापभुक्ति हो तो मृत्यु तथा कष्ट, शुभ भुक्ति में सुख, सम्पदा, वाहन व मान वृद्धि होती है।

नवमस्थधरासूनोः पापभुक्तौ मनोव्यथा॥12॥
पित्रोर्नाशं गुरोर्नाशं धर्महानिश्च संभ्रमम् ।
सौम्यभुक्तौ विवाहं च तथा गोधनसम्पदः॥13॥
विवाहं यज्ञदीक्षां च देवभूसुरतर्पणम् ।
खेगतस्यधरासूनोर्दुःखं स्यात्पापिनां हतौ॥14॥
विदेशयानं दुष्कीर्तिं लभते च पराजयम् ।

नवमस्थ मंगल दशा में पापान्तर्दशा होने पर मनोव्यथा, माता-पिता या गुरु को कष्ट, धर्महानि, तथा मन में हड़बड़ी होती है।

शुभान्तर्दशा में विवाहादि व धन सम्पत्तियाँ होती हैं।

दशमस्थ मंगल दशा में शुभ भुक्ति हो तो भी विवाह, यज्ञदीक्षा, देवों व ब्राह्मणों का सत्कार होता है। पाप भुक्ति में दुःख, विदेश पलायन, अपकीर्ति, पराजय होती हैं।

लाभस्थपापभुक्तौ च गन्धमाल्यविभूषणम्॥15॥
करोति विपुलं राज्यं शुभभुक्तौ महत्सुखम् ।

द्वादशस्थधरासूनोः पाके पापहतिर्यदा॥16॥
करोति दुःखबाहुल्यं कारागृहनिवेशनम्।
शुभापहारे सौख्यं च पानाम्बरविभूषणम्॥
भुक्त्यन्ते राजकोपं च पदभ्रंशं मनोरुजम्॥17॥

लाभस्थ मंगल में पापान्तर्दशा हो तो उत्तम सुखभोग, राज्यप्राप्ति होती है। शुभ भुक्ति हो तो भी उत्तम सुख मिलते हैं।

द्वादशस्थ मंगल की दशा में पापान्तर्दशा हो तो दुःखों दी अधिकता, जेल भय होता है। शुभभुक्ति हो तो सुख, खान-पान का वैभव तथा अन्त में मनोव्यथा, पदावनति होती है।

मंगलदशा : मंगलभुक्ति

कुजस्यान्तर्गते भौमे लग्नात्केन्द्रत्रिकोणगे।
लाभे वा धनसंयुक्ते दुश्चिक्ये बलसंयुते॥18॥
लग्नाधिपेन संयुक्ते राजानुग्रहवैभवम्।
लक्ष्मीकटाक्षचिह्नानि नष्टराज्यार्थलाभकृत्॥19॥
पुत्रोत्सवादिसन्तोषं गृहेगोक्षीरसंकुलम्।
स्वोच्चे वा स्वर्क्षगे भौमे स्वांशे वा बलसंयुते॥20॥
गृहक्षेत्राभिवृद्धिश्च गोमहिष्यादि लाभकृत्।
महाराजप्रसादेन इष्टसिद्धि सुखावहम्॥21॥

मंगलदशा में मंगल की भुक्ति होने पर मंगल यदि लग्न से 1.2.3.4.5.7. 10.11 भावों में हो या लग्नेश से युक्त हो तो वैभव, ऐश्वर्य, लक्ष्मी की बहुतायत, नष्ट अधिकार की प्राप्ति, घर में दूध की अधिकता होती है।

यदि वैसा मंगल उच्च, स्वक्षेत्र, स्वनवांश में हो या षड्बली हो तो जायदाद की वृद्धि, पशुधन वृद्धि, समर्थ लोगों का सहयोग तथा मनोरथ सिद्धि होती है।

षष्ठाष्टमव्यये भौमे पापदृग्योगसंयुते।
मूत्रकृच्छ्रादिरोगश्च कष्टाधिक्यं व्रणाद्भयम्॥22॥
चौराहिराजपीडा च धनधान्यपशुक्षयः।
द्वितीयद्यूननाथे तु देहजाड्यं मनोरुजः॥23॥
रुद्रजाप्यमनड्वाहं प्रदद्याच्च निवृत्तये।
आरोग्यं कुरुते पश्चात् सर्वसम्पत् प्रदायकः॥24॥

मंगल यदि 6.8.12 में हो या पापयुक्त दृष्ट हो तो मूत्ररोग, चोटभय, कष्ट, सर्पादि से पीड़ा धन-धान्य की हानि होती है।

यदि मंगल 2.7 भावेश हो तो शरीर कष्ट होता है। शान्ति के लिए रुद्रपाठ तथा साँड छोड़ना चाहिए। तब सब सुख मिलते हैं।

मंगलदशा : राहुभुक्ति

कुजस्यान्तर्गते राहौ स्वोच्चे मूलत्रिकोणगे।
शुभयुक्ते शुभैर्दृष्टे केन्द्रलाभत्रिकोणगे॥25॥
तत्काले राजसम्मानं गृहभूम्यादिलाभकृत्।
कलत्रपुत्रलाभः स्याद् व्यवसायात्फलाधिकम्॥25A॥
गंगास्नानफलावाप्तिर्विदेशगमनं तथा।

मंगल में राहु भुक्ति होने पर, राहु यदि उच्च या मूलत्रिकोणादि में हो या केन्द्र, त्रिकोण व लाभस्थान में हो तो तत्काल राजामन्यता, जमीन जायदाद का लाभ होता है।

स्त्रीपुत्रादि का सुख, व्यवसाय वृद्धि, गंगास्नान का फल, विदेशयात्रा होती है।

षष्ठाष्टमव्यये राहौ पापयुक्तेऽथवीक्षिते॥26॥
चौराहिव्रणभीतिश्च चतुष्पाज्जीवनाशनम्॥
वातपित्तक्षयं चैव कारागृहनिवेशनम्॥27॥
धनस्थानगते राहौ धनार्तिं कुरुते भयम्।
द्वितीये सप्तमे वापि ह्यपमृत्युभयं भवेत्॥28॥
नागदानं प्रकुर्वीत देवब्राह्मणभोजनम्।
मृत्युंजयजपं कुर्यादायुरारोग्यमाप्नुयात्॥29॥

राहु यदि 6.8.12 भावों में हो या पापयुक्त दृष्ट हो तो चोर, सर्प से भय, चोट भय, चौपाये पशुओं की हानि या चौपाये पशु से भय, वात पित्त रोग, जेल होती है।

द्वितीयस्थ राहु से धननाश भय होता है। अपि च 2.7 भावों में राहु हो तो अपमृत्युभय भी होता है। वैसा होने पर नागमूर्ति का दान, देव ब्राह्मण भोजन, मृत्युंजयजप करने से सुख होता है।

मंगलदशा : गुरुभुक्ति

कुजस्यान्तर्गते जीवे त्रिकोणे केन्द्रगेऽपि वा।
लाभे वा धनसंयुक्ते तुंगांशे स्वांशगेऽपि वा॥30॥
सत्कीर्तीराजसम्मानं धनधान्यसमृद्धिकृत्।
गृहे कल्याणसम्पत्तिदारपुत्रादिलाभकृत्॥31॥

मंगल में गुरु भुक्ति हो तो गुरु केन्द्र, त्रिकोण, 2.11 भावों में हो, या स्वांश या उच्चांश में हो तो सत्कीर्ति, राजमान, धन-धान्य वृद्धि होती है। घर में मंगलमय बातें, स्त्री पुत्रों का सुख होता है।

दायेशात्केन्द्रराशिस्थे त्रिकोणे लाभगेऽपि वा।
भाग्यकर्माधिपैर्युक्ते वाहनाधिपसंयुते॥32॥

लग्नाधिपसमायुक्ते शुभांशे शुभवर्गगे।
गृहक्षेत्राभिवृद्धिश्च गृहे कल्याणसम्पदा॥33॥
देहारोग्यं महत्कीर्तिं गृहे गोकुलसंकुलम्।
चतुष्पाज्जीवलाभः स्याद् व्यवसायात्फलाधिकम्॥34॥
कलत्रपुत्रविभवं राजसम्मानमेव च।

महादशेश मंगल से केन्द्र त्रिकोण या लाभ में गुरु हो या 9.10 भावेशों से युक्त हो या 1.4 भावेशों से युक्त हो, या शुभ नवांश में हो, या शुभवर्गों में हो तो जायदाद वृद्धि, घर में सम्पत्ति व मंगल, शरीर सुख, कीर्ति, गोधन समृद्धि, चौपाये पशुओं से लाभ, व्यवसाय में वृद्धि, स्त्री व पुत्रों का वैभव तथा राज-सम्मान होता है।

षष्ठाष्टमव्यये जीवे नीचे वास्तंगते यदि॥35॥
पापग्रहेणसंयुक्ते दृष्टे वा दुर्बले यदि।
चौराहिनृपभीतिश्च पित्तरोगादिसम्भवम्॥36॥
प्रेतबाधा भृत्यनाशः सोदराणां विनाशनम्।
द्वितीयधूनाथेतु ह्यपमृत्युर्ज्वरादिकम्॥
तद्दोषपरिहरार्थं शिवसाहस्रकं जपेत्॥37॥

वृहस्पति 6.8.12 भावों में हो या नीचगत, अस्तंगत हो या पापयुक्त दृष्ट हो या निर्बल हो तो विभिन्न प्रकार के भय, पित्तरोग, प्रेतबाधा, कर्मचारियों की कमी, भाइयों की हानि होती है।

गुरु यदि 2.7 भावेश हो तो ज्वर व अपमृत्यु का भय होता है। दोषशान्ति के लिए शिव सहस्रनाम या सहस्ररुद्राभिषेक करें।

मंगलदशा : शनिभुक्ति

कुजस्यान्तर्गते मन्दे स्वर्क्षे केन्द्रत्रिकोणगे।
मूलत्रिकोणे स्वोच्चे वा तुंगांशे स्वांशगेऽपि वा॥38॥
लग्नाधिपयुते वापि शुभदृष्टियुते बले।
राजसौख्यं यशोवृद्धिः स्वग्रामे धान्यवृद्धिकृत्॥39॥
पुत्रपौत्रसमायुक्तो गृहे गोधनसंग्रहः।
स्ववारे राजसम्मानं स्वमासे पुत्रवृद्धिकृत्॥40॥

मंगलदशा में शनि की अन्तर्दशा होने पर, शनि यदि स्वोच्च, स्वराशि, स्वांश या उच्चांश में हो या शुभ राशि में केन्द्र त्रिकोण में गया हो या मूल त्रिकोणी हो या लग्नेश से युक्त हो, या शुभयुक्त दृष्ट हो और बली हो तो राज्य का सुख, अपने क्षेत्र में यशोवृद्धि, धान्य वृद्धि, पुत्रों पौत्रों का सुख, घर में धन-धान्य वृद्धि। शनिवार को विशेष मान-सम्मान, शनिवार से शुरू होने वाले मास में घर

में सन्तानोत्पत्ति या सन्तान की उन्नति होती है।

नीचादिक्षेत्रगे मन्दे षष्ठाष्टव्ययराशिगे।
म्लेच्छवर्गप्रभोर्भीतिः धनधान्यादिनाशनम्॥41॥
निगडैर्बन्धनं रोगमन्ते क्षेत्रविनाशकृत्।
द्वितीयद्यूननाथे तु पापयुक्ते महद्भयम्॥42॥
धननाशं च संचारं राजद्वेषमकारणम्।
सहोदरविनाशश्च पुत्रदारादिपीडनम्॥43॥
बन्धुद्वेषकरं चैव जीवहानिश्च जायते।
कारागृहादिभीतिश्च राजदण्डाद् भवेद् भयम्॥44॥
अकस्मान्मरणं पुत्रदारवर्गादिपीडनम्।

शनि नीचगत हो या 6.8.12 भावों में हो तो हीनवर्ण के राजा से भय, धन-धान्य की हानि, हथकड़ी या अन्य बन्धन, रोग, जायदाद की हानि होती है।

शनि 2.7 भावेश हो और पापयुक्त भी हो तो भय, धननाश, व्यर्थ भ्रमण, राजा से द्वेष भाव, भाइयों की हानि, स्त्री पुत्रादि की पीड़ा, बन्धुओं से द्वेष, जीवों की हानि, कारागृह का भय, राजदण्ड, अचानक मृत्यु का भय होता है।

दायेशात्केन्द्रराशिस्थे लाभस्थे वा त्रिकोणगे॥45॥
विदेशयानं लभते दुष्कीर्तिं विविधानि च।
पापकर्मरतो नित्यं बहुजीवादिहिंसकः॥46॥
क्रयविक्रयहानिश्च स्थानभ्रंशं मनोव्यथा।
युद्धेष्वजयं चैव मूत्रकृच्छ्रान्महद्भयम्॥47॥

महादशेश मंगल से केन्द्र, त्रिकोण या लाभ स्थान में शनि हो तो विदेश पलायन, अपकीर्ति, पापकर्म में रति, जीवहिंसा, खरीद बेच में हानि, स्थानभ्रंश, मनोव्यथा, युद्ध में पराजय, मूत्र रागे से पीड़ा होती है।

दायेशात्षष्ठरन्ध्रे वा व्यये वा पापसंयुते।
तद्भुक्तौ मरणं ज्ञेयं नृपचौराग्निपीड़नम्॥48॥
वातपीडा च शूलादिज्ञातिशत्रुभयं भवेत्।
द्वितीयद्यूननाथे वा ह्यपमृत्युभयं भवेत्॥49॥
तद्दोषपरिहारार्थं मृत्युञ्जयजपं चरेत्।
कृत्वा शान्तिविधिं सर्वमायुरारोग्यमाप्नुयात्॥50॥

महादशेश मंगल से पापयुक्त हो 6.8.12 में हो या कहीं भी पापयुक्त हो तो शनि की अन्तर्दशा में मृत्यु, विविध पीड़ाएँ, वातरोग, शूल रोग, निकटवर्ती जनों से शत्रुता, होती है।

यदि शनि 2.7 भावेश हो तो अपमृत्यु भय सम्भव होता है। तब मृत्युंजय जप करने से आयु व आरोग्य की सुरक्षा रहती है।

मंगलदशा : बुधभुक्ति

कुजस्यान्तर्गते सौम्ये लग्नात्केन्द्रत्रिकोणगे।
सत्कथाश्च जपोदानं धर्मबुद्धिर्महद्यशः॥51॥
नीतिमार्गप्रसंगश्च नित्यं मिष्टान्नभोजनम्।
वाहनाम्बरपश्वादि राजकर्मसुखानि च॥52॥
कृषिकर्मफलं सिद्धिर्वारिणाम्बरभूषणम्।

मंगल दशा में बुधान्तर्दशा के दौरान, बुध यदि लग्न से केन्द्र त्रिकोण में हो तो उत्तम बातें, कथा-वार्ता, जप-दान, धार्मिक बुद्धि, यश, नीति-सम्मत आचरण, उत्तम भोजन, वाहन, वस्त्रादि का सुख, राजकीय कार्यों का सुख, व्यवसाय में वृद्धि आदि होती है।

नीचे वास्तंगते वापि षष्ठाष्टव्ययगेऽपि वा॥53॥
हृद्रोगं मानहानिश्च निगडं बन्धुनाशनम्।
दारपुत्रार्थनाशः स्याच्चतुष्पाज्जीवनाशनम्॥54॥
दशाधिपेनसंयुक्ते शत्रुवृद्धिर्महद्भयम्।
विदेशगमनं चैव नानारोगस्तथैव च॥55॥
राजद्वारे विरोधः स्यात्कलहं सौम्यभुक्तिषु।

बुध यदि नीचास्तंगत हो, 6.8.12 में हो तो हृदयरोग, मानहानि, बन्धन, बन्धुहानि, स्त्री, पुत्रों व धन की हानि, चौपाये पशुओं से भय होता है।

यदि मंगल व वैसा बुध साथ हों तो शत्रु बढ़ जाते हैं तथा भय होता है। विदेशगमन, अनेक रोग, राजद्वार, कचहरी में विरोध, कलह होती है।

दायेशात्केन्द्रकोणे वा स्वोच्चे युक्तार्थलाभकृत्॥56॥
अनेकधननाथत्वं राजसम्मानमेव च।
भूपालयोगं कुरुते धनाम्बरविभूषणम्॥57॥
भूरिवाद्यमृदंगादि सेनापत्यं महत्सुखम्।
विद्याविनोदविमला वस्त्रवाहनभूषणम्॥58॥
दारपुत्रादिविभवं गृहे लक्ष्मी कटाक्षकृत्।

महादशेश मंगल से बुध यदि केन्द्र त्रिकोण में हो या स्वोच्च स्वक्षेत्र में हो तो लाभकरक, बहुत धनयोग, राज-सम्मान, राजयोग, धनवाहन, आभूषण प्राप्ति, सेनाधिपतित्व, सुख, उत्तम गीत वाद्यों का सुख, अच्छी विद्या, स्त्री-पुत्रों का सुख, वैभव, घर में लक्ष्मी जी कृपा होती है।

दायेशात्षष्ठरिःफस्थे रन्ध्रे वा पापसंयुते॥59॥
तद्दाये मानहानिः स्याद्क्रूरबुद्धिस्तु क्रूरवाक्।
चौराग्निनृपपीडा च मार्गे चौरभयादिकम्॥60॥

अकस्मात्कलहश्चैव बुधभुक्तौ न संशयः।
द्वितीयद्यूननाथे तु महाव्याधिभयंकरम्॥61॥
तद्दोषपरिहारार्थं विष्णुसाहस्रकं जपेत्।
सर्वसम्पत्प्रदं सौख्यं सर्वारिष्टप्रशान्तिदम्॥62॥

महादशेश से 6.8.12 में या पापयुक्त हो तो बुधान्तर्दशा में मानहानि, बुद्धि में क्रूरता, क्रूर भाषण, विविध पीड़ाएँ, यात्रामार्ग में चोरी का भय, अचानक कलह होती है।

यदि बुध 2.7 भावेश हो तो कोई बड़ा रोग होता है। तब विष्णु सहस्रनाम का पाठ करने से सब अरिष्ट दूर होते हैं।

मंगलदशा : केतुभुक्ति

कुजस्यान्तर्गते केतौ त्रिकोणे केन्द्रगेऽपि वा।
दुश्चिक्ये लाभगे वापि शुभयुक्ते शुभेक्षिते॥63॥
राजानुग्रहशान्तिश्च बहुसौख्यं धनागमम्।
किंचित्फलं दशादौ तु भूलाभः पुत्रलाभकृत्॥64॥
राजसलाभकार्याणि चतुष्पाज्जीवलाभकृत्।
योगकारकसंयुते बलवीर्यसमन्विते॥65॥
पुत्रलाभयशोवृद्धिर्गृहे लक्ष्मीकटाक्षकृत्।
भृत्यवर्गाद्धनप्राप्तिः सेनापत्यं महत्सुखम्॥66॥
भूपालमित्रतायोगो यानाम्बरविभूषणम्।

मंगल दशा में केतु की अन्तर्दशा होने पर, केतु यदि लग्न से केन्द्र त्रिकोण, 3.11 में हो, या शुभयुक्त, शुभदृष्ट हो तो राजा की कृपा व शान्ति, बहुत सुख, धनलाभ होता है। दशारम्भ में साधारण फल होकर बाद में जमीन, जायदाद, सन्तान का लाभ होता है। राजकीय कार्यों से लाभ, चौपाये धन की वृद्धि होती है।

यदि केतु अन्यथा बलवान् हो अथवा योगकारक ग्रह से युक्त हो तो पुत्र-लाभ, यशोवृद्धि, भरपूर लक्ष्मी, कर्मचारियों का उत्तम सहयोग, उस सहयोग से अच्छा लाभ, सामर्थ्य, सुख, राजा से मित्रता के योग, वाहनादि का सुख होता है।

दायेशात्षष्ठरिःफस्थे रन्ध्रे वा पापसंयुते॥67॥
कलहो दन्तरोगश्च चौरव्याघ्रादिपीडनम्।
द्वितीयसप्तमस्थे तु देहव्याधिर्भविष्यति॥68॥
सन्मानं जनसन्तापं धनधान्यस्य प्रच्युतिः।
मृत्युंजयजपं कुर्यात् सर्वसम्पत्प्रदायकम्॥69॥

महादशेश से 6.8.12 में केतु हो या पापयुक्त हो तो कलहागम, दाँतों में रोग, चोरों व हिंसक जानवरों से कष्ट होता है।

2.7 भावों में केतु हो तो धन-धान्य की हानि होती है। शान्त्यर्थ मृत्युंजय जप करें।

मंगलदशा : शुक्रभुक्ति

कुजस्यान्तर्गते शुक्रे केन्द्रलाभत्रिकोणगे।
स्वोच्चे वा स्वर्क्षगे वापि शुभस्थानाधिपोऽथवा॥70॥
राज्यलाभं महत्सौख्यं गजाश्वाम्बरभूषणम्।
लग्नाधिपेन सम्बन्धे पुत्रदारादिवर्धनम्॥71॥
आयुर्वृद्धिर्महैश्वर्यं भाग्यवृद्धि सुखं भवेत्।

मंगल दशा में शुक्र भुक्ति होने पर शुक्र यदि केन्द्र, लाभ, त्रिकोण में हो या स्वोच्च स्वराशि में हो या शुभस्थानेश हो तो राज्याधिकारप्राप्ति, बहुत सुख, हाथी घोड़े आदि वाहन होते हैं।

यदि वह लग्नेश से सम्बन्ध करे तो स्त्री पुत्रादि की वृद्धि होती है। आयुर्वृद्धि, ऐश्वर्य व भाग्यवृद्धि तथा सुख होता है।

दायेशात्केन्द्रलाभस्थे त्रिकोणे धनगेऽपि वा॥72॥
तत्कालः श्रियमाप्नोति पुत्रलाभं महत्सुखम्।
स्वप्रभोश्च महत्सौख्यं श्वेतवस्त्राश्वलाभकृत्॥73॥
महाराजप्रसादेन ग्रामभूम्यादिलाभकृत्।
भुक्त्यन्ते फलमाप्नोति गीतनृत्यादिलाभकृत्॥74॥
पुण्यतीर्थस्नानलाभं कर्माधिपसमन्विते।
कर्मधर्मदयापुण्यं तडागं कारयिष्यति॥75॥

दशेश मंगल से केन्द्र, लाभ, त्रिकोण या धनस्थान में शुक्र हो तो तत्काल लक्ष्मी प्राप्ति होती है। पुत्रलाभ, बहुत सुख, अपने अधिकारी या स्वामी से विशेष सुख, श्वेत अश्व (वाहन) का लाभ, समर्थ, व्यक्ति या राजा की प्रसन्नता से अधिकार, जायदाद, जागरी की प्राप्ति होती है। दशान्त में विशेष उत्कट फल होता है। गीत-संगीतादि की गोष्ठी में मनोरंजन होता है।

यदि वह शुक्र दशमेश से युक्त हो तो बड़ी तीर्थयात्रा, पुण्योदय, सार्वजनिक सुविधा का निर्माण कराने की सामर्थ्य होती है।

दायेशाद्रन्ध्ररिःफस्थे षष्ठे वा पापसंयुते।
करोति दुःखबाहुल्यं देहपीडाधनक्षयम्॥76॥
राजचौरादिभीतिश्च गृहे कलहमेव च॥
दारपुत्रादिपीडा च गोमहिष्यादिनाशकृत्॥77॥
द्वितीयद्यूननाथे तु देहबाधा भविष्यति।
श्वेतां गां महिषीं दद्यादायुरारोग्यमादिशेत्॥78॥

दशेश मंगल से 6.8.12 में शुक्र हो या पापयुक्त हो तो बहुत दुःख, शरीर कष्ट, धनहानि राजा या चोर आदि से भय, घर में कलह, स्त्री पुत्रादि को पीड़ा, पशुधन की हानि होती है।

2.7 भावेश होने पर शरीर बाधा होती है। दोष शान्ति के लिए सफेद गाय या दुधारू भैंस का दान करने से शान्ति, आयु व आरोग्य होता है।

मंगलदशा : सूर्यभुक्ति

कुजस्यान्तर्गते सूर्ये स्वोच्चे स्वक्षेत्रकेन्द्रगे।
मूलत्रिकोणे लाभे वा भाग्यकर्मेशसंयुते॥79॥
तद्भुक्तौ वाहनं कीर्तिः पुत्रलाभं च विन्दति।
धन-धान्यसमृद्धिः स्याद् गृहे कल्याणसम्पदः॥80॥
क्षेमारोग्यं महद्धैर्यं राजपूज्यं महत्सुखम्।
व्यवसायात्फलाधिक्यं विदेशे राजदर्शनम्॥81॥

मंगल महादशा में सूर्य भुक्ति हो और सूर्य उच्च, स्वक्षेत्र, केन्द्रगत, लाभस्थान, मूल त्रिकोण में हो, या 10.11 भावेश से युक्त हो तो उसकी अन्तर्दशा में वाहन सुख, कीर्ति, पुत्रलाभ, धन-धान्य समृद्धि, घर में मंगलवृद्धि, कुशलता, आरोग्य, मन में धैर्य, राजपूज्यता, सुख, व्यवसायवृद्धि, विदेश में किसी बड़े व्यक्ति या राजकीय पुरुष से भेंट होती है।

दायेशात्षष्ठरिःफे वा रन्ध्रे वा पापसंयुते।
देहपीडा मनस्तापं कार्यहानिर्महद्भयम्॥82॥
शिरोरोगं ज्वरादिश्च ह्यतिसारमथापि वा।
द्वितीय द्यूननाथे तु सर्पज्वरविषाद्भयम्॥83॥
सुतपीडाकरं चैव शान्तिं कुर्याद्यथाविधि।
देहारोग्यं प्रकुरुते धन-धान्यसमृद्धिदम्॥84॥

महादशेश मंगल से 6.8.12 में सूर्य हो या पापयुक्त हो तो शरीर कष्ट, मन में सन्ताप, कार्यहानि, भय, सिर में रोग, ज्वरादि रोग, दस्त होते हैं।

यदि सूर्य 2.7 भावेश हो तो सर्पभय, विषभय, ज्वरभय, पुत्र को कष्ट होता है। तब यथाविधि शान्ति विधान करने से धन-धान्य की वृद्धि होती है।

मंगलदशा : चन्द्रभुक्ति

कुजस्यान्तर्गते चन्द्रे स्वोच्चे स्वक्षेत्रकेन्द्रगे।
भाग्यवाहनकर्मेशलग्नाधिपसमन्विते ॥85॥
करोति विपुलं राज्यं गन्धमाल्याम्बरादिकम्।
तडागं गोपुरादीनां पुण्यधर्मादिसंग्रहम्॥86॥

विवाहोत्सवकर्माणि दारपुत्रादिसौख्यकृत्।
पितृमातृसुखावाप्तिं गृहे लक्ष्मीकटाक्षकृत्॥87॥
महाराजप्रसादेन स्वेष्टसिद्धिः सुखावहम्।
पूर्णचन्द्रे पूर्णफलं क्षीणे स्वल्पफलं भवेत्॥88॥

मंगल में चन्द्रान्तर रहने पर चन्द्रमा यदि स्वोच्च, स्वक्षेत्र, केन्द्रगत, 4.9 भावेश से युक्त हो या लग्नेश से युक्त हो तो राजयोग का सुख, उत्तम वस्त्राभूषण, तडागादि या पुरद्वारादि का निर्माण, पुण्यकार्य, विवाहोत्सव, पुत्रादि का सुख, माता-पिता का सुख, लक्ष्मी वृद्धि, महाराज के सहयोग से इष्टसिद्धि व सुख होता है। यदि चन्द्रमा पूर्ण बिम्ब वाला हो तो पूर्ण फल तथा छोटे बिम्ब वाला हो तो तदनुसार कम से कमतर फल होता है।

नीचारिस्थेऽष्टमे षष्ठे दायेशाद्रिपुरन्ध्रके।
मरणं दारपुत्राणां कष्टं भूपतिनाशनम्॥89॥
पशुधान्यक्षयं चैव चौराहिरणभीतिकृत्।
द्वितीयद्यूननाथेतु ह्यपमृत्युर्भविष्यति॥90॥
देहजाड्यं मनोदुःखं दुर्गालक्ष्मीजपं चरेत्।
श्वेतां गां महिषीं दद्याद् दानेनारोग्यमाप्नुयात्॥91॥

चन्द्रमा यदि नीचगत 6.8.12 भावगत या दशेश से 6.8.12 में हो तो स्त्री पुत्रों को कष्ट, राजा का कोप, धनधान्य हानि, युद्ध विवाद का भय, चोरादि का भय होता है।

यदि चन्द्रमा 2.7 भावेश हो तो अपमृत्युभय, शरीर में शिथिलता, मन में दुःख होते हैं। शान्ति के लिए दुर्गापाठ व लक्ष्मी जी की जप पूजा करें। सफेद गाय या भैंस का दान करने से शान्ति होती है।

इति श्री दशाफलदर्पणे पं. सुरेश मिश्रकृते हिन्दीव्याख्याने
भौमान्तर्दशाध्यायः षोडशः॥16॥
॥आदितः श्लोकाः1254॥

17

॥ राहोरन्तर्दशाफलाध्यायः ॥

सामान्य फल

लग्नस्थसैंहिकेयस्य दाये पापहृतिर्यदा।
करोति दुःखबाहुल्यं नृपचौराग्निपीडनम्॥1॥
तत्रस्थभोगिनः पाके शुभभुक्तौ शुभं भवेत्।
गृहक्षेत्राभिवृद्धिश्च भोजनाम्बरभूषणम्॥2॥

लग्नस्थ राहु की दशा में पापग्रह की अन्तर्दशा होने पर बहुत से दुःख व विविध प्रकार की पीड़ाएँ होती हैं।

उसी राहु की दशा में शुभान्तर्दशा हो तो जायदाद आदि की वृद्धि, उत्तम रहन-सहन होता है।

षडष्टान्त्यगतस्याहौ परिपाके शुभेतरा।
हृतिः कलहरोगाग्निनृपचौरविषारिभिः॥3॥
श्वासक्षयप्रमेहादि शूलनिद्रादिभाग्भवेत्।
कुभोजनं कुवस्त्रं च स्थाननाशं महद्भयम्॥4॥
दुःस्थस्य चाहिनाथस्य परिपाके शुभहृतिः।
आदौ सुखं महत्सौख्यं नृपमानधनागमम्॥5॥
अन्तेतु राजभीतिः स्यात्स्थानभ्रशं मनोरुजम्।
कृषिगोभूमिवस्त्रादि बन्धुपुत्रार्थनाशनम्॥6॥

6.8.12 भावगत राहु में पापान्तर्दशा हो तो कलह, रोग, विविध प्रकार के भय, साँस सम्बन्धी रोग, क्षय रोग, प्रमेह (मधुमेह), दर्द, अधिक नींद या नींद सम्बन्धी विकार होते हैं। अपि च खराब रहन-सहन, स्थान हानि, भय होता है।

6.8.12 भावगत राहु में शुभान्तर्दशा हो तो प्रारम्भ में सुख, राजमान्यता व धन तथा अन्त में राजभय, स्थान परिवर्तन, मनोमालिन्य, व्यवसाय, व सम्पत्ति तथा धन पुत्रादि की हानि होती है।

केन्द्रत्रयस्थितस्याहौ पापिनां तु हृतिर्यदा।
गृहदाहाक्षिरोगादि दारपुत्रमहद्भयम्॥7॥
स्थानच्युतिं मनोदुःखं निजाचारविवर्जितम्।
अकस्मात्कलहं चैव विविधापत्पीडनम्॥8॥
चतुष्टयगतस्याहौ परिपाके शुभाहृतिः।
क्वचित्कीर्तिः क्वचिद्धर्मं क्वचित्सौख्यं क्वचिद्धनम्॥9॥
एवमादौ तु भुक्त्यन्ते राजकोपाद्धनक्षयम्।
युद्धे पराजयं चैव विद्यावादं महद्भयम्॥10॥

4.7.10 भावगत राहु में पापान्तर्दशा हो तो घर में अग्निभय, नेत्ररोग, स्त्री पुत्रों को विशेष कष्ट, पदावनति, मन में मलिनता, आधारहीनता, अचानक कलह, विविध आपत्तियाँ होती हैं।

शुभान्तर्दशा में कभी कीर्ति, कभी धन, कभी धर्म, कभी सुख होता है। ऐसा फल दशा के आरम्भ में तथा दशा के अन्त में राजकोप से धनहानि, पराजय, भय व विद्या के क्षेत्र में विवाद होता है।

त्रिकोणस्थ फणीन्द्रस्य दशापाके महत्कृशम्।
पापभुक्तौ महत्कष्टं पापाचारसमन्वितम्॥11॥
अपकीर्तिः कुभोज्यं च कृषिगोभूमिनाशनम्।
नृपभीतिं च शौर्यं च मौल्यादिपतनं भवेत्॥12॥
तथाविधफणीन्द्रस्य शुभभुक्तौ शुभक्रिया।
सुतदारधनाप्तिं च भुक्त्यन्ते फलमीदृशम्॥13॥
किंचित्सौख्यं तदादौ तु विदेशगमनं तथा।
मन्त्रोपास्तिर्मनोत्साहं कलत्रात्मजदूषणम्॥14॥

5.9 भावगत राहुदशा में पापान्तर्दशा हो तो बहुत कष्ट, पापाचार, कमजोरी होती है। अपकीर्ति, खराब भोजन, खेती बाड़ी व व्यवसाय की हानि, राजभय, शूरता, ऊँचे स्थान से पतन का भय होता है।

शुभान्तर्दशा में मंगलकार्य, स्त्री पुत्रों का सुख, अन्तर्दशा के अन्त में होता है। शुरू में साधारण सुख व विदेश यात्रा होती है।

तृतीयलाभगस्याहौ परिपाके महत्सुखम्।
पापभुक्तौ नृपप्रीतिः फलमीदृशमादितः॥15॥
अन्ते भयं विनिर्देश्यं विविधानि कष्टानि च।
तथाविध फणीन्द्रस्य शुभभुक्तौ तु भोजनम्॥16॥
क्रयविक्रयवित्ताप्तिर्वाग्दूषणमथापि वा।
वस्त्रवाहनभूषाप्तिं क्रयविक्रयदूषणम्॥17॥
उद्योगभंगं देहार्तिं गूढपापं लभेन्नरः॥

3. 11 भावगत राहु दशा में पापान्तर्दशा हो तो सुख, राजप्रीति, दशारम्भ में होती है। अन्त मे विविध कष्ट व भय होता है।

शुभान्तर्दशा में उत्तम भोजन, क्रय-विक्रय में बाधा व बाधा के उपरान्त धनागम, वाणी के दोष के कारण हानि, वस्त्रवाहनादि का सुख, उद्योग परिश्रम में कष्ट, गूढ़ पापभाव का उदय होता है।

राहुदशा : राहुभुक्ति

कुलीरे वृश्चिके चैव कन्यायां चापगेऽपिवा॥18॥
तद्भुक्तौ राजसम्मानं वस्त्रवाहनभूषणम्।
व्यवसायात्फलाधिक्यं चतुष्पाज्जीवलाभकृत्॥19॥
प्रयाणं पश्चिमे भागे वाहनाम्बरलाभकृत्।

4.6.8.9 राशिगत राहु में राहु की अन्तर्दशा हो तो राज-सम्मान, वस्त्राभूषण, वाहन, व्यवसाय में वृद्धि, चौपाये धन का लाभ, पश्चिम दिशा में यात्रा, विविध लाभ होते हैं।

लग्नाद्युपचये राहौ शुभदृष्टियुतेक्षिते॥20॥
मित्रांशे तुंगलाभेशयोगकारकसंयुते।
राज्यलाभं महोत्साहं राजप्रीतिः शुभावहम्॥21॥
गृहे कल्याणसम्पत्तिः दारपुत्रादिवर्धनम्।

लग्न से 3.6.10.11 भावगत राहु पर शुभयोग या दृष्टि हो, स्वयं यह मित्र नवांश में हो या किसी उच्च ग्रह या लाभेश से युक्त हो तो राज्य-प्राप्ति, उत्साह, राजप्रीति, शुभ फल, घर में सब तरह से वृद्धि होती है।

षष्ठाष्टमे व्यये राहौ पापयुक्तेऽथवीक्षिते॥22॥
चौरादिव्रणपीडा च सर्वत्र जनपीडनम्।
राजद्वारे जनद्वेषमिष्टबन्धुविनाशनम्॥23॥
दारपुत्रादिपीडा च सर्वत्र विविधं भयम्।
द्वितीयद्यूनभावस्थे विशेषात्सप्तमाश्रिते॥24॥
तदा रोगो महाकष्टं शान्ति कुर्याद्यथाविधि।
आरोग्यं सम्पदश्चैव भविष्यति न संशय॥25॥

यदि राहु पापयुक्त दृष्ट होने पर 6.8.12 भावों में हो तो राहुदशा राहु अन्तर्दशा में चोटभय, सर्वत्र विविध क्षेत्रों में पीड़ा, राजद्वार (कचहरी) में द्वेषभाव, अभीष्ट जनों की हानि, स्त्रीपुत्रादि को पीड़ा, भय, होते हैं।

यदि 2.7 भाव में, विशेषतया सप्तम में, राहु हो तो रोग व कष्ट होते हैं। तब शान्ति करने से शरीर व धन सुख होता है।

राहुदशा : गुरुभुक्ति

राहोरन्तर्गते जीवे लग्नात्केन्द्रत्रिकोणगे।
स्वोच्चे स्वक्षेत्रगे वापि तुंगे स्वोच्चांशगेऽपि वा॥26॥
स्थानलाभं मनोधैर्यं शत्रुनाशं महत्सुखम्।
राजप्रीतिकरं सौख्यं सिते पक्षे शशी यथा॥27॥
वाहनादिधनं भूरि गृहे गोधनसंकुलम्।
नैऋत्याः पश्चिमे भागे प्रयाणं राजदर्शनम्॥28॥
युक्तकार्यस्य सिद्धिः स्यात् स्वदेशे पुनरेष्यति।
उपकार्यं ब्राह्मणानां तीर्थयात्रादि कर्मणाम्॥29॥
वाहनं ग्रामलाभं च देवब्राह्मणपूजनम्।
पुत्रोत्सवादि सन्तोषं नित्यं मिष्टान्नभोजनम्॥30॥

लग्न से केन्द्र, त्रिकोण में, स्वोच्च, स्वक्षेत्र में या स्व या उच्च नवांश में वृहस्पति हो तो राहु में गुरु की अन्तर्दशा के दौरान स्थानप्राप्ति, मन में धैर्य, शत्रुहानि, सुख, राजप्रीति, शुक्लपक्ष के बढ़ते चन्द्रमा की तरह सुख वृद्धि, वाहन, खूब धन, पशु धन, सम्पत्ति, पश्चिम या नैऋत्य दिशा की यात्रा में लाभ, सफल होकर पुनः स्वदेश आगमन, ब्राह्मणों व विद्वानों के हितकारक कार्य, तीर्थयात्रादि प्रसंग, ग्राम या जायदाद का लाभ, पुत्रोत्सव, उत्तम खान-पान होता है।

नीचे वास्तंगते वापि षष्ठाष्टव्ययराशिगे।
शत्रुक्षेत्रे पापयुक्ते धनहानिर्भविष्यति॥31॥
कर्मविघ्नं मनोहानिः सम्पत्तिहरणं भवेत्।
कलत्रपुत्रपीडा च हृदरोगं राजकार्यकृत्॥32॥

यदि वृहस्पति नीचगत, अस्त, शत्रुक्षेत्री, पापग्रह की राशि में हो या 6.8.12 भावों में हो तो धन हानि कार्य बाधाएँ, सम्पत्ति का नुकसान, स्त्री-पुत्रादि को कष्ट, हृदयरोग, राजा आदि की नौकरी होती है।

दायेशात्केन्द्रकोणे वा लाभे वा धनगेऽपि वा।
दुश्चिक्ये बलसम्पूर्णे गृहक्षेत्रादिवृद्धिकृत्॥33॥
भोजनाम्बरपश्वादि दानधर्मजपादिकम्।
भुक्त्यन्ते राजकोपाच्च द्विमासं देहपीडनम्॥34॥
ज्येष्ठभ्रातृविनाशं च भ्रातृपित्रादि पीडनम्।

महादशेश राहु से केन्द्र, त्रिकोण, लाभ या धनस्थान में गुरु हो या तृतीयस्थ गुरु हो तो जमीन जायदाद की वृद्धि, खान-पान का उत्तम सुख, धार्मिक कार्य, अन्तर्दशा के अन्त में राजकोप से दो मास का कष्ट, बड़े भाई को कष्ट, भ्राता व पिता आदि को कष्ट होता है।

दायेशात्षष्ठरन्ध्रे वा रिःफे वा पापसंयुते॥35॥
तद्भुक्तौ धनहानिः स्याद् देहपीडा भविष्यति।
द्वितीयद्यूननाथे वा ह्यपमृत्युर्भविष्यति॥36॥
सौवर्णप्रतिमादानं शिवपूजां च कारयेत्।
देहारोग्यं प्रकुरुते शान्तिं कुर्याद् विचक्षणः॥37॥

महादशेश से 6.8.12 में गुरु हो या पापयुक्त हो तो उसकी अन्तर्दशा में धन हानि, शरीर कष्ट होता है।

2.7 भावेश गुरु हो तो अपमृत्यु का भय होता है। शान्ति के लिए सोने की प्रतिमा का दान व शिव पूजा करने से सुख होता है।

राहुदशा : शनिभुक्ति

राहोरन्तर्गते मन्दे लग्नात्केन्द्रत्रिकोणगे।
स्वोच्चे मूलत्रिकोणे वा दुश्चिक्ये लाभराशिगे॥38॥
तद्भुक्तौ वाहनं सेवा राजप्रीतिकरं शुभम्।
विवाहोत्सवकार्याणि कृत्वा पुण्यानि भूरिशः॥39॥
आरामकरणे युक्तः तडागं कारयिष्यति।
शूद्रप्रभुवशादिष्टं लाभं गोधनसंग्रहम्॥40॥
प्रयाणं पश्चिमे देशे प्रभुमूलाद् धनक्षयः।
देहायासफलाप्तिश्च स्वदेशपुरेष्यति॥41॥

शनि यदि केन्द्र, त्रिकोण, तृतीय, एकादश भावों में हो या उच्च त्रिकोण में हो तो राहु दशा शनि भुक्ति में वाहन, सेवा के अवसर, राजा की प्रसन्नता, शुभ कार्य, घर में विवाहोत्सव, पुण्य कार्य, बाग आदि बनाने के योग, जल संसाधनों का निर्माण, हीन जाति राजा का सहयोग, लाभ, धनसंग्रह पश्चिम की यात्रा, यात्रा में राजकीय नियमों के कारण हानि, केवल परिश्रम के बराबर फल प्राप्ति तथा स्वदेश लौटना होता है।

नीचारिक्षेत्रगे मन्दे रन्ध्रेषड्व्ययगेऽपि वा।
नीचांशे राजभीतिश्च दारपुत्रादिपीडनम्॥42॥
आत्मबन्धोर्मनस्तापं दायाद्यजनविग्रहम्।
व्यवहारं च कलहमकस्माद्भूषणं भवेत्॥43॥
दायेशात्षष्ठरिःफे वा रन्ध्रे वा पापसंयुते।
हृद्रोगो मानहानिश्च विवाहे शत्रुपीडनम्॥44॥
अन्नद्वेषमतीसारं गुल्मव्याध्यादिभाग्भवेत्।
द्वितीयद्यूननाथेतु ह्यपमृत्युभयं भवेत्॥45॥
कृष्णां गां महिषीं दद्याद्दानेनारोग्यमादिशेत्॥45A॥

शनि यदि नीचगत, शत्रुक्षेत्री, 6.8.12 भावगत, नीच नवांशगत हो तो उसकी अन्तर्दशा में राजभय, स्त्री पुत्रादि को कष्ट, अपने व्यक्ति के कारण मन में ठेस, घर में उत्तराधिकार व बँटवारे का झगड़ा, मुकद्दमा, कलह, अचानक कोई समाधान होता है।

राहु से 6.8.12 में शनि हो, पापयुक्त हो तो हृदयरोग, मानहानि, विवाहादि मंगल कार्यों में शत्रु प्रकोप अरुचि, दस्त, भीतरी फोड़े आदि से कष्ट होता है।

शनि यदि 2.7 भावेश हो तो अपमृत्यु निवाराणार्थ काली गाय या भैंस का दान करें।

राहुदशा : बुधभुक्ति

राहोरन्तर्गते सौम्ये भाग्ये वा स्वर्क्षगेऽपि वा।
तुंगे वा केन्द्रराशिस्थे पुत्रे वा बलगेऽपि वा॥46॥
राजयोगं प्रकुरुते गृहे कल्याणवर्धनम्।
व्यापारेणधनप्राप्तिर्विद्यावाहनमुत्तमम् ॥47॥
विवाहोत्सवकार्याणि चतुष्पाज्जीवलाभकृत्।
सौम्यमासे महत्सौख्यं स्ववारे राजदर्शनम्॥48॥
सुगन्धपुष्पशय्यादिस्त्रीसौख्यं चातिशोभनम्।
महाराजप्रसादने धनलाभो महद्यशः॥49॥

राहु में बुधान्तर्दशा में, बुध यदि बली हो, 5.9 भावों में या केन्द्र में हो, स्वक्षेत्री, स्वोच्च में हो तो राजयोग का भोग, घर में कल्याणकारी बातें, व्यापार बुद्धि, विद्याप्राप्ति, वाहन सुख, विवाहोत्सव, चौपाये धन का लाभ, बुधवार को शुरू होने वाले मास में या बुधवार को विशेष अच्छे फल, राजदर्शन, उत्तम शय्यासुख, स्त्री सुख, धनलाभ, यश होता है।

दायेशात्केन्द्रलाभे वा दुश्चिक्ये भाग्यकर्मगे।
दोहारोग्यं महोत्साहमिष्टसिद्धिः सुखावहम्॥50॥
पुण्यश्लोकादिकीर्तिश्च पुराणश्रवणादिकम्।
विवाहो यज्ञदीक्षा च दानधर्मदयादिकम्॥51॥

महादशेश से केन्द्र, लाभ, तृतीय, नवम भावों में बुध हो तो शरीर सुख, मन में उत्साह, मनोरथ सिद्धि, सुख, कीर्ति, कथा श्रवण के योग, यज्ञ, विवाहादि मंगल कार्य, दानधर्म होता है।

षष्ठाष्टमे व्यये सौम्ये मन्दराशियुतेक्षिते।
दायेशात्षष्ठरिःफे वा रन्ध्रे वा पापसंयुते॥52॥
देवब्राह्मणनिन्दा च भोगभाग्यविहीनभाक्।
सत्यहीनश्च दुर्बुद्धिश्चौरादिनृपपीडनम्॥53॥

अकस्मात्कलहं चैव गुरुपुत्रादिनाशनम्।
अर्थव्ययं राजकोषं दारपुत्रादिपीडनम्॥54॥
द्वितीये द्यूननाथे वा ह्यपमृत्युर्भविष्यति।
तद्दोषपरिहारार्थं विष्णुसाहस्रकं जपेत्॥55॥
स्वगृह्योक्त विधानेन शान्तिं कुर्यात् प्रयत्नतः॥

यदि बुध 6.8.12 में शनि की राशि में हो या शनि से युत दृष्ट हो या महादशेश से 6.8.12 में पापयुक्त हो तो देवों व ब्राह्मणों की निन्दा, भाग्यहीनता, सुख में कमी, सत्याचरण रहित दुर्बुद्धि का उदय, विविध पीड़ाएँ, अचानक कलह, गुरुजन या स्त्री पुत्रादि की हानि, धनखर्च, राजकोप होता है।

यदि बुध 2.7 भावेश हो तो अपमृत्यु भय निवारणार्थ विष्णुसहस्रनाम के पाठ करें तथा अपने गृह्यसूत्र में कही गई विधि से शान्ति विधान करें।

राहुदशा : केतुभुक्ति

राहोरन्तर्गते केतौ भ्रमणं राजबन्धनम्॥56॥
वातज्वरादिरोगश्च चतुष्पाज्जीवहानिकृत्।
अष्टमाधिपसंयुक्ते देहजाड्यं मनोरुजम्॥57॥
शुभयुक्ते शुभैर्दृष्टे देहसौख्यं धनागमम्।
राजसम्मानभूषाप्ति गृहे शुभकरं भवेत्॥58॥
लग्नाधिपेन सम्बन्धे धनलाभो भवेद्ध्रुवम्।
चतुष्पाज्जीवलाभः स्यात् केन्द्रे वाथ त्रिकोणगे॥59॥

राहु दशा केतु अन्तर्दशा में सामान्यतः व्यर्थ भ्रमण, वातपीड़ा, ज्वरादि रोग, चौपाये धन की हानि होती है।

यदि केतु अष्टमेश से युक्त हो तो शरीर कष्ट होता है।

यदि केतु शुभयुक्त दृष्ट हो तो शरीर सुख व धनलाभ होता है। राज-सम्मान, सर्वविध कल्याण होता है।

यदि केतु लग्नेश से युक्त हो तो या केन्द्र त्रिकोण में हो तो धनलाभ, चौपाये धन का लाभ होता है।

रन्ध्रस्थानगते केतौ व्यये वा बलवर्जिते।
तद्भुक्तौ बहुरोगित्वं चौराहिव्रणपीडनम्॥60॥
पितृमातृवियोगश्च भ्रातृद्वेषं मनोरुजः।
स्वप्रभोश्च महत्कष्टं वैषम्यं मानहानिसंभवम्॥61॥
द्वितीयद्यूनभावस्थे देहपीडा भविष्यति।
तद्दोषपरिहारार्थं छागदानं समाचरेत्॥62॥

निर्बल केतु यदि 12.8 भावों में हो तो उसकी अन्तर्दशा में बहुत रोग तथा

कोढ़ आदि का भय रहता है। माता पिता से वियोग, भाइयों से द्वेष, मानसिक व्यथा, अपने अधिकारी से कष्ट, विषमता, मानहानि होती है।

2.7 भावों में केतु हो तो शरीर कष्ट होता है। दोषनिवारण के लिए बकरे का दान करें।

राहुदशा : शुक्रभुक्ति

राहोरन्तर्गते शुक्रे लग्नात्केन्द्रत्रिकोणगे।
लाभे वा बलसंयुक्ते योगप्राबल्यमादिशेत्॥63॥
विप्रमूलाद्धनप्राप्ति गोमहिष्यादि लाभकृत्।
पुत्रोत्सवादि सन्तोषं गृहे कल्याणसम्भवम्॥64॥
सम्मानं राज-सम्मानं राज्यलाभं महत्सुखम्।

राहु दशा में शुक्रान्तर्दशा रहने पर, शुक्र यदि लग्न से केन्द्र त्रिकोण में या लाभ में बलवान् हो तो योगों का उत्तम फल मिलता है। ब्राह्मणों के सहयोग से धनलाभ, दुधारू पशुओं का लाभ, पुत्र सम्बन्धी उत्सव, मन में सन्तोष, मंगल कार्य, विविध प्रकार से मानवृद्धि तथा राज्यप्राप्ति या अधिकार प्राप्ति होती है।

स्वोच्चे वा स्वर्क्षगे वापि तुंगांशे स्वांशगेऽपि वा॥65॥
नूतनगृहनिर्माणं नित्यं मिष्टान्नभोजनम्॥
कलत्रपुत्रविभवं मित्रसंयुक्तभोजनम्॥66॥
अन्नदानं प्रियं नित्यं दानधर्मादिसंग्रहम्।
महाराजप्रसादेन वाहनाम्बरभूषणम्॥67॥
व्यवसायात्फलाधिक्यं विवाहो मौञ्जिबन्धनम्।

यदि शुक्र स्वराशि, स्वोच्च या इन्हीं नवांशों में हो तो उसकी अन्तर्दशा में नए घर का निर्माण, नित्य उत्तम भोजन, स्त्री पुत्र व वैभव का सुख, इष्ट मित्रों के साथ सहभोज, अन्नदान दानपुण्य का फल, समर्थ व्यक्ति के सहयोग से वाहनादि प्राप्ति, व्यवसाय में वृद्धि, विवाह की सम्भावना या यज्ञोपवीत उत्सव होता है।

षष्ठाष्टमव्यये शुक्रे नीचे शत्रुगृहस्थिते॥68॥
मन्दारफणिसंयुक्ते तद्भुक्तौ रोगमादिशेत्।
अकस्मात्कलहं चैव पितृपुत्रवियोगकृत्॥69॥
स्वबन्धुजनहानिश्च सर्वत्र जनपीडनम्।
दायादिकलहं चैव स्वप्रभोर्निजमृत्युकृत्॥70॥
कलत्रपुत्रपीडा च शूलरोगादि सम्भवम्।

यदि शुक्र 6.8.12 भाव में, या नीच में, या शत्रुयुक्त, या मंगल शनि, राहु से युक्त हो तो रोग, अचानक कलह, पिता या पुत्र का वियोग, बन्धुओं में कमी,

सर्वत्र पीड़ा या निरादर, घर में उत्तराधिकार सम्बन्धी विवाद, अपने स्वामी या स्वयं की मृत्यु, स्त्री पुत्रों को पीड़ा, शरीर में शूल रोग होता है।

दायेशात्केन्द्रराशिस्थे त्रिकोणे व शुभान्विते॥71॥
लाभे वा धर्मराशिस्थे क्षेत्रपालमहत्सुखम्।
सुगन्धवस्त्रशय्यादि गानविद्यापरिश्रमम्॥72॥
छत्रचामरवाद्यादि गन्धपद्मसमन्वितम्।

महादशेश से केन्द्र त्रिकोण में, लाभ में शुभयुक्त शुक्र हो तो जायदाद संरक्षण का सुख, उत्तम वस्त्रालंकार, शृंगार व शय्यासुख, गानविद्या के प्रति आकर्षण, छत्र चँवरयुक्त मान होता है।

दायेशाद्रिपुरन्ध्रस्थे व्यये वा पापसंयुते॥73॥
विषाहिनृपचौरादि मूत्रकृच्छ्रान्महद्भयम्।
प्रमेहाद्रुधिरे रोगं कुत्सितान्न शिरोरुजम्॥74॥
कारागृहप्रवेशं च राजदण्डाद् धनक्षयम्।
द्वितीयद्यूननाथे वा ह्यपमृत्युस्तदा भवेत्॥75॥
दुर्गालक्ष्मीजपं कुर्यात् मृत्युनाशकरो भवेत्।

महादशेश से 6.8.12 में शुक्र हो या पापयुक्त हो तो विषादि भीति, राजपक्षादि से भीति, मूत्ररोग का बड़ा कष्ट, मधुमेह के कारण रक्तविकार, खराब भोजन, सिर में पीड़ा, कारागृह में प्रवेश, राजदण्ड से धनहानि होती है।

2.7 भावेश शुक्र हो तो अपमृत्यु भय होता है। तब दुर्गा या लक्ष्मी के जप पाठ करने से मृत्युभय दूर होता है।

राहुदशा : सूर्यभुक्ति

राहोरन्तर्गते सूर्ये स्वोच्चे स्वक्षेत्रकेन्द्रगे॥76॥
त्रिकोणे लाभगे वापि तुंगांशे स्वांशगेऽपि वा।
शुभग्रहेण संदृष्टे राजप्रीतिकरं शुभम्॥77॥
धन-धान्यसमृद्धिः स्यादल्पसौख्यं सुखावहम्।
अल्पग्रामाधिपत्यं च स्वल्पलाभो भविष्यति॥78॥

सूर्य यदि स्वोच्च, स्वक्षेत्र या इन्हीं नवांशों में हो या केन्द्र त्रिकोण लाभ स्थान में हो और शुभ दृष्ट हो तो राजा की प्रसन्नता, धन-धान्य वृद्धि, कम सुख, थोड़े इलाके में आधिपत्य, साधारण लाभ होता है।

भाग्यलग्नेशसंयुक्ते कर्मेशेन निरीक्षिते।
राजाश्रयोमहत्कीर्तिर्विदेशे वाहनं भवेत्॥79॥
देशाधिपत्ययोगश्च गजाश्वराम्बरभूषणम्।
मनोऽभीष्टप्रदानं च पुत्रकल्याणसम्भवम्॥80॥

यदि सूर्य लग्नेश या भाग्येश से युक्त होकर, दशमेश से दृष्ट हो तो राजा का आश्रय, खूब कीर्ति विदेश में उत्तम वाहन प्राप्ति, देशाधिपति योग, उत्तम भौतिक समृद्धि, मनोरथपूर्ति, पुत्र सम्बन्धी उत्सव होते हैं।

दायेशाद्रिःफरन्ध्रस्थे षष्ठे वा नीचगेऽपि वा।
ज्वरातिसाररोगश्च कलहो राजरोगभीः॥81॥
प्रयाणेशत्रुवृद्धिश्च नृपचौराग्निपीडनम्।

महादशेश से 6.8.12 में सूर्य हो या नीचगत हो तो ज्वरादि रोग, कोई बड़ा रोग, कलह, स्थान परिवर्तन, शत्रुवृद्धि तथा विविध पीड़ाएँ होती हैं।

दायेशात्केन्द्रकोणे वा दुश्चिक्ये लाभगेऽपि वा॥82॥
विदेशे राज-सम्मानं कल्याणं च शुभावहम्।
द्वितीयद्यूननाथे तु महारोगो भविष्यति॥83॥
सूर्यप्रमाणशान्तिं च कुर्यादारोग्यसम्भवाम्॥

महादशेश राहु से 1.3.4.5.7.9.10.11 भावों में सूर्य हो तो विदेश में सम्मान, कल्याण, मंगल होता है।

2.7 भावेश सूर्य हो तो बड़ा रोग सम्भावित है। शान्ति हेतु शास्त्रोक्त पूरी विधि से शान्ति करें।

राहुदशा : चन्द्रभुक्ति

राहोरन्तर्गते चन्द्रे स्वक्षेत्रे स्वोच्चगेऽपि वा॥84॥
केन्द्रत्रिकोणे लाभे वा मित्रर्क्षे क्रूरसंयुते।
राजत्वं राजपूज्यत्वं धनार्थस्य सुलाभकृत्॥85॥
आरोग्यं भूषणं चैव मित्रस्त्रीपुत्रसम्पदः।
पूर्णचन्द्रे पूर्णफलं राजप्रीतिः सुखावहम्॥86॥
अश्ववाहनलाभः स्याद् गृहक्षेत्राभिवृद्धिकृत्।

चन्द्रमा यदि उच्चगत, स्वक्षेत्री, मित्रक्षेत्री हो या क्रूरयुक्त हो, केन्द्र, लाभ, त्रिकोण में हो तो राजपूज्यता या राज्याधिकार, खूब धन लाभ, उत्तम स्वास्थ्य, आभूषण, मित्रों, पुत्रों व स्त्री का सुख, राजप्रीति होती है। यदि चन्द्रमा पूर्ण बिम्ब वाला हो तभी पूरा फल होता है। अपि च घोड़ा वाहन (अच्छा वाहन), जमीन जायदाद की वृद्धि होती है।

दायेशात्सुखभाग्यस्थे केन्द्रे वा लाभगेऽपि वा॥87॥
लक्ष्मीकटाक्षचिह्नानि गृहे कल्याणसम्भवम्।
तत्तत्कार्यार्थसिद्धिः स्याद् धनधान्यसुखावहम्॥88॥
सत्कीर्तिलाभसम्मानं नृणां तत्र प्रजायते।

महादशेश से केन्द्र त्रिकोण में चन्द्रमा हो तो लक्ष्मी की कृपा, घर में मंगल-

वृद्धि, विभिन्न कार्यों में सफलता, धन-धान्य वृद्धि, सत्कीर्ति, लाभ व सम्मान होता है।

दायेशात्षष्ठरन्ध्रस्थे व्यये वा शशिनि स्थिते॥89॥
पिशाचक्षुद्रव्याघ्रादिभयं क्षेत्रार्थनाशनम्।
मार्गे चौरभयं चैव व्रणाधिक्यं महोदरी॥90॥
द्वितीयधूननाथे तु ह्यपमृत्युभयं भवेत्।
श्वेतां गां महिषीं दद्याद्दानेनारोग्यमाप्नुयात्॥91॥

महादशेश से 6.8.12 में चन्द्रमा हो तो भूतप्रेत बाधा, छोटे जानवरों से भय, जायदाद हानि, मार्ग में लुटने का भय, चोट भय, पेट बढ़ना आदि होता है।

यदि चन्द्रमा 2.7 भावेश हो तो अपमृत्युभय निवारणार्थ सफेद गाय या भैंस का दान करें।

राहुदशा : मंगलभुक्ति

राहोरन्तर्गते भौमे लग्नाल्लाभत्रिकोणगे।
केन्द्रे वा शुभसंयुक्ते स्वोच्चे स्वक्षेत्रगेऽपि वा॥92॥
नष्टराज्यधनप्राप्तिः गृहक्षेत्राभिवृद्धिकृत्।
इष्टदेवप्रसादेन सन्तानसुखभोजनम्॥93॥
क्षिप्रभोज्यं महासौख्यं भूषणाश्वाम्बरादिकृत्।

राहु दशा में मंगल की अन्तर्दशा होने पर, मंगल यदि लग्न से लग्न, चतुर्थ, सप्तम, दशम, पंचम, नवम, एकादश में हो और शुभयुक्त, स्वोच्चगत, स्वक्षेत्री हो तो खोए हुए अधिकारों की प्राप्ति, जायदाद वृद्धि, इष्ट देव की प्रसन्नता से उत्तम भोजन व सन्तान सुख, जल्दी भोजन करने की प्रवृत्ति, सुख, उत्तम वाहन व भूषण होते हैं।

दायेशात्केन्द्रकोणे वा दुश्चिक्ये लाभगेऽपि वा॥94॥
रक्तवस्त्रादिलाभः स्यात्प्रयाणं राजदर्शनम्।
पुत्रवर्गेषु कल्याणं स्वप्रभोश्च महत्सुखम्॥95॥
सेनापत्यं महोत्साहं भ्रातृवर्गाद्धनागमम्।

महादशेश से केन्द्र, त्रिकोण, तृतीय, एकादश में मंगल हो तो लाल वस्त्रों से लाभ, यात्रा, राजा से भेंट, पुत्रों पौत्रों का कल्याण, अपने अधिकारी से बहुत सुख, सेनापतित्व, उत्साह, भाइयों के सहयोग से धन लाभ होता है।

दायेशाद्रन्ध्रिःफे वा षष्ठे पापसमन्विते॥96॥
पुत्रदारादिहानिश्च सोदराणां च पीडनम्।
स्थानभ्रंशं बन्धुवर्गदारपुत्रविरोधनम्॥97॥
चौराहिव्रणभीतिश्च सोदराणां च पीडनम्।
आदौ क्लेशकरं चैव मध्यान्ते सौख्यमाप्नुयात्॥98॥

द्वितीयद्यूननाथे तु देहालस्यं महद्भयम्।
अनड्वाहं च गां दद्यादारोग्यं च भविष्यति॥99॥

महादशेश से 6.8.12 में पापयुक्त मंगल हो तो स्त्री-पुत्रादि की हानि, भाइयों को पीड़ा, स्थानभ्रंश, बन्धुओं व परिवारजनों से विरोध, चोट आदि का भय होता है। यह फल प्रारम्भ में विशेष होता है। मध्य व अन्त में थोड़ा सुख होता है।

2.7. भावेश मंगल हो तो शरीर में आलस्य, भय होता है। शान्ति के लिए साँड छोड़ें या गोदान करें।

इति श्री दशाफलदर्पणे पं. सुरेशमिश्रकृते हिन्दीव्याख्याने
राहोरन्तर्दशाफलाध्यायः सप्तदशः॥17॥
॥आदितः श्लोकाः 1353॥

18

॥ गुरोरन्तर्दशाफलाध्यायः ॥

सामान्य फल

केन्द्रस्थितस्य जीवस्य दशायां पापिनां हृतौ।
देहार्तिं लभते दुःखं राजकोपं धनक्षयम्॥1॥
कृषिगोभूमिनाशं च विरोधं बन्धुभिः सह।
उत्साहभंगं वैकल्यमादौ चान्ते शुभं वदेत्॥2॥
शुभभुक्तौ राज्यलाभमुत्साहं वस्त्रवाहनम्।
दानहोमादिकं स्वर्णं नृपलालनमान्यता॥3॥

केन्द्रगत वृहस्पति की दशा में पापान्तर्दशा हो तो शरीर कष्ट, दुःख, राजकोप, धनहानि, व्यवसाय व सम्पत्ति की हानि, बन्धुओं से विरोध, उत्साहभंग होता है। आरम्भ में ये अशुभ फल होकर अन्त में शुभ फल होता है।

शुभान्तर्दशा में राज्यलाभ, उत्साह, वाहन, सोना, दान, हवनादिक शुभकार्य, राजा के सहयोग से मान्यता मिलती है।

त्रिकोणस्थगुरोः पाके शुभभुक्तौ महत्सुखम्।
प्राकारगोपुरादीनां निर्माणं देवतर्पणम्॥4॥
भाग्योत्तरं महाकीर्तिं दारपुत्रार्थसंग्रहम्।
विदेशयानादर्थाप्तिं यशो विद्या जयं सुखम्॥5॥
तत्रस्थितगुरोः पाके पापिनां तु हृतिर्यदा।
दारपुत्रनृपक्रोधं बन्धूनां मरणं तथा॥6॥
बुद्धिभ्रंशं पदभ्रंशं कार्ये विघ्नकरं तथा।
चौराग्निदाहपीडां च कुरुते नात्र संशयः॥7॥

त्रिकोणस्थ वृहस्पति की दशा में शुभ अन्तर्दशा होने पर सुख, बड़े भवन का निर्माण, देवयजन, भाग्यवृद्धि, कीर्ति, स्त्री-पुत्र का सुख, धनसंग्रह, विदेश यात्रा से लाभ, यश, विद्या, विजय होती है।

उसी गुरु में पापग्रह की अन्तर्दशा हो तो स्त्री पुत्र व राजकीय विभागों में कलह, बन्धुओं की हानि, बुद्धिभ्रंश, पदावनति, कामों में विघ्न, विविध पीड़ाएँ होती हैं।

स्वकुलाचारहीनं च परदाराभिमर्शनम्।
चांचल्यं मानहानिश्च मणिविद्रुमनाशनम्॥8॥

अपि गुरुदशा पापन्तर्दशा में अपने कुलाचार से हीन आचरण, परस्त्री से बलात् सम्पर्क, मन की चंचलता, मानहानि, संचित रत्नों की हानि भी होती है।

षष्ठाष्टमव्ययस्थस्य गुरोः पाके शुभेतरा।
करोति स्वकुलाचारं हीनं राज्यार्थनाशनम्॥9॥
आत्मार्थबन्धुमरणं विदेशान्नृपलालनम्।
भूविवादो मनोदुःखं व्याधिनां भयमेव च॥10॥

सामान्यतः 6.8.12 भावगत गुरु दशा में पापान्तर्दशा होने पर कुलान्तर से हीनता, राज्य व धन की हानि, आत्मरण, बन्धु व धन की हानि, विदेश से किसी समर्थ व्यक्ति का सहयोग, भूमि सम्बन्धी विवाद, मन में दुःख, रोगभय होता है।

शुभ भुक्ति में शुभ फल होता है, ऐसा वक्ष्यमाण अपवाद के परिप्रेक्ष्य में समझना चाहिए।

गुरोर्नाशं गतस्यापि परिपाके महत्सुखम्।
देशग्रामाधिपत्यं च शुभभुक्तौ महद्यशः॥11॥
देहारोग्यकरं किंचित् गजाश्वाद्यम्बराणि च।
सुष्ठुभोजनमुल्लासं क्षीरदध्याज्यशर्कराः॥12॥

अष्टमस्थ वृहस्पति यदि भावेश या राशि स्थिति के अनुसार बली हो तो उसकी दशा में शुभ भुक्ति में बहुत सुख, देश या गाँव की मुख्यता व यश होता है। स्वास्थ्य साधारण तथा वाहन सुख खूब होता है। उत्तम मृदु मिष्ठान्न भोजन प्राप्त होता रहता है।

तृतीयायगतस्यापि गुरोः पाके महद्यशः।
सौम्यानां भुक्तिकाले तु वस्त्रवाहनभूषणम्॥13॥
मणिविद्रुममुक्तादि कांचनाद्यम्बराणि च।
देशाधिपत्यं मन्त्रित्वं लभते नात्र संशयः॥14॥
तादृशस्य गुरोर्दाये पापभुक्तौ महद्भयम्।
आचारहीनं कुरुते स्वकुलोद्भवनाशनम्॥15॥
विदेशवासं कष्टं च नानादुःखैःपरिश्रमम्।
एवमादौ दशान्ते तु सुखं वाहनभोजनम्॥16॥

3.11 भावगत गुरु की दशा में शुभ भुक्ति होने पर यश, वस्त्राभूषण, वाहन, रत्नप्राप्ति, सुवर्ण प्राप्ति, देश का नेतृत्व, मन्त्रित्व होता है।

इसी गुरु में पापभुक्ति हो तो मनुष्य आचारहीन होकर अपनी परिवारीय सम्पत्ति को भी घटा देता है। विदेशवास, कष्ट, दुःखों से सर्वत्र परिभ्रमण होता है। यह फल दशा के आरम्भ में होता है। अन्त में सुख मिलता है।

धर्मस्थितगुरोर्दाये शुभभुक्तौ धनागमम्।
विद्यालाभं जयं सौख्यं दारपुत्रनृपात्सुखम्॥17॥
सर्वेषामुपकर्तृत्वं धनाधिक्यं महत्प्रियम्।
भोजनं पौष्टिकं चैव धर्मदारधनादिकम्॥18॥

नवमस्थ गुरुदशा में शुभ भुक्ति होने पर धनलाभ, विद्यालाभ, विजय, सुख, परिवार का सुख, दूसरों का भला करने की सामर्थ्य, खूब धन, लोकप्रियता या बड़े लोगों का प्यार, उत्तम खान-पान, खूब परिवार सुख होता है।

द्वितीयस्थगुरोः पाके पापभुक्तौ यदा तदा।
करोति दुःखबाहुल्यं राज्ञाहृत धनं तथा॥19॥
बन्धुद्वेषं मनोद्विग्नं वाचिकां दैन्यमेव च।
कुभोजनादि दुष्कर्म कुत्सितप्रेष्यभावताम्॥20॥

द्वितीयस्थ गुरु दशा में पापभुक्ति रहने पर यदा कदा दुःख, राजकीय विभागों की विरुद्धता के कारण धन सम्पत्ति में कर्म, बन्धुओं से द्वेष, मन में उद्विग्नता, वाणी में दीनता, कुभोजन दुष्कर्म व दूसरों की चाकरी करने के योग होते हैं।

गुरुदशा : गुरुभुक्ति

स्वोच्चे स्वक्षेत्रगे जीवे लग्नात् केन्द्रत्रिकोणगे।
अनेकराजाधीशश्च सम्पन्नो राजपूजितः॥21॥
गोमहिष्यादिलाभश्च वस्त्रवाहनभूषणम्।
नूतनगृहनिर्माणं हर्म्यप्राकारसंयुतम्॥22॥
गजान्तैश्वर्यसम्पत्ति भाग्यकर्मणिसंयुते।
ब्राह्मणप्रभुसम्मानं समानप्रभुदर्शनम्॥23॥
स्वप्रभोः स्वफलाधिक्यं दारपुत्रादिलाभकृत्।

केन्द्र त्रिकोणगत, स्वोच्च, स्वक्षेत्री वृहस्पति की दशा में उसी की अन्तर्दशा होने पर अनेक राजाधिराज जैसी स्थिति बनती है। सम्पन्नता, राजाओं द्वारा सम्मान, गो महिषी आदि पशुधन की वृद्धि, उत्तम रहन-सहन, नये घर का निर्माण, घर में उत्तम सामग्री द्वारा बढ़ाव या सजावट होती है।

यदि किसी तरह से वृहस्पति का सम्बन्ध 9.10 भाव या भावेशों से बने तो हाथी पालने की सामर्थ्य देने वाला गजान्त ऐश्वर्य (बहुत धन) प्राप्त होता है। उत्तम बुद्धिजीवी श्रेष्ठ लोगों से सम्मान, अपने बराबर के लोगों से श्रेष्ठ सम्बन्ध, अपने अधिकारियों से अधिक लाभ, स्त्री पुत्रादि का लाभ होता है।

नीचांशे नीचराशिस्थे षष्ठाष्टव्ययभावगे॥24॥
नीचसंगो महादुःखं दायाद्यजनविग्रहम्।
पुत्रदारवियोगश्च धनधान्यार्थहानिकृत्॥25॥
सप्तमाधिपदोषेण देहबाधा भविष्यति।
तद्दोषपरिहारार्थं शिवसाहस्रकं जपेत्॥26॥
रुद्रजाप्यं च गोदानं कुर्यादिष्टं समाप्नुयात्।

यदि वृहस्पति नीच राशि, नीच नवांश में हो या 6.8.12 भाव में हो तो नीच जनों की संगति, बड़ा दुःख, परिजनों का आपसी विवाद, स्त्री पुत्रों से वियोग, धन-धान्य की हानि होती है।

सप्तमेश वृहस्पति हो तो शरीर कष्ट के योग होते हैं। जीवनरक्षा हेतु गोदान, शिव सहस्रनाम का पाठ व रुद्राभिषेक कराने से सुख होता है।

गुरुदशा : शनिभुक्ति

जीवस्यान्तर्गते मन्दे स्वोच्चे स्वक्षेत्रमित्रगे॥27॥
लग्नात्केन्द्रत्रिकोणस्थे लाभे वा बलसंयुते।
राज्यलाभं महत्सौख्यं वस्त्राभरणसंयुतम्॥28॥
धनधान्यादिलाभश्च स्त्रीलाभं बहुसौख्यकृत्।
वाहनाम्बरपश्वादि भूलाभं स्थानलाभकृत्॥29॥
पुत्रमित्रादिसौख्यं च नरवाहनयोगकृत्।
नीलवस्त्रादिलाभश्च नीलाश्वलाभमेव॥30॥
पश्चिमां दिशमाश्रित्य प्रयाणं राजदर्शनम्।
अनेकयानलाभं निर्दिशेन्मन्दभुक्तिषु॥31॥

गुरुदशा में शनि की अन्तर्दशा होने पर, शनि यदि स्वोच्च, स्वक्षेत्र, मित्रक्षेत्र में हो, लग्न से केन्द्र त्रिकोण या लाभ में बलवान् हो तो राज्यप्राप्ति, बहुत सुख, वस्त्राभूषण सुख, धन-धान्य का लाभ, स्त्री सुख, वाहन व पशुधन वृद्धि, भूमि लाभ, पदवी प्राप्ति, पुत्रों व मित्रों का सुख, सेवक व वाहन का संयुक्त सुख, काले नीले वस्त्रों से लाभ, काले घोड़े की प्राप्ति, पश्चिम दिशा की यात्रा, राजा से सम्पर्क, अनेक वाहनों का लाभ होता है।

लग्नात्षष्ठाष्टमे मन्दे व्यये नीचेऽस्तगेऽप्यरौ।
धनधान्यादिनाशश्च ज्वरपीडामनोरुजम्॥32॥
स्त्रीपुत्रादिषु पीडा वा व्रणघातादि सम्भवेत्।
गृहेत्वशुभकार्याणि भृत्यवर्गादिपीडनम्॥33॥
गोमहिष्यादिहानिश्च बन्धुद्वेषं भविष्यति।

शनि यदि 6.8.12 में हो नीचगत, शत्रुक्षेत्री, अस्तंगत हो तो धनधान्य की

हानि, शरीर व मन में विकार, स्त्री पुत्रादि को पीड़ा, चोट का भय, घर में अमंगल, नौकरों तथा कर्मचारियों को पीड़ा या उनसे स्वयं को पीड़ा, पशुधन की हानि, बन्धुओं से द्वेषभाव होता है।

दायेशात्केन्द्रकोणस्थे लाभे वा धनगेऽपि वा॥34॥
भूलाभं चार्थलाभं च शूद्रमूलाद्धनप्रदः॥
दायेशाद् रिपुरन्ध्रस्थे व्यये वा पापसंयुते॥35॥
धनधान्यादिनाशश्च बन्धुमित्रविरोधकृत्।
उद्योगभंगो देहार्तिः स्वजनानां महद्भयम्॥36॥
द्विसप्तमाधिपे मन्दे ह्यपमृत्युर्भविष्यति।
तद्दोषपरिहारार्थं विष्णुसाहस्रकं जपेत्॥37॥
कृष्णां गां महिषीं दद्याद्दानेनारोग्यमाप्नुयात्।

शनि यदि महादशेश गुरु से केन्द्र, त्रिकोण, धन या लाभस्थान में हो तो भूमि लाभ, निम्नवर्ग से धन लाभ होता है।

यदि शनि 6.8.12 में हो या पापयुक्त हो तो धनधान्य की हानि, बन्धुओं व मित्रों से विरोध, परिश्रम की असफलता, शरीर कष्ट, अपने ही लोगों से भय उपस्थित होता है। यदि शनि 2.7 भावेश हो तो अपमृत्यु का भय होता है। दोषशान्ति के लिए विष्णु सहस्रनाम का पाठ करें, गोदान या महिषीदान करें।

गुरुदशा : बुधभुक्ति

जीवस्यान्तर्गते सौम्ये केन्द्रलाभत्रिकोणगे॥38॥
स्वोच्चे वा स्वर्क्षगे वापि दशाधिपसमन्विते।
अर्थलाभं देहसौख्यं राज्यलाभं महत्सुखम्॥39॥
महाराजप्रसादेन स्वेष्टसिद्धिः सुखावहम्।
वाहनाम्बरपश्वादि गृहे गोधनसंकुलम्॥40॥
महीसुतेन संदृष्टे शत्रुवृद्धिः सुखक्षयम्।
व्यवसायात्फलं नेष्टं ज्वरातीसारमेव च॥41॥

वृहस्पति दशा में बुधान्तर्दशा हो तो बुध यदि केन्द्र, त्रिकोण, लाभस्थान में हो या स्वोच्च स्वक्षेत्र में हो या गुरु के साथ हो तो धनलाभ, देहसुख, राज्यप्राप्ति, सुख, किसी बड़े व्यक्ति की सहायता से मनोरथपूर्ति, वाहन पशुधन, गोधनवृद्धि होती है।

यदि बुध पर मंगल की दृष्टि हो तो शत्रुवृद्धि व सुख में कमी तथा व्यवसाय में कमी होने के साथ शरीर में साधारण रोग भी होते हैं।

दायेशाद्भाग्यकोणे वा केन्द्रे वा तुंगराशिगे।
स्वदेशे धनलाभः स्यात् पितृभातृसुखावहम्॥42॥

गजवाजिसमायुक्तो राजमित्रप्रसादकम्।
दायेशात्षष्ठरन्ध्रस्थे व्यये वा पापसंयुते॥43॥
विदेशगमनं चैव मार्गे चौरभयं तथा॥44॥
व्रणदाहाक्षिरोगाश्च नानादेशपरिच्युतिः।

यदि बुध, महादशेश से नवम या पंचम में या केन्द्र में हो या अपनी उच्च राशि में हो तो स्वदेश में ही धनलाभ, माता-पिता का सुख, हाथी घोड़ों का सुख, राजकीय मित्र से लाभ होता है।

महादशेश से 6.8.12 में पापयुक्त बुध हो और शुभ दृष्टि से हीन हो तो धन-धान्य की हानि, विदेश पलायन, रास्ते में चोरी का भय, शरीर पर चोट, जलन, नेत्र रोग, अनेक स्थानों से भ्रंश होता है।

लग्नात्षष्ठाष्टरिःफे वा व्यये पापसंयुते॥45॥
अकस्मात्कलहं चैव गृहेनिष्ठुरभाषणम्।
चतुष्पाज्जीवहानिः स्याद् व्यवहारात्तथैव च॥46॥
अपमृत्युभयं चैव शत्रूणां कलहो भवेत्।
शुभदृष्टे शुभैर्युक्ते दारसौख्यं धनागमम्॥47॥
आदौ शुभं देहसौख्यं वाहनाम्बरलाभदः।
अन्ते तु धनहानिः स्यात् स्वात्मसौख्यं न जायते॥48॥

लग्न से 6.8.12 में पापयुक्त बुध हो तो अचानक कलह, घर में कठोर भाषण का वातावरण, चौपाये धन की हानि, व्यवसाय में या लेन-देन में हानि, अपमृत्यु का भय, शत्रुओं से कलह होती है।

यदि वह बुध शुभ दृष्ट युक्त हो तो धन लाभ, स्त्री सुख, दशारम्भ में शुभ फल तथा अन्त में धनहानि व मन में क्लेश होता है।

द्वितीयद्यूननाथे वा ह्यपमृत्युर्भविष्यति।
तद्दोषपरिहारार्थं विष्णुसाहस्रकं जपेत्॥49॥
बुधप्रीतिकरं चैव दानं शान्तिं च कारयेत्।
आयुर्वृद्धिकरं चैव सर्वसौभाग्यसम्पदः॥50॥

यदि बुध 2.7 भावेश हो तो अपमृत्यु का भय होता है। तब विष्णुसहस्रनाम का पाठ, बुध हेतु दान व शान्ति विधान कराना चाहिए। तब आयु व सौभाग्य बढ़ता है।

गुरुदशा : केतुभुक्ति

जीवस्यान्तर्गते केतौ शुभग्रहसमन्विते।
अन्नसौख्यं धनावाप्तिः कुत्सितान्नं च भोजनम्॥51॥
परान्नं चैव श्राद्धान्नं पापमूलाद्धनानि च।

वृहस्पति की दशा में केतु अन्तर्दशा होने पर, केतु यदि शुभ ग्रह से युक्त हो तो घर में धान्य वृद्धि, धन लाभ, लेकिन पराया अन्न या श्राद्धभोजन के योग, पाप कार्यों से धन लाभ होता है।

दायेशाद्रिपुरन्ध्रस्थे व्यये वा पापसंयुते॥52॥
राजकोषं धनच्छेदं बन्धनं रोगपीडनम्।
बलहानिः पितृद्वेषं भ्रातृद्वेषं मनोरुजः॥53॥

गुरु से 6.8.12 में पापयुक्त केतु हो तो राजकोप, धनहानि, रोग, बन्धन, शक्ति में कमी, पिता व भाइयों से द्वेष, मन में रोग होता है।

दायेशात्सुतभाग्यस्थे वाहने कर्मगेऽपिवा।
नरवाहनयोगश्च गजाश्वाम्बरसंकुलम्॥54॥
व्यवसायात्फलाधिक्यं गोमाहिष्यादिलाभकृत्।
यवनप्रभुमूलाद्वा पीतवस्त्रादिलाभकृत्॥55॥
द्वितीयद्यूनभावे वा देहबाधाभविष्यति।
छागदानं प्रकुर्वीत मृत्युंजय जपं चरेत्॥56॥
सर्वदोषोपशमनं शान्तिं कुर्याद्विधानतः॥

महादशेश गुरु से 6.5.9.10 भावों में केतु हो तो सहायक या ड्राइवर समेत वाहन योग, हाथी घोड़ों व उत्तम वस्त्रादि से युक्त वैभव, व्यवसाय से प्रचुर लाभ, दुधारू पशुओं की प्राप्ति होती है।

यदि केतु 2.7 भावों में हो तो शरीर कष्ट होता है, तब बकरे का दान, मृत्युञ्जय जप तथा केतु की शान्ति करनी चाहिए।

गुरुदशा : शुक्रभुक्ति

जीवस्यान्तर्गते शुक्रे भाग्यकेन्द्रेशसंयुते॥57॥
लाभे वा सुतराशिस्थे स्वक्षेत्रे शुभसंयुते।
नरवाहनयोगश्च गजाश्वाम्बरसंकुलम्॥58॥
महाराजप्रसादेन देशाधिप्यं महत्सुखम्।
नीलाम्बराणि शस्त्राणि लाभश्चैव भविष्यति॥59॥
पूर्वस्यां स्वप्रयाणेन धनलाभो भविष्यति।
कल्याणं च महत्प्रीतिः पितृमातृसुखावहम्॥60॥
देवतागुरुभक्तिश्च अन्नदानं भवेत्तथा।
तटाकं गोपुरादीनि कृत्वा पुण्यानि भूरिशः॥61॥

वृहस्पति की दशा में शुक्र की अन्तर्दशा हो और नवमेश या केन्द्रेश से युक्त हो, या लाभ भाव में हो या पंचम में हो, या स्वराशि, स्वोच्च में हो या किसी शुभ ग्रह से युक्त हो तो दशाकाल में सेवक, चालक सहित वाहन का सुख, हाथी

घोड़ों व वस्त्राभूषणों का सुख होता है।

किसी समर्थ व्यक्ति की सहायता से उत्तम राजयोग, बहुत सुख, धन, वस्त्र व अस्त्र-शस्त्रों का लाभ होता है।

पूर्व दिशा की यात्रा से धन लाभ होता है। सर्वत्र कल्याण, सब से प्रेमभाव, माता पिता का सुख, देवों व गुरुजनों के प्रति भक्ति, अन्नदान की सामर्थ्य, सार्वजनिक सुख सुविधा के निर्माण (मुख्यद्वार, कुआँ आदि) तथा बहुत से पुण्य कार्य होते हैं।

षष्ठाष्टम व्यये नीचे दायेशाद् वा तथैव च।
कलहं बन्धुवैषम्यं दारपुत्रादि पीडनम्॥62॥
मन्दारराहुसंयुक्ते कलहं राजविद्वरम्।
स्त्रीमूलात्कलहं चैव श्वसुरात्कलहं तथा॥63॥
सोदरेण विवादः स्याद् धनधान्य परिच्युतिम्।

यदि शुक्र लग्न या दशेश से 6.8.12 में हो तो कलह, बन्धु-बान्धवों से विरोध, स्त्री व पुत्र को पीड़ा होती है।

यदि शुक्र मंगल, शनि, राहु से युक्त हो तो भी कलह, राजकीय विभागों से कष्ट व विरोध, स्त्री के कारण कलह, ससुराल पक्ष से मनमुटाव, भाई से मनोमालिन्य तथा धन-धान्य की हानि होती है।

दायेशात्केन्द्रराशिस्थे धने वा भाग्यगेऽपि वा॥64॥
धनधान्यादिलाभश्च स्त्रीलाभो राजदर्शनम्।
वाहनं पुत्रलाभश्च पशुवृद्धिर्महत्सुखम्॥65॥
गीतवाद्यप्रसंगादि विद्वज्जनसमागमः।
दिव्यान्नभोजनं सौख्यं स्वबन्धुजनपोषकृत्॥66॥
द्विसप्तमाधिपे शुक्रे तदीशेन युतेक्षिते।
अपमृत्युभयं तस्य स्त्रीमूलादौषधादिभीः॥67॥
तस्य रोगस्य शान्त्यर्थं शान्तिकर्म समाचरेत्।
श्वेतां गां महिषीं दद्यादायुरारोग्यवृद्धिकृत्॥68॥

महादशेश से 1.2.4.7.9.10 भावों में शुक्र हो तो धन-धान्य का लाभ, स्त्री सुख, राजा से मिलन, वाहन-पुत्र-सुख, पशुवृद्धि व बड़े सुख होते हैं।

गीत, वाद्य के प्रसंग, विद्वानों से समागम, दिव्य भोजन, अपने बन्धुओं की सहायता करने की सामर्थ्य होती है।

यदि शुक्र 2.7 भावेश हो या द्वितीयेश सप्तमेश से युक्त दृष्ट हो तो स्त्री के कारण या रोग से अपमृत्यु का भय होता है।

शान्ति के लिए शान्ति विधान करें। सफेद गाय या दुधारू भैंस का दान करने से आयु व स्वास्थ्य की रक्षा होती है।

गुरुदशा : सूर्यभुक्ति

जीवस्यान्तर्गते सूर्ये स्वोच्चे स्वक्षेत्रगेऽपि वा।
केन्द्रे वाथ त्रिकोणे च दुश्चिक्ये लाभगेऽपि वा॥69॥
भाग्ये वा बलसंयुक्ते दायेशाद्वा तथैव च।
तत्काले धनलाभः स्याद् राजसम्मानवैभवम्॥70॥
वाहनाम्बरपश्वादिभूषणं पुत्रसम्भवम्।
मित्रप्रभुवशादिष्टं सर्वकार्यं शुभावहम्॥71॥

वृहस्पति की दशा में सूर्य की अन्तर्दशा हो और सूर्य स्वोच्च, स्वक्षेत्र, केन्द्र, त्रिकोण, तृतीय एकादश, नवम भाव में बलवान् हो या दशेश से इन्हीं भावों में स्थित हो तो तत्काल धन-लाभ, राज-सम्मान, वैभव, वाहन सुख, वस्त्राभूषण सुख, पुत्र सुख, हितैषी समर्थ मित्र का भरपूर सहयोग, सब कामों में शुभ फल होते हैं।

षष्ठाष्टमव्यये सूर्ये दायेशाद्वा तथैव च।
शिरोरोगादिपीडा च ज्वरपीडा तथैव च॥72॥
सत्कर्मविहीनत्वं पापकर्मतथैव च।
सर्वत्रजनविद्वेषं आत्मबन्धुवियोगकृत्॥73॥
अकस्मात्कलहं चैव जीवस्यान्तर्गते रवौ।
द्वितीयद्यूननाथे तु देहपीडा भविष्यति॥74॥
तद्दोषपरिहारार्थमादित्यहृदयं जपेत्।
सर्वपीडोपशमनं सूर्यप्रीतिं च कारयेत्॥75॥

यदि लग्न या दशेश से 6.8.12 में सूर्य हो तो सिर में पीड़ा, रोग, ज्वर, सिर के रोग, सत्कर्मों की असफलता या उनमें अरुचि, पापकर्म में मति, सर्वत्र जनसामान्य का विरोध, अपने बन्धुओं व सहायकों से वियोग, अचानक कलह होती है।

यदि सूर्य 2.7 भावेश हो तो शरीर कष्ट होता है। तब आदित्य हृदय स्तोत्र का पाठ करें तथा सूर्य का जप-दान आदि करने से सब पीड़ाएँ नियन्त्रित होती हैं।

गुरुदशा : चन्द्रभुक्ति

जीवस्यान्तर्गते चन्द्रे केन्द्रलाभत्रिकोणगे।
स्वोच्चे वा स्वर्क्षराशिस्थे पूर्णचन्द्रे बलैर्युते॥76॥
दायेशाच्छुभराशिस्थे राजसम्मानवैभवम्।
दारपुत्रादिसौख्यं च क्षीराणां भोजनं तथा॥77॥
सत्कर्मजनिता कीर्तिः पुत्रपौत्रादिवृद्धिकृत्।

महाराजप्रसादेन सर्वसौख्यं धनागमम्॥78॥
अनेकजनसौख्यं स्याद् दानधर्मादि संग्रहः।

वृहस्पति में चन्द्रमा की अन्तर्दशा हो और चन्द्रमा केन्द्र, लाभ, त्रिकोण में, स्वक्षेत्र, स्वोच्च में बलवान् व पूर्ण बिम्ब वाला हो अथवा दशेश से शुभ भावों में हो तो राज-सम्मान, वैभव, स्त्री-पुत्रों का सुख, दुग्धभोजन, सत्कर्मों से यश, पुत्र-पौत्रों का सुख, सब सुख, धन-लाभ, राजकीय सहयोग, बहुत से लोगों का सुख, दान-धर्म का अर्जन होता है।

षष्ठाष्टमव्यये चन्द्रे त्रिकोणे पापसंयुते॥79॥
दायेशात्षष्ठरन्ध्रे वा व्यये वा बलवर्जिते।
मानार्थबन्धुहानिश्च विदेशपरिविच्युतिः॥80॥
नृपचौरादिपीडा च दायाद्यजनविड्वरम्।
मातुलादि वियोगश्च मातृपीडा तथैव च॥81॥
द्वितीयसप्तमाधीशै देहपीडा भविष्यति।
तद्दोषपरिहारार्थं दुर्गापाठं च कारयेत्॥82॥

यदि चन्द्रमा 6.8.12 में हो या त्रिकोण में पापयुक्त हो या दशेश से 6.8.12 में निर्बल हो तो सम्मान, धन, बन्धुजनों की हानि, विदेश से पलायन करने की नौबत, राजा व चोर आदि से पीड़ा, सम्पत्ति सम्बन्धी विवाद, मामा व माता को पीड़ा होती है।

यदि चन्द्र या गुरु 2.7 भावेश हो तो शरीर कष्ट होता है। तब दुर्गापाठ कराना लाभदायक होता है।

गुरुदशा : मंगलभुक्ति

जीवस्यान्तर्गते भौमे लग्नात्केन्द्रत्रिकोणगे।
स्वोच्चे वा स्वर्क्षगे वापि तुंगांशे स्वांशभेऽपि वा॥83॥
विद्याविवाहकार्याणि ग्राममूम्यादिलाभकृत्।
जनसामर्थ्यमाप्नोति सर्वकार्यार्थसिद्धिदम्॥84॥

वृहस्पति में मंगल की अन्तर्दशा हो और मंगल लग्न से केन्द्र, त्रिकोण में हो, स्वोच्च, स्वक्षेत्र, स्वनवांश या उच्च नवांश में हो तो शिक्षा, वृद्धि, विवाहादि कार्य, गाँव आदि का आधिपत्य जायदाद लाभ, जनसमर्थन, सर्व कार्य सिद्धि होती है।

दायेशात्केन्द्रलाभस्थे भाग्ये वा धनगेऽपि वा।
शुभयुक्ते शुभैर्दृष्टे धनधान्यादि सम्पदः॥85॥
मिष्टान्नदानविभवं राजप्रीतिकरं शुभम्।
स्त्रीसौख्यं च सुतावाप्तिः पुण्यतीर्थफलप्रदम्॥86॥

वृहस्पति से केन्द्र, नवम, द्वितीय या लाभ-स्थान में मंगल शुभयुक्त या शुभ-दृष्ट हो तो धन-धान्य व सम्पत्ति की वृद्धि, मिष्टान्न खिलाने के सुयोग, राजा की अनुकम्पा, स्त्रीसुख, पुत्रप्राप्ति, पुण्यदायक तीर्थों की यात्रा होती है।

दायेशात्षष्ठरन्ध्रे वा व्यये वा नीचगेऽपि वा।
पापयुक्तेक्षिते वापि धान्यार्थगृहनाशनम्॥87॥
नानारोगभयं दुःखं नेत्ररोगादिसम्भवम्।
पूर्वार्धे क्लेशमाधिक्यमपरार्धे महत्सुखम्॥88॥
द्वितीयद्यूननाथेतु देहजाड्यं मनोरुजः।
अनड्वाहं प्रकुर्वीत सर्वसम्पात्प्रदायकम्॥89॥

महादशेश वृहस्पति से 6.8.12 में मंगल हो या नीचगत हो या पापदृष्ट युक्त हो तो धन-धान्य, जायदाद व मकान की हानि होती है।

अनेक रोगों से दुःख, नेत्र रोग, पूर्वार्ध में अधिक कष्ट, अपरार्ध में सुख होता है। यदि मंगल 2.7 भावेश हो तो शरीर में शिथिलता होती है। तब साँड छोड़ना चाहिए। उससे कष्ट निवृत्ति होती है।

गुरुदशा : राहुभुक्ति

जीवस्यान्तर्गते राहौ स्वोच्चे वा केन्द्रगेऽपि वा।
मूलत्रिकोणे भाग्ये वा केन्द्राधिपसमन्विते॥90॥
शुभयुक्तेक्षिते वापि योगभुक्तिं समादिशेत्।
भुक्त्यादौ शरमासांश्च धनधान्यपरिश्रमः॥91॥
देशग्रामाधिकारं च यवनप्रभुदर्शनम्।
गृहे कल्याणसम्पत्तिर्बहुसेनाधिपत्यताम्॥92॥
दूरयात्रादिगमनं पुण्यधर्मादिसंग्रहः।
सेतुस्नानफलावाप्तिरिष्टसिद्धिः सुखावहम्॥93॥

वृहस्पति में राहु की अन्तर्दशा होने पर, राहु यदि केन्द्र, त्रिकोण में हो या अपने मूलत्रिकोण में हो या केन्द्रेश के साथ हो, या शुभ ग्रह से युक्त-दृष्ट हो तो योगकारक का फल मिलता है। लेकिन शुरू के 5 मास अधिक मेहनत करनी पड़ती है। बाद में देश या ग्राम का अधिकार, यवन राजा से भेंट, घर में कल्याणकारी बातें, बहुत से लोगों का आधिपत्य या सेनापतित्व, दूर देश की यात्रा, पुण्य वृद्धि, रामेश्वरम् आदि दूरस्थ तीर्थों की यात्रा, अभीष्ट सिद्धि तथा सुख होते हैं।

दायेशात्षष्ठरन्ध्रे वा व्यये वा पापसंयुते।
चौराहिव्रणभीतिश्च राजवैषम्यमेव च॥94॥
गृहकर्मकलापेन व्याकुली भवति ध्रुवम्।
सोदरेण विरोधः स्याद् दायाद्यजनविग्रहः॥95॥

गृहे त्वशुभकार्याणि दुःस्वप्नादिभयं ध्रुवम्।
अकस्मात्कलहं चैव क्षूद्रशून्यादि रोगकृत्॥96॥
द्विसप्तमस्थिते राहौ देहबाधां विनिर्दिशेत्।
तद्दोषपरिहारार्थं मृत्युञ्जयजपं चरेत्॥97॥
छागदानप्रकुर्वीत सर्वसौख्यादिमादिशेत्॥98॥

यदि राहु दशेश से 6.8.12 में हो या पापयुक्त हो तो चोटभय, चोरभय, राज्य का असहयोग, घरेलू कामों से व्याकुलता, भाइयों से विरोध, उत्तराधिकार के विवाद, घर में अशुभ कार्य, दुःस्वप्न, अचानक कलह, छोटे-छोटे रोगों से पीड़ा, अकेलापन होता है।

यदि राहु 2.7 भावों में हो तो शरीर कष्ट निवृत्ति के लिए मृत्युञ्जय जप व बकरी का दान करें, तब सुख होता है।

इति श्री दशाफलदर्पणे पं. सुरेशमिश्रकृते हिन्दीव्याख्याने
गुरोरन्तर्दशाफलाध्यायोऽष्टादशः॥18॥
॥आदितः श्लोकाः 1451॥

19

॥ शन्यन्तर्दशाफलाध्यायः ॥

सामान्य फल

केन्द्रस्थस्य शनेर्दाये यदा पापहतिस्तदा।
स्थानच्युतिः प्रवासश्च नृपचौराग्निपीडनम्॥1॥
तथाविधशनेर्दाये शुभभुक्तौ महत्सुखम्।
नृपाभिषेकमर्थाप्तिर्देशग्रामाधिपत्यता ॥2॥
फलमीदृशमादौ तु भुक्त्यन्ते रोगपीडनम्।
परापवादं बन्धूनां मरणं धननाशनम्॥3॥

केन्द्रगत शनि की दशा में जब पापग्रह की अन्तर्दशा हो तब स्थान परिवर्तन, पदच्युति, व्यर्थ का प्रवास, विभिन्न प्रकार की पीड़ाएँ होती हैं।

ऐसे ही शनि की दशा में शुभ अन्तर्दशा हो तो बहुत सुख, पदप्राप्ति, धनलाभ, आधिपत्य प्राप्त होता है।

शुभ अन्तर्दशा के आरम्भ में शुभ फल, लेकिन अन्त में रोगादि से पीड़ा होती है। बदनामी, बन्धुओं से कलह, मृत्यु तथा धन हानि सम्भव होती है।

त्रिकोणस्थशनेर्दाये पितृपुत्रविनाशनम्।
पापभुक्तौ महत्कष्टं कर्मनाशमथापि वा॥4॥
वाताक्षिमूलरोगं च स्वबन्धुकलहं तथा।
उद्योगभंगं दुःखं च स्थलधान्यविनाशनम्॥5॥
तथाविधशनेर्दाये शुभभुक्तौ महत्सुखम्।
राजपूज्यं कृषेर्लाभो धनधान्याभिवर्धनम्॥6॥

त्रिकोणस्थ शनि की दशा में पापान्तर्दशा हो तो पिता व पुत्र को कष्ट, अन्यविध कष्ट, कार्यहानि भी होती है।

वातरोग, नेत्रदोष, बन्धुओं से कलह, परिश्रम की विफलता, दुःख, चलते काम में हानि होती है।

ऐसे शनि की दशा में शुभ ग्रह की अन्तर्दशा हो तो बहुत सुख, राजपूज्यता, व्यवसाय में लाभ, धन-धान्य की वृद्धि होती है।

स्वबन्धुदारपुत्राणामारोग्यं भूषणादिकम्।
भृत्यमित्रार्थसम्पत्तिं लभते धर्मसंग्रहम्॥7॥

त्रिकोणस्थ शनि की दशा में शुभ ग्रह की अन्तर्दशा हो तो अपने परिवार जनों का अच्छा स्वास्थ्य, आभूषणादि की वृद्धि, धन-सम्पत्ति व धर्म वृद्धि होती है।

षष्ठाष्टमव्ययस्थस्य शनेर्दाये शुभेतरा।
हृतिर्दुःखं महत्कष्टं स्थाननाशं धनक्षयम्॥8॥
गुह्यरोगं विषार्तिं च ज्वरवह्निनृपाद्भयम्।
अत्याप्तबन्धुमरणमुद्योगस्य विनाशनम्॥9॥

6.8.12 भावगत शनि की दशा में पापग्रह की अन्तर्दशा हो तो दुःख, कष्ट, स्थानहानि, धनक्षय, गुप्तरोग, विषभय, रोग, अग्नि व राजपक्ष से भय, किसी प्रिय सहयोगी की मृत्यु, परिश्रम की असफलता होती है।

षष्ठाष्टमव्ययस्थस्य शुभपाके महत्सुखम्।
आरोग्यं कान्तिवृद्धिश्च देशग्रामाधिपत्यता॥10॥

6.8.12 भावगत शनि की दशा में शुभ भुक्ति हो तो सुख, स्वस्थ शरीर, शोभावृद्धि देश या ग्राम की प्रमुखता प्राप्त होती है।

तृतीयलाभराशिस्थशनेः शुभहृतिर्यदा।
पाके शुभ फलं प्रोक्तं नृपलालानभूषणम्॥11॥
तथाविधशनेर्दाये यदा पापहृतिर्भवेत्।
तदा धनाप्तिर्दुःखं च भ्रातृवर्गविनाशनम्॥12॥
विदेशयानं कलहं वैकल्यं भृत्यनाशनम्।
कुभोजनं परप्रेष्यं कुस्त्रीसंगमनं लभेत्॥13॥

3.11 भावगत शनि की दशा में शुभ ग्रह की अन्तर्दशा हो तो शुभ फल, राजकीय जनों का सहयोग मिलता है।

उसी शनि की दशा में पापान्तर्दशा हो तो धनलाभ, अन्य प्रकार से दुःख, भ्रातृवर्ग की हानि होती है।

विदेशयात्रा, कलह, विफलता, नौकरों की कमी, खराब भोजन, दूसरों की अधीनता खराब स्त्री से सम्पर्क होता है।

धनस्थितशनेर्पाके यदा पापहृतिर्भवेत्।
राजदण्डं महाविघ्नं कारागृहनिरोधनम्॥14॥
उत्साहभंगं देहार्तिं ज्वरातीसारपीडनम्।
राज्यनाशो गवाश्वानां मरणं वाहनाद्भयम्॥15॥

द्वितीयस्थ शनि की दशा में पापग्रह की अन्तर्दशा हो तो राजदण्ड, बहुत से

विघ्न, जेलयात्रा सम्भव होती है।

उत्साहभंग, शरीर कष्ट, रोग, राज्यहानि, पशु धन व वाहन की हानि, मृत्यु, वाहन से दुर्घटना सम्भव होती है।

द्वितीयस्थशनेर्पाके शुभभुक्तौ मनोदृढ़म्।
उपकर्तृत्वमन्येशां द्यूतविद्याविनोदकम्॥16॥
गानकेलीरहस्यं च भोजनाम्बरभूषणम्।
उद्योगसिद्धिं राज्याप्तिं मणिविद्रुमकांचनम्॥17॥

द्वितीयस्थ शनि की दशा में शुभ ग्रह की अन्तर्दशा हो तो मनोबल वृद्धि, दूसरों का उपकार करने की सामर्थ्य, जुआ आदि में मन रमना, गीत-संगीत, नृत्य गोष्ठियाँ, सुन्दरियों का सुख, उत्तम भोजन, वस्त्राभूषण, परिश्रम की सफलता, राज्यलाभ, मणिमुक्तादि का लाभ होता है।

शनिदशा : शनिभुक्ति

मूलत्रिकोणे स्वर्क्षे वा तुलायामुच्चगेऽपि वा।
केन्द्रत्रिकोणे लाभे वा राजयोगादिसंयुते॥18॥
राज्यलाभो महत्सौख्यं दारपुत्राभिवर्धनम्।
वाहनभयसंयुक्तं गजाश्वाम्बरसंकुलम्॥19॥
महाराजप्रसादेन अश्वान्दोल्यादिलाभकृत्।
चतुष्पाज्जीवलाभः स्याद्ग्रामभूम्यादिलाभकृत्॥20॥

शनि यदि उच्च, परमोच्च, मूलत्रिकोण, स्वक्षेत्र में हो या अच्छी राशि में केन्द्र त्रिकोण, लाभ में हो या योगकारक ग्रह से युक्त हो तो दशान्तर्दशा में राज्यप्राप्ति, बहुत सुख, स्त्री पुत्रों की वृद्धि, कई वाहनों का सुख, हाथी घोड़ों का वैभव, बड़े समर्थ लोगों की प्रसन्नता से खास प्रतिष्ठा व समृद्धि की प्राप्ति, चौपाये पशुओं से लाभ, जायदाद प्राप्ति होती है।

षष्ठाष्टमव्यये मन्दे नीचे वा पापसंयुते।
तद्भुक्त्यादौ राजप्रीतिं विषशस्त्रादिपीडनम्॥21॥
रक्तस्रावं गुल्मरोगमतीसारादिपीडनम्।
मध्ये चौरादिभीतिश्च देशत्यागं मनोरुजम्॥22॥
अन्ते शुभकरं चैव ग्रामभूम्यादि लाभकृत्।
द्वितीय द्यूननाथे तु ह्यपमृत्युर्भविष्यति॥23॥
तद्दोषपरिहारार्थं मृत्युंजय जपं चरेत्॥23॥

6.8.12 भावों में खराब राशि में या नीचगत या पापयुक्त शनि हो तो ऐसे शनि की दशा में शनि की ही अन्तर्दशा रहने पर आरम्भ में राजकीय लोगों से सम्पर्क व सहयोग तथा शस्त्रादि से पीड़ा, रक्तस्राव, भीतरी फोड़े से पीड़ा, दस्त

आदि से शरीर कष्ट होता है।

मध्य में चोरादि से भय, स्थान परिवर्तन मानसिक सन्ताप होता है। अन्त में शुभ फल तथा जमीन जायदाद आदि का लाभ होता है।

यदि शनि 2.7 भवेश हो तो अपमृत्यु का भय होता है। इस दोष को दूर करने के लिए मृत्युंजय जप करना चाहिए।

शनि दशा : बुधभुक्ति

मन्दस्यान्तर्गते सौम्ये त्रिकोणे केन्द्रगेऽपि वा।
सन्मानं च यशः कीर्तिर्विद्यालाभं धनागमम्॥24॥
स्वदेशे सुखमाप्नोति वाहनादिफलैर्युते।
यज्ञादिकर्मसिद्धिश्च राजयोगादिसम्भवम्॥25॥
देहसौख्यं समुत्साहं गृहे कल्याणसम्भवम्।
सेतुस्नानफलावाप्तिस्तीर्थयात्रादिकं भवेत्॥26॥
वाणिज्याद्धनलाभश्च पुराणश्रवणादिकम्।
अन्नदानफलं चैव नित्यं मिष्टान्नभोजनम्॥27॥

शनि दशा में बुध भुक्ति हो और बुध केन्द्र या त्रिकोण में हो तो सम्मान, यश, कीर्ति, विद्या व धन का लाभ होता है।

अपने स्थान पर ही व्यक्ति सम्मान व धन प्राप्त करता है। वाहन सुख होता है। यज्ञादि धर्मकार्य सिद्धि होते हैं। शरीर में सुख, मन में उत्साह, घर में अच्छी बातों का उदय, दूर की तीर्थयात्राओं का योग, व्यवसाय से धनलाभ, कथा-पुराण श्रवणादि के योग, अन्नदान की सामर्थ्य, उत्तम भोजन आदि प्राप्त होता है।

षष्ठाष्टमव्यये सौम्ये नीचे वास्तंगते यदि।
रव्यारफणिसंयुक्ते दायेशाद् वा तथैव च॥28॥
नृपाभिषेकमर्थाप्तिर्देशग्रामाधिपत्यताम्।
फलमीदृशमादौ तु मध्यान्ते रोगपीडनम्॥29॥
नष्टानि सर्वकार्याणि व्याकुलं च मनोभयम्।
द्वितीयसप्तमाधीशे देहबाधा भविष्यति॥30॥
तद्दोषपरिहारार्थं विष्णुसाहस्रकं जपेत्।
अन्नदानं प्रकुर्वीत सर्वसम्पत्प्रदायकम्॥31॥

6.8.12 भावों में बुध नीचगत, अस्त, सूर्य, मंगल, राहु से युक्त हो या दशेश से 6.8.12 में हो तो पदप्राप्ति, धनलाभ, आधिपत्य होता है। यह फल दशा के आरम्भ में होगा। मध्य व अन्त में रोगपीड़ा, सब कामों में असफलता, मन में व्याकुलता होती है।

यदि बुध 2.7 भावेश हो तो देहबाधा सम्भव है। दोषशान्ति के लिए विष्णु

सहस्रनाम का पाठ व अन्नदान करना चाहिए। तब सब तरह से सुख होता है।

शनिदशा : केतुभुक्ति

मन्दस्यान्तर्गते केतौ शुभदृष्टियुतेक्षिते।
स्वोच्चे वा शुभराशिस्थे योगकारकसंयुते॥32॥
लग्नाधिपेन संयुक्ते आदौ सौख्यं धनागमम्।
गंगादिसर्वतीर्थेषु स्नानं दैवत्दर्शनम्॥33॥

शनि में केतु अन्तर्दशा रहने पर, यदि केतु जन्म चक्र में शुभ ग्रह से युक्त दृष्ट हो, स्वोच्च में हो या शुभ राशि में हो या योगकारक ग्रह से युक्त हो।

अथवा लग्नेश से युक्त हो तो शुरू में सुख व धन लाभ होता है। बहुत से तीर्थों की यात्रा व देवस्थानों के दर्शन पूजन का योग होता है।

दायेशात्केन्द्रकोणे वा तृतीये लाभगेऽथवा।
सामर्थ्यं धर्मबुद्धिश्च सौख्यं नृपसमागमः॥34॥

महादशेश शनि से केन्द्र, त्रिकोण, तृतीय या लाभ में केतु हो तो सामर्थ्यवृद्धि, धर्मबुद्धि सुख व राजा से समागम होता है।

मन्दस्यान्तर्गते केतौ पापग्रहयुतेक्षिते।
नीचे वा शत्रुराशिस्थे स्थानभ्रंशं महद्भयम्॥35॥
दारिद्र्यं बन्धनाद्भीतिः पुत्रदारादिनाशनम्।
स्वप्रभोश्च महाक्लेशं विदेशगमनं तथा॥36॥

केतु यदि पापयुक्त दृष्ट हो तो या शुभ राशि हो तो स्थानभ्रंश, भय, दरिद्रता, बन्धन का भय, स्त्री-पुत्रादि की हानि, अपने स्वामी से बहुत कष्ट, क्लेश, विदेश गमन आदि फल होते हैं।

षष्ठाष्टमव्यये केतौ दायेशद्वा तथैव च।
अपमृत्युभयं चैव कुत्सितान्नस्य भोजनम्॥37॥
शीतज्वरातिसारश्च व्रणचौरादिपीडनम्।
दारपुत्रवियोगश्च संतापो भवति ध्रुवम्॥38॥
द्वितीयद्यूनराशिस्थे देहपीडा भविष्यति।
छागदानं प्रकुर्वीत ह्यपमृत्युभयं हरेत्॥39॥

6.8.12 भावों में केतु हो या महादशेश से 6.8.12 में स्थित हो तो अपमृत्यु भय, खराब भोजन, शीत ज्वर, दस्त, अतिसार, घाव, चोट, दुष्टजनों से पीड़ा, स्त्री-पुत्रों से वियोग, मन में सन्ताप होता है।

2.7 भावों में केतु हो तो शरीर कष्ट होता है। तब बकरे का दान करना चाहिए।

शनिदशा : शुक्रभुक्ति

मन्दस्यान्तर्गते शुक्रे स्वक्षेत्रगेऽपि वा।
केन्द्रे वा शुभसंयुक्ते त्रिकोणे लाभगेऽपि वा॥40॥
दारपुत्रधनप्राप्तिर्देहारोग्यं महोत्सवम्।
महाराजप्रसादेन हीष्टसिद्धिः सुखावहम्॥41॥
गृहे कल्याणसम्पत्ति राज्यलाभो महत्सुखम्।
सन्मानं प्रभुसम्मानं प्रियवस्त्रादिलाभकृत्॥42॥
द्वीपान्तराद्वस्त्रलाभः श्वेताश्वमहिषी तथा।

यदि शुक्र स्वोच्च, स्वक्षेत्र में हो, केन्द्र या त्रिकोण या लाभ में अच्छी राशि में शुभ ग्रह से युक्त हो तो शनि दशा व शुक्र अन्तर्दशा में स्त्रीपुत्र, शरीर का सुख, घर में विशेष उत्सव का माहौल, समर्थ लोगों का सहयोग, सुख, मनोरथ सिद्धि, कल्याणकारी बातों का उदय, राज्यप्राप्ति, सम्मान, अधिकारी की प्रशंसा, उत्तम वस्त्राभूषणों की भेंट, दूरस्थ प्रदेशों से भेंट, उपहार प्राप्ति, सफेद वाहन व दुधारू पशु की प्राप्ति होती है।

विशेष नियम

गुरुचारवशाद्भाग्यं सौख्यं च धनसम्पदः॥43॥
शनिचारान्मनुष्योऽसौ योगमाप्नोत्यसंशयम्।

शनि व शुक्र की जब परस्पर दशान्तर्दशा हो, उस दौरान जब वृहस्पति का गोचर जन्मराशि से शुभ व बलवान् हो तब अधिक उत्तम अर्थात् कहे गए फल से अधिक सुख व सम्पदा होंगी। इसी तरह जब शनि का उत्तम गोचर हो तो राजयोग व योगों से फल विशेषतया मिलेंगे।

स्पष्ट है कि इनकी दशान्तर्दशा में जब शनि व गुरु का गोचर साधारण हो तो साधारण शुभ फल तथा अनिष्टकारक गोचर हो तो अति साधारण, प्रत्युत अशुभ फल भी मिलते हैं।

उत्तरकालामृत में बताया गया है कि शनि व शुक्र ये दोनों ही उत्तम राशि व उत्तम भाव में हों तो इनकी दशान्तर्दशा में अपमान, पदच्युति आदि अशुभ फल होते हैं। इसके विपरीत इनमें से कोई एक अशुभ राशि या अशुभ भाव में हो तो विशेष उत्कट अच्छे फल होते हैं। अनुभव में भी बहुत्र ऐसा ही देखा गया है। यदि दोनों ही निर्बल हों तो भी शुभ फल देते हैं। अतः विचारपूर्वक फल कहना चाहिए।

शत्रुनीचास्तगे शुक्रे षष्ठाष्टव्ययराशिगे॥44॥
दारनाशं मनःक्लेशं स्थाननाशं मनोरुजम्।
दारादिस्वजनक्लेशं सन्तापजनविड्वरम्॥45॥

यदि शुक्र नीचगत, शत्रु क्षेत्री, अस्तंगत, 6.8.12 भावगत हो तो स्त्रीनाश, मन में क्लेश, स्थानहानि, मानसिक सन्ताप, स्वजनों को कष्ट, लोगों का प्रबल विरोध होता है।

दायेशाद्भाग्यगेनैव केन्द्रे वा लाभसंयुते।
राजप्रीतिकरं चैव मनोऽभीष्टप्रदायकम्॥46॥
दानधर्मदयायुक्तस्तीर्थयात्रादिकं फलम्।
शास्त्रार्थकाव्यरचनावेदान्तश्रवणादिकम्॥47॥
दारपुत्रादिसौख्यं च वाहनछत्रलाभदम्।

शनि से शुक्र नवम, केन्द्र, लाभ में स्थित हो तो राजकीय लोगों का स्नेह, अभीष्ट सिद्धि, दान धर्म दया की वृद्धि, तीर्थयात्रा का फल, शास्त्रों के अर्थों का मनन, काव्य विनोद, वेदान्त आदि में अभिरुचि, स्त्री पुत्रों का सुख, वाहन व प्रतिष्ठा में वृद्धि होती है।

दायेशाद्व्ययगे शुक्रे षष्ठे वा ह्यष्टमेऽपि वा॥48॥
नेत्रपीडाज्वरभयं स्वकुलाचारवर्जितम्।
कपोले दन्तशूलादिहृदि गुह्यनिपीडनम्॥49॥
जलभीतिर्मनस्तापं वृक्षात्पतनसम्भवम्।
राजद्वारे जनद्वेषं सोदरेण विरोधनम्॥50॥
द्वितीयसप्तमाधीशे आत्मक्लेशो भविष्यति।
श्वेतां गां महिषीं दद्याद् दुर्गादेवीजपं चरेत्॥51॥

महादशेश से 6.8.12 में शुक्र हो तो नेत्रपीड़ा, ज्वरादि रोगों का भय, कुलाचार के विपरीत आदतें, दाँत में विकार, हृदय में विकार, गुप्तांगों में रोग या भीतरी रोग, जल से भय, ऊँचे स्थान से गिरने का भय, राजद्वार में वैर विरोध, भाइयों से मन मुटाव होता है।

यदि शुक्र 2.7 भावेश हो तो शरीर कष्ट होता है। शान्ति के लिए श्वेत गो दान तथा दुर्गापाठ करें।

शनिदशा : सूर्यभुक्ति

मन्दस्यान्तर्गते सूर्ये स्वोच्चे स्वक्षेत्रगेऽपि वा।
भाग्याधिपेन संयुक्ते केन्द्रलाभत्रिकोणगे॥52॥
शुभदृष्टियुते वापि स्वप्रभोश्च महत्सुखम्।
गृहे कल्याणसम्पत्तिः पुत्रादिसुखवर्धनम्॥53॥
वाहनाम्बरपश्वादि गृहे गोक्षीरसंकुलम्।

शनि में सूर्य की अन्तर्दशा होने पर, सूर्य यदि उच्च या स्वक्षेत्र में हो, या नवमेश से युक्त हो, केन्द्र, लाभ या त्रिकोण में हो, शुभयुक्त या दृष्ट हो तो अपने अधिकारी

से विशेष सुख व अनुकूलता, घर में उत्तम बातों का उदय, पुत्रादि का सुख, वाहन, वस्त्राभूषण व पशुधन की वृद्धि तथा घर में दूध घी की बहुतायत होती है।

षष्ठाष्टमव्यये सूर्ये दायेशाद्वा तथैव च॥54॥
हृद्रोगो मानहानिश्च स्थानभ्रंशो मनोरुजः।
इष्टबन्धुवियोगश्च उद्योगस्य विनाशनम्॥55॥
तापज्वरादिपीडां च व्याकुलं भयमेव च।
आत्मसम्बन्धिमरणमिष्टबन्धुवियोगकृत्॥56॥
द्वितीयद्यूननाथे तु देहबाधा भविष्यति।
सूर्यप्रीतिकरं दानं दद्यादायुर्विवृद्धये॥57॥

लग्न या महादशेश से 6.8.12 में सूर्य हो तो हृदयरोग, मानहानि, स्थानभ्रंश, मनोविकार, इष्ट बन्धुओं का वियोग, परिश्रम की असफलता, बुखार आदि से पीड़ा, व्याकुलता, भय, अपने प्रियजन का वियोग, किसी निकटवर्ती की मृत्यु होती है।

यदि सूर्य 2.7 भावेश हो तो देहबाधा दूर करने हेतु, सूर्य की प्रसन्नता के लिए दान करें।

शनिदशा : चन्द्रभुक्ति

मन्दस्यान्तर्गते चन्द्रे जीवदृष्टिसमन्विते।
स्वोच्चे स्वक्षेत्रकेन्द्रस्थे त्रिकोणे लाभगेऽपि वा॥58॥
पूर्णचन्द्रे सौम्ययुक्ते राजप्रीतिसमागमम्।
महाराजप्रसादेन वाहनाम्बरभूषणम्॥59॥
सौभाग्यं सुखवृद्धिश्च भृत्यानां परिपालनम्।
पितृमातृकुले सौख्यं पशुवृद्धिः सुखावहम्॥60॥

शनि में चन्द्रमा की अन्तर्दशा हो और चन्द्रमा गुरु युक्त या दृष्ट हो या चन्द्र उच्चगत, स्वक्षेत्र में हो, केन्द्र, त्रिकोण या लाभ स्थान में हो, या पूर्ण चन्द्रमा शुभयुक्त हो तो राजकीय जनों की प्रीति, समर्थ लोगों की सहायता से वाहनादि, वस्त्राभूषणों का सुख, सौभाग्य, सुख, नौकरों का भरण-पोषण करने की सामर्थ्य, माता पिता के कुलों में वृद्धि व सुख, पशुधन की वृद्धि तथा सुख होता है।

क्षीणे वा पापसंयुक्ते पापदृष्टिस्वनीचगे॥
क्रूरांशकगते वापि क्रूरक्षेत्रगतेऽपि वा॥61॥
जातकस्य महत्कष्टं राजकोपाद्धनक्षयम्।
पितृमातृवियोगश्च पुत्रीपुत्रादिरोगकृत्॥62॥
व्यवसायात्फलं नेष्टं नानामार्गे धनव्ययः॥
अकाले भोजनं चैवमौषधस्य च भक्षणम्॥63॥
फलमीदृशमादौ तु अन्ते सौख्यं धनागमम्।

यदि क्षीणचन्द्र, पापयुक्त, क्रूर नवांशगत, क्रूर राशिगत चन्द्रमा हो तो शनि दशा चन्द्रभुक्ति में बहुत कष्ट, राजकोप से धन हानि, माता-पिता का वियोग, सन्तान को रोग व कष्ट, व्यवसाय में कम सफलता, अनेक प्रकार से धनव्यय, असमय में भोजन, दवा खाने के योग होते हैं। ऐसे फल दशा के आरम्भ में ही हो जाते हैं। अन्त में सुख व धनागम होता है।

दायेशात्षष्ठरिःफे वा रन्ध्रे वापि विलग्नतः॥64॥
शयनं रोगमालस्यं स्थानभ्रंशं भयावहम्।
शत्रुवृद्धिर्विरोधश्च स्वेष्टबन्धुविरोधकृत्॥65॥

लग्न या महादशेश से 6.8.12 में चन्द्र हो तो उसकी अन्तर्दशा में शयन अर्थात् अधिक नींद या रोगशय्या पर रहना, रोग, आलस्य, स्थानभ्रंश अर्थात् पदच्युति या पतन भय के भयावह योग, शत्रुवृद्धि, विरोध, स्वजनों से मन मुटाव होता है। हमारे बृहत्पाराशर के संस्करण से उदाहरण द्वारा इस नियम की पुष्टि की जा रही है।

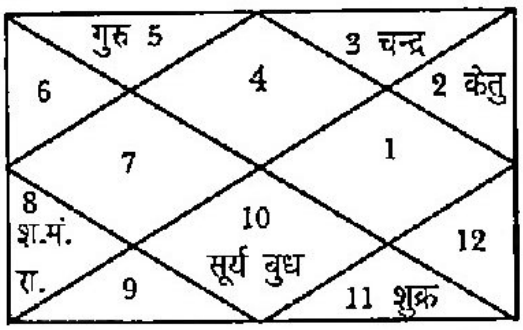

शनि दशा में चन्द्र भुक्ति के दौरान, दशारम्भ में ही अचानक सड़क दुर्घटना में इन्हें चोट लगी। चलते वाहन से गिरने से कई स्थलों पर घाव, अंगभंग, रोगशय्या, दवा भक्षण आदि सब फल मिले। दशा के मध्य से ही अर्थ लाभ विशेष होना आरम्भ हो गया।

चन्द्रमा लग्न व महादशेश से क्रमशः 12 व 8 भाव में है। अष्टमेश में लग्नेश की दशा है। चन्द्रमा का षड्बल अवश्यकता से कम है। चन्द्रमा पापदृष्ट भी है। शनि के ही क्रूर नवांश व मंगल के षष्ट्यंश में है।

दायेशात्केन्द्रराशिस्थे त्रिकोणे लाभगेऽपि वा।
वाहनाम्बरपश्वादिभ्रातृवृद्धिः सुखावहम्॥66॥
पितृमातृसुखावाप्तिः स्त्रीसौख्यं च धनागमम्।
मित्रप्रभुवशादिष्टं सर्वसौख्यं शुभावहम्॥67॥

महादशेश या लग्न से केन्द्र, त्रिकोण, लाभस्थान में चन्द्रमा हो तो उसकी अन्तर्दशा में वाहन, वस्त्र, पशुधन, स्त्रीसुख, धनागम, मित्रों व अधिकारियों के सहयोग से शुभ फल व सुख होते हैं।

शनिदशा : मंगलभुक्ति

मन्दस्यान्तर्गते भौमे केन्द्रलाभत्रिकोणगे।
तुंगे स्वक्षेत्रगे वापि दशाधिपसमन्विते॥68॥
लग्नाधिपेन संयुक्ते आदौ सौख्यं धनागमम्।
राजप्रीतिकरं सौख्यं वाहनाम्बरभूषणम्॥69॥

सेनाधिक्यं नृपप्रीतिः कृषिगोधान्यसम्पदः।
नूतनस्थाननिर्माणं भ्रातृवर्गेष्टसौख्यकृत्॥70॥

शनि में मंगल की अन्तर्दशा रहने पर, मंगल यदि केन्द्र त्रिकोण, लाभ में हो या महादशेश के साथ ही हो या स्वक्षेत्र स्वोच्च में हो या लग्नेश से युक्त हो तो प्रारम्भ से ही सुख व धनागम बड़े लोगों का स्नेह, सुख, वाहन, वस्त्राभूषणों का सुख, जनसम्पर्क व जनसमर्थन की अधिकता, राजकीय जनों से मेल-मिलाप, व्यवसाय वृद्धि, धन-धान्य वृद्धि, सम्पत्ति वृद्धि, नए स्थान का निर्माण, भाई-बन्धुओं से सुख होता है।

पिछले उदाहरण में ही शनि व मंगल दोनों साथ हैं। मंगल स्वक्षेत्री त्रिकोण में है, योगकारक भी है, फलस्वरूप जातक की सम्पत्ति वृद्धि, नए स्थान का निर्माण, धनागम आदि सभी शुभ फल हुए।

नीचास्तंगते भौमे षष्ठाष्टव्ययराशिगे।
पापदृष्टियुते वापि धनहानिर्भविष्यति॥71॥
चौराहिव्रणशस्त्रादि ग्रन्थिरोगादिपीडनम्।
भ्रातृपित्रादिपीडाच दायाद्यजनविड्वरम्॥72॥
चतुष्पाज्जीवहानिश्च कुत्सितान्नं च भोजनम्।
विदेशगमनं चैव नानामार्गे धनव्ययः॥73॥

यदि मंगल नीचगत, अस्तंगत हो या 6.8.12 भावों में हो या पापयुक्त दृष्ट हो तो धनहानि होती है।

चोर, सर्प, चोट, शस्त्रपीड़ा, किसी भीतरी फोड़ा या रसौली से पीड़ा, भाई व माता-पितादि को कष्ट, सम्पत्ति के हिस्सेदारों से विवाद, चौपाये धन की हानि, खराब भोजन, विदेशगमन, बहुत प्रकार से धन व्यय होता है।

पिछले उदाहरण में मंगल अन्तर्दशा में कोई भी अशुभ फल नहीं हुआ, जबकि वह सामान्य दृष्टि से पापयुक्त है। पापयोग का दोष अकेला है तथा शेष कई शुभ बातें होने से उक्त अशुभ फल स्थगित हो गया है।

अष्टमे द्यूननाथे तु द्वितीयस्थेऽथवा यदि।
अपमृत्युभयं चैव नानाकष्टपराभवः॥74॥
तद्दोषपरिहारार्थं शान्तिहोमं च कारयेत्।
अनड्वाहं प्रकुर्वीत नानादोषनिवारणम्॥75॥

यदि मंगल 7.8 भावेश होकर द्वितीय में स्थित हो तो अपमृत्यु भय, अनेक प्रकार के कष्ट तथा असफलताएँ होती हैं।

दोष निवारण के लिए शान्ति होम व साँड छोड़ना चाहिए।

शनिदशा : राहुभुक्ति

मन्दस्यान्तर्गते राहौ कलहश्च मनोव्यथा।
देहपीडामनस्तापः पुत्रद्वेषो मनोरुजः॥76॥
अर्थव्ययं राजभयं स्वजनादेरुपद्रवः।
विदेशगमनं चैव गृहक्षेत्रादिनाशनम्॥77॥

शनि में राहु की अन्तर्दशा होने पर कलह, मानसिक क्लेश, शरीर कष्ट, पुत्र से मतभेद, मनोविकार, धनव्यय, राजभय, अपने लोगों से कलह या उपद्रव विदेशगमन, जायदाद सम्बन्धी परेशानी होती है।

लग्नाधिपेन संयुक्ते योगकारकसंगते।
स्वोच्चे स्वक्षेत्रगे केन्द्रे दायेशाल्लाभराशिगे॥78॥
आदौ सौख्यं धनावाप्तिर्गृहक्षेत्रादिसम्पदः।
देवब्राह्मणभक्तिश्च तीर्थयात्रादिकं लभेत्॥79॥
चतुष्पाज्जीवलाभः स्याद् गृहे कल्याणवर्धनम्।
मध्ये तु राजभीतिश्च पुत्रमित्रविरोधनम्॥80॥
मेषे कुलीरे वृषभे कन्यकायामथापि वा।
मीनकोदण्डसिंहेषु गजान्तैश्वर्यमादिशेत्॥81॥
राजसम्मानभूषाप्तिं मृद्वम्बरसौख्यकृत्।

यदि राहु, लग्नेश या किसी योगकारक से युक्त हो; दशेश से एकादश में हो, केन्द्र में अच्छी राशि में हो तो दशारम्भ में प्रारम्भ में सुख, धनलाभ, जमीन जायदाद की वृद्धि, देवों व ब्राह्मणों के प्रति भक्ति, तीर्थयात्रादि फल होते हैं।

चौपाये पशुओं की वृद्धि, घर में कल्याणकारी बातें होती हैं।

दशा के मध्य में राजपक्ष से भय, पुत्रों या मित्रों से विरोध होता है।

1.2.4.5.6.9.12 राशियों में राहु केन्द्र आदि स्थानों में लग्नेश या योगकारक के साथ हो तो दशाकाल में गजान्त ऐश्वर्य, हाथी रखने की ताकत वाली आर्थिक स्थिति, निष्कर्षतः अच्छी धनवृद्धि होती है। अपि च राज-सम्मान, उत्तम वस्त्राभूषण अर्थात् आरामदायक जीवनस्तर होता है।

द्विसप्तमाधिपैर्युते देहबाधाभविष्यति॥82॥
मृत्युञ्जयं प्रकुर्वीत छागदानं च कारयेत्।
अनड्वाहं प्रकुर्वीत सर्वसम्पदसुखावहम्॥83॥

यदि राहु 2.7 भावेश से युत हो तो शरीर कष्ट सम्भव है। दोष निवारणार्थ, मृत्युंजय जप, बकरे का दान, साँड छोड़ना आदि कार्य करने चाहिएं। तब सब तरह से सुख होता है।

शनिदशा : गुरुभुक्ति

मन्दस्यान्तर्गते जीवे केन्द्रलाभत्रिकोणगे।
लग्नाधिपेन संयुक्ते स्वोच्चे स्वक्षेत्रगेऽपि वा॥84॥
सर्वकार्यार्थसिद्धिः स्याच्छोभनं भवति ध्रुवम्।
महाराजप्रसादेन धनवाहनभूषणम्॥85॥
सम्मानं प्रभुसम्मानं प्रियवस्त्वार्थलाभकृत्।
देवतागुरुभक्तिश्च विद्वज्जनसमागमः॥86॥
दारपुत्रादिलाभश्च पुत्रकल्याणवैभवम्।

शनि दशा में गुरु भुक्ति होने पर, गुरु यदि 1.4.5.7.9.10.11 भावों में हो, स्वक्षेत्र स्वोच्च में हो, लग्नेश से युक्त हो तो सब कामों में सफलता, कल्याण व मंगल होता है।

अपने अधिकारी या विभाग की सहायता से धन वाहन का सुख, सम्मान, अधिकारियों द्वारा प्रशंसा, प्रिय वस्तुओं की भेंट प्राप्ति, देवों व गुरुजनों में भक्ति, विद्वानों से समागम, स्त्रीपुत्रादि का सुख, सन्तान का भाग्योदय होता है।

षष्ठाष्टमव्यये जीवे नीचे वा पापसंयुते॥87॥
आत्मसम्बन्धिमरणं धनधान्यविनाशनम्॥
राज्यस्थाने जनद्वेषः कार्यहानिर्भविष्यति॥88॥
विदेशगमनं चैव कुष्ठरोगादि सम्भवम्।

गुरु यदि 6.8.12 भावों में हो, नीचगत या पापयुक्त हो तो अपने किसी निकट सम्बन्धी का शोक, धन-धान्य की हानि, राजकीय स्थान पर विरोध, कार्यहानि, विदेशगमन तथा त्वचा विकार पैदा होते हैं।

दायेशात्केन्द्रकोणे वा धने वा लाभगेऽपि वा॥89॥
विभवं दारसौभाग्यं राज्यश्रीर्धनसम्पदः।
भोजनाम्बरसौख्यं च दानधर्मादिकं भवेत्॥90॥
ब्रह्मप्रतिष्ठा सिद्धिश्च क्रतुकर्मफलोदयः।
अन्नदानं महत्कीर्तिर्वेदान्तश्रवणादिकम्॥91॥

महादशेश शनि से धन, लाभ, केन्द्र, त्रिकोण में गुरु हो तो वैभव, स्त्री सुख, राज्यलक्ष्मी का सुख, धन-सम्पत्ति की वृद्धि, खान-पान का वैभव, दान-धर्म में रति, ब्राह्मणत्व की प्रतिष्ठा या आध्यात्मिक संसिद्धि, यज्ञ, जप आदि का फल, अन्नदान का सामर्थ्य, कीर्ति व वेदान्त आदि में अभिरुचि होती है।

दायेशात्षष्ठरन्ध्रे वा व्यये वा बलवर्जिते।
बन्धुद्वेषं ब्राह्मणपदविच्युतिः॥92॥
कुभोजनं कर्महानिः राजदण्डाद्धनव्ययम्।
कारागृहप्रवेशं च पुत्रदारादिपीडनम्॥93॥

द्वितीयद्यूननाथे तु देहबाधामनोरुजम्।
आत्मसम्बन्धिमरणं भविष्यति न संशयः॥94॥
तद्दोषपरिहारार्थं शिवसाहस्रकं जपेत्।
स्वर्णदानं प्रकुर्वीत ह्यारोग्यं भवति ध्रुवम्॥95॥

महादशेश शनि से 6.8.12 में गुरु हो, गुरु निर्बल हो तो बन्धुओं से द्वेष, मन में दुःख, ब्राह्मण तक के पद से च्युति, खराब भोजन, कार्यहानि, राजदण्ड के कारण धनव्यय, जेल यात्रा, स्त्री-पुत्रों को कष्ट होता है।

यदि गुरु 2.7 भावेश हो तो शरीर कष्ट, मनोरोग, आत्मसम्बन्धी की मृत्यु होती है। दोष शान्ति के लिए शिवसहस्रनाम के पाठ करें तथा सोने का दान करें। तब आरोग्य होता है।

इति श्री दशाफलदर्पणे पं. सुरेशमिश्रकृते हिन्दीव्याख्याने
शन्यन्तर्दशाफलाध्याय एकोनविंशः॥19॥
॥आदितः श्लोकाः 1546॥

20

॥ बुधान्तर्दशाफलाध्यायः ॥

सामान्य फल

केन्द्रस्थितस्य सौम्यस्य दशायां पापिनां हतौ।
कर्मविघ्नं महादुःखं मनश्चांचल्यमेव च॥1॥
उत्साहभंगं गोभूमिर्हिरण्याम्बरनाशनम्।
स्थानच्युतिं महाद्वेषं विद्यानाशं लभेत्तदा॥2॥

केन्द्रगत बुध की महादशा में पापी ग्रह की अन्तर्दशा हो तो सामान्यतः कार्य बाधा, बड़ा दुःख, मन में चंचलता, उत्साहभंग, धन-सम्पत्ति आदि की हानि, स्थानभंग, द्वेष, विद्याहानि होती है।

शुभभुक्तौ बुधस्यापि पापकेन्द्रगतस्य तु॥
वैवाहिकं यज्ञकर्मदानधर्मजपादिकम्॥3॥
ज्ञानाधिक्यं नृपात्प्रीतिः कृषिगोभूमिवर्धनम्।
मुक्तामणिप्रवालादि वाहनाम्बरभूषणम्॥4॥

पाप राशि में केन्द्रगत बुध की दशा में शुभ ग्रह की भुक्ति हो तो विवाहादि कर्म, यज्ञ, दान, धर्म, ज्ञानवृद्धि, राजकीय जनों से स्नेह सम्बन्ध, कृषिवृद्धि, पशुधन की वृद्धि, रत्नजटित आभूषणों का प्रयोग, वाहन सुख होता है।

ज्ञस्य त्रिकोणयुक्तस्य दशायां पापिनां हतौ।
दारपुत्रार्थनाशश्च कर्मनाशो मनोरुजः॥5॥
कृषिवाणिज्यनाशश्च बन्धुनाशोऽपि जायते।
पादभंगो मनोद्वेगो बन्धुद्वेषोऽपि लभ्यते॥6॥

त्रिकोण बुध की दशा में पापी ग्रह की अन्तर्दशा रहने पर स्त्री, पुत्र व धन की हानि, कार्य हानि, मनोद्वेग, व्यवसाय में बाधा, बन्धुओं व सहायकों में कमी, पैर में विकार, बन्धुओं से द्वेष होता है।

तथाविधज्ञस्य पाके शुभभुक्तौ नृपात् प्रियम्।
आरोग्यमतिसौख्यं च सोमपानादिकं सुखम्॥7॥
स्वनामांकितपद्यानि नामद्वयमथापि वा।
भोजनाम्बरभूषाप्तिं नरेशत्वं लभेन्नरः॥8॥

त्रिकोणगत बुध दशा में शुभ भुक्ति हो तो राजकीय सहयोग सम्बन्ध, अच्छा स्वास्थ्य, सुख, भोग विलास, गोष्ठियों का आनन्द, प्रशंसा करने वालों की प्राप्ति, वास्तव नाम के अतिरिक्त किसी अन्य सम्बोधन से पुकारे जाने के योग, खान-पान का वैभव, शाही ठाट होते हैं।

षष्ठाष्टमगतज्ञस्य परिपाके तु पापिनाम्।
हतौ चौरारिपीडां च ज्वरातीसारपीडनम्॥9॥
स्वबन्धुमरणं क्लेशं भृत्यस्त्रीपुत्रनाशनम्॥
विवादं विग्रहं सर्वे बन्धुभिर्लभते नरः॥10॥

6.8.12 भावगत बुध दशा में पापग्रह की अन्तर्दशा हो तो चोरों व शत्रुओं से पीड़ा, ज्वारादि रोग, बन्धुओं की ओर से शोक, स्त्रीपुत्र व सेवकों में कमी, विवाद, मुकद्दमा आदि फल होते हैं।

तथाविधाब्जपुत्रस्य शुभभुक्तौ महद्यशः।
आरोग्यं कान्तिलाभं च देवभूसुरतर्पणम्॥11॥
दशादौ फलमेवं स्याद् भुक्त्यन्ते सुखनाशनम्।
गोमहिष्यादिपीडां च वाक्पारुष्यं नृपाद्भयम्॥12॥

6.8.12 भावगत बुध में शुभान्तर्दशा हो तो बहुत प्रसिद्धि, आरोग्य, शोभावृद्धि, देवों व ब्राह्मणों के प्रति भक्ति आदि फल होते हैं।

दशारम्भ में प्रायः शुभ फल तथा दशान्त में सुख हानि होती है। तब पशुधन की हानि, वाणी में कठोरता, राजभय सम्भव होता है।

तृतीयायगतस्य शुभभुक्तौ शुभं भवेत्।
मनोधैर्यं महोत्साहं विदेशाद् द्रव्यसंचयम्॥13॥
विद्याजयनृपात्प्रीतिं भोजनं पौष्टिकं तथा।
यज्ञवैवाहिकं कर्म पुराणश्रवणादिकम्॥14॥
तथाविधज्ञस्य पाके पापभुक्तौ महद्भयम्।
भ्रातृवर्गविनाशं च वैकल्यं नृपपीडनम्॥15॥
चौराहिवह्निभीतिं च कुस्त्रीभूतादिसेवनम्।
कर्महानिः कृषेर्नाशः गजाश्वानां च पीडनम्॥16॥

3.11 भावगत बुध दशा में शुभ ग्रह की अन्तर्दशा हो तो शुभ फल, मन में धैर्य, उत्साह, विदेश से धन लाभ, विद्या प्राप्ति, विजय, राजकीय पुरुषों से स्नेह, उत्तम भोजन, घर में मंगल कार्य, धार्मिक आयोजन, कथा श्रवण आदि के योग होते हैं।

इसी बुध दशा में पाप अन्तर्दशा हो तो भय, भाइयों की हानि, विफलता, राजपक्ष से पीड़ा, चोरादि भय, खराब स्त्री से कष्ट, भूतप्रेतादि बाधा, कार्यों में असफलता, व्यवसाय में हानि, वाहनों में बाधा होती है।

धनस्थिताब्जपुत्रस्य परिपाके शुभेतरा।
करोति राजदण्डं च बन्धनं निगडं तथा॥17॥
विषार्तिबन्धुविद्वेषं कृषिगोभूमिनाशनम्।
शत्रुत्वं सकलैः सार्धं नित्याचारविवर्जितम्॥18॥
शुभमुक्तौ धनलाभः स्याद् देवभूसुरतर्पणम्।
अध्वरादिमहत्कर्मदानहोमजपादिकम् ॥
बन्धुपूज्यं महोत्सहं विद्यालाभं भवेत्तदा॥19॥

धनगत बुध दशा में पापग्रह की अन्तर्दशा होने पर राजदण्ड, कैद, बन्धन, अपहरण, विषभय, बन्धुजनों से द्वेष, व्यवसाय हानि, सम्पत्ति हानि, लोगों से शत्रुता, नित्यकर्म में बाधा होती है।

शुभान्तर्दशा में धनलाभ, देवों ब्राह्मणों का सत्कार, यज्ञादि कार्य, दान-होम, जपादि में रुचि, बन्धुओं में आदर, विद्या-लाभ होता है।

बुधदशा : बुधभुक्ति

मुक्ताविद्रुमलाभश्च ज्ञानकर्मसुखादिकम्।
विद्यामहत्त्वं कीर्तिं च नूतनप्रमुदर्शनम्॥20॥
विभवं दारपुत्रादिपितृमातृसुखावहम्।
नीचोग्रखेटसंयुक्ते षष्ठाष्टव्ययराशिगे॥21॥
पापयुक्तेऽथवा दृष्टे धनधान्यपशुक्षयम्।
आत्मबन्धुर्विरोधश्च शूलरोगादिसम्भवम्॥22॥
राजकार्यकलापेन व्याकुलं भवति ध्रुवम्।

बुधदशा बुधभुक्ति में रत्नाभूषणादि का लाभ, विद्या व महत्त्व में वृद्धि, नये अधिकारी या राजा से भेंट, वैभव, स्त्री, पुत्र, माता-पितादि का सुख होता है।

बुध यदि नीचगत पापग्रह से युक्त हो और 6.8.12 में स्थित हो या कहीं भी पापयुक्त दृष्ट हो तो धन-धान्य व पशु धन की हानि, राजकीय कार्यों से मन में व्याकुलता होती है।

द्वितीयद्यूननाथेतु दारक्लेशं भविष्यति॥23॥
आत्मसम्बन्धिमरणं वातशूलादिसम्भवम्॥
तद्दोषपरिहारार्थं विष्णुसाहस्रकं जपेत्॥24॥

यदि बुध 2.7 भावेश हो तो उक्त दशा में स्त्री सम्बन्धी पीड़ा, किसी स्वजन की मृत्यु, वात जल शूल रोग होता है। दोष शान्ति के लिए विष्णुसहस्रनाम का जप करें।

बुधदशा : केतुभुक्ति

बुधस्यान्तर्गते केतौ लग्नात्केन्द्रत्रिकोणगे।
शुभयुक्तशुभैर्दृष्टे लग्नाधिपसमन्विते॥25॥
योगकारकसम्बन्धे दायेशात्केन्द्रलाभगे।
देहसौख्यं धनाधिक्यं बन्धुस्नेहसहायकृत्॥26॥
चतुष्पाज्जीवलाभः स्यात् संसारे देहतापनम्।
विद्याकीर्तिप्रसंगश्च समानप्रभुदर्शनम्॥27॥
भोजनाम्बरसौख्यं च आदौ मध्ये सुखावहम्।

बुध महादशा में केतु की अन्तर्दशा हो और केतु लग्न से केन्द्र या त्रिकोण में हो, शुभयुक्त या शुभ दृष्ट हो या लग्नेश से युक्त हो या योगकारक ग्रह से सम्बन्ध करे या दशेश से केन्द्र या लाभ स्थान में हो तो शरीर सुख, धन की अधिकता, बन्धुओं से स्नेह, सहायता, चौपाये जीवों से लाभ, सांसारिक उत्तरदायित्वों में अधिक व्यस्तता, विद्या व कीर्ति का लाभ, बराबर के लोगों से मिलन, खान-पान का सुख होता है। इस अन्तर्दशा में विशेषतया प्रारम्भ व मध्य में सुख होता है तथा अन्त में कष्ट होता है।

दायेशाद् रिपुरन्ध्रस्थे रन्ध्रे पानेन संयुते॥28॥
वाहनात्पतनं चैव पुत्रक्लेशसमाकुलम्।
चौरादिराजभीतिश्च पापकर्मरतः सदा॥29॥
वृश्चिकादि विषाद्भीतिर्नीचैः कलहसम्भवः।
शोकरोगादि दुःखं च संसारादिचलं भेवत्॥30॥
द्वितीयद्यूनभावस्थे देहजाड्यं भविष्यति।
तद्दोषपरिहारार्थं छागदानं तु कारयेत्॥31॥

महादशेश से 6.8 भाव में केतु या लग्न से अष्टम में पापयुक्त हो तो वाहन दुर्घटना, सन्तान को क्लेश, चोरों व राजपक्ष से भय, पापकर्म में रति, डसने वाले जानवरों व कीटों से भय, नीच लोगों के साथ कलह, शोक व रोग, बड़े परिवर्तन होते हैं।

यदि केतु 2.7 भावों में हो तो शरीर कष्ट होता है। दोष निवृत्ति के लिए मेषदान करना चाहिए।

बुधदशा : शुक्रभुक्ति

सौम्यस्यान्तर्गते शुक्रे केन्द्रलाभत्रिकोणगे।
सत्कथापुण्यधर्मादिसंग्रहः पुण्यकर्मकृत्॥32॥
मित्रप्रभुवशादिष्टं क्षेत्रलाभसुखं भवेत्।
दशाधिपात्केन्द्रगते त्रिकोणे लाभगेऽपि वा॥33॥

तत्काले श्रियमाप्नोति राजश्रीधनसम्पदः।
वापीकूपतडागादिदानधर्मादिसंग्रहः ॥34॥
व्यवसायात्फलाधिक्यं धनधान्यसमृद्धिदम्।

बुध में शुक्रान्तर्दशा होने पर, शुक्र यदि केन्द्र, लाभ, त्रिकोण में स्थित हो तो कथा वार्ता, सत्संग, पुण्य कार्य, धर्मकार्य, मित्रों व अधिकारियों के सहयोग से धन सम्पत्ति की वृद्धि होती है।

दशेश से केन्द्र, त्रिकोण या लाभस्थान में शुक्र हो तो तुरन्त अच्छा लाभ, धन, सम्पत्ति व पद की प्राप्ति होती है।

जनसुविधार्थ बहुत से कार्य करने के योग, व्यवसाय में प्रगति, धन-धान्य समृद्धि होती है।

दायेशात्षष्ठरन्ध्रस्थे व्यये वा बलवर्जिते॥35॥
हृद्रोगं मानहानिश्च ज्वरातीसारपीडनम्।
आत्मबन्धुवियोगश्च आपदागमनं तथा॥36॥
द्वितीयद्यूननाथेतु ह्यपमृत्युर्भविष्यति।
तद्दोषपरिहारार्थं दुर्गादेवी जपं चरेत्॥37॥

महादशेश से 6.8.12 भावों में निर्बल शुक्र हो तो हृदयरोग, मानहानि, रोगपीडा, स्वजनों का वियोग, आपत्तियों का सामना होता है।

यदि शुक्र 2.7 भावेश हो तो अपमृत्यु का भय होता है, तब दुर्गा पाठ जपादि करना चाहिए।

बुधदशा : सूर्यभुक्ति

सौम्यस्यान्तर्गते सूर्ये स्वोच्चे स्वक्षेत्रकेन्द्रगे।
त्रिकोणे धनलाभे वा तुंगांशे स्वांशगेऽपि वा॥38॥
राजप्रासादसौभाग्यं मित्रप्रभुवशात्सुखम्।
भूम्यात्मजेन संदृष्टे आदौ भूलाभमेव॥39॥
लग्नाधिपेन संदृष्टे बहुसौख्यं धनागमम्।
ग्रामभूम्यादि लाभं च भोजनाम्बरसौख्यकृत्॥40॥

बुध दशा में सूर्य की अन्तर्दशा हो और सूर्य स्वोच्च, स्वक्षेत्र में हो या 2.5.9.11 भावों में हो या स्वोच्च स्वराशि के नवांश में हो तो राजमहलों में आने जाने के योग व अधिकारियों का सहयोग होता है।

यदि उक्त सूर्य मंगल से दृष्ट हो तो दशारम्भ में ही जायदाद का लाभ होता है। लग्नेश से दृष्ट हो तो बहुत सुख व धनागम, भूमि-लाभ, खान-पान का विशेष सुख होता है।

षष्ठाष्टमव्यये वापि शन्यारफणिसंयुते।
दायेशाद्रिपुरन्ध्रस्थे व्यये वा बलवर्जिते॥41॥
चौराग्निशस्त्रपीडा च पित्ताधिक्यं भविष्यति।
शिरोरुजो मनस्तापं इष्टबन्धुवियोगकृत्॥42॥
द्वितीयसप्तमाधीशे ह्यपमृत्युर्भविष्यति।
धेनुहिरण्यकं दद्याच्छान्तिं कुर्याद् यथाविधि॥43॥

यदि सूर्य 6.8.12 में शनि, मंगल, राहु में से किसी के साथ हो अथवा महादशेश से 6.8.12 में शनि, मंगल, राहु में से किसी के साथ हो अथवा महादशेश से 6.8.12 में पापयुक्त हो और स्वयं निर्बल हो तो चोरभय, अग्निभय, शस्त्रपीड़ा, शरीर में पित्त की अधिकता, सिर में रोग, मन में सन्ताप, स्वजनों से वियोग होता है।

यदि सूर्य 2.7 भावेश हो तो अपमृत्यु भय को निवृत्त करने के लिए सोना व गाय का दान करें तथा शान्ति विधान कराएँ।

बुधदशा : चन्द्रभुक्ति

सौम्यस्यान्तर्गते चन्द्रे लग्नात्केन्द्रत्रिकोणगे।
स्वोच्चे वा स्वर्क्षगे वापि गुरुदृष्टिसमन्विते॥44॥
योगस्थानाधिपत्येन योगप्राबल्यमादिशेत्।
स्त्रीपुत्रादिप्राप्तिश्च वस्त्रवाहनभूषणम्॥45॥
नूतनगृहलाभश्च नित्यं मिष्टान्नभोजनम्।
गीतवाद्यप्रसंगश्च शास्त्रविद्यापरिश्रमः॥46॥
दक्षिणां दिशमाश्रित्य प्रयाणं च भविष्यति।
द्वीपान्तराद्वस्त्रलाभो मुक्ताविद्रुमलाभकृत्॥47॥

बुध दशा में चन्द्रान्तर रहने पर चन्द्रमा यदि लग्न से केन्द्र, त्रिकोण में हो, स्वोच्च या स्वक्षेत्र में हो, किसी भी अच्छे स्थान में गुरु से दृष्टयुक्त हो, स्वयं योग बनाने वाले स्थान का स्वामी हो तो उक्त अवधि में योगफल मिलता है। स्त्री सुख, पुत्र सुख, वस्त्र, वाहन, आभूषण, नूतन घर की प्राप्ति, उत्तम भोजन, गीत-संगीत, आमोद-प्रमोद के अवसर, विद्या के क्षेत्र में परिश्रम के योग होते हैं।

नीचास्तंगते चन्द्रे देहबाधा भविष्यति।
दायेशात्षष्ठरन्ध्रे वा व्यये पापेन संयुते॥48॥
चौराग्निनृपभीतिश्च कृषिगोऽश्वादिनाशनम्।
दुष्कृतेर्धनहानिः स्यात् स्त्रीसंगमने क्षयः॥49॥
द्वितीयद्यूननाथेतु देहबाधा भविष्यति।
तद्दोषपरिहारार्थं दुर्गादेवी जपं चरेत्॥50॥
वस्त्रदानं प्रकुर्वीत ह्यायुर्वृद्धिसुखावहम्।

यदि चन्द्रमा नीचास्तंगत हो तो शरीर कष्ट होता है। महादशेश से 6.8.12 में पापयुक्त चन्द्रमा हो तो विविध पीड़ाएँ, कृषि व व्यवसाय में हानि, वाहनों की हानि, पराई स्त्री के संगम से हानि, दुष्कार्यों से धन हानि होती है।

यदि चन्द्रमा 2.7 भवेश हो तो देह बाधा निवारण के लिए दुर्गा देवी का जप व वस्त्र दान करें। तब आयु वृद्धि व सुख होता है।

दायेशात्केन्द्रकोणस्थे दुश्चिक्ये लाभगेऽपि वा॥51॥
तद्भुक्त्यादौ पुण्यतीर्थस्नानदैवतदर्शनम्॥
धीरता च समुत्साहः विदेशधनलाभकृत्॥52॥

महादशेश से केन्द्र कोण में या 3.11 में चन्द्रमा हो तो भुक्ति के आरम्भ में पुण्यदायी तीर्थयात्रा, देवस्थानों के दर्शन, धैर्य, उत्साह तथा विदेश से धन लाभ होता है।

बुधदशा : मंगलभुक्ति

सौम्यस्यान्तर्गते भौमे लग्नात्केन्द्रत्रिकोणगे।
स्वोच्चे वा स्वर्क्षगे वापि लग्नाधिपसमन्विते॥53॥
राजानुग्रहवृद्धिश्च गृहे कल्याणसम्भवम्।
लक्ष्मीकटाक्षचिह्नानि नष्टराज्यार्थलाभकृत्॥54॥
पुत्रोत्सवादि सन्तोषो गृहे गोधनसंकुलम्।
गृहक्षेत्रादि लाभश्च गजवाजिसमन्वितम्॥55॥
राजप्रीतिकरं चैव स्त्रीसौख्यं चातिशोभनम्।

बुध दशा में मंगल की अन्तर्दशा रहने पर, मंगल यदि लग्न से केन्द्र, त्रिकोण में हो, स्वोच्च या स्वक्षेत्र में हो, लग्नेश से युक्त हो तो राजकीय कृपा की वृद्धि, घर में कल्याणकारी बातें, लक्ष्मी जी की कृपा के चिह्न, खोए धन या राज्य की प्राप्ति, पुत्रोत्सव के योग, गोधनवृद्धि, जमीन जायदाद का लाभ, बड़े वाहनों का सुख, राजकीय जनों से मधुर सम्बन्ध, स्त्री सुख होता है।

नीचक्षेत्रसमायुक्ते रन्ध्रे वा व्ययगेऽपि वा॥56॥
पापदृष्टियुते वापि देहपीडा मनोव्यथा॥
उद्योगभंगो देहार्तिः स्वग्रामे धान्यनाशनम्॥57॥
ग्रन्थिशस्त्रव्रणादीनां तापज्वरभयादिकम्।

यदि मंगल नीचगत होकर 8.12 भाव में हो या पापदृष्ट युक्त हो तो परिश्रम की असफलता, देह कष्ट, खड़ी फसल या परिपक्व योजनाओं की दुःखद समाप्ति, भीतरी फोड़े आदि से पीड़ा, घाव व शरीर कष्ट होता है।

दायेशात्केन्द्रगे भौमे त्रिकोणे लाभगेऽपि वा॥58॥
शुभ दृष्टे युते वापि देहसौख्यं धनागमः।
पुत्रलाभो यशोवृद्धि भ्रातृवर्गे महत् प्रियम्॥59॥

महादशेश से केन्द्र, त्रिकोण या लाभस्थान में मंगल हो और शुभ दृष्ट युक्त भी हो तो शरीर सुख, धनलाभ, पुत्र प्राप्ति, यशोवृद्धि, अपने समुदाय में विशेष मान व स्नेहादि लाता है।

दायेशाद्रिपुरन्ध्रस्थे व्यये वा पापसंयुते।
तद्भुक्त्यादौ महाक्लेशं भ्रातृवर्गेमहद्भयम्॥60॥
आगमनं विपत्तीनां पुत्रमित्रविरोधनम्।
स्थानभ्रंशे महद्धैर्यं मध्ये सौख्यं धनागमम्॥61॥
अन्ते तु राजभीतिः स्यात् स्थानभ्रंशोऽपि वा भवेत्।
द्वितीयद्यूननाथेतु मृत्युंजयजपं चरेत्॥62॥
अनड्वाहं प्रकुर्वीत सर्वदोषनिवारणम्॥62॥

महादशेश से 6.8.12 में हो या पापयुक्त हो तो दशारम्भ में बहुत कष्ट, भाई बन्धुओं से भय, विपत्तियों का आगमन, पुत्रों व मित्रों से विरोध, स्थानच्युति की स्थिति में बहुत धीरज की जरूरत होती है।

दशा मध्य में धनलाभ व सुख, अन्त में राजभय व स्थान परिवर्तन होता है।

यदि मंगल 2.7 भावेश हो तो दोष निवारण के लिए मृत्युंजय जप तथा साँड़ छोड़ना चाहिए या साँड़ को घास आदि खिलाएँ।

बुधदशा : राहुभुक्ति

बुधस्यान्तर्गते राहौ केन्द्रलाभत्रिकोणगे।
कुलीरे सिंहगे वापि कन्यायां वृषभेऽपि वा॥63॥
राजसम्मानकीर्तिश्च देवतादर्शनं तथा।
पुण्यतीर्थस्नानलाभो मानाश्वाम्बरलाभकृत्॥64॥
भुक्त्यादौ देहपीडा च ह्यन्ते सौख्यं विनिर्दिशेत्।

बुध दशा राहु भुक्ति में, राहु यदि केन्द्र, लाभ या त्रिकोण में हो, अपि च 2.4.5.6 राशियों में हो तो राज-सम्मान, कीर्ति, देवदर्शन, पुण्यतीर्थ यात्रा, सम्मान, वाहन, वस्त्रलाभ होता है। दशारम्भ में शरीर में कष्ट तथा अन्त में सुख होता है।

षष्ठाष्टव्ययराशिस्थे तद्भुक्तौ धननाशनम्॥65॥
भुक्त्यादौ देहनाशश्च वातज्वरमजीर्णकृत्॥
दायेशात्षष्ठरिःफे वा रन्ध्रे पापेन संयुते॥66॥
निष्ठुरं राजकार्यं स्यात् स्थानभ्रंशो महद्भयम्।
बन्धनं रोगपीडा च आत्मबन्धुमनोव्यथा॥67॥
हृद्रोगो मानहानिश्च धनहानिर्भविष्यति।
द्वितीयसप्तमस्थे वा ह्यपमृत्युर्भविष्यति॥68॥

तद्दोषपरिहारार्थं दुर्गालक्ष्मीजपं चरेत्।
श्वेतां गां महिषीं दद्यादायु आरोग्य वृद्धये॥69॥

यदि राहु लग्न से 6.8.12 में खराब राशियों में पापयुक्त हो तो धनहानि, शरीरकष्ट, वातज्वर या पाचन की खराबी होती है।

महादशेश से 6.8.12 में पापयुक्त राहु हो तो क्रूरतापूर्ण राजकार्य करने पड़ते हैं, स्थानभ्रंश, भय, बन्धन, रोगपीड़ा, अपने लोगों से मन को ठेस, हृदयरोग, मानहानि, धनहानि होती है।

यदि राहु 2.7 भाव में हो तो अपमृत्यु का भय होता है। दोषनिवारण के लिए दुर्गा व लक्ष्मी का जप करें तथा सफेद गाय का दान करें।

लग्नाद्युपचये राहौ शुभ ग्रहसमन्विते।
राजसौ लाभसन्तोषौ नूतनप्रभुदर्शनम्॥70॥

लग्न से 3.6.10.11 भावों में शुभ ग्रह से युक्त राहु हो तो राजकीय पक्ष से लाभ व सन्तोष तथा नए बड़े अधिकारियों या राजसी व्यक्तियों से भेंट होती है।

बुधदशा : गुरुभुक्ति

बुधस्यान्तर्गते जीवे लग्नात्केन्द्रत्रिकोणगे।
स्वोच्चे वा स्वर्क्षगे वापि लाभें वा धनराशिगे॥71॥
देहसौख्यं धनावाप्तिः राजप्रीतिस्तथैव च।
विवाहोत्सवकार्याणि नित्यं मिष्टान्नभोजनम्॥72॥
गोमहिष्यादिलाभश्च पुराणश्रवणादिकम्।
देवतागुरुभक्तिश्च दानधर्ममखादिकम्॥73॥
यज्ञकर्मप्रवृद्धिश्च शिवपूजाफलं तथा।

बुध दशा में गुरु अन्तर्दशा हो और गुरु लग्न से केन्द्र त्रिकोण लाभ में हो या स्वोच्च, स्वक्षेत्र या द्वितीय भाव में हो तो शरीर सुख, धनलाभ, राजकीय जनों से प्रीति, विवाहादि मंगल कार्य, उत्तम भोजन, पशुधन का लाभ, कथा पुराणादि श्रवण, देवभक्ति, दान धर्म व यज्ञादि कार्य होते हैं। यज्ञ सम्पादन की बुद्धि तथा शंकरार्चन के उत्तम फल मिलते हैं।

नीचे वास्तंगते वापि रिःफाष्टव्ययगेऽपि वा॥74॥
शन्यारफणिसंयुक्ते कलहं राजविड्वरम्।
चौरादि देहपीडा च पितृमातृविनाशनम्॥75॥
मानहानी राजदण्डो धनहानिर्भविष्यति।
विषाहिज्वरपीडा च कृषिगोभूमिनाशनम्॥76॥

यदि गुरु नीचगत, अस्तंगत हो या 6.8.12 में हो या शनि मंगल राहु से युक्त

हो तो कलह, राजभय, चोरों से शरीर कष्ट, माता-पिवता को कष्ट, मानहानि, राजदण्ड धनहानि, विष या सर्पादि से पीड़ा, व्यवसाय व सम्पत्ति की हानि होती है।

दायेशात्केन्द्रकोणे वा लाभे वा बलसंयुते।
बन्धुपुत्रहृदुत्साहशुभं सर्वं भविष्यति॥77॥
पशुवृद्धिर्यशोलाभ अन्नदानादिकं फलम्।
दायेशात्षष्ठरन्ध्रे वा व्यये वा बलवर्जिते॥78॥
अंगतापश्च वैकल्यं देहबाधा भविष्यति।
कलत्रबन्धुवैषम्यं राजकोपो धनक्षयः॥79॥
अकस्मात्कलहो भीतिः देहबाधा भविष्यति॥
द्वितीयधूननाथे वा शिवसाहस्रकं जपेत्॥80॥
गोभूहिरण्यदानेन सर्वारिष्टं विलीयते।

बलवान् गुरु महादशेश बुध से केन्द्र, त्रिकोण, लाभ में हो तो बन्धुओं, पुत्रों से मन में उत्साह, शुभ फल, पशुवृद्धि, यशोवृद्धि, अन्नदान की समर्थ्य होती है।

दशेश से 6.8.12 में निर्बल गुरु हो तो शरीर कष्ट, देह बाधा, स्त्री बन्धुओं से विषमता, राजकोप, धनहानि, अचानक कलह होती है।

2.7 भावेश होने पर भी देहकष्ट होता है। दोष निराकरणार्थ, गोदान, भूमिदान, सुवर्णदान व शिवसहस्रनाम का जप करें। तब सब अरिष्ट दूर होते हैं।

बुधदशा : शनिभुक्ति

सौम्यस्यान्तर्गते मन्दे स्वोच्चे स्वक्षेत्रकेन्द्रगे॥81॥
त्रिकोणलाभगे वापि गृहे कल्याणवर्धनम्।
राज्याप्तिर्महोत्साहो गृहे गोधनसंकुलम्॥82॥
शत्रुस्थानफलावाप्तिर्भुक्त्यन्तेऽर्थविनाशनम्।

बुध दशा में शनि की अन्तर्दशा रहने पर, शनि यदि स्वोच्च स्वक्षेत्र केन्द्र में हो, त्रिकोण लाभ स्थान में हो तो घर में कल्याण वृद्धि, राज्य लाभ, उत्साह, गोधनवृद्धि, शत्रु या विरोधी की अवनति होती है। लेकिन दशान्त में धनहानि होती है।

षष्ठाष्टमव्यये मन्दे दायेशाद्वा तथैव च॥83॥
अरातिदुःखबाहुल्यं दारपुत्रादिपीडनम्।
बुद्धिभ्रंशो बन्धुनाशः कर्मनाशो मनोरुजः॥84॥
विदेशगमनं चैव स्वप्ने दूराभिसम्पदः।
द्वितीयधूननाथेतु ह्यपमृत्युर्भविष्यति॥85॥
तद्दोषपरिहारार्थं मृत्युंजयजपं चरेत्।
कृष्णां गां महिषीं दद्यादायुरारोग्यवृद्धये॥86॥

महादशेश या लग्न से 6.8.12 में शनि हो तो शत्रुओं से भय, स्त्री-पुत्रादि को पीड़ा, बुद्धि में विकार, बन्धुओं की कमी, कार्य में असफलता, मनोविकार, विदेश गमन, सपने में अच्छी प्राप्तियाँ, वास्तव में शून्य फल होता है।

यदि शनि 2.7 भावेश हो तो कष्ट होता है। दोष निवारणार्थ मृत्युंजय जप, काली गाय या भैंस का दान करें, तब आयु व आरोग्य सुरक्षित रहता है।

इति श्री दशाफलदर्पणे पं. सुरेशमिश्रकृते हिन्दीव्याख्याने
बुधान्तर्दशाफलाध्यायो विंश॥20॥
॥आदितः श्लोकाः 1632॥

21

॥ केत्वन्तर्दशाफलाध्यायः ॥

सामान्य फल

केतोश्चतुष्टयस्थस्य यदा पापा हृतौ तदा।
मानभंगो महाद्वेषो नृपचौराग्निपीडनम्॥1॥
मातृनाशस्तदीयो वा दारपुत्रविनाशनम्।
कर्मनाशः पदभ्रंशः सहसैव कलहो भवेत्॥2॥
केतोस्तथाविधस्यापि शुभभुक्तौ नृपात्प्रियम्।
देहारोग्यकरं सौख्यं बन्धुभिश्च समागमः॥3॥
भोजनाम्बरभूषाप्तिरादौ चान्ते मनोरुजः।
उद्योगभंगं कामार्तिं स्वकुलोद्भवनाशनम्॥4॥

केन्द्रगत केतु में पापग्रह की अन्तर्दशा रहने पर सामान्यतः मानहानि, बड़ा द्वेष भाव, राजा आदि से मुसीबतें, माता से वियोग या अपने परिवार से वियोग, कार्यहानि, पदावनति, अचानक विवाद होते हैं।

इसके विपरीत शुभ ग्रह की अन्तर्दशा हो तो राजपक्ष से सहयोग, शरीर में सुख, मित्रों, बन्धुओं से समागम, खान-पान का खास सुख, लेकिन दशान्त में मनोमालिन्य, कार्यहानि, अधिक कामावेग, अपने कुल की प्रतिष्ठा की हानि या कुलक्रम से प्राप्त सम्पत्ति आदि की हानि होती है।

त्रिकोणराशियुक्तस्य केतोर्दाये शुभेतरा।
हृतिस्तदामनस्तापं करोति विविधापदः॥5॥
पुत्रवर्गादिमरणं पित्रोर्नाशमथापि वा।
स्थानार्थयोस्तदानाशं भृत्यबन्धुविरोधनम्॥6॥

त्रिकोणगत केतु में पापान्तर्दशा हो तो चोरी, हानि, मनस्ताप, विविध विपत्तियाँ, माता-पिता को विशेष कष्ट, धन व पदवी प्रतिष्ठा में गिरावट, नौकरों व बन्धुओं से विवाद होता है।

शुभग्रहाणां केतोस्तु परिपाके हतिस्तदा।
कृषिगोभूमिलाभश्च विद्याबन्धुसमागमः॥7॥
भोजनाम्बरसौख्यं च भुक्त्यादौ फलमीदृशम्।
भुक्त्यन्ते स्थानचलनमकस्मात्कलहं वदेत्॥8॥

त्रिकोणगत केतु में शुभ ग्रहों की अन्तर्दशा होने पर व्यवसाय वृद्धि, पशु धन सम्पत्ति की वृद्धि, विद्याप्राप्ति, बन्धुओं से समागम, खान-पान का सुख, दशा के आरम्भ में होता है। दशा के अन्त में स्थान परिवर्तन, अचानक कलह के योग होते हैं।

षष्ठाष्टमव्ययस्थस्य केतोर्दये शुभेतरा।
कुर्वन्ति मरणं नृणां विदेशं वा पदभ्रमम्॥9॥
प्रमेहमूत्रगुल्मादि राजचौराग्निपीडनम्।
फलमादौ तदन्ते च यत् किंचित्सुखवर्धनम्॥10॥
भुक्तौ सौम्यग्रहाणां तु स्त्रीपुत्रादिकवर्धनम्।
धान्याम्बरविभूषाप्तिं मणिप्रवरकांचनम्॥11॥
विप्रलम्भं च शौर्यं च गौल्यादिपतनं तथा।
स्वबन्धुजनशत्रुत्वं शिरोक्षिगुदपीडनम्॥12॥

6.8.12 भावगत केतु की दशा में पापान्तर्दशा होने पर मृत्यु या विदेशगमन या पद से बहिष्कार, मधुमेह, मूत्रदोष, गुल्म (भीतरी फोड़ा), विविध आपत्तियाँ होती हैं। लेकिन दशा के अन्त में थोड़ी बहुत सान्त्वना मिलती है।

उसी केतु में शुभ ग्रह की अन्तर्दशा हो तो स्त्री पुत्रों की वृद्धि, धन-धान्यवृद्धि, आभूषण गहनों की प्राप्ति होती है।

लेकिन कभी-कभी अपनों से वियोग, छिपकली आदि का गिरना, मन में धीरता, अपने ही लोगों से शत्रुता, सिर, नेत्र व गुदा में रोग होते हैं।

तृतीयलाभयुक्तस्य केतोः पाके परं सुखम्।
शुभभुक्तौ नृपात् प्रीतिर्विचित्राम्बरभूषणम्॥13॥
वाहनं भूमिलाभश्च गन्धमाल्यानुलेपनम्।
दूरात्फलोदयश्चैव स्वबन्धुजनपूज्यता॥14॥
पापभुक्तौ तथा केतोः पापकर्मसमाचरेत्।
सर्वेषां विघ्नकर्तृत्वं बन्धुभिस्त्यक्तजीवनम्॥15॥
परप्रेष्यं कुवस्त्रं च भुक्त्यादौ फलमीदृशम्।
भुक्त्यन्ते सुखमाप्नोति दारपुत्रधनागमः॥16॥

3.11 भावगत केतु की दशा में शुभान्तर्दशा के दौरान बहुत सुख, राजकीय सम्बन्ध, उत्तम वस्त्राभूषण, वाहन, भूमिलाभ, उत्तम रहन-सहन, अपने बन्धुओं से सम्मान, दूर के प्रदेशों से धन लाभ होता है।

पापान्तर्दशा में पापकर्मों का योग, सर्वत्र विघ्न, बन्धुओं से बहिष्कृत, चाकरी के योग, साधारण वस्त्र व भोजनादि होते हैं। भुक्ति के अन्त में सुख, स्त्री पुत्र का सुख तथा धन लाभ होता है।

धनस्थितध्वजस्यापि परिपाके शुभेतरा।
करोति विविधं दुःखं भैक्ष्यमन्नं मनोरुजम्॥17॥
पुत्रमित्रकलत्राणां नाशनं महदापदम्।
राज्ञा चौरेण वा वित्तं ह्रियते बन्धुनाशनम्॥18॥
शुभभुक्तौ धनाप्तिं च विद्यावादजयावहम्।
परोपकारं सर्वेषां भोजनाम्बरभूषणम्॥19॥
भुक्त्यादौ फलमेवं स्यादन्ते किंचिद् धनव्ययः।
वाक्पारुष्यं हृदुद्विग्नं प्रवृत्तेर्भंगमेव च॥20॥

धन भाव में स्थित केतु की दशा में पापान्तर्दशा हो तो बहुत से दुःख, भिक्षावृत्ति की नौबत, मनोविकार, स्त्री, पुत्रादि की हानि, बड़ी मुसीबत, धन का अपहरण, बन्धुओं सहायकों की कमी होती है।

शुभ अन्तर्दशा में धनलाभ, विद्या सम्बन्धी वाद विवाद में जय, परोपकार की भावना, अन्न वस्त्रादि की प्रचुरता, वाणी में कठोरता, मन में उद्विग्नता, काम की लगन का भंग होता है।

केतुदशा : केतुभुक्ति

केन्द्रत्रिकोणे लाभे वा लग्नाधिपसमन्विते।
भाग्यकर्मेशसम्बन्धे वाहनेशसमन्विते॥21॥
तद्भुक्तौ धनधान्यादि चतुष्पाज्जीवलाभकृत्।
पुत्रदारादिसौख्यं च राजप्रीतिमनोरुजम्॥22॥
ग्रामभूम्यादिलाभश्च गृहे गोधनसंकुलम्।

यदि केतु केन्द्र, त्रिकोण, लाभ में स्थित हो या लग्नेश से युक्त हो या 4.9.10 भावेशों से कोई सम्बन्ध बनाता हो तो केतु दशा केतु भुक्ति में धन-धान्य वृद्धि, चौपाये पशुओं से लाभ, स्त्री-पुत्रादि का सुख, राजकीय लोगों से स्नेह, मन में तनाव, स्थान व भूमि आदि का लाभ, घर में पशु धन की वृद्धि होती है।

नीचास्तखेटसंयुक्ते रन्ध्रगे व्ययगेऽपि वा॥23॥
हृद्रोगं मानहानिश्च धन-धान्यपशुक्षयम्।
दारपुत्रादिपीडा च मनश्चंचलमेव च॥24॥
द्वितीयधूननाथेन सम्बन्धे तत्र संस्थिते।
अनारोग्यं महत्कष्टमात्मबन्धुवियोगकृत्॥25॥
दुर्गापाठं ततः कुर्यात् मृत्युंजय जपं चरेत्।

यदि केतु नीच या अस्तंगत ग्रह से युक्त हो, 8.12 भाव में हो तो हृदयरोग, मानहानि धन-धान्य व पशु धन की हानि, परिवार में वियोग, मन में चंचलता होती है।

यदि 2.7 भावेश से सम्बन्ध करे या 2.7 भाव में हो तो बन्धुओं से वियोग होता है। तब दुर्गापाठ तथा मृत्युंजय जप करें।

केतुदशा : शुक्रभुक्ति

केतोरन्तर्गते शुक्रे स्वोच्चे स्वक्षेत्रसंयुते॥26॥
केन्द्रत्रिकोण लाभे वा राज्यनाथेन संयुते।
राजप्रीतिं च सौभाग्यं गजाश्वाम्बरसंकुलम्॥27॥
तत्कालं श्रियमाप्नोति भाग्यकर्मेशसंयुते।
नष्टराज्य धनप्राप्तिः सुखवाहनमुत्तमम्॥28॥
सेतुस्नानादिकं चैव देवतादर्शनं महत्।
महाराजप्रसादेन ग्रामभूम्यादि लाभकृत्॥29॥

यदि शुक्र उच्च, स्वक्षेत्र में, केन्द्र, त्रिकोण, लाभ में हो या दशमेश से युक्त हो तो राजकीय सहयोग, सौभाग्य, हाथी, घोड़े आदि वाहन प्राप्त होते हैं। यदि 9.10 भावेश से युक्त हो तो तुरन्त लक्ष्मी व प्रतिष्ठा प्राप्त होती है। अपि च खोए राज्य व धन की प्राप्ति, सुख, उत्तम वाहन, लम्बी तीर्थ यात्रा, देवस्थानों के दर्शन, बड़े समर्थ व्यक्ति की सहायता से जायदाद या पद की प्राप्ति होती है।

षष्ठाष्टव्ययराशिस्थे पापग्रहसमन्विते।
तद्भुक्तौ राज्यभीतिश्च पितृमातृवियोगकृत्॥30॥
विदेशगमनं चैव चौराहिविषपीडनम्।
राजमित्रविरोधश्च राजदण्डाद्धनक्षयः॥31॥
शोकरोगभयं चैव तापाधिक्यं ज्वरं भवेत्।

यदि शुक्र 6.8.12 में हो तो, पापग्रह से युक्त हो तो उसकी अन्तर्दशा में राजभय, माता-पिता से वियोग, विदेशवास, सर्पादि या दुष्टों से पीड़ा, राजकीय मित्रों से विरोध, राजदण्ड से धनक्षय, शोकरोग व भय, गर्मी की अधिकता, ज्वरादि से पीड़ा होती है।

दायेशात्केन्द्रकोणे वा लाभे वा धनसंस्थिते॥32॥
देहसौख्यं चार्थलाभः पुत्रलाभे मनोदृढम्।
सर्वकार्यार्थसिद्धिः स्यात् स्वल्पग्रामाधिपं युतम्॥33॥

महादशेश से केन्द्र त्रिकोण, 2.11 में शुक्र हो तो धन लाभ, पुत्र लाभ, मन में साहस, सब कार्यों की सिद्धि, स्थानीय प्रमुखता प्राप्त होती है।

दायेशात्सन्धरिःफे वा षष्ठे वा पापसंयुते।
अन्नविघ्नं मनोभीतिः धन-धान्यपशुक्षयः॥34॥

आदिमध्ये महाक्लेशमन्ते सौख्यं विनिर्दिशेत्।
द्वितीयसप्तमाधीशे ह्यपमृत्युर्भविष्यति॥35॥
ततः शान्तिं प्रकुर्वीत स्वर्णधेनुं प्रदापयेत्।

महादशेश से 6.8.12 में पापयुक्त शुक्र हो तो खान-पान में रुकावट, मन में भय, धन-धान्य की हानि, प्रारम्भ व मध्य में बड़े कष्ट व अन्त में सुख होता है।

2.7 भावेश होने पर अपमृत्यु का भय होता है, तब शान्ति विधान तथा सुवर्ण का दान करना श्रेयस्कर है।

केतुदशा : सूर्यभुक्ति

केतोरन्तर्गते सूर्ये स्वोच्चे स्वक्षेत्रमित्रगे॥36॥
केन्द्रत्रिकोणलाभे वा शुभग्रहनिरीक्षिते॥
धनधान्यादिलाभश्च राजानुग्रहवैभवम्॥37॥
अनेकशुभकार्याणि स्वेष्टसिद्धिः सुखागमः।
दायेशात्केन्द्रकोणे वा लाभे वा धनसंस्थिते॥38॥
देहसौख्यं चार्थलाभः पुत्रलाभो मनोदृढम्।
यातुः कार्यार्थसिद्धिः स्यात्स्वल्पग्रामाधिपत्यकम्॥39॥

केतु में सूर्य की भुक्ति रहने पर, सूर्य यदि स्वोच्च, स्वक्षेत्र, मित्रक्षेत्र, केन्द्र त्रिकोण या लाभ स्थान में हो और शुभ ग्रह से युक्त दृष्ट हो तो धन-धान्य का लाभ, राजपक्ष की कृपा बहुत से शुभ कार्यों की सम्पन्नता, इष्ट सिद्धि, सुखागम होता है।

केतु से केन्द्र, त्रिकोण, लाभ या द्वितीय में सूर्य हो तो शरीर सुख, पुत्र लाभ, मन में धीरता, आक्रमण करने पर सफलता, स्थानीय प्रमुखता प्राप्त होती है।

षष्ठाष्टव्ययराशिस्थे पापग्रहसमन्विते।
तद्भुक्तौ राजभीतिश्च पितृमातृवियोगकृत्॥40॥
विदेशगमनं चैव चौराहिविषपीडनम्।
राजमित्रविरोधश्च राजदण्डाद्धनक्षयः॥41॥
शोकरोगभयानि स्युरुष्णाधिक्यं ज्वरादिकम्।
दायेशाद्वा तथाभूते पापग्रहसमन्विते॥42॥
अकस्मात्कलहं चैव पशुधान्यादि पीडनम्।
हृद्रोगो मानहानिश्च शिरोक्षिव्रणपीडनम्॥43॥

यदि सूर्य पापयुक्त होकर 6.8.12 भाव में हो तो राजभय, माता-पिता का वियोग, विदेश पलायन, चोर या सर्पादि से पीड़ा, राजकीय मित्र से मन मुटाव, राजदण्ड से धनहानि, शोक, रोग, भय, गर्मी के रोग आदि होते हैं।

यदि दशेश केतु से 6.8.12 में सूर्य हो और वह पापयुक्त भी हो तो अचानक

कलह, पशुधन की हानि, हृदयरोग, मानहानि, सिर में पीड़ा, आँखों में पीड़ा या चोट लगती है।

केतुदशा : चन्द्रभुक्ति

केतोरन्तर्गते चन्द्रे स्वोच्चे स्वक्षेत्रराशिगे।
केन्द्रत्रिकोणे लाभे वा धने शुभसमन्विते॥44॥
राजप्रीतिर्महोत्साहं कल्याणं च महत्सुखम्।
महाराजप्रसादेन गृहभूम्यादिलाभकृत्॥45॥
भोजनाम्बरपश्वादि व्यवसायात्फलाधिकम्।
अश्ववाहनलाभश्च वस्त्राभरणभूषणम्॥46॥
देवालयतटाकादि पुण्यधर्मादि संग्रहः।
पुत्रदारादिसौख्यं च पूर्णचन्द्रे तथैव च॥47॥

केतु दशा में चन्द्र भुक्ति होने पर, चन्द्रमा यदि उच्च, स्वक्षेत्र, केन्द्र, त्रिकोण, लाभ, धन स्थान में शुभ ग्रह से युक्त हो तो राजकीय जनों से प्रीति, कल्याण, सुख, बड़े लोगों की सहायता से जमीन जायदाद का लाभ, खान-पान का वैभव, व्यवसाय वृद्धि, वाहन सुख, वस्त्राभरणों की प्राप्ति, देवालय या सार्वजनिक सुविधा की चीजें बनवाने में सहयोग, स्त्री-पुत्रादि का सुख होता है। उक्त फल पक्षबली चन्द्रमा होने पर होता है।

नीचे वा क्षीणगे चन्द्रे षष्ठाष्टव्ययराशिगे।
आत्मक्लेशमनस्तापः कार्यविघ्नं महद्भयम्॥48॥
पितृमातृवियोगश्च देहजाड्यं मनोरुजः।
व्यवसायात्फलं नेष्टं गोमहिष्यादि नाशकृत्॥49॥

यदि चन्द्रमा नीचगत, क्षीण, 6.8.12 भावों में हो तो मन में क्लेश, सन्ताप, कामों में विघ्न, भय, माता-पिता का वियोग, देह में जड़ता, व्यवसाय में हानि, पशु धन की हानि होती है।

दायेशात्केन्द्रकोणे लग्ने वा बलसंयुते।
कृषिगोभूमिलाभश्च इष्टबन्धुसमागमः॥50॥
तामसात्कार्यसिद्धिश्च गृहे गोक्षीरमेव च।
भूकृत्यशुभमारोग्यं मध्ये राजाग्निजं भयम्॥51॥
अन्तेऽपि राजभीतिश्च विदेशगमनं तथा।
दूरयात्रादि संचारः सम्बन्धिजनपूजनम्॥52॥

महादशेश केतु से केन्द्र, त्रिकोण या प्रथम में बली चन्द्रमा हो तो कृषिवृद्धि, भूमि लाभ, इष्टजनों से समागम, क्रोधी या तामसी व्यक्तियों की मदद से कार्यसिद्धि, घर में दूध घी की बहुतायत, जमीन सम्बन्धी कार्य से लाभ, मध्य व अन्त में

राजभय, अग्निभय, विदेश गमन, दूरयात्रा लेकिन रिश्तेदारों व मित्रों में सम्मान वृद्धि होती है।

दायेशात्षष्ठरिःफे वा रन्ध्रे वा बलवर्जिते।
धनधान्यादिहानिश्च मनोव्याकुलमेव॥53॥
स्वबन्धुजनदातृत्वं भ्रातृपीडा तथैव च।
निधनाधिपदोषेण द्विसप्तमाधिपैर्युते॥54॥
अपमृत्युभयं तस्य शान्तिं कुर्याद्यथाविधि।
चन्द्रप्रीतिकरीं चैव आयुरारोग्यसम्भवः॥55॥

केतु से 6.8.12 में चन्द्रमा स्थित हो और वह निर्बल भी हो तो धन-धान्य की हानि, मन में व्यथा, बन्धुओं की सहायता से जीवनयापन, भाइयों को पीड़ा होती है।

यदि चन्द्रमा स्वयं अष्टमेश हो या 2.7.8 भावेश से युक्त हो तो अपमृत्यु का भय होता है। तब चन्द्रमा की प्रसन्नता के लिए शान्ति विधान करना चाहिए, उससे आयु व स्वास्थ्य सुरक्षित रहते हैं।

केतुदशा : कुजभुक्ति

केतोरन्तर्गते भौमे लग्नात्केन्द्रत्रिकोणगे।
स्वोच्चस्वक्षेत्रगे भौमे शुभदृष्टियुतेक्षिते॥56॥
आदौ शुभ फलं चैव ग्रामभूम्यादिलाभकृत्।
धनधान्यादिलाभश्च चतुष्पाज्जीवलाभकृत्॥57॥
गृहारामक्षेत्रलाभः राजानुग्रहाद्वैभवम्।
भाग्यकर्मेशसम्बन्धे भूलाभं सौख्यमेव च॥58॥

केतु दशा में मंगल भुक्ति रहने पर मंगल यदि लग्न से केन्द्र त्रिकोण में हो या स्वक्षेत्र, स्वोच्च में हो, शुभ ग्रह से युत दृष्ट हो तो दशारम्भ में शुभ फल, स्थान व जायदाद का लाभ, धन-धान्य का लाभ, चौपाये धन का लाभ, घर मकान आदि का सुख, राजकीय जनों की सहायता होती है। यदि मंगल का 9.10 भावेश से सम्बन्ध हो तो जायदाद प्राप्ति व सुख होता है।

दायेशात्केन्द्रकोणे वा दुश्चिक्ये लाभगेऽपि वा।
राजप्रीतियशोलाभः पुत्रमित्रादिसौख्यकृत्॥59॥

केतु से केन्द्र, त्रिकोण, 3.11 भावों में मंगल हो तो राजकीय प्रीति, यश लाभ, पुत्रों व मित्रों का अच्छा सुख होता है।

षष्ठाष्टमव्यये भौमे दायेशाद्धनगेऽपि वा।
द्रुतं करोति मरणं विदेशे चापदोभ्रमम्॥60॥
प्रमेहमूत्रकृच्छ्रादि चौरादिनृपपीडनम्।
कलहादिव्यथायोगः किंचित् सुखविवर्धनम्॥61॥

द्वितीयद्यूननाथे तु तापज्वरविषाद्भयम्।
दारपीडामनक्लेशमपमृत्युं करिष्यति॥62॥
अनड्वाहं प्रदद्याद्वै सर्वसम्पत्सुखावहम्॥

महादशेश केतु से 6.8.12 या द्वितीय में मंगल हो तो अचानक मृत्युभय, विदेश में मुसीबत, मधुमेह, मूत्ररोग, चोरादि से भय, कलह के योग होते हैं। धन व व्यवसाय साधारण ढंग से बढ़ते हैं। यदि मंगल 2.7 भावेश हो तो ज्वर व विषसंक्रमण से स्त्री पीडा, मन में व्यथा, अपमृत्यु होनी सम्भव है। शान्ति के लिए साँड़ छोड़ना चाहिए।

केतुदशा : राहुभुक्ति

केतोरन्तर्गते राहौ स्वोच्चे स्वक्षेत्रराशिगे॥63॥
केन्द्रत्रिकोणे लाभे वा दुश्चिक्ये धनभावगे।
तत्कालं श्रियमाप्नोति धनधान्यपटादिकम्॥64॥
म्लेच्छप्रभुवशात्सौख्यं ग्रामभूम्यादिलाभकृत्।
भुक्त्यादौ क्लेशमाप्नोति मध्येऽन्ते सौख्यमाप्नुपात्॥65॥

केतु दशा में राहु भुक्ति हो और राहु स्वोच्च, स्वक्षेत्र या अन्य अच्छी राशियों में हो या केन्द्र त्रिकोण, लाभ, 2-3 भावों में हो तो तुरन्त लक्ष्मी की प्राप्ति होती है। धन-धान्य वृद्धि, म्लेच्छ राजकीय पुरुषों से सहायता पाकर सम्पदा का लाभ होता है।

सामान्यतः दशारम्भ में परेशानियाँ तथा मध्य व अन्त में सुख मिलता है।

रन्ध्रे वा व्ययगे राहौ पापग्रहयुतेक्षिते।
बहुमूत्रात्कृशो देहः शीतज्वरविषाद्भयम्॥66॥
चातुर्थिकज्वरं चैव क्षुद्रोपद्रवपीडनम्।
अकस्मात्कलहं चैव प्रमेहः शूलमेव च॥67॥
द्वितीयसप्तमस्थे वा महाक्लेशो महद्भयम्।
तद्दोषपरिहारार्थं दुर्गादेवीजपं चरेत्॥68॥

यदि पाप युक्त दृष्ट राहु 8.12 भावों में हो तो मधुमेह, अधिक मूत्र के कारण शरीर में कमजोरी, ठण्ड में ज्वर चढ़ना, तीसरे चौथे दिन बुखार की पुनरावृत्ति, छोटे मोटे उपद्रवों से परेशानी, अचानक कलह, शरीर में कष्ट होता है।

यदि राहु 2.7 भावों में हो तो बहुत क्लेश, बड़ा भय होता है। तब दुर्गा देवी का जप पाठ करके 10 हजार आहुतियाँ दें।

केतुदशा : गुरुभुक्ति

केतोरन्तर्गते जीवे केन्द्रलाभत्रिकोणगे।
स्वोच्चे स्वक्षेत्रगे वापि लग्नाधिपसमन्विते॥69॥

कर्मभाग्याधिपैर्युक्ते धनधान्यार्थसम्पदः।
राजप्रीतिः महोत्साहोऽश्वान्दोल्यादिलाभकृत्॥70॥
गृहे कल्याणसम्पत्तिः पुत्रलाभो महोत्सवः।
पुण्यतीर्थादियात्रा स्यात्सत्कर्मसुखलाभदः॥71॥
इष्टदेवप्रसादेन विजयः कार्यलाभकृत्।

केतु दशा में गुरु भुक्ति हो और वृहस्पति केन्द्र, लाभ, त्रिकोण में सुराशि में हो या स्वोच्च, स्वक्षेत्र में हो, 1.9.10 भावेशों में से किसी के साथ सम्बन्ध करता हो तो राजकीय जनों से प्रेम, मन में उत्साह, वाहन लाभ, घर में मंगल का वातावरण, पुत्र लाभ, उत्तम तीर्थों की यात्रा, सत्कर्मों का फलोदय होता है। अपि च, ईश्वर की कृपा से सर्वत्र विजय, कार्य की प्राप्ति होती है।

षष्ठाष्टमव्यये जीवे दायेशान्नीचगेऽपि वा॥72॥
चौराहिव्रणभीतिश्च धनधान्यादिनाशनम्।
पुत्रदारवियोगश्च महाक्लेशादिसम्भवम्॥73॥
आदौ शुभफलं चैव प्रान्ते क्लेशकरं भवेत्।

यदि महादशेश से 6.8.12 में या नीचगत वृहस्पति हो तो चोरभय, सर्पभय, धन-धान्य की हानि, स्त्री पुत्रों का वियोग, बड़ी मुसीबत होती है। पुनश्च दशारम्भ में थोड़ा सुख तथा अन्त में बहुत क्लेश होते हैं।

दायेशात्केन्द्रकोणे वा दुश्चिक्ये लाभगेऽपि वा॥74॥
शुभयुक्ते न स्याद्भीतिर्विचित्राम्बरभूषणम्॥
दूरदेशप्रयाणं च स्वबन्धुजनपोषणम्॥75॥
भोजनाम्बरपश्वादि भुक्त्यादौ देहपीडनम्।
अन्ते तु स्थानचलनमकस्मात्कलहो भवेत्॥76॥
द्वितीय द्यूननाथे तु ह्यपमृत्युर्भविष्यति।
महामृत्युञ्जयं कुर्यात् शिवसाहस्रकं जपेत्॥77॥

महादशेश से केन्द्र त्रिकोण, 3.11 भावों में पापयुक्त गुरु हो तो भय, साधारण वस्त्राभूषण, दूर प्रदेश की यात्रा, अपने बन्धुओं का सहारा, खाने पीने का सुख, दशारम्भ में शरीर कष्ट, अन्त में स्थान परिवर्तन, अचानक कलह होती है।

यदि गुरु 2.7 भावेश हो तो अपमृत्यु भय दूर करने हेतु महामृत्युंजय जप या शिव सहस्रनाम का पाठ करना चाहिए।

केतुदशा : शनिभुक्ति

केतोरन्तर्गते मन्दे स्वदेशे पीडनं भवेत्।
बन्धुक्लेशो मनस्तापः चतुष्पाज्जीवलाभकृत्॥78॥

राजकार्यकलापेन धननाशो महद्भयम्।
स्थानाच्च्युतिः प्रवासश्च मार्गे चौरभयं भवेत्॥79॥
आलस्यं मनसो हानिः सर्वं प्रायोऽशुभं भवेत्।

केतु में शनि की भुक्ति रहने पर अपने स्थान पर बड़ी पीड़ा, बन्धुओं से क्लेश, मन में उदासी, चौपाये धन की बढ़ोत्तरी, राजकीय कार्य में धन नाश, भय, स्थान से बेदखली, परदेशवास, रास्ते में चोरी का भय, आलस्य, मन में हीन भावना, प्रायः सब अशुभ फल होते हैं। उक्त फल 8.12 में या खराब राशि में शनि होने पर समझें।

मूलत्रिकोणगे मन्दे तुलायां स्वर्क्षगेऽपि वा॥80॥
केन्द्रत्रिकोणे लाभे वा दुश्चिक्ये वा शुभांशके।
शुभदृष्टिसमायुक्ते सर्वकार्यार्थसाधनम्॥81॥
स्वप्रभोश्च महत्सौख्यं वस्त्राभरणलाभदम्।
स्वग्रामे सुखसम्पत्तिः स्ववर्गे राजदर्शनम्॥82॥

यदि शनि मूल त्रिकोण, स्वराशि या उच्च में हो या अच्छी राशि में केन्द्र त्रिकोण, षष्ठ, लाभ, तृतीय में हो और शुभ नवांश में रहे, शुभ ग्रह से युक्त दृष्ट हो तो सब कार्य सिद्ध होते हैं। अपने अधिकारी से विशेष सुख सहयोग, वस्त्र-भूषण की भेंट, अपने गाँव में जायदाद निर्माण अपने वर्ग में राजा जैसी स्थिति मिलती है।

दायेशात्षष्ठरिःफे वा रन्ध्रे पापेन संयुते।
देहतापो मनस्तापः कार्यविघ्नं महद्भयम्॥83॥
आलस्यं मानहानिश्च पितृमातृविनाशनम्।
द्वितीयद्यूननाथेतु तिलहोमं समाचरेत्॥84॥
कृष्णां गां महिषीं दद्यादपमृत्युहरोविधिः॥

महादशेश से 6.8.12 में शनि हो या पापयुक्त हो तो शरीर व मन में कष्ट, काम में विघ्न, भय, आलस्य मानहानि, माता-पिता का वियोग होता है।

यदि शनि 2.7 भावेश हो तो अपमृत्यु का भय दूर करने के लिए काले तिलों से हवन, काली गाय या भैंस का दान करना चाहिए।

केतुदशा : बुधभुक्ति

केतोरन्तर्गते सौम्ये केन्द्रलाभत्रिकोणगे॥85॥
स्वोच्चे स्वक्षेत्रसंयुक्ते राज्यलाभो महत्सुखम्।
सत्कथाश्रवणं दानं धर्मसिद्धिः सुखागमः॥86॥
अयत्नाद्धर्मलब्धिश्च विवाहश्च भविष्यति।
गृहे शुभकरं चैव वस्त्राभरणभूषणम्॥87॥
भाग्यकर्माधिपैर्युक्ते भाग्यवृद्धिः सुखावहा।
विद्वद्गोष्ठिकलापेन संतापो भूषणाधिकम्॥88॥

केतु दशा में बुधान्तर्दशा रहने पर, बुध यदि केन्द्र, लाभ, त्रिकोण में अच्छी राशि में हो, या कहीं भी उच्च या स्वक्षेत्र में हो तो राज्यलाभ, सुख, दान-पुण्य व धर्माचरण के योग, सुखप्राप्ति, बिना खास प्रयत्नों के धनलाभ, विवाह योग, घर में कल्याणकारी बातें, वस्त्राभूषणों के योग होते हैं।

यदि बुध 9-10 भावेशों के साथ सम्बन्ध करता हो तो विशेष भाग्य वृद्धि होती है। सेमिनार, विद्वानों की गोष्ठी आदि में अधिक समय लगने से थकावट हो सकती है तथा पदवी, पारितोषिक, विरुद आदि प्राप्त होते हैं।

दायेशात्केन्द्रगे सौम्ये त्रिकोणे लाभगेऽपि वा।
देहारोग्यं महालाभः पुत्रकल्याणवैभवम्॥89॥
भोजनाम्बरपश्वादिव्यवसायात्फलाधिकम्।

महादशेश केतु से केन्द्र त्रिकोण या लाभ स्थान में बुध हो, तब भी शरीर सुख, बहुत लाभ, सन्तान की उन्नति से हर्ष, भोजन वस्त्रादि का सुख, व्यवसाय से उत्तम फल प्राप्त होते हैं।

षष्ठाष्टमव्यये सौम्ये मन्दाराहियुतेक्षिते॥90॥
विरोधे राजकार्येषु परावासनिवासनम्।
वाहनाम्बरपश्वादि धनधान्यादिनाशकृत्॥91॥
भुक्त्यादौ शोभनं प्रोक्तं मध्ये सौख्यं धनागमः।
अन्ते क्लेशकरं चैव दारपुत्रादिपीडनम्॥92॥

यदि बुध 6.8.12 भावों में शनि, मंगल या राहु से युक्त दृष्ट हो तो सरकारी कामों में विरोध, दूसरों के घर में निवास की मजबूरी, वाहन, धन आदि का नाश होता है।

दशारम्भ में थोड़ा शुभ फल, मध्य में सुख व धन तथा अन्त में परिवार समेत स्वयं को क्लेशों का सामना करना पड़ता है।

दायेशात्षष्ठरन्ध्रे वा व्यये वा बलवर्जिते।
तद्भुक्त्यादौ महाक्लेशो दारपुत्रादिपीडनम्॥93॥
राजभीतिकरं चैव मध्ये तीर्थे गमो भवेत्।
द्वितीयद्यूननाथे तु ह्यपमृत्युर्भविष्यति॥94॥
तद्दोषपरिहारार्थं विष्णुसाहस्रकं जपेत्॥95॥

महादशेश से 6.8.12 में निर्बल बुध हो तो प्रारम्भ में बड़े क्लेश, परिजनों को पीड़ा, राजभय, मध्य में तीर्थ यात्रा तथा अन्त में पुनः क्लेश होता है। यदि बुध 2.7 भावेश हो तो दोषनिवारणार्थ विष्णुसहस्रनाम का पाठ करें।

इति श्री दशाफलदर्पणे पं. सुरेशमिश्रकृते हिन्दीव्याख्याने
केत्वन्तर्दशाफलाध्याय एकविंशः॥21॥
॥आदितः श्लोकाः 1727॥

22

॥ शुक्रान्तर्दशाफलाध्यायः ॥

सामान्य फल

केन्द्रस्थितस्य शुक्रस्य सौम्यानां तु हृतिर्यदा।
राज्याप्ती राजसम्मानं यानाम्बरविभूषणम्॥1॥
उत्साहकीर्तिसम्पत्तिस्त्रीपुत्रधनसम्पदः ।
भाग्योत्तरं मनोधैर्यं राज्यद्वाराधिपत्यताम्॥2॥
तथाविधस्य वाच्छस्य पापभुक्तौ धनक्षयम्।
कुभोजनं कुवस्त्रं च शुभकर्मविनाशनम्॥3॥
भुक्त्यादौ फलमेवं स्यादन्ते शोभनमादिशेत्।
कृषिगोभूमिपालं च दूरदेशाद्धनागमः॥4॥

केन्द्र में स्थित शुक्र की महादशा में शुभ ग्रहों की अन्तर्दशा हो तो राज्यलाभ, राज-सम्मान, वाहन, जीवन स्तर में उठाव, मन मे उत्साह, कीर्ति, सम्पत्ति, घर परिवार का सुख, सम्पत्ति, भाग्यवृद्धि राजकीय विभागों में सुगम प्रवेश होता है।

केन्द्रस्थित शुक्रदशा में पापभुक्ति के दौरान धनहानि, खराब भोजन, साधारण पहनावा, अच्छे कार्यों में विघ्न होता है।

उक्त अशुभ फल दशारम्भ में होता है, अन्त में शुभ फल, व्यवसाय व धन की वृद्धि, दूरस्थ प्रदेश से धनलाभ होता है।

त्रिकोणगस्य शुक्रस्य शुभभुक्तौ शुभक्रिया।
देवभूसुरभक्तिश्च सुतदारविवर्धनम्॥5॥
यज्ञादिकर्मलाभश्च गोभूषणजयावहम्।
आरोग्यं देहकान्तिश्च चिन्तितार्थमनोरथम्॥6॥
तथाविधस्य शुक्रस्य पापभुक्तौ मनोव्यथा।
अनारोग्यमर्यादं नृपचौरारिपीडनम्॥7॥

कुस्त्रीसंगं कुवार्तां च बन्धुद्वेषं मतिभ्रमम्।
दुःस्वप्नं गौलिपतनमपकीर्तिं लभेन्नरः॥8॥

त्रिकोणस्थ शुक्र दशा में शुभ भुक्ति रहने पर शुभ कर्मों का सम्पादन, देवों ब्राह्मणों का सत्कार, परिवार में वृद्धि, यज्ञ कार्यों में अवसर, पशुधन तथा आभूषणों की प्राप्ति, विजय, उत्तम स्वास्थ्य, शरीर शोभा, मनोरथ पूर्ति होती है।

पापदशा में मनोव्यथा, स्वास्थ्य हानि, राजभय, शत्रुभय, चोरभय, खराब स्त्री का साथ, अशुभ समाचार, बन्धुओं से द्वेष, बुद्धि भ्रम, खराब सपने, खराब शकुन, अपकीर्ति होती है।

पाके शुक्रस्य दुःस्थस्याशुभभुक्तौ महद्यशः।
राज्यसम्मानमर्थाप्तिः पुत्रस्त्रीधनसम्पदः॥9॥
वस्त्रवाहनभूषाप्तिरादौ चान्ते मनोरुजः।
बन्धुद्वेषो गुरोर्नाशः स्वकुलोद्भवनाशनम्॥10॥

यदि शुक्र 6.8.12 भावों में स्थित हो और उस में पाप ग्रहों की अन्तर्दशा रहे तब यश, राज-सम्मान धन-लाभ, स्त्री, पुत्र, सम्पत्ति की प्राप्ति, वस्त्राभूषणों की प्राप्ति दशारम्भ में होती है।

दशा के अन्त में मनोव्यथा, बन्धुओं से द्वेष, किसी बुजुर्ग से वियोग, परिवार में शोक होता है।

शुभग्रहाणां भुक्तौ तु देहारोग्यं महत्सुखम्।
परान्नं पट्टवस्त्राप्तिं गन्धमाल्यविभूषणम्॥11॥
भुक्त्यादौ फलमेव स्यादन्ते क्लेशकरं भवेत्।
चौरारिदेहपीडा च स्वबन्धुजननाशनम्॥12॥

6.8.12 भावगत शुक्र दशा में शुभ ग्रहों की अन्तर्दशा हो तो शरीर सुख, अन्य भौतिक सुख, उत्तम भोजन, उत्तम वस्त्राभूषण दशारम्भ में होते हैं।

दशा के अन्त में क्लेश, चोरादि से पीड़ा, अपने किसी निकटवर्ती का शोक होता है।

तृतीयायस्थशुक्रस्य परिपाके शुभेतरा।
हृतिर्दुःखमवाप्नोति धनधान्यविनाशनम्॥13॥
उद्योगभंगं क्लेशं च चौराग्निनृपपीडनम्।
भूविवादं स्वबन्धूनां नाशनं स्वपदस्य च॥14॥
तथाविधस्य शुक्रस्य शुभभुक्तौ महत्सुखम्।
नृपपूज्यं मनोधैर्यं देशग्रामाधिपत्यताम्॥15॥
वाहनभूषणाप्तिं च पुत्रस्त्रीभृत्यसम्पदः।
कूपारामतटाकानां निर्माणं धर्मसंग्रहम्॥16॥

3.11 भावगत शुक्र में अशुभ अन्तर्दशा हो तो दुःख, धन-धान्य की हानि,

परिश्रम की विफलता, क्लेश, विविध पीड़ाएँ, जायदाद सम्बन्धी विवाद, अपनी प्रतिष्ठा व सहायकों में कमी होती है।

इसी शुक्र में यदि शुभ दशा हो तो बहुत सुख, राज-सम्मान, देश या ग्राम का आधिपत्य, वाहन, वस्त्राभूषण की प्राप्ति, स्त्री-पुत्र, नौकरों का सुख, धर्मार्थ सार्वजनिक हित में कार्य करने के योग होते हैं।

धनस्थितस्य शुक्रस्य शुभभुक्तौ महत्प्रियम्।
दारपुत्रार्थलाभश्च स्वबन्धुजनरक्षणम्॥17॥
विद्या जयो मनोल्लासो देवभूसुरतर्पणम्।
यज्ञादिकर्मलाभश्च लभेन्नामद्वयं तथा॥18॥
तथास्थितस्य शुक्रस्य पापभुक्तौ भृशं वदेत्।
राजदण्डं मनोदुःखं हृद्रोगाक्षिपीडनम्॥19॥
विद्याहानिः कृषेर्नाशः कर्महानिः पदे पदे।
पदच्युतिर्भीति कम्पं लभते नात्र संशयः॥20॥

द्वितीय भावगत शुक्र दशा में शुभ भुक्ति रहने पर बड़े लोगों से स्नेह सम्बन्ध, स्त्री पुत्र, धन लाभ, अपने बन्धु की अश्रयता, विद्यालाभ, मन में उत्साह, देवकार्य सम्पादन, यज्ञयागादि के अवसर, दो नामों से प्रसिद्धि होती है।

इसी शुक्रदशा में पापान्तर्दशा हो तो बड़ा राजदण्ड, मन में दुःख, हृदय रोग, नेत्रपीड़ा, विद्याहानि, कृषि (व्यवसाय) हानि, कार्य में विघ्न, पदच्युति भय होता है।

शुक्रदशा : शुक्रभुक्ति

भृगोरन्तर्गते शुक्रे लग्नात्केन्द्रत्रिकोणगे।
लाभे वा बलसंयुक्ते योगप्राबल्यमादिशेत्॥21॥
विप्रमूलाद्धनप्राप्तिर्गौमहिष्यादिलाभकृत्।
पुत्रोत्सवादिसन्तोषा गृहे कल्याणसम्भवम्॥22॥
सन्मानं राजसम्मानं राज्यलाभं महत्सुखम्।
स्वोच्चे वा स्वर्क्षगे वापि तुंगांशे स्वांशगेऽपि वा॥23॥
नूतनगृहनिर्माणं नित्यं मिष्टान्नभोजनम्।
अन्नदानं प्रियं नित्यं दानधर्मादिसंग्रहम्॥24॥

शुक्रदशा में शुक्र अन्तर्दशा होने पर, शुक्र यदि लग्न से केन्द्र, त्रिकोण, लाभ भाव में बलवान् हो तो जन्मकुण्डली के योगों का अच्छा फल मिलता है।

ब्राह्मणों के सहयोग से धनप्राप्ति, गाय भैंस आदि पशुधन की प्राप्ति, पुत्रोत्सव या पुत्र की उन्नति, घर में कल्याणकारी बातों के योग, सज्जनों द्वारा मान, राजपक्ष के सत्कार, राज्य या पद की प्राप्ति, सुख होता है।

यदि यह शुक्र उक्त स्थानों में स्वोच्च, स्वक्षेत्रनवांशादि में हो तो नए घर,

जायदाद का निर्माण, उत्तम रहन-सहन, अन्नदान की सामर्थ्य, प्रिय बातों के योग, दान धर्म में प्रवृत्ति होती है।

कलत्रपुत्रविभवं मित्रसंयुक्तभोजनम्।
महाराजप्रसादेन वाहनाम्बरभूषणम्॥25॥
व्यवसायात्फलाधिक्यं चतुष्पाज्जीवलाभकृत्।
प्रयाणं पश्चिमे भागे वाहनाम्बरलाभकृत्॥26॥

उक्त प्रकार से स्थित शुक्रदशा में शुक्रान्तर के दौरान, स्त्री-पुत्र का वैभव, मित्रों के साथ सहभोज के योग, समर्थ लोगों की सहायता से वाहन वस्त्रादि की प्राप्ति, व्यवसाय में अच्छा लाभ, चौपाये धन से लाभ होता है।

लग्नाद्युपचये शुक्रे शुभदृष्टि युतेक्षिते।
मित्रांशे तुंगलाभेशयोगकारकसंयुते॥27॥
राज्यलाभो महोत्साहो राजप्रीतिः सुखावहा।
गृहे कल्याणसम्पत्तिर्दारपुत्रादिवर्धनम्॥28॥

लग्न से 3.6.10.11 भावों में शुक्र यदि मित्र नवांश, उच्च नवांश में हो या किसी योगकारकः या लाभेश से युक्त हो तो राज्य लाभ, उत्साह, राजकीय प्रीति, घर में कल्याणकारी वातावरण, स्त्री-पुत्रादि की उन्नति होती है।

षष्ठाष्टमव्यये शुक्रे पापयुक्तेऽथवीक्षिते।
चौरादिव्रणभीतिश्च सर्वत्र जनपीडनम्॥29॥
राजद्वारे जनद्वेष इष्टबन्धुविनाशम्।
दारपुत्रादिपीडाय देहबाधा भविष्यति॥30॥
द्वितीयद्यूननाथे तु मरणं सम्भविष्यति।
दुर्गादेवी जपं कुर्याद् धेनुदानं च कारयेत्॥31॥

6.8.12 में शुक्र यदि पापदृष्ट युक्त हो तो चोरभय, चोटभय, सर्वत्र पीड़ा, अदालती विवाद, सहयोगियों की कमी, स्त्री-पुत्रों को कष्ट, शरीर कष्ट होता है। यदि शुक्र 2.7 भावेश हो तो मृत्यु सम्भव है। तब दुर्गापाठ तथा गोदान कराना चाहिए।

शुक्रदशा : रविभुक्ति

शुक्रस्यान्तर्गते सूर्ये संतापो राजविड्वरम्।
दायादिकलहश्चैव व्यवहारोऽथवा भवेत्॥32॥
स्वोच्चे स्वक्षेत्रगे सूर्ये मित्रर्क्षे केन्द्रकोणे।
दायेशात्केन्द्रकोणे वा लाभे वा धनगेऽपि वा॥33॥
तद्भुक्तौ धनलाभः स्याद् राज्यस्त्रीधनसम्पदः।
स्वप्रभोश्च महत्सौख्यमिष्टबन्धुसमागमः॥34॥

पितृमातृसुखप्राप्तिर्भ्रातृलाभो सुखावहः।
सत्कीर्तिसुखसौभाग्यं पुत्रलाभश्च जायते॥35॥

शुक्र में सूर्य भुक्ति रहने पर सन्ताप, राजकीय विवाद, उत्तराधिकार सम्बन्धी कलह, मुकद्दमा आदि होता है।

यदि सूर्य उच्च, स्वक्षेत्र, मित्रक्षेत्र में केन्द्र त्रिकोण में हो या शुक्र से केन्द्र त्रिकोण, द्वितीय या लाभ में हो तो इस भुक्ति में धनलाभ, राज्यप्राप्ति, परिवार सुख, धन-सम्पदा, अपने अधिकारी से सुख, इष्टमित्रों का सहयोग, माता-पिता का सुख, भाई का सुख, सत्कीर्ति, सुख-सौभाग्य, पुत्र प्राप्ति के योग होते हैं।

षष्ठाष्टमव्यये सूर्ये दायेशाद्वा तथैव च।
नीचे वा पापवर्गस्थे देहतापो मनोरुजः॥36॥

यदि सूर्य लग्न या महादशेश से 6.8.12 में स्थित हो तो या नीच राशि, नीच नवांश या पापवर्गों में हो तो शरीर कष्ट, मनस्ताप आदि होते हैं।

स्वजनात्परिसंक्लेशः नित्यं निष्ठुरं भाषणम्।
पितृपीडाबन्धुहानी राजद्वारे विरोधकृत्॥37॥
व्रणपीड़ाहिबाधा च स्वर्क्षगे च भयं तथा।
नानारोगभयं चैव गृहक्षेत्रादि नाशनम्॥38॥
सप्तमाधिपदोषेण देहबाधा भविष्यति।
तद्दोषपरिहारार्थं सूर्यशान्तिं समाचरेत्॥39॥

अपि च उक्त दशा में अपने लोगों से कष्ट, कठोर भाषण, चिड़चिड़ा स्वभाव, चोट भय, जीव-जन्तुओं से भय होता है। यदि सूर्य 6.8.12 में स्वक्षेत्री भी हो तो विविध भय होता है।

यदि सूर्य सप्तमेश हो तो शरीरकष्ट सम्भव है। तब सूर्यशान्ति करनी चाहिए।

शुक्रदशा : चन्द्रभुक्ति

शुक्रस्यान्तर्गते चन्द्रे केन्द्रलाभत्रिकोणगे।
स्वोच्चे स्वक्षेत्रगे चैव भाग्यकर्मेशसंयुते॥40॥
शुभयुक्ते पूर्णचन्द्रे राज्यनाथेन संयुते।
तद्भुक्तौ वाहनाधिक्यं सेनापत्यं महत्सुखम्॥41॥
महाराजप्रसादेन गजान्तैश्वर्यमादिशेत्।
महानदीस्नानपुण्यं देवब्राह्मणपूजनम्॥42॥
गीतवाद्यप्रसंगादि विद्वज्जनविभूषणम्।
गोमहिष्यादिवृद्धिश्च व्यवसायात्फलाधिकम्॥43॥

शुक्र दशा में चन्द्रमा की भुक्ति के दौरान, चन्द्रमा यदि 1.4.7.10.11.5.9 भावों में हो या स्वोच्च, स्वराशि में 9.10 भावेश से युक्त हो, या शुभ ग्रह से युक्त

पूर्ण चन्द्रमा हो तो कई वाहनों का सुख, व्यापक बहुत सुख, बहुत ऐश्वर्य, बड़ी नदियों व तीर्थों में स्नान का पुण्य, देवों व ब्राह्मणों का सत्कार, गीत-संगीत, आमोद प्रमोद के अवसर, विद्वानों द्वारा प्रशंसा, पशुधन की वृद्धि, व्यवसाय में प्रगति होती है।

नीचे वास्तंगते वापि षष्ठाष्टव्ययराशिगे।
दायेशात्षष्ठगे वापि रन्ध्रे वा व्ययराशिगे॥44॥
तत्कालं धननाशः स्यात् संचरश्च महद्भयम्।
देहायासो मनस्तापो राजद्वारे विरोधकृत्॥45॥
विदेशगमनं चैव तीर्थयात्रादिकं फलम्।
दारपुत्रादिपीडा च स्वबन्धूनां वियोगकृत्॥46॥

नीचगत, अस्तंगत, दायेश या लग्नेश से 6.8.12 में स्थित चन्द्रमा हो तो तुरन्त धनहानि, परिभ्रमण भय, शरीरकष्ट, मानसिक तनाव, अदालती विवाद, तीर्थयात्रा, स्त्री-पुत्रों को पीड़ा, विदेश गमन, बन्धुओं से वियोग होता है।

दायेशात्केन्द्रलाभस्थे त्रिकोणे धनगेऽपि वा।
राजप्रीतिकरं चैव देशग्रामाधिपत्यता॥47॥
धैर्यं यशः सुखं कीर्तिर्वाहनाम्बरभूषणम्।
कूपारामतटाकादि निर्माणं धनसंग्रहः॥48॥
भुक्त्यादौ देहसौख्यमन्ते क्लेशकरं भवेत्।
नखदन्तशिरोरोगः कामिला चापि सम्भवेत्॥49॥

महादशेश से केन्द्र, लाभ, त्रिकोण या धन स्थान में चन्द्रमा होने पर, राजकीय लोगों से प्रेम, स्थानीय नेतृत्व, धीरता, यश, सुख, कीर्ति, वाहन वस्त्रादि का लाभ, सार्वजनिक सुविधा हेतु कार्य करने के योग, धन-संग्रह होता है।

अन्तर्दशा के आरम्भ में स्वास्थ्य अच्छा व अन्त में कष्ट, नाखून या दाँतों में रोग, सिर में पीड़ा, जिगर की खराबी से उत्पन्न रोग होते हैं।

शुक्रदशा : मंगलभुक्ति

शुक्रस्यान्तर्गते भौमे लग्नात्केन्द्रत्रिकोणगे।
स्वोच्चे वा स्वर्क्षगे भौमे लाभे वा बलसंयुते॥50॥
लग्नाधिपेन संयुक्ते कर्मभाग्येशसंयुते।
तद्भुक्तौ राजयोगादि सम्पदश्च सुखं परम्॥51॥
वस्त्राभरणभूम्यादिस्वेष्टसिद्धिः सुखावहा।

शुक्र में मंगल की अन्तर्दशा रहने पर, मंगल यदि लग्न से केन्द्र, त्रिकोण में हो, स्वोच्च या स्वक्षेत्र में हो बलवान् होकर लाभ में बैठा हो लग्नेश 9.10 भावेश से युक्त हो तो राजयोगों के श्रेष्ठफल, उत्तम सम्पदाएँ परम सुख, वस्त्राभरण का सुख, जमीन जायदाद की प्राप्ति, इष्ट सिद्धि होती है।

षष्ठाष्टमव्यये वापि दायेशाद्वा तथैव च॥52॥
शीतज्वरादिपीडा स्यात् पितृमातृभयावहः।
स्थानभ्रंशो मनोरोगः कलहो राजविड्वरः॥53॥
स्वबन्धुजनहानिश्च धनधान्यव्ययाधिकम्।
व्यवसायात्फलं नेष्टं स्थानभूम्यादिलाभकृत्॥54॥
द्वितीयधूननाथे तु देहबाधा भविष्यति।
तद्दोषपरिहारार्थं भौमशान्तिं समाचरेत्॥55॥

यदि लग्न या महादशेश से 6.8.12 में मंगल हो तो ज्वर की अधिकता, माता-पिता को भय, स्थानहानि, मनोद्वेग, कलह, राजकीय कोप, व्यवसाय में हानि, धन-धान्य का अधिक व्यय, बन्धु-बान्धवों की कमी, जायदाद की प्राप्ति होती है।

यदि मंगल 2.7 भावेश हो तो शरीर कष्ट होता है। शान्ति के लिए मंगल शान्ति करनी चाहिए।

शुक्रदशा : राहुभुक्ति

शुक्रस्यान्तर्गते राहौ केन्द्रलाभत्रिकोणगे।
स्वोच्चे वा शुभसंदृष्टे योगकारकसंयुते॥56॥
तद्भुक्तौ बहुसौख्यं च धनधान्यादिलाभकृत्।
इष्टबन्धुसमाकीर्णं भोजनाम्बरलाभदः॥57॥
यातुः कार्यार्थसिद्धिः स्यात्पशुक्षेत्रादि सम्भवः।

यदि राहु केन्द्र, त्रिकोण, लाभ में हो, शुभ ग्रहों से युक्त दृष्ट हो या योगकारक के साथ बैठा हो, अपनी उच्च (अच्छी) राशि में हो तो शुक्रदशा राहु भुक्ति में बहुत सुख, धन-धान्य लाभ, अभीष्ट लोगों से सम्पर्क, उत्तम रहन-सहन, यात्रा में सफलता, अथवा वाद-विवाद में सफलता, स्थान लाभ, पशु धन की वृद्धि होती है।

लग्नाद्युपचये राहौ तद्भुक्तिः सुखदा भवेत्॥58॥
शत्रुनाशो महोत्साहो राजप्रीतिं च विन्दति।
भुक्त्यादौ शरमासान् स पुच्छे ज्वरमजीर्णकृत्॥59॥
कार्यविघ्नमवाप्नोति संचरश्च मनोव्यथा।
नैर्ऋतिं दिशमाश्रित्य प्रयाणं प्रभुदर्शनम्॥60॥
सर्वकार्यार्थसिद्धिः स्यात्स्वदेशे पुनरागमः।
परं सुखं च सौभाग्यं नरोऽतीव समश्नुते॥61॥

लग्न से 3.6.10.11 भावों में स्थित राहु की अन्तर्दशा सुखदायक होती है। इस भुक्ति में शत्रुनाश, मन में उत्साह, राजकीय जनों की प्रीति प्राप्त होती है।

अन्तर्दशा के पहले 5 मास तक तथा अन्तिम महीनों में ज्वर, पाचन विकार, काम में विघ्न, वृथा भ्रमण, हताशा होती है।

अन्य मासों में उत्तम फल, नैऋत्य दिशा की यात्रा, धन लाभ, उत्तम सुख, सौभाग्य होता है।

दायेशाद्रिपुरन्ध्रस्थे व्यये वा पापसंयुते।
अशुभं लभतेकर्म पितृमातृजनो वधम्॥62॥
सर्वत्र जनविद्वेषं नानादोषादि सम्भवम्।
द्वितीये सप्तमे वापि देहालस्यं विनिर्दिशेत्॥63॥
तद्दोषपरिहारार्थं मृत्युञ्जयजपं चरेत्।

महादशेश शुक्र से 6.8.12 भावों में स्थित हो तो राहु भुक्ति में अशुभ फल, स्तरहीन कार्य, माता-पिता या उनके समान लोगों को बड़ा कष्ट, सर्वत्र जनविरोध, अनेक दोषों की उत्पत्ति होती है।

यदि राहु लग्न से 2.7 भावों में हो तो शरीर कष्ट होता है। दोषशान्ति के लिए मृत्युंजय जप करना चाहिए।

शुक्रदशा : गुरुभुक्ति

शुक्रस्यान्तर्गते जीवे स्वोच्चे स्वक्षेत्रकेन्द्रगे॥64॥
दायेशाच्छुभराशिस्थे भाग्ये वा कर्मराशिगे।
नष्टराज्यधनप्राप्तिरिष्टार्थाम्बरसम्पदः ॥65॥
मित्रप्रभोश्च सम्मानं धनधान्यादिकं महत्।
राजसम्मानकीर्तिश्चाश्वान्दौल्यादिलाभकृत् ॥66॥
विद्वज्जनानां संयोगः शास्त्रे भूरि परिश्रमः।
पितृमातृसुखप्राप्तिः भ्रातृपुत्रादिसौख्यकृत्॥67॥

शुक्र दशा गुरु भुक्ति में, गुरु यदि स्वोच्च, स्वक्षेत्र में केन्द्रगत हो, महादशेश से शुभ भावों में या 9.10 भावों में हो तो नष्ट धन या पद की प्राप्ति, उत्तम सम्पदा, विशेष जीवन स्तर, अपने जानकार समर्थ व्यक्ति की सहायता से सम्मान, धन-धान्य वृद्धि, राज-मान्यता, कीर्ति, घोड़ा पालकी (वाहन) का सुख, विद्वानों से समागम, शास्त्र ज्ञान, माता-पिता का सुख, भाइयों व पुत्रों से सुख होता है।

दयेशात्षष्ठराशिस्थे व्यये वा पापसंयुते।
राजचौरादिपीडा च देहपीडा भविष्यति॥68॥
स्थानच्युतिः प्रवासश्च नानारोगसमुद्भवः।
कलहो बन्धुकष्टश्च पीडास्यादात्मनस्तथा॥69॥
द्वितीयसप्तमाधीशे देहबाधा समुद्भवः।
दोषस्य परिहारार्थं महामृत्युंजयं चरेत्॥70॥

महादशेश से 6.12 भावों में पापयुक्त गुरु हो तो राजभय, चोरभय, शरीरकष्ट,

स्थानच्युति, प्रवास, रोगोत्पत्ति, कलह, बन्धुओं को कष्ट, मन में व्यथा होती है।

यदि वृहस्पति 2.7 भावेश हो तो देहकष्ट होता है। तब दोष निराकरण हेतु महामृत्युंजय जप कराना चाहिए।

शुक्रदशा : शनिभुक्ति

शुक्रस्यान्तर्गते मन्दे स्वोच्चे वा परमोच्चगे।
स्वर्क्षे केन्द्रत्रिकोणस्थे तुंगांशे स्वांशगेऽपि वा॥71॥
तद्भुक्तौ बहुसौख्यं स्यादिष्टबन्धुसमागमः।
सम्मानं प्रभुसम्मानं पुत्रिकागमनं तथा॥72॥
पुण्यतीर्थफलावाप्तिर्दानधर्मादिपुण्यकृत् ।

शुक्र में शनि की अन्तर्दशा होने पर, शनि यदि उच्च, परमोच्च, स्वक्षेत्री हो या केन्द्र त्रिकोण में अच्छी राशि में हो या उत्तम नवांश में हो तो बहुत सुख, इष्टजनों से समागम, सम्मान, अपने अधिकारी की प्रशंसा, कन्या जन्म, तीर्थयात्रा, दानधर्म में मति, आदि उत्तम फल होते हैं।

षष्ठाष्टमव्यये मन्दे दायेशाद्वा तथैव च॥73॥
स्वप्रभोश्च विशेषः स्यादतीवक्लेशसम्भवः।
देहालस्यमवाप्नोति आगमादधिकव्ययः॥74॥
भुक्त्यादौ देहमारोग्यं चरमे पितृवियोगकृत्।
दारपुत्रादिपीडा च स्वतनोश्च भवेद्भ्रमः॥75॥
व्यवसायात्फलं नेष्टं गोमहिष्यादिहानिकृत्।
द्वितीयसप्तमाधीशे देहबाधा भविष्यति॥76॥
तद्दोषपरिहारार्थं तिलहोमं च कारयेत्।
रुद्रार्चा सविशेषेण सर्वान् दोषान् व्यपोहति॥77॥

यदि शनि लग्न या शुक्र से 6.8.12 में हो तो अपने अधिकार से विशेष कष्ट, शरीर में शिथिलता, आय से अधिक व्यय, दशारम्भ में थोड़ा सुख, अन्त में पिता आदि का वियोग, स्त्री-पुत्रों को पीड़ा, अपने शरीर में उतार-चढ़ाव, व्यवसाय में हानि, पशुधन की हानि होती है।

यदि शनि 2.7 भावेश हो तो देहकष्ट सम्भव है। दोष शान्ति के लिए तिलों से हवन करें तथा रुद्रहोम करें।

एक विशेष नियम

परस्परदशायां स्वभुक्तौ सूर्यजभार्गवौ।
व्यत्ययेन विशेषेण प्रदिशेतां शुभाशुभम्॥78॥

लघुपाराशरी के नियमानुसार शुक्रदशा में शनि तथा शनि में शुक्र अपनी अपनी

अन्तर्दशा में एक दूसरे का फल, चाहे शुभ हो या अशुभ, विशेषतया देते हैं।

अर्थात् शनि दशा शुक्र भुक्ति में शनि का फल विशेष होगा तथा शुक्रदशा शनि भुक्ति में शुक्र का विशेष फल होगा।

शुक्रदशा : बुधभुक्ति

शुक्रस्यान्तर्गते सौम्ये केन्द्रलाभत्रिकोणगे।
स्वोच्चे वा स्वर्क्षगे वापि राजप्रीतिकरं शुभम्॥79॥
सौभाग्यं पुत्रलाभश्च सन्मार्गाद्धनागमः।
पुराणधर्मश्रवणं शृंगारिजन संगमः॥80॥
इष्टबन्धुसमाकीर्णं विप्रप्रभुसमागमः।
स्वप्रभोश्च महत्सौख्यं नित्यं मिष्टान्नभोजनम्॥81॥

शुक्र में बुधान्तर्दशा रहने पर, बुध यदि केन्द्र, त्रिकोण, लाभ स्थान में हो या स्वोच्च, स्वराशि में हो तो राजकीय जनों में स्नेहभाव, सौभाग्य, पुत्रप्राप्ति, सन्मार्ग से धनागम, पुराण कथा आदि के श्रवण के योग, फैशनपरस्त लोगों की संगति, अपने अधिकारी की विशेष कृपा, श्रेष्ठ ब्राह्मण से सम्पर्क होता है।

दायेशात्षष्ठरन्ध्रे वा व्यये वा बलवर्जिते।
पापदृष्टेऽथवायुक्ते चतुष्पाज्जीवहानिकृत्॥82॥
अन्यगृहे निवासः स्यान्मनोव्याकुलता भवेत्।
कालातिक्रमभुक्तिश्च ऋणद्रव्याप्तिरेव च॥83॥
भुक्त्यादौ शोभनं प्रोक्तं मध्ये सौख्यं विनिर्दिशेत्।
अन्ते क्लेशकरं चैव शीतवातज्वरादिकम्॥84॥
सप्तमाधीशदोषेण देहपीडा भविष्यति।
तद्दोषपरिहारार्थं विष्णुसाहस्रकं जपेत्॥85॥

महादशेश से 6.8.12 भावों में निर्बल बुध हो अथवा पापदृष्ट युक्त हो तो चौपाये धन की हानि, पराये घर में आश्रय, मन में व्यथा, समय असमय भोजन, ऋण से कार्यसाधन होता है।

आरम्भ में सामान्य शुभ, मध्य में सुख तथा अन्त में अशुभ फल रोगादि होते हैं। यदि बुध सप्तमेश हो तो शरीर कष्ट होने की सम्भावना होती है। दोष निवारण हेतु विष्णुसहस्रनाम का पाठ करना चाहिए।

शुक्रदशा : केतुभुक्ति

शुक्रस्यान्तर्गते केतौ स्वोच्चे वा स्वर्क्षगेऽपि वा।
योगकारक सम्बन्धे स्थानवीर्यसमन्विते॥86॥
भुक्त्यादौ शुभमाधिक्यात् गोमहिष्यादिवृद्धिकृत्।

व्यवसायात्फलाधिक्यं नित्यं मिष्टान्नभोजनम्॥87॥
मध्ये मध्ये महत्कष्टं पश्चादारोग्यमादिशेत्।

शुक्र में केतु भुक्ति रहने पर, केतु यदि पूर्वोक्त अपने उच्च या स्वक्षेत्र में हो, योगकारक से सम्बन्ध करे, अच्छे स्थान में स्थित हो तो उत्तम शुभ फल, पशुधन की वृद्धि, दशारम्भ में विशेष शुभ, व्यवसायवृद्धि उत्तम रहन-सहन होता है।

बीच-बीच में परेशानियाँ आती रहती हैं, परन्तु अन्त में सब ठीक हो जाता है।

दायेशाद्रिपुरन्ध्रस्थे व्यये वा पापसंयुते॥88॥
चौराहिव्रणपीडा च वृद्धिनाशौ महद्भयम्।
शिरोरोगो मनस्तापोऽकर्मकलहसम्भवः॥89॥
भार्यापुत्रविरोधश्च कार्यहानिर्धनक्षुतिः।
द्वितीयद्यूनभावे तु देहबाधा भविष्यति॥90॥
मृत्युञ्जयजपं कृत्वा छागदानं समाचरेत्।
दोषहानिर्भवेन्नूनं सर्वसम्पत् प्रदायिनी॥91॥

महादशेश से 6.8.12 में पापयुक्त केतु हो तो चोरभय, सर्पभय, कभी उन्नति, कभी अवनति, भय, सिर में रोग, मनस्ताप, बिना कारण कलह, परिवार में विरोध, कार्यहानि, धन की कमी होती है।

यदि केतु 2.7 भाव में हो तो मृत्युंजय जप व छागदान करें। तब सब प्रकार से सुख होगा।

इति श्री दशाफलदर्पणे पं. सुरेशमिश्रकृते हिन्दीव्याख्याने
शुक्रान्तर्दशाफलाध्यायो द्वाविंशः॥22॥
॥आदितः श्लोकाः 1818॥

23

॥ प्रत्यन्तर्दशाफलाध्यायः ॥

सामान्य फल विचार

अथातः सम्प्रवक्ष्यामि ग्रहस्योपदशाफलम्।
लग्नेशरोगनाशौ च निधनेशेन संयुतौ॥1॥
मारकेशयुतौ दृष्टौ रोगनाथांशगौ यदि।
तदा भुक्तौ विजानीयात् व्यथा शस्त्रेण वै नृणाम्॥2॥
शुभयोगेन बाधा स्यात्पापयोगेन मृत्युकृत्।
जीवांशे जीववर्गेण मूलांशे मूलवर्गतः॥3॥

अब प्रत्यन्तर्दशा का फल कहने हेतु मूलभूत नियम कहे जा रहे हैं–

1. लग्नेश व षष्ठेश से अष्टमेश का योग हो तो 1.6.8 भावेशों की दशान्तर्दशा प्रत्यन्तर्दशा में बहुत पीड़ा, शरीर कष्ट, बाधाएँ होती हैं।
2. लग्नेश व षष्ठेश यदि किसी मारकेश से युत-दृष्ट हों तो इन तीनों की दशा अन्तर्दशा प्रत्यन्तर जब एक साथ आए तो भी उक्त अशुभ फल होता है।
3. लग्नेश व षष्ठेश यदि षष्ठेश के नवांश में हो तो लग्नेश, षष्ठेश व षष्ठेश के अधिष्ठित नवांशेश की परस्पर दशा, भुक्ति व उप दशा में उक्त अशुभ फल होता है।
4. यदि उक्त ग्रह शुभ ग्रहों से सम्बन्ध करते हों तो प्राणभय न होकर, केवल बाधा मात्र होती है। अपि च पाप सम्बन्धी हों तो मृत्यु तक हो सकती है।
5. निष्कर्षतः 1.6.8 भावेश, मारकेश, षष्ठेश का अधिष्ठित नवांशेश या किसी निसर्ग पापग्रह की एक साथ दशा, अन्तर्दशा, प्रत्यन्तर्दशा आए तो कष्ट होता है।
6. उक्त ग्रह जीववर्ग की राशि नवांश में हों तो जीवधारियों से व मूल

वर्ग की राशियों में हों तो मूलवर्ग के कारण कष्ट होता है। अर्थात् राशि स्वरूपानुसार बाधा का कारण जानें।

विलग्ननाथस्य नवांशनाथो रन्ध्रांशपस्याधिपतिश्च युक्तः।
मेषस्य षड्वर्गगतौ यदा तु भुक्तौ तदा जम्बुकभीतितो वधः॥4॥

लग्नेश जिस नवांश में गया हो, उसका स्वामी, अष्टम भाव में पड़ने वाले 64वें नवांश राशि में स्थित ग्रह व 64वें नवांश का स्वामी, इन तीनों की परस्पर दशान्तर्दशा प्रत्यन्तर हो तो भी बाधा होती है।

यदि ये ग्रह मेष राशि के वर्गों में अधिकांशतः हों तो गीदड़, भेड़िया, कुत्ता आदि जानवरों के कारण शरीर बाधा होती है।

वृषवर्गगतौ तौ चेद् वृश्चिकाद्भयमादिशेत्।
युग्मवर्गगतौ भीतिः कपिजा नात्र संशयः॥5॥
कर्कवर्गगतौ स्यातां रासभाद्भयमादिशेत्।
सिंहवर्गगतौ नूनं व्याघ्रभीतिं दिशन्ति वै॥6॥
कन्यावर्गगतौ नाथौ भल्लुकाद्भयमंजसा।
तुलाधारगतौ स्यातां गजाद्भीतिं वेदद्बुधः॥7॥

लग्न नवांशेश व अष्टम भाव नवांशेश (64वें नवांश का स्वामी) इनकी परस्पर दशान्तर्दशा प्रत्यन्तर्दशा हो और पूर्वोक्त 64वें नवांश राशि में स्थित ग्रह या 6.8 भावेश भी इन में शामिल हों तथा दशेश, भुक्तीश, प्रत्यन्तर्दशेश में से कोई दो वृष राशि के वर्ग में हों तो बिच्छू आदि से भय, मिथुनवर्ग में हों तो बन्दर आदि से भय। कर्क के वर्ग में हों तो गधे, घोड़े, खच्चर आदि से भय। सिंह वर्ग में हों तो शेर, चीता, बाघ आदि से भय। कन्या वर्ग में हों तो भालू से भय। तुला वर्ग में हों तो हाथी से भय कहना चाहिए।

अलिवर्गगतौ नूनं भयं स्याद्गजतः सदा।
यदि कार्मुकवर्गस्थौ भुक्तौ स्याद् रथतो भयम्॥8॥
नक्रवर्गगतौ तौ चेद् भुक्तौ मकरजं भयम्।
कुम्भवर्गगतौ स्यातां गोलांगूलाद्भयं वेदत्॥9॥
मीनवर्गगतौ भुक्तौ तेषां स्याद् दाहजं भयम्।
सम्यग् विचार्य मतिमान् प्रवदेत्कालवित्तमः॥10॥

यदि ये वृश्चिक नवांश में हों तो हाथी से भय, धनुवर्ग में हों तो वाहन से भय, मकरवर्ग में हों तो जलजन्तु से भय, कुम्भ वर्ग में हों तो लंगूर आदि से भय तथा मीनवर्ग में हों तो अग्नि भय होता है। इस प्रकार राशि शील का विचार करके बुद्धिमान् दैवज्ञ प्रत्यन्तर्दशा में फल कहे।

सूर्यान्तर्दशा में प्रत्यन्तर्दशा फल

उद्वेगोऽथ बलं वित्तं दारार्ति शिरसिव्यथा।
ब्राह्मणेन विवादश्च सूर्यः स्वविदशां गतः॥11॥
उद्वेगः कलहश्चित्तपीड़ा स्वहृतिश्चाद्भुतम्।
मणिमुक्तादिनाशश्च विदशासु रवेः शशी॥12॥
राजभीतिः शस्त्रभीतिर्बन्धनं बहुसंकटम्।
शत्रुवह्निकृतापीडा विदशासु रवेः कुजः॥13॥

सामान्यतः सूर्य की अन्तर्दशा में सूर्य की प्रत्यन्तर्दशा हो तो उद्वेग, शक्ति में वृद्धि, धन, स्त्री को पीड़ा, सिर में कष्ट, ब्राह्मण से विवाद होता है।

चन्द्रमा के प्रत्यन्तर में भी उद्वेग, कलह, मनोव्यथा, धनहानि, संचित धन का नाश होता है। मंगल की विदशा में राजभय, शस्त्रभय, बन्धन, संकट, शत्रुपीड़ा अग्निभय होता है।

श्लेष्मव्याधिं शस्त्रभीतिं धनहानिं महद्भयम्।
राज्यभंगं तथा त्रासं विदशासु रवेस्तमः॥14॥
शत्रुनाशं जयं वृद्धिं वस्त्रहेमादिभूषणम्।
अश्वयानादिकं दत्ते गोधनं च रवेर्गुरुः॥15॥
धनहानिः पशोः पीड़ा महोद्वेगो महारुजः।
अशुभं लभ्यते सर्वं विदशासु रवेः शनिः॥16॥

सूर्य भुक्ति में राहु विदशा हो तो कफ बाधा, कफ जनित रोग, शस्त्र भय, धनहानि, भय, राज्य या पद की हानि, भीतरी डर होता है।

गुरु की विदशा में शत्रुहानि, जय, बुद्धि, वस्त्राभूषणों की प्राप्ति, वाहन सुख, गोधनवृद्धि होती है।

शनि की विदशा में धनहानि, पशुओं को पीड़ा, बहुत उद्वेग, बड़ा रोग, सब अशुभ फल प्राप्त होते हैं।

विद्यालाभो बन्धुसंगो भोज्यप्राप्तिर्धनागमः।
धर्मलाभो नृपात्पूजा विदशासु रवेर्बुधः॥17॥
प्राणभीतिर्महाहानी राजभीतिश्च विग्रहः।
शत्रूणां च महावादो विदशासु रवेः शिखी॥18॥
दिनानि समरूपाणि लाभोऽप्यल्पो भवेदिह।
स्वल्पा च सुखसम्पत्तिर्विदशासु रवेर्भृगुः॥19॥

सूर्य भुक्ति में बुध विदशा हो तो विद्या प्राप्ति, बन्धुओं का संग, उत्तम खान-पान, धन-लाभ, धर्मवृद्धि राजमान्यता होती है।

केतु विदशा में प्राणभय, बड़ा नुकसान, राजभय, विवाद, शत्रुओं से प्रबल

विरोध होता है। शुक्र विदशा में सब कुछ समरूप चलता है, साधारण लाभ, साधारण सुख सम्पत्ति होती है।

चन्द्रान्तर्दशा में प्रत्यन्तर्दशा फल

भूभोज्यधनसम्प्राप्तिः राज्यपूजामहत्सुखम्।
महालाभः स्त्रियो भोगो विदशासु स्वयं शशी॥20॥
मतिवृद्धिर्महापूज्या सुखं बन्धुजनैः सह।
धनागमः शत्रुभयं चन्द्रान्तर्गतः कुजः॥21॥
भवेत्कल्याणसम्पतिः राज्यवित्तसमागमः।
सुसौख्यमल्पमृत्युश्च चन्द्रान्तर्गतस्तमः॥22॥

चन्द्रमा की अन्तर्दशा में चन्द्रप्रत्यन्तर हो तो भूमि लाभ, उत्तम खान-पान, धनवृद्धि, राज-सम्मान, सुख, बड़ा लाभ, स्त्रियों से सुख होता है।

मंगलप्रत्यन्तर हो तो बुद्धिवृद्धि, बड़ा सम्मान व मान्यता, सुख, बन्धु-बान्धवों का समागम, धनलाभ, लेकिन शत्रुभय होता है।

राहु प्रत्यन्तर में सर्वविध कल्याण, राज्य व धन की प्राप्ति, उत्तम सुख, अल्पमृत्यु का भय होता है।

वस्त्रलाभो महातेजो ब्रह्मज्ञानं च सद्गुरोः।
वस्त्रालंकरणावाप्तिश्चन्द्रान्तर्गते गुरौ॥23॥
दुर्दिनं लभते पीडां वातपित्तादविशेषतः।
धनधान्ययशोहानिश्चन्द्रान्तर्गते शनौ॥24॥
पुत्रजन्महयप्राप्तिर्विद्यालाभो महोन्नतिः।
शुक्लवस्त्रान्नलाभश्च चन्द्रान्तर्गते बुधे॥25॥

बृहस्पति के प्रत्यन्तर में वस्त्रलाभ, तेजोवृद्धि, अच्छे गुरु से आध्यात्मिक ज्ञान की प्राप्ति, वस्त्राभूषणों का सुख होता है।

शनि के प्रत्यन्तर में बुरे दिनों का सामना, पीड़ा, वात-पित्त से कष्ट, धन-धान्य व पशुओं की हानि होती है।

बुध प्रत्यन्तर में पुत्र-जन्म, वाहन प्राप्ति, विद्यालाभ, उन्नति, सफेद वस्त्र, अन्न की बहुलता होती है।

ब्राह्मणेन समं युद्धमपमृत्युः सुखक्षयः।
सर्वत्र जायते क्लेशश्चन्द्रमध्ये गते ह्यगौ॥26॥
धनलाभो महासौख्यं कन्याजन्मसुभोजनम्।
प्रीतिश्च सर्वलोकेभ्यो चन्द्रान्तर्गते भृगौ॥27॥
अन्नागमो वस्त्रलाभः शत्रुहानिः सुखागमः।
सर्वत्रविजयप्राप्तिश्चन्द्रमध्ये दिवाकरे॥28॥

केतु प्रत्यन्तर होने पर बुद्धिमानों व विद्वानों के साथ कलह, अपमृत्यु का

भय, सुख हानि, सर्वत्र क्लेश होता है।

शुक्र प्रत्यन्तर्दशा में धनलाभ, खूब सुख, कन्या जन्म, सब लोगों का स्नेह सत्कार प्राप्त होता है।

सूर्य प्रत्यन्तर्दशा में उत्तम भोजन, उत्तम पहनावा, शत्रुहानि, सुख, सर्वत्र विजय होती है।

मंगलान्तर्दशा में विदशा फल

शत्रुभीतिः कलिर्घोरा सहसा जायते भयम्।
रक्तस्रावोऽपमृत्युश्च विदशासु स्वयं कुजः॥29॥
बन्धनं राज्यभंगश्च धनहानिः कुभोजनम्।
कलहः शत्रुभिर्नित्यं भौमान्तर्गतस्तमः॥30॥
मतिनाशस्तथा दुःखं सन्तापः कलहो भवेत्।
विफलं चिन्तितं सर्वं भौममध्ये सुरार्चितः॥31॥

मंगल की अन्तर्दशा में मंगल का प्रत्यन्तर हो तो शत्रुभय, बड़ी कलह, खून बहने के योग, अपमृत्यु होती है।

राहु प्रत्यन्तर होने पर बन्धन, पदनाश, धनहानि, खराब भोजन, शत्रुओं से कलह होती है। गुरु प्रत्यन्तर्दशा में बुद्धि का विपर्यय, दुःख, सन्ताप, कलह, सर्वत्र असफलता मिलती है।

स्वामिनाशस्तथापीडा धनहानिर्महाभयम्।
वैकल्यं कलहस्त्रासो भौममध्ये गते शनौ॥32॥
सर्वथा बुद्धिनाशश्च धनहानिः ज्वरागमः।
वस्त्रान्नसुहृदां नाशो भौमान्तर्गतो बुधः॥33॥
आलस्यं च शिरः पीडा पापरोगोऽपमृत्युकृत्।
राज्यभीतिः शस्त्रघातो भौमान्तर्गतः शिखी॥34॥

शनि प्रत्यन्तर रहने पर अपने स्वामी की हानि, पीड़ा, धनहानि, भय का वातावरण, विफलता, कलह आदि फल होते हैं।

बुध प्रत्यन्तर में बुद्धिनाश, धनहानि, ज्वरादि से पीड़ा, खान-पान में कमी, मित्रों व सहायकों की कमी होती है।

केतु प्रत्यन्तर्दशा में आलस्य, सिर में पीड़ा, खराब रोग, अपमृत्यु का भय, राज्यभय, शस्त्र की चोट होती है।

चाण्डालात्संकटस्त्रासो राजशस्त्रभयं भवेत्।
अतीसारोऽथवमनं भौममध्ये च भार्गवे॥35॥
भूमिलाभोऽर्थसम्पत्तिः सन्तापो मित्रसंगतिः।
सर्वत्रसुखमाप्नोति भौममध्ये दिवाकरः॥36॥

याम्यां दिशि भवेल्लाभः सितवस्त्रविभूषणम्।
सांसिद्धिः सर्वकार्याणां भौममध्ये निशापतिः॥37॥

शुक्र की प्रत्यन्तर्दशा में नीच व्यक्ति से संकट, भय, शस्त्रभय, उल्टी, दस्त से पीड़ा होती है।

सूर्य के प्रत्यन्तर में भूमिलाभ, धन, सम्पत्ति, सन्ताप, मित्र संगति, सर्वत्र सुख प्राप्त होता है।

चन्द्र प्रत्यन्तर में दक्षिण दिशा से लाभ, श्वेत वस्त्रों व आभूषणों की प्राप्ति, सब कामों में सफलता होती है।

राहु मध्ये विदशा : फल

बन्धनं बहुधा रोगो बाहुघातः सुहृद्भयम्।
अकस्मादापदो यान्ति राहौ जलवह्निनतो भयम्॥38॥
सर्वत्र जायते लाभो गजाश्वधनसम्पदः।
राजसम्मानदश्चैव राहौ देवगुरुः सदा॥39॥
बन्धनं जायते घोरं सुखहानिर्महद्भयम्।
प्रत्यहं वातपीडा च राह्वतन्तर्गते शनौ॥40॥

राहु अन्तर्दशा में राहु का प्रत्यन्तर हो तो बन्धन, विविध रोग, हाथ में चोट, मित्रों से कष्ट, अचानक मुसीबतें, पानी या आग से भय होता है।

गुरु की प्रत्यन्तर्दशा में लाभ, हाथी घोड़े आदि वाहन, धन-सम्पत्ति राज-सम्मान होता है। शनि के प्रत्यन्तर में बन्धन, सुख में कमी, भय, प्रतिदिन वातरोग से पीड़ा होती है।

सर्वत्र बहुधा लाभो वनिताजनितं सुखम्।
परदेशागतः सिद्धिं राह्वन्तर्गते बुधे॥41॥
बुद्धिनाशो भयं विघ्नं धनहानिर्महाभयम्।
सर्वत्रकलहोद्वेगौ राहौ केतौ समागते॥42॥
योगिनीभ्यो भयं भूपादश्वहानिः कुभोजनम्।
स्त्रीनाशः कुलजः शोको राहुमध्यगते भृगौ॥43॥

बुध के प्रत्यन्तर में सर्वत्र अनेक प्रकार से लाभ, स्त्री का भरपूर सुख, परदेश से सफलता होती है। केतु प्रत्यन्तर में बुद्धिनाश, भय, विघ्न, धनहानि, मुसीबतें, सर्वत्र कलह व उद्वेग होता हैं।

शुक्र प्रत्यन्तर में विचित्र प्रकार की मानसिक व्याधि, सरकार द्वारा वाहन जब्त कर लेना, खराब भोजन, स्त्रीहानि, परिवार में शोक होता है।

ज्वररोगो महाभीतिः पुत्रपौत्रादिपीडनम्।
अल्पमृत्युः प्रमादश्च राह्वन्तर्गते रवौ॥44॥

उद्वेगः कलहश्चिन्ता मानहानिर्महद्भयम्।
पित्ताद्वैकल्यता देहे राहवन्तर्गते शशी॥45॥
भगंदरकृता पीड़ा रक्तपित्तप्रपीडनम्।
अर्थहानिर्महोद्वेगो राह्वन्तर्गते कुजे॥46॥

सूर्य प्रत्यन्तर में ज्वर, बड़ा भय, पुत्र पौत्रों को पीड़ा, अल्पमृत्यु, प्रमाद होता है।

चन्द्र प्रत्यन्तर में मन में बेचैनी, कलह, चिन्ता, मानहानि, भय, पित्तजनित रोग होते हैं।

मंगल प्रत्यन्तर में भगंदर या तत्सदृश रोग, रक्तपित्त के रोग, धन हानि, उद्वेग आदि अशुभ फल होते हैं।

गुर्वन्तर्दशा में विदशा फल

हेमलाभो धनवृद्धिः कल्याणं च फलोदयः।
बहुभावा गृहे वृद्धिर्जीवान्तर्गते गुरौ॥47॥
गोभूमिहयलाभः स्यात्सर्वत्रसुखसाधनम्।
संग्रहो ह्यन्नपानादि गुर्वन्तरगे शनौ॥48॥
विद्यालाभो वस्त्रलाभो ज्ञानलाभः समौक्तिकः।
सुहृदां संगमः स्नेहो जीवान्तर्गते बुधे॥49॥

गुर्वन्तर्दशा में गुरु की प्रत्यन्तर्दशा हो तो स्वर्णलाभ, धनवृद्धि, कल्याण, उत्तम फलों की प्राप्ति, घर में बहुत-सी खुशियाँ व उन्नति होती है।

शनि प्रत्यन्तर में पशुधन, भूमि, वाहन की प्राप्ति, सुख साधनों में वृद्धि, अच्छी बचत, खान-पान का सुख होता है।

बुध प्रत्यन्तर्दशा में विद्या लाभ, वस्त्र लाभ, ज्ञान लाभ, मोती माणिक आदि का लाभ, मित्रजनों से संगम, स्नेहभाव होता है।

जलभीतिस्तथाचौर्यं बन्धनं कलहो भवेत्।
अल्पमृत्युर्भयं घोरं जीवान्तर्गते ध्वजे॥50॥
नानाविधार्थसम्प्राप्ति हेमवस्त्रविभूषणम्।
लभतेक्षेमसन्तोषं जीवमध्ये गते भृगौ॥51॥
नृपाल्लाभस्तथामित्रं पितृतो मातृतोऽपि च।
सर्वत्र लभते पूजां जीवमध्ये दिवाकरे॥52॥

गुर्वन्तर में केतु की विदशा रहने पर जलभय, चोरी, बन्धन, कलह, अल्पमृत्यु, भय होता है।

गुर्वन्तर में शुक्र प्रत्यन्तर होने पर अनेक विद्याओं में गति, सुवर्ण व वस्त्रालंकार की प्राप्ति, कुशलता सन्तोष होता है।

सूर्य प्रत्यन्तर होने पर राजा से लाभ, मित्रता, माता व पिता से भी लाभ, सर्वत्र सम्मान प्राप्त होता है।

सर्वदुःखविमोक्षश्च मुक्तालाभो हयस्य च।
सिद्धयन्ति सर्वकार्याणि जीवान्तर्गते शशी॥53॥
शस्त्रभीतिर्गुदे पीडा वह्निमान्द्यमजीर्णता।
पीडा शत्रुकृता भूरि जीवजीवान्तरे कुजः॥54॥
चाण्डालेन विरोधः स्याद् भयं तेभ्यो रतिग्रहः।
कष्टं स्याद्व्याधिशत्रुभ्यो जीवान्तर्गते तमः॥55॥

गुरु अन्तर्दशा में चन्द्रमा का प्रत्यन्तर होने पर दुःखों से मुक्ति, वाहन लाभ, मुक्तामणि आदि का लाभ, सब कार्यों में सफलता होती है।

मंगल प्रत्यन्तर रहने पर शस्त्र भय, गुदाद्वार में कष्ट, भूख की कमी, अपच, शत्रुओं से कष्ट, रोग, पीड़ा होती है।

शन्यन्तर्दशाः प्रत्यन्तर फल

देहपीडाकलिर्भीतिर्भयमन्त्यजलोकतः ।
विदेशगमनं दुःखं तदा शन्यन्तरे शनिः॥56॥
बुद्धिनाशः कलेर्भीतिरन्नपानादिहानिकृत्।
धनहानिर्भयं शत्रोः सदाशन्यन्तरे बुधः॥57॥
बन्धुशत्रुर्गृहे जातो कर्महानिर्बहुक्षुधा।
चित्ते चिन्ताभयं त्रासो भवेच्छन्यन्तरे शिखी॥58॥

शन्यन्तर्दशा में शनि का प्रत्यन्तर हो तो शरीर कष्ट, कलह होने का डर, नीच जनों से भय, विदेश गमन, दुःख होता है।

बुध प्रत्यन्तर में बुद्धि का ह्रास, कलह होने का डर, खान-पान में बाधा, धनहानि, शत्रुभय आदि अशुभ फल होते हैं।

केतु प्रत्यन्तर में घरेलू बन्धु ही शत्रु हो जाते हैं, कार्य में हानि, भूख में निरन्तरता की कमी, मन में चिन्ता, भय आदि फल होते हैं।

चिन्तितं वर्धते वस्तुकल्याणं स्वजने जने।
मनुष्यकृषितो लाभः शनेरन्तर्गते भृगौ॥59॥
राजतेजोऽधिकारित्वं स्वगृहे जायते कलिः।
ज्वरादिव्याधिपीडा च तदा शन्यन्तरे रविः॥60॥
स्फीतबुद्धिर्महारम्भो मन्दतेजो बहुव्ययः।
बहुस्त्रीभिः समं भोगं दत्ते शन्यन्तरे विधुः॥61॥

शन्यन्तर्दशा में शुक्र का प्रत्यन्तर होने पर मनोवांछित कार्यों में सफलता, परिवार में कल्याणकारी बातें, लोगों से लाभ, कृषि (व्यवसाय) वृद्धि होती है।

सूर्य प्रत्यन्तर रहने पर राजकीय अधिकार, तेजस्विता, घर में कलह, ज्वरादि पीड़ा होती है।

चन्द्रप्रत्यन्तर में बुद्धि का विकास, बड़े कार्यों का शुभारम्भ, तेजस्विता में कमी, अधिक व्यय, अनेक स्त्रियों से सुख होता है।

तेजोहानिर्पुत्रघातो वह्निभीती रिपोर्भयम्।
वातपित्तकृता पीडा दत्ते शन्यन्तरे कुजः॥62॥
धननाशो वस्त्रहानिर्भूमिनाशो भयं भवेत्।
विदेशगमनं मृत्युं दत्ते शन्यन्तरे तमः॥63॥
गृहेषु स्त्रीकृतं छिद्रं ह्यसमर्थो निरीक्षणे।
अथवा कलिमुद्वेगं दत्ते सौर्यन्तरे गुरुः॥64॥

शनि अन्तर्दशा में मंगल का प्रत्यन्तर रहने पर तेज में कमी, पुत्र को कष्ट, अग्निभय, शत्रुभय, वातपित्त आदि से उत्पन्न रोगों से पीड़ा होती है।

राहु प्रत्यन्तर में धननाश, वस्त्रादि का नाश, जायदाद की हानि, भय, विदेश गमन, मृत्यु के योग होते हैं।

गुरु प्रत्यन्तर में घर में स्त्रियों के कारण अनुशासनहीनता, घर की देख-रेख करने में असामर्थ्य, कलह, मन में चिन्ता आदि फल होते हैं।

बुध प्रत्यन्तर फलम्

बुद्धिविद्यार्थलाभो वा वस्त्रलाभो महत्सुखम्।
स्वर्णादिधनलाभः स्यात्सौम्यान्तर्गते बुधे॥65॥
कठिनान्नस्य सम्प्राप्तिरुदरे रोगसम्भवः।
कामला रक्तपित्तं च दत्ते सौम्यान्तरे शिखी॥66॥
उत्तरस्यां भवेल्लाभो हानिः स्यात्तु चतुष्पदे।
अधिकारान्महाप्रीतिः दत्ते सौम्यान्तरे भृगुः॥67॥

बुध की अन्तर्दशा में बुध का ही प्रत्यन्तर हो तो बुद्धि-विद्या की वृद्धि, वस्त्र प्राप्ति, बहुत सुख, सुवर्णादि धन का लाभ होता है।

केतु प्रत्यन्तर में मोटे अन्न की प्राप्ति, पेट में रोग, रक्तपित्त, अम्लपित्तता होती है।

शुक्र प्रत्यन्तर होने पर उत्तर दिशा में लाभ, चौपाये धन की हानि, अधिकार वृद्धि से मन में सन्तोष होता है।

तेजोहानिर्भवेद्रोगो तनुपीडा तु मार्दवी।
जायते चित्तवैकल्यं बुधे सौम्यान्तरे रविः॥68॥
स्त्रीलाभश्चार्थसम्पत्तिः कन्यालाभो महाधनम्।
लभते सर्वतः सौख्यं तदा सौम्यान्तरे विधौ॥69॥

धर्मधीधनसम्प्राप्तिश्चौराग्न्यादिप्रपीडनम् ।
रक्तस्रावः शस्त्रघाती वदेत्सौम्यान्तरे कुजे॥70॥

बुधान्तर में सूर्य प्रत्यन्तर होने पर तेजस्विता में कमी, रोग, शरीर में साधारण पीड़ा, मन में बेचैनी होती है।

चन्द्रप्रत्यन्तर होने पर स्त्रीप्राप्ति, धन-सम्पत्ति, कन्या की प्राप्ति, बहुत धन, सर्वत्र सुख होता है।

मंगल प्रत्यन्तर होने पर धर्मवृद्धि, धनवृद्धि, चोर या अग्नि से पीड़ा, शस्त्र की चोट, खून बहने के योग होते हैं।

कलहो जायते स्त्रीभिरकस्माद्भयसम्भवः।
राजशस्त्रकृताभीतिर्विदशायांमगोर्भवेत्॥71॥
राज्यं राज्याधिकारो वा पूजा राजसमुद्भवा।
विद्याधनान्नगुल्मश्च भवेत्सौम्यान्तरे गुरौ॥72॥
वातपित्तमहापीडा देहघातस्य सम्भवः।
धननाशमवाप्नोति तदा सौम्यान्तरे शनौ॥73॥

राहु के प्रत्यन्तर में स्त्रियों से कलह, अचानक भय की प्राप्ति, राजभय, शस्त्रभय के योग होते हैं।

गुरु प्रत्यन्तर में राज्य प्राप्ति या राज्याधिकार या राजकीय सम्मान, विद्यावृद्धि, खान-पान सामग्री की बहुलता होती है।

शनि प्रत्यन्तर में विविध रोग, शरीर में चोट के योग, धन नाश आदि फल होते हैं।

केतु विदशा फल

आपत्समुद्भवोऽकस्माद्देशान्तरसमागमः।
धननाशोऽल्पमृत्युश्च केतुमध्ये गते ध्वजे॥74॥
म्लेच्छभीत्यार्थनाशो वा नेत्ररोगः शिरोव्यथा।
हानिश्चतुष्पदानां च केतुमध्ये यदा भृगुः॥75॥
मित्रैः सह विरोधश्च स्वल्पमृत्युः पराजयः।
मतिभ्रंशो विवादश्च केतुमध्ये यदा रविः॥76॥

केतु अन्तर्दशा में केतु प्रत्यन्तर रहने पर सहसा मुसीबत, देशान्तर में गमन, धननाश, अपमृत्यु के योग होते हैं।

शुक्र प्रत्यन्तर दशा में म्लेच्छ जनों के कारण धनहानि, भय के कारण धनव्यय, नेत्र व सिर में कष्ट, चौपाये धन की हानि होती है।

सूर्य प्रत्यन्तर होने पर मित्रों के साथ विरोध, अल्पमृत्यु, पराजय, बुद्धि, विपर्यय, विवाद आदि फल होते हैं।

अन्ननाशः पशोर्हानिर्देहपीडा मतिभ्रमः।
आमवातादिवृद्धिश्च केतोः केत्वन्तरे शशी॥77॥
शस्त्रघातेन पातेन पीडितो वह्निपीडया।
नीचाद्भीती रिपोः शंका केतोः केत्वन्तरे कुजः॥78॥
कामिनीभ्यो भयं भूपात्तथा वैरिसमुद्भवः।
क्षुद्रादपि भवेद्भीतिः केतोः केत्वन्तरे तमः॥79॥

केतु में चन्द्र प्रत्यन्तर हो तो खाने पीने में बाधा, चौपाये धन की हानि, शरीर कष्ट, बुद्धिभ्रम, पेट में गैस व दस्तावर संक्रमण होता है।

केतु में मंगल हो तो शस्त्रघात, गिरने से चोट, अग्निभय, नीचजनों से भय, शत्रुओं के प्रहार की आशंका होती है।

राहु प्रत्यन्तर में स्त्रीजनों से भय, शत्रुओं से कष्ट, राजकीय प्रकोप, नीच जनों या साधारण सेवक वर्ग के लोगों से भय होता है।

धनहानिर्महोत्पातो वस्त्रमित्रविनाशनम्।
सर्वत्र लभते क्लेशं केतोः केत्वन्तरे गुरुः॥80॥
गोमहिष्यादिमरणं देहपीडा सुहृद्वधः।
स्वल्पाल्पलाभकरणं केतोः केत्वन्तरे शनिः॥81॥
बुद्धिनाशो महोद्वेगो विद्याहानिर्महाभयम्।
कार्यसिद्धिर्न जायेत् केतोः केत्वन्तरे बुधः॥82॥

केतु में वृहस्पति का प्रत्यन्तर हो तो धनहानि, बड़ी मुसीबत, वस्त्रादि की हानि, मित्रों में कमी एवं सर्वत्र क्लेश होता है।

शनि प्रत्यन्तर में गाय भैंस आदि दुधारू पशुओं की हानि, शरीर कष्ट, मित्रों की हानि, अति साधारण लाभ होता है।

बुध प्रत्यन्तर में मति विभ्रम, निर्णय क्षमता की कमी, विद्याहानि, महाभय, कार्यों में असफलता होती है।

शुक्रान्तर्दशा : विदशाफल

श्वेताश्ववस्त्रमुक्ताद्यैः स्वर्णमाणिक्यसम्भवः।
लभते सुन्दरीं नारीं शुक्रशुक्रान्तरेः भृगुः॥83॥
वातज्वरः शिरः पीडा राज्ञः पीडा रिपोरपि।
जायते स्वल्पलाभश्च शुक्रे शुक्रान्तरे रवौ॥84॥
कन्याजन्मनृपाल्लाभो वस्त्राभरणसंयुतः।
राज्याधिकारसम्प्राप्ति शुक्रे शुक्रान्तरे विधौ॥85॥

शुक्रान्तर में शुक्र प्रत्यन्तर हो तो सफेद घोड़े की प्राप्ति अर्थात् उत्तम वाहन, सुख, वस्त्राभूषणों की प्राप्ति, सुवर्णादि की वृद्धि, सुन्दर स्त्री का सुख होता है।

सूर्य प्रत्यन्तर में वात ज्वर, सिर में पीड़ा, राजकीय विभागों से परेशानी शत्रुओं से भय, साधारण लाभ होता है।

चन्द्र प्रत्यन्तर में कन्या प्राप्ति, राजा या राजकीय विभागों से लाभ, भेंट स्वरूप वस्त्राभूषणों की प्राप्ति, राज्याधिकार प्राप्ति होती है।

रक्तपित्तादिरोगं च कलहस्ताडनं भवेत्।
महान् क्लेशो भवेदत्र शुक्रे शुक्रान्तरे कुजे॥86॥
कलहो जायते स्त्रीभिरकस्माद्भयसम्भवः।
राजतः शत्रुतः पीडा शुक्रे शुक्रान्तरे तमे॥87॥
महाद्रव्यं महाराज्यं वस्त्रमुक्तादिभूषणम्।
गजाश्वादिपदप्राप्तिः शुक्रे शुक्रान्तरे गुरौ॥88॥

शुक्र में मंगल का प्रत्यन्तर हो तो रक्त पित्त विकार, कलह, अपमान, क्लेश आदि फल होते हैं।

राहु प्रत्यन्तर में स्त्रियों से कलह, अकस्मात् भय, राजपक्ष व शत्रुपक्ष से पीड़ा होती है।

गुरु प्रत्यन्तर में बहुत धन, उत्तम अधिकार, वस्त्र मुक्तादि आभूषणों की प्राप्ति, हाथी घोड़े की सवारी, अच्छे पद की प्राप्ति होती है।

खरोष्ट्रछागसम्प्राप्तिर्लौहमाषतिलादिकम्।
लभते स्वल्पपीडादि शुक्रे शुक्रान्तरे शनिः॥89॥
धनं ज्ञानं च राज्ये च साधिकारत्वमंजसा।
निक्षेपाद्धनलाभोऽपि शुक्रे शुक्रान्तरे बुधे॥90॥
अल्पमृत्युर्महाघोरा देशाद्देशान्तरागमः।
लाभोऽपि जायते मध्ये शुक्रे शुक्रान्तरे ध्वजे॥91॥

शुक्र में शनि प्रत्यन्तर हो तो व्यवसाय में सहायक वाहन आदि (गधा, ऊँट वगैरह) की प्राप्ति, लोहा, काले उड़द, तिल आदि से लाभ या इन वस्तुओं की प्राप्ति, मामूली पीड़ा भी होती है।

बुध प्रत्यन्तर में धन, ज्ञान, राजकीय अधिकार, धन के सुचिन्तित विनियोग से लाभ होता है।

केतु के प्रत्यन्तर में दर्दनाक अल्पमृत्यु, देशान्तर में गमन, मध्यवर्ती समय में लाभ भी होता है।

इति श्री दशाफलदर्पणे पं. सुरेशमिश्रकृते हिन्दीव्याख्याने
प्रत्यन्तर्दशाफलाध्यायस्त्रयोविंशः॥23॥
॥आदितः श्लोकाः॥1909॥

24

॥ सूक्ष्मदशाफलाध्यायः ॥

सूर्य प्रत्यन्तर में सूक्ष्मदशा फल

निजभूमिपरित्यागो विगमः प्राणनाशनम्।
स्थाननाशो महाहानिः सूर्यसूक्ष्मदशाफलम्॥1॥
देवब्राह्मणभक्तिश्च नित्यकर्मरतस्तथा।
सुप्रीतिः सर्वमित्रैश्च रवेः सूक्ष्मगते विधौ॥2॥
क्रूरकर्मरतिस्तिग्मशत्रुभिः परिपीडनम्।
रक्तस्रावादिरोगश्च रवेः सूक्ष्मगते कुजे॥3॥

सूर्य की सूक्ष्मदशा में अपने स्थान का त्याग, आय में कमी या अनपेक्षित नुकसान, प्राणभय, हानि आदि फल होते हैं।

चन्द्र की सूक्ष्मदशा में देवों व ब्राह्मणों की भक्ति, नित्यकर्म का सुचारु निर्वाह, सब मित्रों के साथ प्रेमभाव होता है।

मंगल की सूक्ष्मदशा में क्रूर कार्यों में रति, खतरनाक शत्रुओं से पीड़ा, रक्तस्राव, रोग होते हैं।

चौराग्निविषभीतिश्च रणे भंगः पराजयः।
दानधर्मादिहीनश्च रवेः सूक्ष्मगते ह्यगौ॥4॥
नृपसत्कारराजार्हो सेवकैः परिपूजितः।
राजचक्षुर्गतः शान्तः सूर्ये सूक्ष्मगते गुरौ॥5॥
चौर्यसाहसकर्मार्थं देवब्राह्मणपीडनम्।
स्थानच्युतिर्मनोदुःखं रवेः सूक्ष्मगते शनौ॥6॥

राहु की सूक्ष्मदशा में चोर व अग्नि आदि से भय, युद्ध में पराजय, दान धर्म की असामर्थ्य होती है।

गुरु की सूक्ष्मदशा में राज-सम्मान, नौकरों चाकरों का सुख, राजा की आँखों में चढ़ने के योग होते हैं।

शनि की सूक्ष्मदशा में चोरी या साहसिक कार्यों से धन, देवों व ब्राह्मणों का विरोध, स्थानच्युति, मन में ग्लानि होती है।

दिव्याम्बरादि लब्धिश्च दिव्यस्त्रीपरिभोगतः।
अचिन्तितार्थसिद्धिश्च रवेः सूक्ष्मगते बुधे॥7॥
गुर्वार्तिर्विनाशश्च भृत्यदारभवस्तथा।
क्वचित्सेवकसम्बन्धो रवेः सूक्ष्मगते ध्वजे॥8॥
पुत्रमित्रकलत्रादि सौख्यं सम्पत्तथैव च।
नानाविधसुखप्राप्तिः रवेः सूक्ष्मगते भृगौ॥9॥

बुध की सूक्ष्मदशा में दिव्य, उत्तम वस्त्रों की प्राप्ति, उत्तम स्त्री से सुख, अचानक ही सफलता प्राप्त होती है।

केतु की सूक्ष्मदशा में स्त्रीजन व नौकरों के कारण बड़ी पीड़ा या इन्हीं लोगों के पीड़ित होने से कष्ट होता है।

शुक्र की सूक्ष्मदशा में स्त्री, पुत्र, मित्रों का सुख, सम्पत्ति विविध प्रकार के सुख होते हैं।

चन्द्र सूक्ष्मदशा फल

भूषणं भूमिलाभश्च सन्माननृपपूजनम्।
तामसत्वं गुरुत्वं च चन्द्रसूक्ष्मदशाफलम्॥10॥
दुःखं शत्रुविरोधश्च कुक्षिरोगः पितृर्मृतिः।
वातपित्तकफोद्रेकः शशिसूक्ष्मगते कुजे॥11॥
क्रोधनं मित्रबन्धूनां देशत्यागो धनक्षयः।
विदेशान्निगडप्राप्तिः शशिसूक्ष्मगतेऽप्यहौ॥12॥

चन्द्रमा की सूक्ष्मदशा में जायदाद की प्राप्ति, आभूषण प्राप्ति, राज-सम्मान, तमो गुण वृद्धि, मोटापा या बड़प्पन में वृद्धि होती है।

मंगल की सूक्ष्मदशा में शत्रुओं से विरोध, दुःख, पेट में रोग, पिता की मृत्यु, वात पित्त कफ में असन्तुलन होता है।

राहु की सूक्ष्मदशा में मित्रों व बन्धुओं से मनमुटाव, स्थान त्याग, धनहानि, विदेश से बन्धन या विदेश में मुकद्दमेबाजी होती है।

छत्रचामरसंयुक्तं वैभवं पुत्रसम्पदः।
सर्वत्रसुखमाप्नोति शशिसूक्ष्मगते गुरौ॥13॥
राजोपद्रवनाशः स्याद् व्यवहारे धनक्षयः।
चौरता विप्रभीतिश्च शशिसूक्ष्मगते शनौ॥14॥
राजमानो वस्तुलाभो विदेशाद् वाहनादिकम्।
पुत्रपौत्रसमृद्धिश्च शशिसूक्ष्मगते बुधे॥15॥

वृहस्पति की सूक्ष्मदशा में बहुत वैभव, छत्र व चंवर से युक्त सम्मान, पुत्र वृद्धि, सर्वत्र सुख होता है। शनि की सूक्ष्मदशा में राजकीय उपद्रव से नाश, व्यवसाय व लेन-देन में धनहानि, चोरी की प्रवृत्ति, ब्राह्मण या सुशिक्षित लोगों से भय होता है।

बुध की सूक्ष्मदशा में राज-सम्मान, लाभ, विदेश से वाहनादि की प्राप्ति, पुत्रों व पौत्रों की वृद्धि होती है।

आत्मनोवृत्तिहननं सस्यशृंगवृषादिभिः।
अग्निसर्पादिभीतिः स्याच्छशिसूक्ष्मगते ध्वजे॥16॥
विवाहो भूमिलाभश्च वस्त्राभरणवैभवम्।
राज्यलाभश्च कीर्तिश्च शशिसूक्ष्मगते भृगौ॥17॥
क्लेशात्क्लेशः कार्यनाशः पशुधान्यधनक्षयः।
गात्रे विषमता नृणां शशिसूक्ष्मगते रवौ॥18॥

केतु की सूक्ष्मदशा में स्वव्यवसाय की हानि, जानवरों की हानि व कष्ट, अग्नि या सर्प से भय होता है।

शुक्र की सूक्ष्मदशा में विवाह, भूमिलाभ, वस्त्राभरण, उत्तम रहन-सहन, राज्यप्राप्ति, कीर्ति में वृद्धि होती है।

सूर्य की सूक्ष्मदशा में कष्टों की अधिकता, कार्य में असफलता, पशु धन व अन्य धन का क्षय, शरीर में रोगादि से कष्ट होता है।

मंगल सूक्ष्मदशा फल

भूमिहानिर्मनःखेदमपस्मारी च बन्धुयुक्।
पुरक्षोभो वपुस्तापो भौमसूक्ष्मदशाफलम्॥19॥
अंगदोषो जनाद्भीतिः प्रमदावशं नाशनम्।
वह्निसर्पभयं घोरं भौमसूक्ष्मगतेऽप्यहौ॥20॥
देवपूजारतिश्चात्र मन्त्राभ्युत्थानतत्परः।
लोकपूज्यं प्रमोदश्च भौमसूक्ष्मगते गुरौ॥21॥

मंगल प्रत्यन्तर में मंगल की सूक्ष्मदशा रहने पर जायदाद की हानि, मन में व्यथा, दिमागी बीमारी, बन्धुओं व निवास स्थान के कारण व्यथा, शरीर कष्ट आदि होते हैं।

राहु की सूक्ष्मदशा में शरीर में बाधा, लोगों से भय, स्त्री कुल में हानि, अग्नि सर्प से भय, आदि फल होते हैं।

गुरु की सूक्ष्मदशा में देवपूजन में रति, मन्त्र सिद्धि की कामना, संसार में सम्मान, आनन्द आदि फल होते हैं।

बन्धनान्मुच्यते बद्धो धनधान्यपरिच्छदः।
भृत्यार्थबहुलः श्रीमान् भौमसूक्ष्मगते शनौ॥22॥

वाहनच्छत्रसंयुक्तां राजभोगपरं सुखम्।
कासश्वासादिका पीडा भौमसूक्ष्मगते बुधे॥23॥
परप्रेरितबुद्धिश्च सर्वत्रापि च गर्हितः।
अशुचिः सर्वकालेषु भौमसूक्ष्मगते ध्वजे॥24॥

शनि की सूक्ष्मदशा में बन्धन से मुक्ति, धन-धान्य की वृद्धि, नौकरों, चाकरों का सुख, धनागम, श्रीमन्तता होती है।

बुध सूक्ष्मदशा में वाहन, छत्रादि से युक्त राज्यभोग, सांस की तकलीफ आदि होते है।

केतु सूक्ष्मदशा में दूसरों के इशारों पर चलना, सर्वत्र निन्दा, अपवित्रता आदि होते है।

इष्टस्त्रीभोगसम्पत्तिरिष्टभोजनसंग्रहः ।
इष्टार्थानां च लाभः स्याद्भौमसूक्ष्मगते भृगौ॥25॥
राजद्वेषो द्विजात्क्लेशः कार्याभिप्रायवंचना।
लोकेऽपिनिन्द्यतां याति भौमसूक्ष्मगते रवौ॥26॥
शुद्धत्वं धनसम्प्राप्तिर्देवब्राह्मणवत्सलः।
व्याधिना परिभूयते भौमसूक्ष्मगते विधौ॥27॥

शुक्र की सूक्ष्मदशा में उत्तम स्त्री के सुख, इच्छित पदार्थों का घर में संग्रह, इच्छित लाभ आदि फल होते हैं।

सूर्य की सूक्ष्मदशा हो तो राजकीय विभागों से द्वेष, शिक्षित लोगों से क्लेश, काम करवाने के नाम पर ठगी, सर्वत्र बदनामी होती है।

चन्द्र की सूक्ष्मदशा में तन मन की शुद्धता, धनलाभ, देवताओं व ब्राह्मणों की कृपा, रोग से कष्ट होता है।

राहु सूक्ष्मदशा फल

लोकोपद्रवबुद्धिश्च स्वकार्ये मतिविभ्रमः।
शून्यता चित्तदोषः स्याद् राहौ सूक्ष्मगते निजे॥28॥
दीर्घरोगी दरिद्रश्च सर्वेषां प्रियदर्शनः।
दानधर्मरतः शस्तो राहौ सूक्ष्मगते गुरौ॥29॥
कुमार्गात्कुत्सितोग्रश्च दुष्टश्च परसेवकः।
असत्संगमतिर्मूढो राहौ सूक्ष्मगते शनौ॥30॥

राहु के प्रत्यन्तर में राहु की सूक्ष्मदशा हो तो लोगों में उपद्रव पैदा करने की विचारधारा, अपने काम में गलत निर्णय, सूनापन, उदासी, मन में विकार होते हैं।

गुरु की सूक्ष्मदशा में लम्बा रोग, दरिद्रता; लेकिन फिर भी सब का स्नेह, दान धर्म में मति व प्रशंसा मिलती है।

शनि की सूक्ष्मदशा में कुमार्ग गमन, निन्दित व उग्र कार्य, दुष्टता, दूसरों की अधीनता, खराब संगति के कारण बुद्धि की खराबी होती है।

स्त्रीसंगो मतौ कामी लोकसम्भावनावृतः।
अन्नमिच्छंस्तनौ ग्लानिः राहोः सूक्ष्मगते बुधे॥31॥
माधुर्यं मानहानिश्च बन्धनं चाप्तमारणम्।
पारुष्यं जीवहानिश्च राहोः सूक्ष्मगते ध्वजे॥32॥
बन्धनान्मुच्यते बद्धः स्थानमानार्थसंचयः।
कारणाद्द्रव्यलाभश्च राहोः सूक्ष्मगते भृगौ॥33॥

बुध की सूक्ष्मदशा में स्त्रियों से संग, मन में काम वासना की अधिकता, लोगों में ख्याति की सम्भावना, शरीर की विकृति के कारण, भोजन की इच्छा होने पर खाने में अशक्ति होती है।

केतु की सूक्ष्मदशा में आचरण में मधुरता, मानहानि के योग, बन्धन, किसी के साथ विश्वासघात करना, रूखा स्वभाव, जीवों के प्रति क्रूरता होती है।

शुक्र की सूक्ष्मदशा में बन्धन से मुक्ति, पद प्रतिष्ठा में वृद्धि, मान-सम्मान व धन की वृद्धि, सकारण धन लाभ होता है।

व्यक्ताशा गुल्मरोगश्च क्रोधहानिस्तथैव च।
वाहनादिसुखं सर्वं राहौ सूक्ष्मगते रवौ॥34॥
मणिरत्नधनावाप्तिर्विद्योपासनशीलवान्।
देवार्चनपरोभक्त्या राहौ सूक्ष्मगते विधौ॥35॥
निर्जितो जनविद्रावैः जनक्रोधश्च बन्धनम्।
चौर्यशीलरतिर्नित्यं राहौ सूक्ष्मगते कुजे॥36॥

सूर्य की सूक्ष्मदशा हो तो महत्वाकांक्षाओं में वृद्धि, भीतरी फोड़ेनुमा रोग, क्रोध से हानि, वाहनादि का सुख होता है।

चन्द्रमा की सूक्ष्मदशा हो तो धन, रत्नादि की प्राप्ति, शीलवृद्धि, देवार्चन के योग, भक्ति वृद्धि होती है।

मंगल की सूक्ष्मदशा में लोगों द्वारा खिलाफत, नारेबाजी का सामना, जनता में आक्रोश, बन्धन, चोरी की बुद्धि आदि फल होते हैं।

गुरु सूक्ष्मदशा फल

शोकनाशो धनाधिक्यमग्निहोत्रं शिवार्चनम्।
वाहनं छत्रसंयुक्तं जीवसूक्ष्मदशाफलम्॥37॥
व्रतहाऽऽसुर्यवृत्तिश्च विदेशे वसुनाशनम्।
न रोधो धननाशश्च गुरौ सूक्ष्मगते शनौ॥38॥

राज्यप्रसादसम्पत्तिर्विद्यावृद्धिः सुखोदयम्।
दारपुत्रादिसौख्यं च गुरौ सूक्ष्मगते बुधे॥39॥

गुरु में गुरु की सूक्ष्मदशा हो तो शोक नाश, धन की अधिकता, हवन यज्ञ, शिवपूजा के योग, वाहन, प्रतिष्ठादि सुख प्राप्त होते हैं।

शनि की सूक्ष्मदशा में व्रतहानि, राक्षसी वृत्ति, विदेश में धनहानि, धनव्यय की निरन्तरता, हानि आदि फल होते हैं।

बुध की सूक्ष्मदशा में राजकीय प्रसाद, सम्पत्ति, विद्याप्राप्ति, सुख, स्त्री-पुत्रों का सुख होता है।

ज्ञानं विभवपाण्डित्यं शास्त्रश्रुतिशिवार्चनम्।
अग्निहोत्रं गुरौ भक्तिर्गुरौ सूक्ष्मगते ध्वजे॥40॥
रोगान्मुक्तिः सुखं भोगधनधान्यसमागमः।
पुत्रदारादिकं सौख्यं गुरौ सूक्ष्मगते भृगौ॥41॥
वातपित्तप्रकोपश्च श्लेष्मोद्रेकस्तु दारुणः।
रसव्याधिकृतं शूलं गुरौ सूक्ष्मगते रवौ॥42॥

केतु की सूक्ष्मदशा में ज्ञान, वैभव, पाण्डित्य, शास्त्रश्रवण, शिवार्चन, हवन यज्ञादि कार्य, गुरु के प्रति भक्ति होती है।

शुक्र सूक्ष्मदशा में रोगमुक्ति, सुख, भोग, धन-धान्य की प्राप्ति, स्त्री-पुत्रादि का सुख होता है।

सूर्य की सूक्ष्मदशा होने पर वात-पित्त का प्रकोप, कफ वृद्धि से बहुत परेशानी, पानी या पेय पदार्थों से पैदा होने वाले रोग होते हैं।

छत्रचामरसंयुक्तं वैभवं पुत्रसम्पदः।
नेत्रकुक्षिगता पीडा गुरौ सूक्ष्मगते विधौ॥43॥
स्त्रीजनाच्च विषोत्पत्तिर्बन्धनं चातिनिग्रहः।
देशान्तरगमो भ्रान्तिर्गुरौ सूक्ष्मगते कुजे॥44॥
व्याधिभिः परिभूतस्याच्चौरैरपहृतं महत्।
सर्पवृश्चिकदंशः स्याद् गुरौ सूक्ष्मगतेऽथहौ॥45॥

चन्द्रमा की सूक्ष्मदशा में छत्र चामर से युक्त वैभव, पुत्र-प्राप्ति या पुत्रों की सम्पत्ति वृद्धि, आँख व पेट में पीडा होती है।

मंगल की सूक्ष्मदशा में स्त्रियों के कारण विषभय या वैमनस्य, बन्धन, बड़ी कलह, देशान्तर में गमन, परिभ्रमण आदि फल होते हैं।

राहु की सूक्ष्मदशा में रोगों से पीड़ा, बड़ी चोरी, साँप-बिच्छू का डंक लगने के योग होते हैं।

शनि सूक्ष्मदशा फल

धनहानिर्महाव्याधिः शत्रुपीड़ा कुलक्षयः।
भिन्नाहारी महादुःखी मन्दसूक्ष्मदशाफलम्॥46॥
वाणिज्यं वृत्तिलाभश्च विद्याविभवमेव च।
स्त्रीलाभश्च महाप्राप्तिः शनौ सूक्ष्मगते बुधे॥47॥
चौरोपद्रवकुष्ठादि वृत्तिक्षयविगुम्फनम्।
सर्वांगपीडनं व्याधिः शनिः सूक्ष्मगते ध्वजे॥48॥

शनि प्रत्यन्तर में शनि की सूक्ष्मदशा हो तो धन हानि, बड़ा रोग, शत्रु पीड़ा, कुल परिवार में धन जन की हानि, परहेज से भोजन के योग, दुःख होते हैं।

बुध की सूक्ष्मदशा में व्यापार वृद्धि, व्यवसाय में लाभ, विद्याप्राप्ति, स्त्री सुख, बड़ा लाभ होता है।

केतु की सूक्ष्मदशा में चोरों का उपद्रव, त्वचा विकार, व्यवसाय में कमी, काम व परिवार में बिखराव, सारे शरीर में पीड़ा या कोई रोग होता है।

ऐश्वर्यमायुधाभ्यासः पुत्रलाभोऽभिषेचनम्।
आरोग्यं धनकामौ च शनि सूक्ष्मगते भृगौ॥49॥
राजतेजोविकारत्वं स्वगृहे जायते कलिः।
किंचित्पीडा स्वदेहोत्था शनि सूक्ष्मगते रवौ॥50॥
स्फीतबुद्धिर्महारम्भो मन्दतेजो बहुव्ययः।
स्त्रीपुत्रैश्चसमं सौख्यं शनिसूक्ष्मगते विधौ॥51॥

शुक्र की सूक्ष्मदशा में ऐश्वर्य, शस्त्र विद्या या युद्ध विद्या का अभ्यास, पुत्र प्राप्ति, पदप्राप्ति, उत्तम स्वास्थ्य, धन वृद्धि व मनोरथ वृद्धि होती है।

सूर्य की सूक्ष्मदशा में राजकीय प्रभाव या दबाव से कष्ट, अपने घर में कलह, शरीर में साधारण विकार होता है।

चन्द्र की सूक्ष्मदशा में बुद्धि का विकास, बड़े कार्यों की शुरूआत, प्रभाव में कमी, बहुत व्यय, स्त्री-पुत्रों के साथ सुखपूर्वक समय यापन होता है।

तेजोहानिर्महोद्वेगो वह्निक्षयभ्रमः कलिः।
वातपित्तकृता पीड़ा शनि सूक्ष्मगते कुजे॥52॥
पितृमातृविनाशश्च मनोदुःखं गुरुर्व्ययः।
सर्वत्र स्यान्निष्फलता शनिसूक्ष्मगतेऽप्यहौ॥53॥
सन्मुद्राभोगसम्मानं धनधान्यविवर्धनम्।
छत्रचामर सम्प्राप्तिः शनेः सूक्ष्मगते गुरौ॥54॥

मंगल की सूक्ष्मदशा में तेजस्विता में कमी, मन में उद्वेग, अग्नि से हानि, कलह, शरीर में पीड़ा होती है।

राहु की सूक्ष्मदशा में माता-पिता की हानि, मन में दुःख, बड़ा खर्च, सर्वत्र निष्फलता होती है।

गुरु की सूक्ष्मदशा में उत्तम धन, भोग, सज्जनों द्वारा मान्यता, धन-धान्य में वृद्धि, पद व अधिकार प्राप्ति होती है।

बुध सूक्ष्मदशा फल

सौभाग्यं राजसम्मानं धनधान्यादि सम्पदः।
सर्वेषां प्रियदर्शी च बुधसूक्ष्मदशाफलम्॥55॥
बालग्रहाग्निभिस्तापः स्त्रीगदोद्भवदोषभाक्।
कुमार्गी कुत्सिताशी च बुधसूक्ष्मगते ध्वजे॥56॥
वाहनं धनसम्पत्तिर्जलजान्नार्थसम्भवः।
शुभकीर्तिर्महाभोगो बुधसूक्ष्मगते भृगौ॥57॥

बुध में बुध की सूक्ष्मदशा हो तो सौभाग्य, राज-सम्मान, धन-धान्य की वृद्धि, सब का स्नेहभाव होता है।

केतु की सूक्ष्मदशा में क्षुद्र जीवों, जीवाणुओं से कष्ट, अग्निभय, स्त्री के कारण रोग, कुमार्गगमन, खराब व निन्दित भोजन की आदत होती है।

शुक्र की सूक्ष्मदशा में वाहन, धन-सम्पत्ति, जल से उत्पन्न धान्य व भोज्य पदार्थ से धन प्राप्ति, उत्तम कीर्ति, बहुत सुख भोग होते हैं।

ताडनं नृपवैषम्यं बुद्धिस्खलनरोगभाक्।
हानिरपमानभीतिश्च बुधसूक्ष्मगते रवौ॥58॥
सुभगः स्थिरबुद्धिश्च राजसम्मानसम्पदः।
सुहृदां गुरुसंस्कारो बुधसूक्ष्मगते विधौ ॥59॥
अग्निदाहो विषोत्पत्तिर्जडत्वं च दरिद्रता।
विभ्रमश्च महोद्वेगो बुधसूक्ष्मगते कुजे॥60॥

सूर्य की सूक्ष्मदशा में डाँटफटकार, अधिकारियों की नाराजगी, बुद्धि में विभ्रम, हानि-अपमान भय होता है।

चन्द्र की सूक्ष्मदशा में सौभाग्य, स्थिर बुद्धि, राज-सम्मान, सम्पत्ति, मित्रों व गुरुजनों से उत्तम सम्बन्ध होते हैं।

मंगल की सूक्ष्मदशा में अग्निदाह, विष संक्रमण, जड़ता, दरिद्रता, गलत निर्णय, मन में बेचैनी होती है।

अग्निसर्पनृपाद्भीतिः कृच्छ्रादरिपराभवः।
भूतावेशः भ्रमाद्भ्रान्तिर्बुधसूक्ष्मगतेऽप्यहौ॥61॥
गृहोपकरणं भव्यं त्यागभोगादिवैभवम्।
राजप्रासादसम्पत्तिर्बुधसूक्ष्मगते गुरौ॥62॥

वाणिजयं वृत्तिलाभश्च विद्याविभवमेव च।
स्त्रीलाभश्च महाव्याप्तिर्बुधसूक्ष्मगते शनौ॥63॥

राहु की सूक्ष्मदशा में अग्नि, सर्प व राज पक्ष से भय, मुश्किल से शत्रुओं पर नियन्त्रण, भूत प्रेतादि से पीड़ा, बुद्धिभ्रम होता है।

गुरु की सूक्ष्मदशा में घर में उत्तम उपकरणों की खरीद, दान, भोग व वैभव, राजकीय अधिकारियों की प्रसन्नता व सम्पत्ति होती है।

शनि की सूक्ष्मदशा में व्यापार, व्यवसाय-वृद्धि, विद्या-लाभ, स्त्री-सुख, काम में फैलाव होता है।

केतु सूक्ष्मदशा फल

पुत्रदारादिजं दुःखं गात्रवैषम्यमेव च।
दारिद्र्याद्भिक्षुवृत्तिश्च केतोः सूक्ष्मदशाफलम्॥64॥
रोगनाशोऽर्थलाभश्च गुरुविप्रानुवत्सलः।
संगमः स्वजनैः सार्धं केतोः सूक्ष्मगते भृगौ॥65॥
युद्धभूमौ विनाशश्च विप्रवासः स्वदेशतः।
सुहृद्विपत्तिरार्तिश्च केतौ सूक्ष्मगते रवौ॥66॥

केतु में केतु की सूक्ष्मदशा रहने पर स्त्री-पुत्रों की ओर से दुःख, शरीर में शिथिलता, गरीबी के कारण बेहाली होती है।

शुक्र की सूक्ष्मदशा में रोगनाश, धन-लाभ, गुरुओं व विप्रों का स्नेह, स्वजनों से मेल-मिलाप होता है।

सूर्य की सूक्ष्मदशा में युद्ध भूमि में बड़ी हानि, स्वदेश से बाहर गमन, मित्रों को कष्ट, परेशानियाँ आदि होती हैं।

दासीदाससमृद्धिश्च युद्धे लब्धिर्जयस्तथा।
ललिताकीर्तिरुत्पन्ना केतोः सूक्ष्मगते विधौ॥67॥
आसने भयमश्वादेश्चोरदुष्टादिपीडनम्।
गुल्मपीडा शिरोरोगः केतोः सूक्ष्मगते कुजे॥68॥
विनाशः स्त्रीगुरूणां च दुष्टस्त्रीसंगमाल्लघु।
वमनं रुधिरे पित्तं केतोः सूक्ष्मगतेऽप्यगौ॥69॥

चन्द्रमा की सूक्ष्मदशा में नौकरों चाकरों की वृद्धि, युद्ध में लाभ व विजय, उत्तम कीर्ति होती है।

मंगल की सूक्ष्मदशा में वाहन से गिरने का भय, चोरों या दुष्टों से भय, भीतरी फोड़ा, सिर में रोग होते हैं।

राहु की सूक्ष्मदशा रहने पर स्त्री जन व बुजुर्गों की हानि, दुष्ट स्त्री के सम्पर्क से कष्ट, खून की उल्टी पित्त आदि फल होते हैं।

वैरं विरोधसम्पत्तिः सहसा राज्यवैभवम्।
पशुक्षेत्रविनाशार्तिः केतोः सूक्ष्मगते गुरौ॥70॥
मृषापीडाभवेत्क्षुद्रसुतोत्पत्तिश्च लंघनम्।
स्त्रीविरोधः सस्यहानिः केतोः सूक्ष्मगते शनौ॥71॥
नानाविधजनाप्तिश्च विप्रयोगोऽरिपीडनम्।
अर्थसम्पत्समृद्धिश्च केतोः सूक्ष्मगते बुधे॥72॥

गुरु की सूक्ष्मदशा में वैरभाव, झगड़े की सम्पत्ति, अचानक राज्य का वैभव, पशुधन व जायदाद की हानि होती है।

शनि सूक्ष्मदशा में मिथ्या आरोप आदि से पीड़ा, अयोग्य पुत्र का जन्म, भोजन काल में व्यवधान, धन सम्पत्ति की वृद्धि होती है।

शुक्र सूक्ष्मदशा फल

शत्रुहानिर्महासौख्यं शंकरालयसम्भवम्।
तडागकूपनिर्माणं शुक्रसूक्ष्मदशाफलम्॥73॥
उरस्तापोभ्रमश्चैव गतागतविचेष्टितम्।
क्वचिल्लाभः क्वचिद्धानिर्भृगोः सूक्ष्मगते रवौ॥74॥
आरोग्यं धनसम्पत्तिः कार्यलाभो गतागतैः।
वैरिनिर्वारबुद्धिः स्याद् भृगोः सूक्ष्मगते विधौ॥75॥

शुक्र में शुक्र की सूक्ष्मदशा रहने पर शत्रु हानि, बहुत सुख, शंकर जी के मन्दिर का निर्माण, तड़ाग, कुआँ आदि सार्वजनिक सुविधाओं का निर्माण होता है।

सूर्य की सूक्ष्मदशा में हृदय में ताप, भ्रम, बार-बार यात्राएँ, कभी लाभ, कभी हानि होती है।

चन्द्रमा की सूक्ष्मदशा में स्वास्थ्य, धन-सम्पत्ति, कार्य प्राप्ति, भ्रमण से लाभ, वैरियों को नियन्त्रित करने की बुद्धि होती है।

जडत्वं रिपुवैषम्यं देशभ्रंशो महद्भयम्।
व्याधिदुःखसमुत्पत्तिर्भृगोः सूक्ष्मगते कुजे॥76॥
राज्याग्निसर्पजाभीतिर्बन्धुनाशो गुरुव्यथा।
स्थानच्युतिर्महाभीतिर्भृगोः सूक्ष्मगतेऽप्यगौ॥77॥
सर्वत्रकार्यलाभश्च क्षेत्रार्थविभवोन्नतिः।
वणिग्वृत्या महालब्धिर्भृगोः सूक्ष्मगते गुरौ॥78॥

मंगल की सूक्ष्मदशा में बुद्धि की जड़ता, शत्रुओं से वैर, स्थान त्याग, भय, रोग, दुःख होते हैं।

राहु की सूक्ष्मदशा में राज्यपक्ष, अग्नि व सर्प से भय, बन्धुओं की हानि, बड़ी पीड़ा, स्थानच्युति व भय होता है।

गुरु की सूक्ष्मदशा होने पर सर्व कार्य की प्राप्ति, जायदाद व धन की वृद्धि, व्यापार से लाभ होता है।

शत्रुपीड़ा महादुःखं चतुष्पदविनाशनम्।
स्वगोत्रगुरुहानिः स्याद् भृगोः सूक्ष्मगते शनौ॥79॥
बान्धवादिषु सम्पत्तिर्व्यव्हारे धनोन्नतिः।
पुत्रदारादितः सौख्यं भृगोः सूक्ष्मगते बुधे॥80॥
अग्निरोगोमहत्पीडा मुखनेत्रशिरोव्यथा।
संचितार्थात्मनः पीडा भृगोः सूक्ष्मगते ध्वजे॥81॥

शनि की सूक्ष्मदशा होने पर शत्रु पीडा, दुःख, चौपाए धन की हानि, अपने कुल के वृद्ध की हानि होती है।

बुध की सूक्ष्मदशा में बन्धु-बान्धवों को सम्पत्ति देना या उनके नाम से निजी सम्पत्ति लेना, व्यापार में धन स्त्री पुत्रों से सुख होता है।

केतु की सूक्ष्मदशा होने पर गर्मी के रोग, बड़ा कष्ट, मुँह, नेत्र व सिर में पीड़ा संचित धन के विषय में तनाव होता है।

इति श्री दशाफलदर्पणे पं. सुरेशमिश्रकृते हिन्दीव्याख्याने
सूक्ष्मदशाफलाध्यायश्चतुर्विंशः॥24॥
॥आदितः श्लोकाः॥1990॥

25

॥ प्राणदशाफलाध्यायः ॥

प्राणदशा में विशेष योग :

शरीरनाथो मरणाधिपेनयुक्तो मृगेन्द्रेण मृगाधिपांशे।
तयोर्विपाके भयमाखुतोमृतिं सर्पात्तदा प्राहुरुदारचित्ताः॥1॥

लग्नेश व अष्टमेश यदि एक साथ सिंह राशि व सिंह नवांश में हों तो इनकी परस्पर सूक्ष्म, प्रत्यन्तर या प्राणदशा में चूहा, साँप, बिच्छू आदि जहरीले प्राणियों के काटने से बहुत कष्ट, यहाँ तक कि मृत्यु भी हो जाती है।

सिंहे कन्यांशगौ तौ चेत्कफकम्पादितो मृतिः।
मृगराजे तुलांशस्थे तयोर्भुक्तौ मृतिं वदेत्॥2॥
अत्यंशगौ मृगेन्द्रे वा तयोर्दाये सरीसृपात्।
चापांशगौ मृगेन्द्रे तु तद्वर्गाच्च मृतिं वदेत्॥3॥
मृगांशगौ तौ सिंहे च तयोर्दाये खरान्मृतिः।
कुम्भांशगौ यदा स्यातां मृगराजनृपाद्भयम्॥4॥

1.8 भावेश सिंह राशि में इकट्ठे हों और कन्या नवांश में हों तो खाँसी, बलगम की अधिकता व कँपकपी से मृत्यु होती है।

सिंह राशि व तुला नवांश में हों तो भी इनकी परस्पर सूक्ष्मादि दशा में मृत्यु होती है।

सिंह राशि व वृश्चिक नवांश में एक साथ हों तो साँप आदि से मृत्यु होती है।

धनु नवांश में हों तो शेर, चीता आदि जंगली जानवरों से मृत्यु होती है।

मकर नवांश में हों तो गधा, घोड़ा आदि से मृत्यु, कुम्भ नवांश में हों तो सिंह या राजा के कारण मृत्यु होती है।

मीनांशकगतौ सिंहे सारंगाद्भयमादिशेत्।
सिंहे मेषांशगौ तौ चेत् गोमायोर्भयमादिशेत्॥5॥

सिंह राशि मीन नवांश में लग्नेश व अष्टमेश साथ हों तो हिरण से भय होता है। मेष नवांश में साथ हों तो गीदड़, भेड़िया, कुत्ता आदि से भय होता है।

वृषांशगौ तौ सूर्यर्क्षे तमोर्दाये शुनोर्मृतिः।
युग्मांशकगतौ स्यातां गोलांगूलाद्भयं भवेत्॥6॥
कर्कांशगौ तौ सिंहे च अग्निदाहाद्गृहे मृतिः।
एवं भ्रात्रादिभावानां तत्तद्भुक्तौ मृतिं वदेत्॥7॥

वृष नवांश में दोनों हों तो उनकी सूक्ष्मदशा में कुत्तों के कारण मृत्यु होती है।

मिथुनांश में हों तो बन्दर, लंगूर आदि से मृत्यु, कर्कांश में हों तो घर में अग्नि से मृत्यु होती है। लग्नेश व अष्टमेश की उक्त स्थिति से जातक की सूक्ष्मदशा का जो फल है वही विधि अन्य सम्बन्धियों के विषय में अपनाई जाएगी। जिस भाव का विचार करना हो उसी भाव से अष्टमेश लेंगे। जैसे सप्तमेश व उससे अष्टमेश (द्वितीयेश) की स्थिति से पत्नी के विषय में, तृतीयेश व दशमेश से भाई के विषय में। पंचमेश व द्वादशेश से पुत्रादि के विषय में अनिष्ट विचार करें।

देहाधिपो मृत्युपतिश्च युक्तश्चापांशगौ कार्मुकराशिगौ चेत्।
दाये तयोर्वाजिकृतं च मृत्युं वदन्ति तत्कालविदो महान्तः॥8॥

लग्नेश व अष्टमेश धनु राशि धनु नवांश में एकत्र हों तो उनकी दशा व प्राणदशा में घोड़े आदि से मृत्यु होती है।

चापे मृगांशगौ तौ चेत् सारंगाद्भयमादिशेत्।
ह्ये कुम्भांशगौ तौ चेद् वाराहाद्भयमादिशेत्॥9॥
ह्ये मीनांशगौ स्यातां पापौ नक्राद्भयं भवेत्।
मेषांशे चापगे विद्यात् भयं दाये चतुष्पदात्॥10॥
ह्ये वृषांशगौ तौ चेद् भयं रासफजं भवेत्।
युग्मांशगौ ह्यांगे तु वानराद्भयमादिशेत्॥11॥

धनु राशि मकर नवांश में लग्नेश व अष्टमेश हों तो हिरण आदि से भय, कुम्भ नवांश में सूअर से भय, मीन नवांश मे मगरमच्छ से भय।

मेष नवांश में चौपाए पशु से भय होता है।

वृष नवांश हों तो गधे आदि से भय, मिथुनांश में हों तो वानर से भय होता है।

कर्कांशगौ ह्यांगे तु चाम्बुपाताद्भयं दिशेत्।
सिंहांशे जम्बूकाद्भीतिं कन्यांशे वानराद्भयम्॥
तुलांशे प्रस्तराघाताद् वृश्चिकांशे सरीसृपात्॥12॥
विलग्नपो नैधननायकश्च मृगे मृगांशे च यदा भवेताम्।
भुक्तौ तयोः प्रीतिविवाहदात्री गृहेऽथवामंगलकर्मयोगः॥13॥

कर्कांश में दोनों हों तो पानी में गिरने से मृत्यु, सिहांश में हों तो गीदड़ आदि से भय, कन्यांश में हों तो वानर से भय, तुलांश में हों तो पत्थर आदि या मिट्टी गिरने से मृत्यु, वृश्चिकांश में हों तो रेंगने वाले कीटों से मृत्यु होती है।

लग्नेश व अष्टमेश यदि मकर राशि में मकर नवांश में हों तो उनकी सूक्ष्मादि दशा में प्रेम सम्बन्धों के योग, विवाह योग या घर में कोई मंगल कार्य अर्थात् अपना विवाहादिसम्भव न हो तो सन्तान आदि का विवाह होता है।

कुम्भांशगौ मृगांगे च भल्लूकाद्भयमादिशेत्।
झषांशगौ मृगाद्भीतिं युग्मेऽपि स्याच्चतुष्पदात्॥14॥
इभात्कर्कांशगौ भीतिं वृश्चिकांशे च दंशनात्।
चापांशगौ यदा पापौ मार्जारान्मृतिमादिशेत्॥15॥

मकर राशि, कुम्भ नवांश में हों तो भालू से भय, मीनांश में हों तो मृग से भय, मिथुनांश में भी मीन सदृश फल, कर्कांश में हाथी से भय, वृश्चिकांश में डसने से भय, धनु नवांश में बिल्ली या मार्जार प्रजाति के जन्तु से मृत्यु होती है।

उक्त अशुभ फल कहने से पूर्व प्राणादि दशेशों की पापिता, मारकता आदि का अवश्य विचार करें।

सूर्य प्राणदशा फल

पौंश्चल्यं विषजा बाधा शोषणं विषमेक्षणम्।
सूर्यप्राणदशायां तु मरणं कृच्छ्रमादिशेत्॥16॥
सुखं भोजनसम्पत्तिः संस्कारो नृपवैभवम्।
उदरे विकृतेर्भीतिर्भानोः प्राणगते विधौ॥17॥
भूपोपद्रवमन्यार्थे द्रव्यनाशो महद्भयम्।
अपचयाधिक्यमादेश्यं रवेः प्राणगते कुजे॥18॥
अन्नोद्भवा महापीडा विषोत्पत्तिर्विषाद्भयम्।
अर्थाग्निराजभिः कलेशं रवेः प्राणगतेऽप्यहौ॥19॥

सूर्य की प्राण दशा में बदनामी, विष विकार, शरीर में सूखापन, नेत्रदोष, कष्ट, मृत्यु सम्भव है।

चन्द्रमा की प्राणदशा में सुख, समयानुसार भोजन, उत्तम संस्कार, राजसी वैभव, पेट में विकार होता है।

मंगल की प्राणदशा में दूसरों के कारण राजकीय उपद्रव, धनहानि, बड़ा भय, लगातार हानि होती है।

राहु की प्राणदशा में भोजन से विषसंक्रमण, विषभय, धनहानि, अग्निभय आदि फल होते हैं।

नानाविधार्थसम्पत्तिः कार्यलाभो गतागतैः।
नृपविप्राश्रयः सूक्ष्मे रवेः प्राणगते गुरौ॥20॥
बन्धनं प्राणनाशश्च चित्तोद्वेगस्तथैव च।
बहुबाधा महाहानिः रवेः प्राणगते शनौ॥21॥
राजान्नभोगः सततं राजलाञ्छनतत्पदम्।
आत्मा सन्तर्प्यते दैवाद् रवेः प्राणगते बुधे॥22॥

वृहस्पति की प्राणदशा हो तो अनेक प्रकार की सम्पत्तियाँ, यात्रा से कार्यवृद्धि, राजा या किसी विद्वान् का आश्रय होता है।

शनि की प्राणदशा में बन्धन, जीवनहानि, मन में अनेक बाधाएँ, बड़ी हानि होती है।

बुध की प्राणदशा में राजकीय खान-पान का वैभव, राजसी उपाधि या नाम से प्रसिद्धि, अथवा राजसी प्रतिष्ठा भाग्यवृद्धि से मन में भरपूर सन्तोष होता है।

अन्योन्यं कलहश्चैव वसुहानिः पराजयः।
गुरुस्त्रीबन्धुहानिश्च सूर्यप्राणगते ध्वजे॥23॥
राजपूजा धनाधिक्यं स्त्रीपुत्रादिभवं सुखम्।
अन्नपानादिभोगाप्तिः सूर्ये प्राणगते भृगौ॥24॥

केतु की प्राणदशा में परस्पर कलह, धनहानि, पराजय, गुरुजनों, स्त्रीजन, बन्धु सहायकों की हानि होती है।

शुक्र की प्राणदशा में राजकीय सत्कार, धन की अधिकता, स्त्री-पुत्रादि का सुख, खान-पान का वैभव होता है।

चन्द्र प्राणदशा फल

योगाभ्यासः समाधिश्च लभते नूतनाम्बरम्।
स्त्रीपुत्रादि सुखं द्रव्यं निजप्राणगते विधौ॥25॥
क्षयं कुष्ठं बन्धुनाशो रक्तस्रावान्महद्भयम्।
भूतावेशादि जायेत विधोः प्राणगते कुजे॥26॥
सर्पभीति विशेषेण भूतोपद्रवान् सदा।
दृष्टिक्षोभो मतिभ्रंशो विधोः प्राणगतेऽप्यहौ॥27॥

चन्द्र की सूक्ष्मदशा में चन्द्र की ही प्राणदशा हो तो योगाभ्यास, समाधि, ध्यान का अभ्यास, नए कपड़ों की भेंट, स्त्री-पुत्रों का सुख, धन होता है।

मंगल की प्राणदशा में क्षयरोग, त्वचा रोग, बन्धुओं की कमी, खून बहने का डर, भूतप्रेतादि का प्रकोप आदि फल होता है।

राहु की प्राणदशा में सर्पभय, भूतप्रेतादि का उपद्रव, आँखों में परेशानी, बुद्धि का भ्रम होता है।

धर्मवृद्धिः क्षमाप्राप्तिर्देवब्राह्मणपूजनम्।
सौभाग्यं प्रियदृष्टिश्च चन्द्रे प्राणगते गुरौ॥28॥
सहसा देहपतनं शत्रूपद्रववेदना।
अन्धत्वं च धनप्राप्तिश्चन्द्रप्राणगते शनौ॥29॥
चामरच्छत्रसम्प्राप्ती राज्यलाभो नृपात्ततः।
समत्वं सर्वभूतेषु चन्द्रे प्राणगते बुधे॥30॥

गुरु की प्राणदशा में धर्मवृद्धि, क्षमा प्राप्ति, देवों व ब्राह्मणों का सत्कार, सौभाग्य, प्रियजनों से अनुकूलता होती है।

शनि की प्राणदशा में अचानक किसी स्थान से गिरने के योग, शत्रुओं का उपद्रव, वेदना, अन्धापन लेकिन धन प्राप्ति होती है।

बुध की प्राणदशा में चँवर छत्र वाला राजयोग, राज्यप्राप्ति, सब प्राणियों के प्रति समता का भाव होता है।

शस्त्राग्निरिपुजापीडा विषाग्नि कुक्षिरोगिता।
पुत्रदारवियोगश्च चन्द्रे प्राणगते ध्वजे॥31॥
पुत्रमित्रकलत्राप्तिर्विदेशाच्च धनागमः।
सुखसम्पत्तिरर्थश्च चन्द्रे प्राणगते भृगौ॥32॥
क्रूरताकोपवृद्धिश्च प्राणहानिर्मनोव्यथा।
देशत्यागो महाभीतिश्चन्द्रे प्राणगते रवौ॥33॥

केतु की प्राणदशा में शस्त्र, अग्नि या रिपुओं से पीड़ा, पेट में विषसंक्रमण, स्त्री व पुत्रों का वियोग होता है।

शुक्र की प्राणदशा में पुत्र, मित्र व स्त्री का सुख, विदेश से धनागम, सुख-सम्पत्ति व धन-लाभ होता है।

सूर्य की प्राणदशा में क्रूर स्वभाव, क्रोध की अधिकता, प्राणभय, मानसिक व्यथा, देशत्याग के अवसर होते हैं।

मंगल प्राणदशा फल

कलहो रिपुभिर्बन्धो रक्तपित्तादि रोगभीः।
निजसूक्ष्मदशामध्ये कुजे प्राणगते फलम्॥34॥
विच्युतः सुतदारैश्च बन्धूपद्रवपीडितः।
प्राणत्यागोविषेणैव भौमप्राणगतेऽप्यहौ॥35॥
देवार्चनपरः श्रीमान् मन्त्रानुष्ठानतत्परः।
पुत्रपौत्रसुखावाप्तिर्भौमप्राणगते गुरौ॥36॥

मंगल की सूक्ष्मदशा में मंगल की ही प्राणदशा हो तो कलह, शत्रुओं द्वारा बन्धन, रक्तपित्त के रोग होते हैं।

राहु की प्राणदशा में स्त्री पुत्रों से वंचित, बन्धुओं द्वारा उपद्रव, विषभय, प्राणभय होता है।

गुरु की प्राणदशा में देवपूजन भजन, श्रीमन्तता, मन्त्रों का अनुष्ठान, पुत्र-पौत्रों का सुख होता है।

अग्निबाधा भवेन्मृत्युरर्थनाशः पदच्युतिः।
बन्धुभिर्बन्धुतावाप्तिर्भौमप्राणगते शनौ॥37॥
दिव्याम्बरसमुत्पत्तिर्दिव्याभरणभूषितः ।
दिव्यांगनायाः सम्प्राप्तिर्भौमप्राणगते बुधे॥38॥
पातोत्पातपीडा च नेत्रक्षोभो महद्भयम्।
भुजंगाद्द्रव्यहानिश्च भौमप्राणगते ध्वजे॥39॥

शनि की प्राणदशा हो तो अग्नि भय, मृत्यु, धनहानि, पदच्युति लेकिन बन्धुओं से सहायता सहानुभूति होती हैं।

बुध की प्राणदशा में उत्तम वस्त्र, उत्तम आभूषण, उत्तम स्त्री का सम्पर्क होता है।

केतु की प्राणदशा हो तो उत्थान-पतन, नेत्ररोग, बड़ा भय, सर्पभय, धनहानि आदि फल होते हैं।

धनधान्यादिसम्पत्तिर्लोकपूजा सुखागमः।
नानाभोगैर्भवेद्भोगी भौमप्राणगते भृगौ॥40॥
ज्वरोन्मादः क्षयोऽर्थस्य राजविस्नेहसम्भवः।
दीर्घरोगी दरिद्री स्याद् भौमप्राणगते रवौ॥41॥
भोजनादि सुखप्राप्तिर्वस्त्राभरणजं सुखम्।
शीतोष्णव्याधिपीडा च भौमप्राणगते विधौ॥42॥

शुक्र की प्राणदशा हो तो धन-धान्य, सम्पत्ति, सम्मान, सुख, विविध प्रकार के भोग मिलते हैं।

सूर्य की प्राणदशा में ज्वरपीडा, धनहानि, राजकीय लोगों से सम्बन्धों में विकार, दीर्घरोगी, दरिद्रता होती है।

चन्द्रमा की प्राणदशा में उत्तम रहन-सहन, उत्तम खान-पान, मौसमी रोग होते हैं।

राहु प्राणदशा फल

अन्नाशने विरक्तश्च विषभीतिस्तथैव च।
साहसाद्धननाशश्च राहौ प्राणगतेऽप्यगौ॥43॥
अंगसौख्यं विनिर्भीति वाहनादेश्च संगता।
नीचैः कलहसम्प्राप्तिः राहोः प्राणगते गुरौ॥44॥

गृहदाहः शरीरे रुङ् नीचैरपहृतं धनम्।
तथा बन्धनसम्प्राप्ती राहौ प्राणगते शनौ॥45॥
गुरूपदेशविभवो गुरुसत्कारवर्धनम्।
गुणवांश्शीलवांश्चापि राहोः प्राणगते बुधे॥46॥

राहु की सूक्ष्मदशा में राहु की प्राणदशा हो तो खान-पान में विरक्ति, विषसंक्रमण का भय, दुःसाहसपूर्ण कदम से धनहानि होती है।

गुरु की प्राणदशा में शरीर सुख, निडरता, वाहनादि सम्पत्ति का सुख, नीचजनों से कलह होती है।

शनि की प्राणदशा में घर में अग्निभय, शरीर में रोग, नीचजनों द्वारा धन का अपहरण, बन्धन के योग होते हैं।

बुध की प्राणदशा में गुरुजनों की सलाह से वैभव, खूब मान-सम्मान, गुण व चरित्र की स्वच्छता होती है।

स्त्रीपुत्रादिविरोधश्च गृहान्निष्क्रमणादपि।
साहसात्कार्यहानिश्च राहोः प्राणगते ध्वजे॥47॥
छत्रवाहनसम्पत्तिः सर्वार्थफलसंचयः।
शिवार्चनगृहारम्भो राहोः प्राणगते भृगौ॥48॥
अर्शादिरोगभीतिश्च राज्योपद्रवसम्भवः।
चतुष्पादादिहानिश्च राहौ प्राणगते रवौ॥49॥

केतु की प्राणदशा में परिवार में वैर विरोध, घर से निकलने के योग, गलत कदम से हानि होती है।

शुक्र की प्राणदशा में वाहन, सम्पत्ति, सब तरह से सफलता, शिवालय को चलाने के योग होते हैं।

सूर्य प्राणदशा में गुदा द्वार के रोग, राज्य या पद के सम्बन्ध में उपद्रव, चौपाये धन की हानि होती है।

सौमनस्यं च सद्बुद्धिः सत्कारो गुरुदर्शनम्।
पापाद् भीतिर्मनः सौख्यं राहौ प्राणगते विधौ॥50॥
चाण्डालाग्निवशाद्भीतिः स्वपदच्युतिरापदः।
मलिनः श्वादिवृत्तिश्च राहोः प्राणगते कुजे॥51॥

चन्द्रमा की प्राणदशा में मन में प्रसन्नता, उत्तम बुद्धि, विचार, गुरुजनों का मार्गनिर्देशन, सम्मान, पाप से भय, मन में तसल्ली होती है।

मंगल की प्राणदशा में चाण्डालादि व अग्नि से भय, अपने पद से हटाये जाने के योग, मलिन विचार, नीच वृत्ति होती है।

गुरु प्राणदशा फल

हर्षागमो धनाधिक्यमग्निहोत्रं शिवार्चनम्।
वाहनं छत्रसंयुक्तं निजप्राणगते गुरौ॥52॥
व्रतहानिर्विषादश्च विदेशे धननाशनम्।
विरोधो बन्धुवर्गैश्च गुरोः प्राणगते शनौ॥53॥
विद्याबुद्धिविवृद्धिश्च लोके पूजा धनागमः।
स्त्रीपुत्रादिसुखप्राप्तिर्गुरोः प्राणगते बुधे॥54॥
ज्ञानं विभवपाण्डित्यं शास्त्रज्ञानं शिवार्चनम्।
अग्निहोत्रं गुरोर्भक्तिर्गुरोः प्राणगते ध्वजे॥55॥

गुरु की सूक्ष्मदशा में गुरु की ही प्राणदशा हो तो खुशी, धन का आगम, अग्निहोत्रादि मंगल कार्य, शंकर जी के प्रति भक्ति, वाहन सुख, प्रतिष्ठा होती है।

शनि की प्राणदशा में नियम हानि, मन में खेद, विदेश में धनहानि, बन्धुओं से विरोध होता है।

बुध की प्राणदशा में विद्या बुद्धि की वृद्धि, समाज में सम्मान, धनलाभ, पारिवारिक सुख होता है।

केतु की प्राणदशा में ज्ञान, वैभव, पाण्डित्य, शस्त्रों का ज्ञान, शिवभक्ति, धार्मिक कार्य, गुरुजनों के प्रति आदर भाव होता है।

रोगान्मुक्तिः सुखं भोगो धनधान्यसमागमः।
पुत्रदारादिजं सौख्यं गुरोः प्राणगते भृगौ॥56॥
वातपित्तप्रकोपश्च श्लेष्मोद्रेकस्तु दारुणः।
रसव्याधिकृतं शूलं गुरोः प्राणगते रवौ॥57॥
छत्रचामरसंयुक्तं वैभवं पुत्रसम्पदः।
नेत्रकुक्षिगता पीडा गुरौ प्राणगते विधौ॥58॥

शुक्र की प्राणदशा में रोग मुक्ति, सुख, भोग, धन-धान्य की वृद्धि, स्त्री पुत्रों का सुख होता है। सूर्य की प्राण दशा में वात पित्त के रोग, कफ की अधिकता के रोग, भीतरी कमजोरी होती है। चन्द्र की प्राणदशा में वैभव, पुत्र सम्पत्ति, प्रतिष्ठा परन्तु आँख व पेट में पीड़ा होती है।

स्त्रीजनाच्च विषोत्पत्तिर्बन्धनं वातिनिग्रहः।
देशान्तरगमो भ्रान्तिर्गुरोः प्राणगते कुजे॥59॥
व्याधिभिः परिभूतः स्याच्चौरैरपहृतं धनम्।
सर्पवृश्चिकभीतिश्च गुरौ प्राणगतेऽप्यहौ॥60॥

मंगल की प्राणदशा में स्त्री के कारण वैमनस्य या शरीर में रोग, बन्धन, बड़ी कलह, देशान्तर की यात्रा, बुद्धिभ्रम होता है।

राहु की प्राणदशा में रोगों से कष्ट, चोरी से हानि, साँप बिच्छू का भय होता है।

शनि प्राणदशा फल

ज्वरेण ज्वलिता कान्तिः कुष्ठरोगो दारादिरुक्।
जलाग्निकृता मृत्युस्यान्निजप्राणगते शनौ॥61॥
धनं धान्यं च मांगल्यं व्यवहाराभिपूजनम्।
देवब्राह्मणभक्तिश्च शनेः प्राणगते बुधे॥62॥
मृत्युवेदनदुःखं च भूतोपद्रवसम्भवः।
परदाराभिभूतत्वं शनेः प्राणगते ध्वजे॥63॥
पुत्रार्थविभवं सौख्यं क्षितिपालादितः सुखम्।
अग्निहोत्रं विवाहश्च शनेः प्राणगते भृगौ॥64॥

शनि की सूक्ष्मदशा में शनि की ही प्राणदशा हो तो ज्वर से त्वचा की कान्ति की मलिनता, त्वचारोग, पेट के रोग, जल या अग्नि से मृत्यु होने का भय होता है।

बुध की प्राणदशा में धन, धान्य, मंगल कार्य, लोक व्यवहार में लाभ, देवों व ब्राह्मणों के प्रति भक्ति होती है।

केतु की प्राणदशा में मृत्यु तुल्य वेदना, दुःख, भूतप्रेतादिकों का उपद्रव, परस्त्री के कारण कष्ट होता है।

शुक्र की प्राणदशा में पुत्र सुख, धन सुख, राजा या समर्थ व्यक्ति से सुख, अग्निहोत्र, धार्मिक कार्य, विवाह आदि कार्य होते हैं।

अक्षिपीडाशिरोव्याधिः सर्पशत्रुभयं भवेत्।
अर्थहानिर्महाक्लेशः शनेः प्राणगते रवौ॥65॥
आरोग्यं पुत्रलाभश्च शान्तिपौष्टिकवर्धनम्।
देवब्राह्मणभक्तिश्च शनेः प्राणगते विधौ॥66॥
गुल्मरोगः शत्रुभीतिर्मृगयाप्राणनाशनम्।
सर्पाग्निविषतो भीतिः शनेः प्राणगते कुजे॥67॥
देशत्यागो नृपाद्भीतिर्मोहनं विषभक्षणम्।
वातपित्तकृता पीडा शनेः प्राणगतेऽप्यहौ॥68॥
सेनापत्यं भूमिलाभः संगमः स्वजनैः सह।
गौरवं नृपसम्मानं शनेः प्राणगते गुरौ॥69॥

सूर्य की प्राणदशा में नेत्र पीड़ा, सिर में रोग, सर्प भय, शत्रु भय, धनहानि, बड़ा क्लेश होता है।

चन्द्रमा की प्राणदशा में स्वास्थ्य लाभ, पुत्र लाभ, शान्ति सुख, पुष्टि, देवों ब्राह्मणों के प्रति भक्ति होती है।

मंगल की प्राणदशा में गुल्मरोग, शत्रुभय, शिकार आदि में प्राणभय, सर्प, अग्नि, विष से भय होता है।

राहु की प्राणदशा में देशत्याग, राजा से भय, बेहोशी, विषपान के योग, वात पित्त की पीड़ा होती है।

गुरु की प्राणदशा में जनसमर्थन, सेनापतित्व, जायदाद प्राप्ति, स्वजनों से संगम, गौरव, राज-सम्मान होता है।

बुध प्रणदशा फल

आरोग्यं सुखसम्पत्तिर्धर्मकर्मादिसाधनम्।
समत्वं सर्वभूतेषु निजप्राणगते बुधे॥70॥
वह्निनतस्करतो भीतिः परमाधिविषोद्भवः।
देहान्तकरणं दुःखं बुधप्राणगते ध्वजे॥71॥
प्रभुत्वं धनसम्पत्तिः कीर्तिर्धर्मः शिवार्चना।
पुत्रदारादिजं सौख्यं बुधप्राणगते भृगौ॥72॥

बुध की सूक्ष्मदशा में बुध की ही प्राणदशा हो तो शरीर सुख, सम्पत्ति, धर्म कर्म की प्राप्ति, सब प्राणियों के प्रति आदर भाव पैदा होता है।

केतु की प्राणदशा में अग्नि व चोर से भय, मानसिक रोग, विषादि सेवन से मनोविकार, शरीर हानि।

शुक्र की प्राणदशा में अधिकार वृद्धि, कीर्ति, धर्म वृद्धि, शिवार्चन के योग, पुत्र-स्त्री के सुख होते हैं।

अन्तर्दाहो ज्वरोन्मादो बान्धवानां रतिः स्त्रिया।
प्राप्यते स्तेयसम्पत्तिर्बुधप्राणगते रवौ॥73॥
स्त्रीलाभश्चार्थसम्पत्तिः कन्यालाभो धनागमः।
लभते सर्वतः सौख्यं बुधप्राणगते विधौ॥74॥
पतितः कुक्षिरोगी च दन्तनेत्रादिना व्यथा।
अर्शार्तिर्प्राणसन्देहो बुधे प्राणगते कुजे॥75॥

सूर्य की प्राणदशा में पेट में जलन, ज्वर से उत्पन्न उन्माद, स्त्री व बान्धवों से रति, चोरों से धनसम्पत्ति प्राप्त होती है।

चन्द्रमा की प्राणदशा में स्त्री से लाभ, धन-सम्पत्ति, कन्या प्राप्ति, धनागम, सर्वत्र सुख होता है।

मंगल की प्राणदशा में पतन, पेट में रोग, दाँत व नेत्रों में पीड़ा, बवासीर से परेशानी, प्राण सन्देह होता है।

वस्त्राभरणसम्पत्तिर्वियोगो विप्रवैरिता।
सन्निपातोद्भवं दुःखं बुधे प्राणगतेऽप्यहौ॥76॥

गुरुत्वं धनसम्पत्तिर्विद्या सद्गुणसंग्रहः।
व्यवसायेन संलाभो बुधे प्राणगते गुरौ॥77॥
चौर्येण निधनप्राप्तिर्विधनत्वं दरिद्रता।
याचकत्वं विशेषेण बुधे प्राणगते शनौ॥78॥

राहु की प्राणदशा में वस्त्राभूषणों की बहुतायत, सम्पत्ति, वियोग, विद्वानों से विरोध, सन्निपात ज्वर से पीड़ा होती है।

गुरु की प्राणदशा में बड़प्पन, धन-सम्पत्ति, विद्या प्राप्ति, गुणों में वृद्धि, व्यवसाय में लाभ होता है।

शनि की प्राणदशा में चोरों द्वारा मृत्यु, धनहीनता, ऋण आदि के योग होते हैं।

केतु प्राणदशा फल

अश्वपातेन घातश्च शत्रुतः कलहागमः।
निर्विचारवधोत्पत्तिर्निजप्राणगते ध्वजे॥79॥
क्षेत्रलाभो वैरिनाशो हयलाभो मनः सुखम्।
पशुक्षेत्रधनाप्तिश्च केतोः प्राणगते भृगौ॥80॥
स्तेयाग्निरिपुभीतिश्च धनहानिर्मनोव्यथा।
प्राणान्तकरणं कष्टं केतोः प्राणगते रवौ॥81॥

केतु की सूक्ष्मदशा में केतु की प्राणदशा हो तो वाहन या घोड़े आदि से गिरने से चोट, शत्रुओं से कलह, अचानक विपत्ति का आगमन होता है।

शुक्र की प्राणदशा में सम्पत्ति लाभ, वैरियों का नाश, वाहनप्राप्ति, मन में तसल्ली, धन-धान्यादि की वृद्धि होती है।

सूर्य की प्राणदशा में चोर, शत्रु व अग्नि से भय, धन-हानि, मन में व्यथा, प्राण-हानि होती है।

देवद्विजगुरोः पूजा दीर्घयात्रा धनं सुखम्।
कर्णे वा लोचने रोगः केतोः प्राणगते विधौ॥82॥
पित्तरोगो नसावृद्धिर्विभ्रमः सन्निपातजः।
स्वबन्धुजनविद्वेषः केतोः प्राणगते कुजे॥83॥
विरोधः स्त्रीसुताद्यैश्च गृहान्निष्क्रमणं भवेत्।
स्वसाहसात्कार्यहानिः केतोः प्राणगतेऽप्यहौ॥84॥

चन्द्रमा की प्राणदशा में देवताओं व गुरुओं की प्रसन्नता, लम्बी यात्रा, धन, सुख, कान या आँख में रोग होता है।

मंगल की प्राणदशा में पित्तरोग, नाक में रोग, तीव्र ज्वर से मस्तिष्क के कार्य में बाधा, अपने बन्धुओं से द्वेष भाव होता है।

राहु की प्राणदशा में परिवारजनों से विरोध, घर से पलायन, अपने गलत कदम से पीड़ा होती है।

शस्त्रव्रणैर्महारोगो हृत्पीडादिसमुद्भवः।
सुतदारवियोगश्च केतोः प्राणगते गुरौ॥85॥
मतिविभ्रमतीक्ष्णत्वं क्रूरकर्मरतिः सदा।
व्यसनाद्बन्धनं दुःखं केतोः प्राणगते शनौ॥86॥
कुसुमं शयनं भूषा लेपनं भोजनादिकम्।
सौख्यं सर्वांगमोग्यं च केतोः प्राणगते बुधे॥87॥

गुरु की प्राणदशा में घाव में विकार होने से बड़ा रोग, हृदय में पीड़ा, परिवार से वियोग होता है।

शनि की प्राणदशा में मति विभ्रम, विनम्र स्वभाव, क्रूर कर्मों में रति, विपत्ति, बन्धन, दुःख होता है।

बुध की प्राणदशा में वस्त्राभूषणों का राजसी सुख, उत्तम रहन-सहन, सब तरह के सुख होते हैं।

शुक्र प्राणदशा फल

ज्ञानमीश्वरभक्तिश्च सन्तोषश्च धनागमः।
पुत्रपौत्रसमृद्धिश्च निजप्राणगते भृगौ॥88॥
लोकप्रकाशकीर्तिश्च सुतसौख्यविवर्जितः।
उष्णादिरोगजं दुःखं शुक्रप्राणगते रवौ॥89॥
देवार्चने कर्मरतिर्मन्त्रतोषणतत्परः।
धनसौभाग्यसम्पत्तिः शुक्रप्राणगते विधौ॥90॥

शुक्र की सूक्ष्मदशा में शुक्र की ही प्राणदशा हो तो ज्ञानवृद्धि, ईश्वर भक्ति, सन्तोष, धनलाभ, पुत्रों व पौत्रों की समृद्धि होती है।

सूर्य की प्राणदशा हो तो संसार में यश का फैलाव, पुत्र की ओर से कम सुख, गर्मी के रोगो से परेशानी होती है।

चन्द्र की प्राणदशा में देवयजन पूजन में रति, काम में अधिक उत्साह, संकल्पसिद्धि के उत्कृष्ट यत्न, धन, सौभाग्य व सम्पत्ति होती है।

ज्वरो मसूरिका स्फोटकण्डूचिपिटकादिकाः।
देवब्राह्मणपूजा च शुक्रप्राणगते कुजे॥91॥
नित्यं शत्रुकृता पीड़ा नेत्रकुक्षिरुजादयः।
विरोधः सुहृदां पीडा शुक्रप्राणगतेऽप्यहौ॥92॥
आयुरारोग्यमैश्वर्यं पुत्रस्त्रीधनवैभवम्।
छत्रवाहनसम्प्राप्तिः शुक्रप्राणगते गुरौ॥93॥

मंगल की प्राणदशा रहने पर ज्वर, खसरा, फोड़े फुंसी, मुहांसे आदि होते हैं। अपि च धार्मिक भावनाओं की वृद्धि होती है।

राहु की प्राणदशा में शत्रुओं से पीड़ा, नेत्र व पेट में रोग, मित्रों से विरोध, पीड़ा होती है।

गुरु की प्राणदशा में आयुवृद्धि, उत्तम स्वास्थ्य, ऐश्वर्य वृद्धि, पुत्र व स्त्री का सुख, वैभव, विलासिता व प्रतिष्ठा दायक वस्तुओं की प्राप्ति होती है।

राजोपद्रवजा भीतिः सुखहानिर्महारुजः।
नीचैः सह विवादश्च भृगोः प्राणगते शनौ॥94॥
सन्तोषो राजसम्मानं नानादिग्भूमिसम्पदः।
नित्यमुत्साहवृद्धिश्च शुक्रप्राणगते बुधे॥95॥
जीवितात्मयशोहानिर्धनधान्यपरिक्षयः ।
त्यागभोगधनानि स्युः शुक्रप्राणगते ध्वजे॥96॥

शनि की प्राणदशा में राजकीय उपद्रव, सुख में कमी, बड़ा रोग, नीचजनों के साथ विवाद होता है।

बुध की प्राणदशा में सन्तोष, राजकीय सत्कार, विभिन्न स्रोतों से सम्पत्ति वृद्धि, उत्साह की अधिकता होती है।

केतु की प्राणदशा में जीवन हानि, धन-धान्य की हानि, जैसे तैसे जीवनयापन के योग्य धन होता है।

इति श्री दशाफलदर्पणे पं. सुरेशमिश्रकृते हिन्दीव्याख्याने
प्राणदशाफलाध्यायः पंचविंशः॥25॥
॥आदितः श्लोकाः 2085॥

26

॥ चरादिदशाफलाध्यायः ॥

यो यो दशाप्रदो राशिस्तस्यरन्ध्रत्रिकोणके।
पापखेटयुते विप्र! सा दशा दुःखदायिका॥1॥

चर स्थिरादि दशाओं में जिस राशि से 5.8.9 भावों में पापग्रह स्थित हों तो उस राशि की दशा में विशेषतया दुःख होते हैं।

—तीनों भावों में पापग्रह हों या सभी पापग्रह इन भावों में हों तो अत्यधिक कष्ट समझें।

—स्वक्षेत्री या उच्चादिगत पापग्रह हों तो कष्ट नहीं होता है।

—नीचादिगत पापग्रह हों तथा गुलिक भी इनमें स्थित हो तो अति विशेष कष्ट होता है।

—कम पापग्रह हों या शुभ पाप मिश्रित हों तो साधारण कष्ट, मिला जुला फल होता है।

तृतीयषष्ठगे पापे जयादिः परिकीर्तितः।
शुभखेटयुते तत्र जायते च पराजयः॥2॥

दशा राशि से 3.6 भावों में केवल पाप ग्रह हों तो दशा में सर्वत्र विजय व सफलता होती है। लेकिन इन्हीं भावों में केवल शुभ ग्रह हों तो सर्वत्र पराजय होती है। मिश्रित स्थिति होने पर मिश्रित फल समझना युक्तियुक्त है।

लाभस्थे च शुभे पापे लाभो भवति निश्चितम्।
यदा दशाप्रदो राशिः शुभखेटयुतो द्विज!॥3॥

दशा राशि से एकादश भाव में शुभ या पाप कोई भी ग्रह हो तो सफलता होती है। स्वयं सिद्ध है कि ग्रह बलवान् होगा तो विशेष लाभ होगा।

इसी तरह जिस राशि की दशा हो, उसी राशि में बलवान् शुभ ग्रह बैठा हो तो भी लाभ, उपलब्धि होती है। इस प्रसंग में पाराशरीय मत से शुभ पाप ग्रह का निर्णय करना अधिक उपयुक्त है।

दशाराशि से फल का तारतम्य

शुभक्षेत्रे हि तद्राशेः शुभं ज्ञेयं दशाफलम्।
पापयुक्ते शुभक्षेत्रे पूर्वं शुभमसत्परे॥4॥

यदि दशाराशि में कोई ग्रह न हो तो दशाराशि के स्वामी की शुभाशुभता से फल निर्णय करें। दशाराशि का स्वामी शुभ हो तो दशाफल में शुभता का मौलिक भाव आ जाता है।

शुभ राशि होने पर भी, वहाँ कोई पाप ग्रह बैठा हो तो दशा के पूर्वार्ध में शुभ फल तथा उत्तरार्ध में अशुभ फल होता है।

पापर्क्षे शुभसंयुक्ते पूर्वं सौख्यं ततोऽशुभम्।
पापक्षेत्रे पापयुक्ते सा दशा सर्वदुःखदा॥5॥

दशाराशि का स्वामी पाप ग्रह हो और उसमें कोई शुभ ग्रह बैठा हो तो भी दशा के पूर्वार्ध में शुभ फल तथा उत्तरार्ध में अशुभ फल होता है।

यदि पापराशि दशा में उस राशि में कोई पाप ग्रह स्थित हो तथा वह स्वक्षेत्र या उच्च में न हो तो सारी दशा प्रायः दुःखप्रद ही होती है।

शुभक्षेत्रदशाराशौ युक्ते पापैः शुभैर्द्विज!।
पूर्वं कष्टं सुखं पश्चान्निर्विशंकं प्रजायते॥6॥
शुभक्षेत्रे शुभं वाच्यं पापक्षेत्रे फलमसत्॥6॥

शुभ ग्रह की राशि में शुभ पाप ग्रह हों तो पहले कष्ट, बाद में सुख होता है। पाप राशि में शुभ पापग्रह हों तो प्रायः सर्वदा कष्ट ही होता है। शुभ क्षेत्र में शुभ ग्रह हो तो सब शुभ फल होते हैं।

द्वितीय पंचम भाव प्रभाव

द्वितीये पंचमे सौम्ये राजप्रीतिर्जयो ध्रुवम्।
पापे तत्र गते ज्ञेयमशुभं तद्दशाफलम्॥7॥

दशा राशि में 2.5 भावों (राशियों) में शुभ ग्रह हों तो दशाकाल में राजकीय जनों से स्नेहभाव विजय, सफलता मिलती है।

इसके विपरीत पापग्रह 2.5 में हों तो अशुभ फल होता है।

चतुर्थे तु शुभं सौख्यारोग्यं त्वष्टमे शुभे।
धर्मवृद्धिर्गुरुजनात्सौख्यं च नवमे शुभे॥8॥
विपरीते विपर्यासो मिश्रे मिश्रं प्रकीर्तितम्।

दशाराशि से चतुर्थ में शुभ ग्रह हों तो सुख, अष्टम में शुभ ग्रह हों तो अच्छा स्वास्थ्य, नवम में शुभ ग्रह हों तो धर्मवृद्धि तथा गुरु जनों से सुख होता है।

यदि इन्हीं भावों में पाप ग्रह हों तो उक्त सन्दर्भ में अशुभ फल तथा

शुभ-पाप ग्रह रहने से मिश्रित फल होता है।

पाकभोग राशि से निर्णय :

पाके भोगे च पापाढ्ये देहपीडा मनोव्यथा॥9॥
सप्तमे पाकभोगाभ्यां पापे दारार्तिरीरिता।
चतुर्थे स्थानहानिः स्यात्पंचमे पुत्रपीडनम्॥10॥
दशमे कीर्तिहानिः स्यान्नवमे पितृपीडनम्।
पाकाद् रुद्रगते पापे पीडा सर्वाप्यबाधिका॥11॥
उक्तस्थानगते सौम्ये ततः सौख्यं विनिर्दिशेत्।
केन्द्रस्थानगते सौम्ये लाभः शत्रुजयप्रदः॥12॥
जन्मकालग्रहस्थित्या सगोचरग्रहैरपि।
विचारितैः प्रवक्तव्यं तत्तद्राशिदशाफलम्॥13॥

जिस राशि की दशा हो, वह राशि यदि पापयुक्त हो तथा साथ ही भोग राशि भी पाप युक्त हो तो शरीर कष्ट मानसिक व्यथा अधिक होती है।

जिस राशि की दशा हो वह राशि पाकराशि या द्वार राशि कलहाती है। यह दशाश्रयराशि या पाकराशि पहली दशाराशि से जितनी आगे हो, उतनी ही आगे वाली राशि दशा पाकराशि से गिने लें, यही भोगराशि है। माना चरदशा या स्थिर दशा या किसी भी राशि दशा प्रकार में पहली राशि कर्क की है। वर्तमान में वृश्चिक की दशा चल रही है। समराशि होने से विपरीत क्रम से गिना तो वृश्चिक दशा नवीं है। अतः वृश्चिक से नवीं दशा राशि योग राशि होगी। क्रम विपरीत ही होगा। यह मीन राशि है। अतः इस उदाहरण में वृश्चिक राशि तथा मीन राशि भोग राशि है। पाक को दशाश्रयराशि तथा भोग को बाह्यराशि भी कहते हैं।

पाक व भोग राशि से सप्तम में पापग्रह हो तो पत्नी पीड़ा, चतुर्थ में पापग्रह हो तो जायदाद व प्रतिष्ठा में कमी, पंचम में पापग्रह हो तो पुत्र को कष्ट, दशम में पापग्रह हो तो कीर्ति में कमी, नवम में पापग्रह हो तो पिता को कष्ट, एकादश में पापग्रह हो तो बड़ी अनिवार्य बाधा होती है। यदि इन स्थानों में शुभ ग्रह हों तो उक्त बातों का सुख होता है। पाक व भोगराशि से केन्द्र में शुभग्रह हो तो सर्वत्र विजय होती है। यह पाप व शुभ स्थिति जन्म चक्र व गोचर दोनों से देखें।

पाक व भोग दोनों पर पाप प्रभाव हो तथा जन्म गोचर से भी यह सिद्ध होता हो तो बड़ा अशुभ समझें।

शुभमध्य राशिदशा : शुभ

यश्च राशिः शुभाक्रान्ता पूर्वपश्चाच्छुभग्रहाः।
तद्दशा शुभदा प्रोक्ता विपरीते विपर्ययः॥14॥

त्रिकोणरन्ध्ररिःफस्थैः शुभपापैः शुभाशुभम्।
तद्दशायां च वक्तव्यं फलं दैवविदा सदा॥15॥

जो राशि स्वयं शुभयुक्त हो या जिस राशि के आगे पीछे शुभग्रह हों, उसकी दशा शुभ फलदायक होती है। यदि दोनों ओर पापग्रह हों तो दशा अशुभ होगी।

जिस राशि से 5.8.8.12 राशियों में शुभ-पाप मिश्रित ग्रह हों तो उस दशा में भी मिश्रित फल ही कहना चाहिए।

बाधास्थान से दशाफल

मेषकर्कतुलानक्रराशिनां च यथाक्रमम्।
बाधा स्थानानि प्रोक्तानि कुम्भगोसिंहवृश्चिकाः॥16॥
पाकेशाक्रान्तराशौ वा बाधास्थाने शुभेतरे।
स्थिते सति महाशोको बन्धनव्यसनामयाः॥17॥

सभी चर राशियों में ग्यारहवीं राशि बाधा स्थान कहलाती है। अतः 1.4.7.10 राशियों में क्रमशः 11.2.5.8 राशियाँ बाधा स्थान है।

यदि दशा राशि के स्वामी के साथ या बाधा स्थान में पापग्रह हों तो दशा काल में महाशोक, बन्धन, विपत्ति व रोग होते हैं।

उच्चस्वर्क्षग्रहे तस्मिंच्छुभं सौख्यं धनागमः।
तच्छून्यं चेदसौख्यं स्यात्तदशा न फलप्रदा॥18॥

दशाराशि में, दशाराशीश के साथ या बाधा स्थान में उच्चगत या स्वक्षेत्री ग्रह हो तो उस दशा में सुख व धन की अधिकता होती है।

यदि उक्त राशियाँ ग्रह रहित हों तो साधारण फल, सामान्य नियमों के अनुसार होगा। यदि वहाँ नीचादिगत ग्रह हों तो दुःख, कष्ट आदि होते हैं।

पापग्रहों से राशिफल में तारतम्य

बाधकव्ययषड्रन्ध्रे राहुयुक्ते महद्भयम्।
प्रस्थाने बन्धनप्राप्ती राजपीडा रिपोर्भयम्॥19॥

दशा राशि से बाधा स्थान या 6.8.12 में राहु स्थित हो तो उस राशि की दशा में बड़ा भय, यात्रा में बन्धन, राजकीय पक्ष से कष्ट तथा शत्रुओं से कष्ट होता है।

रव्यारराहुशनिभिर्युक्त राशेः स्थिरा यदि।
तद्राशिभुक्तौ पतनं राजकोपान्महद्भयम्॥20॥

जिन राशियों में सूर्य, मंगल, राहु, शनि स्थित हों, उन राशियों की चरदशा, विशेषतया स्थिरदशा में अन्तर्दशा आने पर पतन, अवनति, राजकोप आदि होते हैं।

भुक्तिराशित्रिकोणे तु नीचखेटः स्थितो यदि।
तद्राशौ वा युते नीचे पापे मृत्युभयं वदेत्॥21॥

अन्तर्दशा राशि से 5.9 में यदि नीचगत पापग्रह हो तो उसकी अन्तर्दशा में मृत्युभय सम्भव होता है।

शुभ ग्रहों से शुभ फल

भुक्तिराशौ स्वतुंगस्थे त्रिकोणे वापि खेचरे।
यदा भुक्तिदशा प्राप्ता तदा सौख्यं लाभेन्नरः॥22॥
नगरग्रामनाथत्वं पुत्रलाभं धनागमम्।
कल्याणं भूरिभाग्यं च सेनापत्यं महोन्नतम्॥23॥
पाकेश्वरो जीवदृष्टः शुभराशौ स्थितो यदि।
तद्दशायां धनप्राप्तिर्मंगलं पुत्रसम्भवम्॥24॥

दशाराशि में या उससे 5.9 राशियों में कोई उच्चगत ग्रह हो तो उस दशा में खूब सुख, नगर या गांव की प्रमुखता, पुत्र प्राप्ति, धन लाभ, कल्याण, उत्तम भाग्य, व्यापक जनसमर्थन, प्रतिष्ठा, सेना नायकत्व व खूब उन्नति होती है।

दशाराशि का स्वामी यदि वृहस्पति से दृष्ट होकर शुभराशि में बैठा हो तो उस राशि की दशा में धनप्राप्ति, मंगल कार्य, पुत्रों का कल्याण होता है।

नीच सम्बन्ध : दुर्भाग्य

यत्र स्थितो नीचखेटस्त्रिकोणे वाथ नीचगः।
तथा राशीश्वरे नीचे सम्बन्धो नीचखेटकैः॥25॥
भाग्यस्य विपरीतत्वं करोत्येव द्विजोत्तम।
धनधान्यादिहानिश्च देहे रोगभयं तथा॥26॥

जिस राशि से 1.5.9 राशियों में नीचगत ग्रह स्थित हो या दशाराशि का स्वामी भी नीच में हो तो उस राशि की दशा में भाग्य की विपरीतता, धन-धान्य की हानि, शरीर में रोग होते हैं।

दशाराशीश यदि नीचग्रह से सम्बन्ध करता हो तो भी उस राशि की दशा में उक्त अशुभ फल होते हैं।

शुक्र चन्द्र की दृष्टि व दशा राशीश

यद्दशायां शुभं ब्रूयात्सचेन्मारकसंस्थितः।
यस्मिन्राशौ दशान्तः स्यात्तस्मिन् दृष्टे युतेऽपि वा॥27॥
शुक्रेण विधुना वा स्याद्राजकोपाद्धनक्षयः।
दशान्तश्चेदरिक्षेत्रे राहुदृष्टयुतेऽपि वा॥28॥
इदं फलं शनेः पाके न विचिन्त्यं द्विजोत्तम!
दशाप्रदे नक्रराशौ न विचिन्त्यमिदं फलम्॥29॥

1. जिस राशि की दशा में पूर्वोक्त नियमों से शुभ फल आता हो, लेकिन वह राशि जन्मकुण्डली में मारक स्थानों में हो।
   अथवा दशाकाल में दशा राशि का स्वामी या वह राशि गोचर में शुक्र या चन्द्रमा से युतदृष्ट हो तो उस दशा काल में राजकोप से धन हानि भी होती है।
2. दशा के दौरान दशाराशीश यदि गोचर में शत्रुराशि में हो या राहु से युक्त-दृष्ट हो तो वह दशा सामान्य नियमों से शुभ होती हुई भी उस गोचर काल की अवधि में शुभ नहीं होती है।
3. यह विधि दशाराशीश शनि हो या शनि की कोई दशा हो तो नहीं अपनायी जाएगी। चरस्थिरादि दशा में विशेषतया मकर राशि की दशा में उक्त विधि नहीं देखी जाएगी।

प्रसंगवश ग्रहों की शत्रुराशियाँ

सितासितभयुग्माश्च सूर्यस्यरिपुराशयः।
कौर्पितौलिघटाश्चेन्दोर्भौमस्य रिपुराशयः॥30॥
घटमीननृयुक्तौलिकन्याज्ञस्य ततः परम्।
कर्कमीनालिकुम्भाश्च राशयो रिपवः स्मृता॥31॥
वृषतौलिनृयुक्कन्या राशयो रिपवो गुरोः।
सिंहालिकर्कचापाश्च शुक्रस्य रिपुराशयः॥32॥
मेषसिंहधनुःकौर्पिकर्कटाः शनिशत्रवः।
एवं ग्रहान्तर्दशां चिन्तयेत् कोविदो द्विज!॥33॥

2.3.7.10.11 सूर्य की शत्रु राशियाँ हैं। 8.7.11 चन्द्रमा की शत्रु राशियाँ हैं। 11.12.3.7.6 मंगल की शत्रु राशियाँ हैं। 4.12.8.11 बुध की शत्रु राशियाँ हैं। 2.7.3.6 गुरु की शत्रु राशियाँ हैं। 4.5.8.9 शुक्र की शत्रु राशियाँ हैं। 1.5.9.8.4 ये शनि की शत्रु राशियाँ हैं। इस विधि से दशा के दौरान गोचर विचार में शत्रु राशियों का विचार करें।

राहुयुक्त राशिदशा : सर्वस्व हानि

राहोर्दशान्ते सर्वस्वनाशो मरणबन्धने।
देशान्निर्वासनं वा स्यात्कष्टं वा महदश्नुते॥34॥
तत्त्रिकोणगते पापे निश्चयाद्दुःखमादिशेत्।
तस्मिन्नेव च राहुश्चेन्निरोधो द्रव्यनाशनः॥35॥

राहु की अधिष्ठित राशि की दशा के अन्तिम चरण में सर्वस्व हानि, मरण, बन्धन, निर्वासन या बड़ा कष्ट होता है। यदि उस राशि से 5.9 में पाप ग्रह हो तो उक्त फल निश्चय से होता है। यदि दशा राशि में राहु गोचर करता हो तो उस गोचर काल में द्रव्य हानि, आमदनी में बाधा होती है।

॥ग्रन्थकृद्वंशवर्णनम्॥

आसीद्रत्नपुरे पराशरकुलोत्पन्नो द्विजोदुम्बरः
ख्यातः पाठकनामतो गुणनिधिः श्रीनन्दरामाभिधः।
तत्सूनुर्गणितागमज्ञतिलकः श्रीमोतिरामांगजो
रेवाशंकर आगमेषु निपुणो भक्ताग्रणीः कोविदः॥1॥

पराशरक्षेत्र में उदुम्बर पाठक वंशोत्पन्न श्रीनन्दराम पाठक रतलाम (रत्नपुर) में उत्पन्न हुए थे। उनके पुत्र श्री मोतीराम पाठक गणितादि ज्योतिष में प्रवीण उत्पन्न हुए। श्रीमोतीराम से श्री रेवाशंकर पाठक नामक विद्वान् भी उत्तमज्योतिर्वित् उत्पन्न हुए हैं।

तदात्मज उदारधीर्गणकमौलिचूडामणि-
रभूद् धरणीमण्डले गुणनिधिर्महादेवकः।
तदंगजनुषा मया कृतमिदं सतां प्रीतये
दशाफलविनिर्णयं सकलकार्यसंसाधकम्॥2॥

श्री रेवाशंकर के पुत्र श्री महादेव पाठक बहुत प्रसिद्ध ज्योतिषी हुए हैं। उनके पुत्र मैंने (श्रीनिवासपाठक ने) सज्जनों के प्रीत्यर्थ यह दशाफल निर्णय करने वाला, सर्वत्र उपयोगी ग्रन्थ संग्रहीत किया है।

फाल्गुनस्य सिते पक्षे पंचम्यां रविवासरे।
खरसांकेन्दुसंख्याके विक्रमाब्दे शुभे दिने॥3॥
दशाफलविचारस्याखिलकष्टनिवृत्तये।
संग्रहोऽयं कृतः सर्वग्रन्थादुद्धृत्य यत्नतः॥4॥

विक्रम संवत् 1960, फाल्गुन शुक्ल पंचमी रविवार को यह दशाफल विचारात्मक दशाफलदर्पण नामक ग्रन्थ, विभिन्न ग्रन्थों से संग्रह करके लिखा है।

इति श्री दशाफलदर्पणे पं. सुरेशमिश्रकृते हिन्दीव्याख्याने
चरादिदशाफलाध्यायः षड्विंशः॥26॥
॥आदितः श्लोकाः 2122॥
॥वंशवर्णनसहिताः 2126॥
॥समाप्तोऽयं ग्रन्थः॥

27

॥ व्यावहारिक दशाविवेचन ॥

ग्रन्थ में मूल पाठ के अनुरोध से सोदाहरण विवेचन करने पर विषय का क्रम तारतम्य भंग होने का भय था, अतः अन्त में पाठकों को कुछ खास व्यावहारिक नियमों का विवेचन करके यहाँ दिखाया जा रहा है। **लघुपाराशरी** के नियमों को ग्रन्थ में ही यथावसर पुष्पित कर दिया गया है। पाठकों को हमारी सलाह है कि दशा फल विवेचन में जहाँ तक हो सके **लघुपाराशरी** व **बृहत्पाराशर होरा शास्त्र** के नियमों को अपने मस्तिष्क में क्रमशः जमा लेना चाहिए। इन दो पुस्तकों के अतिरिक्त अन्य कहीं कही गई दशाफल सम्बन्धी बातें प्रायः अति सामान्य स्तर की हैं।

विंशोत्तरी की महत्ता—सभी नक्षत्र दशा प्रकारों में विंशोत्तरी दशा ही प्रमुख प्रकार है तथा सर्वत्र बिना किसी शर्त प्रयोग किया जा सकता है तथा प्रयोग किया जाना चाहिए। देश व काल भेद से कुछ अन्य दशा भेदों की वकालत करने वाले लोगों के लिए निवेदन है कि सभी नाक्षत्रिक दशाओं में विंशोत्तरी ही आत्मा है तथा फल कथन का प्राण है। अतः व्यक्तिगत फलादेश के प्रसंग में विंशोत्तरी दशा का जवाब नहीं है।

पंचमेश का योग : पारस पत्थर

सभी जगह कहा गया है कि 6.8.12 भावेशों की स्थिति जिस किसी भाव में हो, वे अपनी स्थिति से उसी भाव को बिगाड़ते हैं, लेकिन त्रिक भावेश यदि बली पंचमेश से युक्त होकर केन्द्र त्रिकोण में बैठे हों तो बहुत उत्तम, यदि अनिष्ट भावों में हों तो भी उत्तम फल अपने दशा काल में देते हैं। उदाहरणार्थ यहाँ दी जा रही कुण्डली में अष्टमेश वृहस्पति, पंचमेश बुध के साथ दशम आगे में है, फलस्वरूप उक्त नियम से वृहस्पति की दशा में दशम भाव सम्बन्धी तथा गुरुदृष्ट भावों से सम्बन्धित शुभ फल होगा, यह निश्चय हुआ। यद्यपि सूर्य के साथ रहने पर बुध व वृहस्पति दोनों ही उदाहरण में अस्त प्रायः तथा निर्बल प्रतीत होते हैं, जबकि गुरुदशा में उक्त व्यक्ति ने विशेष मान-सम्मान तथा प्रतिष्ठा प्राप्त की थी। उस समय ये सज्जन उम्र

के छठे दशक में चल रहे थे। यह एक दक्षिण भारतीय प्रसिद्ध दैवज्ञ की कुण्डली है।

ध्यान रहे, पंचमेश बलवान् होकर व्यक्ति की बुद्धिमत्ता, दुनियांदारी, अनुभव, मन्त्रशक्ति, संकल्प शक्ति को बढ़ाता है तथा व्यक्ति प्रायः ऐसा भीतरी आत्मिक बल प्राप्त कर लेता है, जिससे वह सम्भावित बाधाओं को सरलता व बुद्धिमानीपूर्वक पार करके सफल हो जाता है।

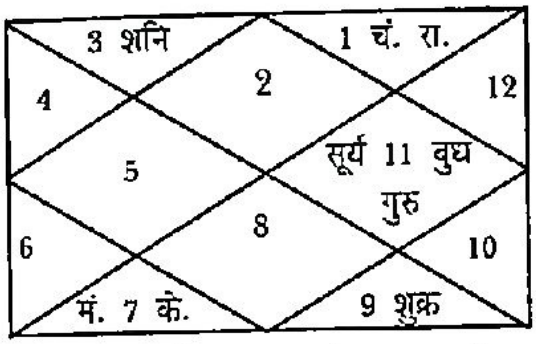

12.2.1856
इष्ट 14:30 घटी

इसी उदाहरण में चतुर्थेश व पंचमेश का योग भी दशम में हो रहा है जो मणिकांचन योग बनाता है।

योगकारक सम्बन्ध : अशुभता का नाश

प्रत्येक कुण्डली में योगकारक ग्रह ऐसी विशेषता रखता है कि उसके सम्पर्क में आने वाले सभी ग्रह, चाहे वे दुष्ट ही क्यों न हों, एक तरह से सत्संगति प्राप्त करके, अपनी दशा में शुभ फलदायक हो जाते हैं। विशेषता यह है कि पापी दुष्टभावेश अर्थात् 6.8.12 पापी भावेश की संगति से योगकारक नहीं बिगड़ता है वरन् योगकारक की संगति से वह दुष्टफलदायी भी काफी हद तक सुधर जाता है।

पाक कला विशेषज्ञ कहते हैं (देखें वृहत्संहिता) सब मसालों में धनिया सबसे बलवान् होता है। यदि मसालों के सम्मिश्रण में धनिया अधिक हो जाए तो अन्य मसालों के गुण व सुगन्ध धनिये के सामने दब जाते हैं। ठीक इसी तरह योगकारक भी अन्य ग्रहों की अशुभता को दबा देता है तथा अन्य योगकारक या शुभ फलदायी ग्रह से मिलकर विशेष गुण पैदा करता है।

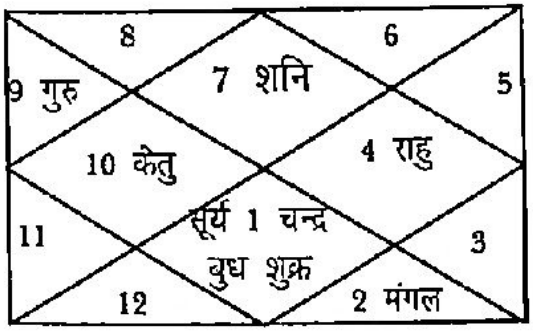

22.4.1925
18:45 घंटे

योगकारक ग्रह भी कभी कभी संगति के प्रभाव में आकर अपनी वास्तविक आभा खो बैठता है, उस परिस्थिति का विवेचन उपरोक्त कुण्डली के आधार पर आगे किया जा रहा है।

चतुर्थेश पंचमेश शनि की दृष्टि 3.6 भावेश गुरु पर है। चन्द्र राशीश मंगल से भी दृष्ट है, लग्नेश शुक्र से त्रिकोण संबंध बन रहा है, साथ ही लाभेश, भाग्येश, दशमेश से भी त्रिकोण सम्बन्ध है। जनवरी 1992 में गुरुदशा जब इन्हें शुरू हुई तो अपने कार्यक्षेत्र में राष्ट्रव्यापी प्रसिद्धि, यश व सफलता प्राप्त होती गई है तथा अभी तक अक्षुण्ण है। हालाँकि वृहस्पति स्वक्षेत्री है, लेकिन तुला लग्न वालों के लिए वृहस्पति शुभ फलदायक कहीं भी नहीं कहा है। योगकारक सम्बन्ध, सामान्य नियम से अशुभ ग्रह को, कैसे शुभता प्रदान कर देता है, यहाँ स्पष्ट हो जाता है। योगकारक ग्रह ऐसा पारस पत्थर है, जो लोहे को भी सोना बनाने की सामर्थ्य रखता है।

नवमेश व गुरु सम्बन्ध

जिस ग्रह से नवमेश या वृहस्पति या दोनों ही कोई सम्बन्ध रखते हों तो उस सम्बन्धी ग्रह के दशा काल में व्यक्ति का भाग्य व प्रतिष्ठा स्वमेव बढ़ जाती है। स्पष्ट है कि सम्बन्धी ग्रह की निजी स्थिति से फल प्राप्ति में तारतम्य होगा।

त्रिकोणेश सदा स्वाभाविक शुभ हैं, यह बात पाराशरीय मत में खासतौर पर रेखांकित की गई है। ये त्रिकोणेश ऐसा च्यवनप्राश बन जाते हैं कि जिनके सम्बन्ध से अन्य कमजोर या दुःस्वास्थ्य ग्रह भी युवावस्था जैसे ओज को पा लेते हैं। यदि ग्रह पहले से ही सुस्थित हुआ हो तो फिर क्या कहना? विशेष शुभता स्वयं सिद्ध ही होगी। **पाराशरहोरा** में कहा गया है—

भाग्येशगुरुसम्बन्धाद्योगदृक्केन्द्रभादिभिः।
परेषामपि दायेषु भाग्योपक्रममुन्नयेत्॥

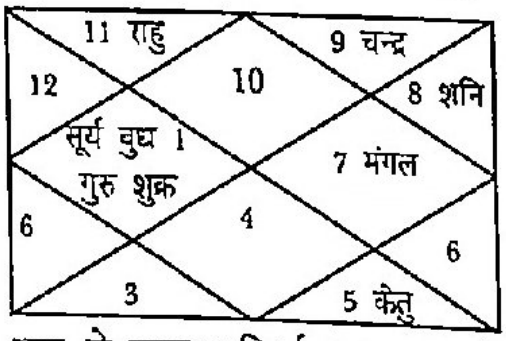

यह एक केन्द्रीय मन्त्री की कुण्डली है। आप लगातार दो सरकारों में मन्त्री रहे हैं। मंगल की दशा में आपको उक्त पद प्राप्त हुआ था। यहाँ मंगल पर पंचमेश शुक्र, नवमेश बुध, राशीश गुरु की दृष्टि तो है ही, साथ में पाप केन्द्रेश मंगल का परमकारक शुक्र से स्थान परिवर्तन सम्बन्ध भी बन रहा है।

केन्द्रेश त्रिकेश दशा

यदि एक ही ग्रह षष्ठेश व सप्तमेश हो या पंचमेश षष्ठेश एक ही हो, सप्तमेश अष्टमेश एक ही हो जैसे सिंह लग्न में शनि, कन्या में पंचमेश षष्ठेश शनि, कर्क लग्न में 7.8 भावेश शनि, किसी भी प्रकार से शुभ सम्बन्ध करता हो तो वह अपनी दशा में प्रायः शुभ फल देता है। बशर्ते, वह राहु या केतु के साथ न हो। यदि वह संयुक्त भावेश दशा में बलवान् हो तो राजयोग बनाता है।

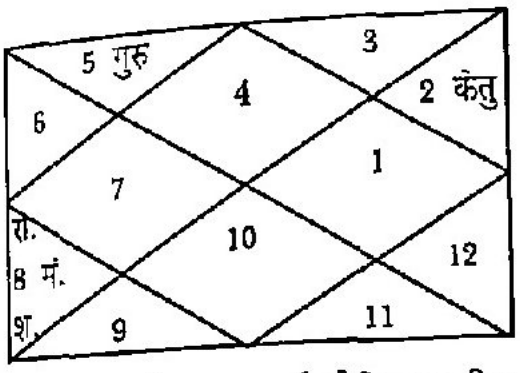

इस कुण्डली में 7.8 भावेश शनि पंचमेश से युक्त है। योग कारक से भी युक्त है। नवमेश गुरु से केन्द्र सम्बन्ध बनाता है, अतः शुभ हुआ। लेकिन साथ में राहु से भी युक्त है, अतः अशुभ फल देने की प्रवृत्ति भी रखता है। कुण्डली वाले जातक को शनि दशा में विशेष उन्नति प्राप्त हुई, लेकिन इसी दशा में रोग व दुर्घटना भी आई। कहा गया है—

षष्ठस्य सप्तमस्यैको नायको मानराशिगः।
दशा तस्य शुभा ज्ञेया तथा तेन युतस्य च॥

(दशाफलदर्पण)

विशेष व्युत्पत्ति के लिए हमारी लघुपाराशरी का मनन करना आवश्यक है।

राहुयोग : कष्टदशेश

कोई योग कारक या अन्य नियम से शुभ सिद्ध होता हुआ यदि राहु केतु के अंशों के आसपास हो, खासतौर पर 7°-8° अंशों के भीतर हो तो उस ग्रह की दशा के अन्त में विशेष परेशानियाँ आती हैं। कहा गया है—

भावेशाक्रान्तराशीशो राहुग्रस्तोऽथ नीचगः।
छन्नो वा पापदृष्टश्च भावनाशकरो मतः॥

अपि च दशेश जिस ग्रह की राशि में हो, वह ग्रह भी यदि राहु से ग्रस्त हो या नीच में हो या अस्त हो और पापदृष्ट भी हो तो बहुत हानिप्रद होता है। अन्यथा शुभ सिद्ध होता हो तो शुभ फल भी आएँगे।

गुरुदशा शुक्र अन्तर्दशा में आप को अपने जीवन साथी को खोना पड़ा, जबकि अन्य उपलब्धियाँ अच्छी रहीं।

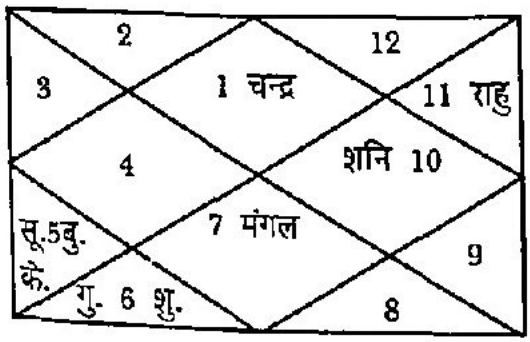

इस कुण्डली में शुक्र द्वितीयेश सप्तमेश होने से मारक है। स्वयं नीच में है, शुक्र का राशीश बुध केतु के साथ निकट में ही है। उक्त नियम स्पष्ट तथा घटित हो रहा है। यदि दूर होता तो कम अनिष्ट अथवा केवल रोग और कम होने पर केवल चिन्ता ही होती।

कुछ विचारणीय बिन्दु

कोई भी ग्रह, किसी भी लग्न में, किसी भी भाव में स्थित हो, निम्नलिखित परिस्थितियों में अपनी शुभता को बरकरार रखता है तथा जैसे भाव में हो, जैसे भाव का स्वामी हो, जैसे ग्रहों से सम्बन्ध करता हो, उनके विषय में यथावसर

शुभता को बढ़ाता है। अतः अपनी दशा में गुण पैदा करता है।

- परमोच्च व उसके आसपास स्थित ग्रह अपनी परिस्थित व सम्बन्धानुसार पूरी शक्ति से शुभ फल को बढ़ाता है तथा अशुभता को समेटता है। अर्थात् लगभग शत प्रतिशत शुभ फल देने की सामर्थ्य रखता है।
- उच्च राशि में परमोच्च से थोड़ा कम शुभ, उच्च राशि के आसपास वाली राशि में पूर्वोक्त से थोड़ा कम शुभ है।
- अपनी मूल त्रिकोण या स्वराशि में पूर्वोक्त से कम शुभ है, लेकिन शुभ अवश्य है।
- अपने अधिमित्र की राशि में पूर्वोक्त से थोड़ा कम, निसर्ग मित्र की राशि में अधिमित्र से थोड़ा कम शुभ तथा तत्काल मित्र की राशि में पूर्वोक्त से थोड़ा कम शुभ है।
- समग्रह की राशि में शुभ व पाप फल लगभग बराबर रहते हैं।
- शत्रुराशि में अशुभता थोड़ी बढ़ जाती है।
- अधिशत्रु राशि में और अधिक अशुभ, नीच राशि के पास थोड़ा और अधिक अशुभ, नीच राशि में और अधिक अशुभ, परम नीच में सर्वाधिक अशुभ होता है।
- अस्तंगत, युद्ध में पराजित ग्रह भी नीचवत् अशुभ है।
- नीच, शत्रुवर्गों में गया ग्रह भी उन्हीं राशियों के समान समझना चाहिए।
- केन्द्रत्रिकोणगत शुभता को बढ़ाता है। 6.8.12 में स्थित ग्रह शुभता को घटाता है।
- 3.11 में परिस्थिति वशात् शुभ या अशुभ तथा 2.12 में उदासीन होता है।
- चन्द्रमा की दशा में पक्षबली चन्द्रमा सदा शत्रुता बढ़ाता है।
- सूर्य से पीछे की राशियों में स्थित ग्रह शुभ फल देने में संकोच करते हैं तथा सूर्य से आगे की राशियों में ग्रह खुलकर अपना शुभ फल देते हैं।
- स्वनवांश, उच्चनवांश व द्रेष्काण में स्वगृही या उच्च की तरह अपना शुभ फल बढ़ाते हैं।
- वर्गोत्तम नवांशगत ग्रह भी शुभ फलदायक होता है।
- अपने अष्टवर्ग में स्थित राशि में 5 से अधिक रेखाएँ पाने वाला ग्रह अपनी दशा में शुभ होता है।

उक्त विधि से ग्रह की शुभता की मात्रा का निर्णय करके फल कहना चाहिए।

भावेशत्व से विशेष शुभता

- एक ही ग्रह 2.7 भावेश हो, जैसे मेष लग्न में शुक्र, तो उसकी दशा तथा उससे युक्त ग्रह की दशा में शुभ फल भी होते हैं। सम्भव होने पर मारकत्व तो रहता ही है।
- जिस दशेश से 3.6.10.11 में शुभ ग्रह हों या केन्द्र त्रिकोण में शुभ ग्रह हों, उसकी दशा शुभ होती है।
- जिस ग्रह से केन्द्र कोण व अष्टम में राहु हो, उसकी दशा में परेशानियाँ व व्यर्थ कष्ट होता है।

कुछ विशेष अनुभूत नियम

1. राहु केतु की परस्पर दशान्तर्दशा में बाधाएँ स्वयमेव आती हैं।
2. गुरु शुक्र की परस्पर दशान्तर्दशा में, विवाहित जीवन में सुख की कमी होती है, बशर्त उनमें से कोई एक अशुभ भाव या राशि में हो।
3. यदि दोनों ही शुभ भाव व राशि में हैं तो बहुत शुभ फल देते हैं।
4. शनि शुक्र में से कोई एक कमजोर भाव या राशि में हो तो इनकी परस्पर दशान्तर्दशा में अचानक शुभता में बढ़ोत्तरी होती है। अन्य नियमों से प्राप्त फल बरकरार रहते हैं।
5. यदि दोनों की स्थिति अशुभ हो तो विशेष कष्ट होते हैं।
6. शनि राहु यदि साथ में स्थित हों या किसी योगकारक से सम्बन्ध करें तो अपनी दशान्तर्दशा में विशेष तरक्की देते हैं।
7. राहु यदि 1.2.3.4.8.9.12 राशियों में कहीं भी स्थिति हो तो कुछ न कुछ अच्छे फल अवश्य देता है।
8. किसी भी राशि के 30वें अंश में स्थित ग्रह, चाहे अन्य नियमों से शुभ सिद्ध होता हो, तब भी सहसा कार्यविघ्न, कार्यहानि तथा कष्ट लाता है।
9. नीचगत ग्रह या राहु के साथ स्थित ग्रह अपने शुभ फलों को देने में बहु संकोच करता है।
10. दशेश व अन्तर्दशेश यदि परस्पर 2.12 या 6.8 में हों तो शुभ फलों को रोकते हैं।
11. राहु व गुलिक की राशि का स्वामी ग्रह, अपनी सारी शुभता को छिपा लेता है तथा अशुभ फल भी देता है।

12. गुलिक के साथ स्थित ग्रह भी अशुभ होता है।
13. सारी अन्तर्दशा को तीन बराबर भागों में बाँट लें। प्रथम त्रिभाग में भावजन्यफल, द्वितीय त्रिभाग में राशि स्थिति का फल तथा तृतीय त्रिभाग में दृष्टि फल विशेषतया देते हैं।

पाकस्यादौ भावजन्यं ग्रहाणां तत्तद्राशिस्थानजं पाकमध्ये।
दायस्यान्ते दृष्टिसंजातमेव सर्वे तारापाकभेदं वदन्ति॥

(जातक पारिजात)

विशेष विवेचन हेतु पाठकों को सलाह है कि वे हमारा **बृहत्पाराशर होराशास्त्र, जातक पारिजात, लघुपाराशरी, फलदीपिका** अवश्य पढ़ें। वहाँ बहुत से उदाहरणों द्वारा विषय को सर्वथा स्पष्ट किया गया है।

॥इति शम्॥